
Mantramahārṇava.
Mādhava
॥ ❋ ॥ अथ मन्त्रमहार्णवप्रारंभः ॥ ❋ ॥
३४







॥ सर्वमंत्रप्रणेत्रे श्रीपार्वतीपतये नमः ॥

भूमिका।



उस परब्रह्म परमात्माको अनेक धन्यवाद हैं कि जिसकी कृपासे हम सब कोई अपने कार्य्यको निर्विघ्नपूर्वक समाप्त करनेमें समर्थ होते हैं। इसके उपरांत हम अपने सहृदय पाठकोंको भी धन्यवाद दिये विना नहीं रह सकते कि जिनकी कृपाका अवलंबन ही हमारे उत्साहको द्विगुणित करता रहा। तीसरे सर्वशक्तिमान् शिवजी महाराजको धन्यवाद देना ही योग्य है क्योंकि जिनकी कृपा रूपी दृष्टिके कारण ही मंत्रशास्त्र रचा गया। जिस मंत्रशास्त्रके प्रभावसे ही प्राचीन मनुष्योंने देवताओंसे भी जय पायी और देवताओंको वशीभूत करके उन देवताओंसे अपने किंकरवत् कार्य्य कराया करते थे। इस मंत्रशास्त्रके द्वारा रावणादिक राक्षस श्रीरामचन्द्रादिकसे युद्ध करनेमें समर्थ हुए। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा संपूर्णोंकी दृष्टिके आगेसे लोप हो जाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा दूसरेके शरीरमें आप प्रवेश हो सकते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा नानाप्रकारके रूप धारण करलेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा जलके भीतर ही भीतर सहस्रों योजनतक जानेकी सामर्थ्य रखते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा आकाशमार्ग होकर देवलोकको जाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा भूत भविष्य वर्तमान तीनों कालकी वार्ताओंके जाननेमें समर्थ होते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा देवताओंकाभी आकर्षण कर लेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा अजित शत्रुसे भी जय पाते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा मनोवांछित पदार्थ अपने आप ही मँगा लेते थे। जिस मंत्रशास्त्रके द्वारा अष्टसिद्धि नवनिधि सम्मुख हाथ बांधे खडी रहती थीं। इस मंत्रशास्त्रके प्रभावकरके ही ब्राह्मणोंसे रघु इत्यादि राजा भयभीत होते थे। ऐसी अनेक सिद्धियां इच्छानुसार प्राप्त करना यह मंत्रशास्त्रहीका काम था। आज अत्यंत खेदका समय है कि ऐसा अमूल्य

रत्न मंत्रशास्त्र इच्छाके पूर्ण करनेवाला इस लोकसे लुप्त हो जाता है। कारण कि प्रथम तो आजकल ऐसे पदार्थोंका मिलना ही कठिन है वह यदि किसीके पास यत्किंचित् है भी तो गोपनीयवचनोंके कारण किसीको दर्शन भी नहीं कराता यदि थोडा बहोत मिलता भी है तो अशुद्ध मिलता है किसीका पूजन नहीं किसीकी पीठशक्तिका पता नहीं किसीमें आवरणका ठिकांना नहीं कहीं केवल मंत्र ही मिलता है आप कहो कि ऐसे विधानोंसे सिद्धि किस प्रकार हो सकती है इसी कारण अबके मनुष्योंके अनुष्ठान करनेपर सिद्धि नहीं प्राप्त होनेके कारण मंत्रशास्त्रको झूठा मानने लगे हैं। ऐसा मानना विद्वज्जनोंकी भूल है। कारण कि प्रथम तो शिवजी महाराजके वाक्य को मिथ्या मानना ही अज्ञानताका कारण होता है। दूसरे कुछ दिनों पहेले ही मंत्रशास्त्रका चमत्कार आपलोगोंके दृष्टिगोचर होता ही था। इससे मंत्रशास्त्रको मिथ्या किस प्रकार बना सकते हो। किंतु ठीक ठीक विधानोंका न मिलना और मिलनेपर आप लोगोंके चित्तकी कातरता ही सिद्धिके अवरोधका कारण होता है मंत्रशास्त्रको मिथ्या बताना प्रत्यक्षमें भूल है। आशा है कि आप लोग विश्वास रक्खोगे कि मंत्रशास्त्र झूठा नहीं है। किन्तु इसकी क्रिया गुप्त हो रही थी और कुछ साधनको साहस कम होनेके कारण मंत्रशास्त्रको झूठा मानना पडा था। ऐसे ऐसे भ्रमोंको दूर करनेके निमित्त ही मंत्रशास्त्रमें शिरोमणि इस मंत्रमहार्णवका जन्म हुआ है। किंतु वैष्णव शैव और शाक्तोंके मनको प्रफुल्लित करनेके निमित्त ही अनेक प्राचीन मंत्रशास्त्रोंकी सहायतापूर्वक इस मंत्रमहार्णवको पंडित मंत्रशास्त्री माधवराय वैद्य प्रयागराजनिवासीने संग्रह किया है। इसको अवलोकन करनेसे इष्टदेवताको प्रसन्न करनेके निमित्त सम्पूर्ण विधान आपलोगोंको एक ही स्थानमें मिलजायगा। न तो सम्पूर्ण ग्रंथको उलट पुलट करना होगा न तो मूल श्लोकोंको लगाकर आधी बातें समझना पडेगा न मंत्रशास्त्रियोंके पीछे २ भटकना पडेगा मंत्रमहार्णवको हाथमें लेते ही आपको इष्टदेवताका मंत्रोद्धार, न्यास, ध्यान, पीठपूजा, पीठशक्ति, यंत्रोद्धार, देवासन, प्रतिष्ठा, आवरणपजा षोडशोपचारपूजा, स्तोत्रादि सम्पूर्ण पञ्चांग ही पद्धतिकी रीतिपर एक ही स्थानमें मिलजावेंगे

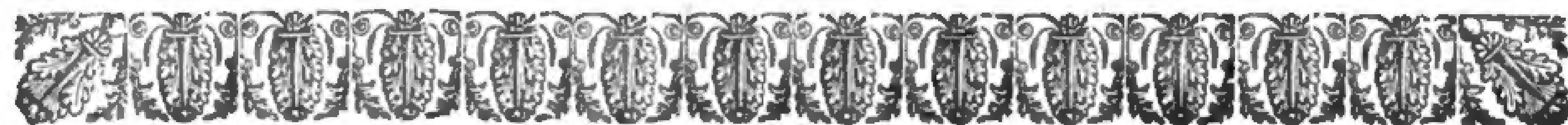
सिर्फ पत्रोंको हाथमें लेकर कार्य्य स्वयं वा यजमानको कराते चले जावो क्रमपूर्वक मिलेगा प्रसंग कहीं खण्डित नहीं होगा जिसके द्वारा आपके मंत्रकी सिद्धि होकर प्रयोगोंके करनेमें समर्थ हो सकते हैं। इस मंत्रमहार्णवमें कोई भी मंत्र ऐसा आपको नहीं मिलेगा जिसका सम्पूर्ण विधान आपको उसी स्थानमें न मिलजावे किन्तु अवश्य ही मिलेगा। और ऐसा कोई देवता, दैत्य, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, योगिनी, अप्सरा, देवकन्या, नागकन्या, राक्षस,प्रेतादिक नहीं होगा जिसका पूर्णविधान आपको मंत्रमहार्णवमें न मिल जावे किंतु सभी मिलेंगे। और लोपाञ्जन, निधिग्रहणाञ्जन, रासायनिक क्रिया, कल्पादिक,मशमेरेजम,स्वप्नसिद्धि,कर्णपिशाचिनी,पुत्रोत्पत्ति, मोहनादि षट् प्रयोग, नाना चेटकादि अनेक प्रकारके आपको इस मंत्रमहार्णवमें मिलेंगे मंत्रमहार्णवमें एक विचित्रता यह है कि प्रत्येक देवताओं और प्रत्येक कार्योंकी सिद्धिके पृथक्पृथक् अर्थतरंग किये गये हैं जिसमें किसी विषयके देखने वालोंको सम्पूर्ण ग्रंथ उलट पुलट न करना पडे. ऐसा कोई भी कार्य्य नहीं होगा जिसके सिद्ध करनेके निमित्त अनुष्ठान आपको मंत्रमहार्णवमें न मिले नहीं सम्पूर्ण ही मिलेगा। जहांतक मेरी दृष्टिमें आया है सभी विषय एकत्रित कर दिये गये हैं। मेरी बुद्धिमें तो इस समय मंत्रशास्त्र जितने प्रचलित हो रहे हैं सब मंत्रमहार्णवके उदरस्थ होगये हैं और जो बिलकुल लुप्त होगये हैं उनके उद्धार करनेमें पुस्तकोंके न मिलनेके कारण मैं समर्थ नहीं हुआ कृपापूर्वक इतनेमें ही संतोष करें और भी मंत्रमहार्णवमें ऐसी सुगम रीतियां दीगई हैं कि बडे २ विद्वज्जनोंके समान न्यून विद्यावाले भी सुगमतापूर्वक विचारांश करके अनुष्ठानोंके द्वारा अपने कार्योंकी सिद्धि करनेमें समर्थ होते हैं और कहते हैं कि आप लोग मन्त्रशास्त्रसे क्यों अश्रद्धा करते हैं आनंदपूर्वक रीत्यनुसार अनुष्ठान करें कृतकार्य्य होवोगे ब्राह्मण पूर्वकालमें मंत्रशास्त्रकी ही सिद्धिके कारण महत्त्वको प्राप्त थे उसको आपलोग क्यों नहीं अंगीकार करते जिसमें नाना क्लेशोंसे मुक्त होकर अंतकालमें देवलोक प्राप्ति होवे. विशेष लिखना वृथा है एक वार मंत्रमहार्णवको अवलोकन करनेसे

स्वयं ही ग्रंथका गुणदोष प्रगट हो जावेगा यदि आप लोग अपनी दयालुताके कारण मंत्रमहार्णवको अपने कोमल हृदयरूपी मानस सरमें हंसवत् इस ग्रंथको स्थान देंगे तो थोडे ही दिनमें और भी कई विषयोंके ग्रंथ संग्रह करके आप लोगोंकी भेट करूंगा इस मेरे संगृहीत मंत्रमहार्णव ग्रंथके मुद्रणादि अधिकार मैंने मुंबईके "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेसके मालिक शेठ खेमराज श्रीकृष्णदासजीको दिये हैं इसमेंसे किसी भागको छापनेका कोई भी साहस नहीं करना ।

इत्यलं बहुनोल्लिखितेन-

विदुषां कृपाभिलाषिवरः-

ग्रंथसंग्रहीता.



श्रीवैकुण्ठविहारिणे नमः ।

अथ श्रीमन्त्रमहार्णव-विषयानुक्रमणिकाप्रारम्भः ।

॥ ७ ॥

उत्तरखंडे वशीकरणतन्त्रेऽष्टमस्तरंगः ।

समाप्तेयं मंत्रमहार्णवग्रंथस्थविषयानुक्रमणिका
शिवचरणयोरर्पितास्तु ।

इति मन्त्रमहार्णव-विषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ ॐ सरस्वत्यै नमः ॥ ॥ श्रीगुरुचरणकमलेभ्यो नमः ॥ ॥ गणपतिं प्रणमामि सुसिद्धिदं हरसुतं कुचमध्य मुग्धं विभुम् । गिरिसुतां गणराजसुवंदितां शिवमिहेप्सितदं शिवदं नृणाम् ॥ १ ॥ श्रीसूर्यप्रभृतीन्सुरांश्च सततं ये साक्षिणः कर्मणां राधा कृष्णपदारविन्दयुगलं ध्येयं सदा योगिभिः ॥ सावित्र्या सुविभूषितं सुरवरं ब्रह्माणमीडेऽत्र ते ग्रंथे मंत्रमहार्णवे प्रतिदिनं कुर्वन्तु सन्मंगलम् ॥ २ ॥ दृष्ट्वा तंत्राण्यनेकानि माधवाख्येन धीमता ॥ वक्ष्यते कलिसिद्धोऽयं ग्रंथो मंत्रमहार्णवः ॥ ३ ॥ सर्वतंत्रैकमुकुटं सर्वसारमयं ध्रुवम् ॥ वक्ष्यामि परमप्रीत्या रहस्यं सर्वमंत्रिणाम् ॥ ४ ॥ नामूलं लिख्यते किंचिदिह विज्ञेयमादरात् ॥ नैवात्र संशयः कार्यो नानाभेद विधानके ॥ ५ ॥ तंत्रांतरेष्वनेकानि विधानानि मुनीश्वरैः ॥ उक्तान्यनेकदेवानां प्रसिद्धानि च संति वै ॥ ६ ॥ देशदेशाच्च तेषां वै संग्रहः क्रियते मया ॥ साधकानां हितार्थाय श्रीदुर्गायाः प्रसादतः ॥७॥ त्रीणि खण्डानि ग्रंथेऽस्मिन्पूर्वं मध्यं तथोत्तरम् ॥ पुंदेवानां पूर्वखण्डे स्त्रीदेवीनां च मध्यमे ॥ यक्षिणीप्रभृतीनां तु तथैवान्तरखण्डके ॥८॥ अनुष्ठानं मया प्रोक्तं तरंगैस्तु पृथक्पृथक् ॥९॥ संगृहीतमिमं ग्रन्थं मया च लघुबुद्धिना ॥ अंगीकुर्वंतु शास्त्रज्ञा दयां कृत्वा ममोपरि ॥१०॥ यदि दोषो भवेत्कुत्रचिन्मदज्ञानकारणात् ॥ प्रार्थये सुजनास्तद्वै क्षमध्वं मे ऽपराधकम् ॥ ११ ॥ यदत्र वाक्यमधिकं न्यूनं यत्र च कुत्रचित् ॥ रोषमुत्सृज्य तत्सर्वं निर्दोषं कुरुत द्विजाः ॥ १२ ॥ (तत्रादौ तंत्रसंज्ञाः) सिद्धीश्वरं महातंत्रं कालीतंत्रं कुलार्णवम् ॥ ज्ञानार्णवं नीलतंत्रं फेत्कारीतंत्रमुत्तमम् ॥ १३ ॥ देव्यागमं चोत्तराख्यं श्रीक्रमं सिद्धियामलम् ॥ मत्स्यसूक्तं सिद्धिसारं सिद्धिसारस्वतं तथा ॥ १४ ॥ वाराहीतंत्रं देवेशि योगिनीतंत्रमुत्तमम् ॥ गणेशमर्षिणीतंत्रं नित्यतंत्रं शिवागमम् ॥ १५ ॥ चामुंडाख्यं महेशानि मुंडमालाख्यतंत्रकम् ॥ हंसमाहेश्वरं तंत्रं निरुत्तरमनुत्तमम् ॥ १६ ॥ कुलप्रकाशकं देवि कल्पं गांधर्वकं शिवे ॥ क्रियासारं निबंधाख्यं स्वतंत्रं तंत्रमुत्तमम् ॥१७ ॥ सम्मोहनं तंत्रराजं ललिताख्यं तथा शिवे ॥ राधाख्यं मालिनीतंत्रं रुद्रयामलमुत्तमम् ॥ १८ ॥ बृहच्च श्रीक्रमं तंत्रं गवाक्षं कुसुमादिनि ॥ विशुद्धेश्वरतंत्रं च मलिनीविजयं तथा ॥ १९ ॥ समयाचारतंत्रं च भैरवीतंत्रमुत्तमम् ॥ योगिनीहृदयं तंत्रं भैरवं परमेश्वरि ॥२० ॥ सनत्कुमारकं तंत्रं योनितंत्रं प्रकीर्तितम् ॥ तंत्रांतरं च

देवीशि नवरत्नेश्वरं तथा ॥ २१॥ कुलचूडामणिं तंत्रं भावचूडामणीयकम् ॥ तंत्रदेवप्रकाशं च कामाख्यानामकं तथा ॥ २२ ॥ कामधेनुं कुमारीं च भूतडामरसंज्ञकम् ॥ २२ ॥ नलिनीविजयं तंत्रं यामलं ब्रह्मयामलम् ॥२३॥ विश्वसारं महातंत्रं महाकुलकुलांतकम् ॥कुलोड्डरीं कुब्जकाख्यं यंत्रचिंतामणीयकम् ॥ २४ ॥ एतानि तंत्ररत्नानि सफलानि युगे युगे ॥ कालीविलासकादीनि तंत्राणि परमेश्वरि ॥ २५ ॥ कलिकाले प्रसिद्धानि अश्वाक्रांतासु भूमिषु ॥ महानीचानि तंत्राणि अविकल्पे महेश्वरि ॥ २६ ॥ अथ साध्यजन्मनक्षत्रवृक्षा यथा (शारदातिलके) कारस्करोऽथ धात्री स्यादुदुंबरतरुः पुनः ॥ जंबूः खदिरकृष्णाख्यौ वंशपिप्पलसंज्ञकौ ॥ २७ ॥ नागरोहिणी नामानौ पलाशप्लक्षसंज्ञकौ ॥ अंबष्ठबिल्वार्जुनाख्यविकंकतमहीरुहाः ॥ २८ ॥ बकुलः सरलः सर्जो वंजुलः पनसार्ककौ ॥ शमीकदम्ब निंबाम्रमधूका वृक्षशाखिनः ॥ २९ ॥ इत्यश्विन्यादिक्रमेण योजयेत् ॥ अथ युगभेदेन देवताभेदः । (पूजास्कंधे) ब्रह्मा कृतयुगे देवस्त्रेतायां भगवान् रविः ॥ द्वापरे भगवान् विष्णुः कलौ देवो महेश्वरः ॥३०॥ अथ पुरश्चरणकरणार्थमादावावश्यकज्ञातव्यपदार्थानाह (कुलार्णवे) विधिं मंत्रं च करणीं योनिमार्थं च पक्षजम् ॥ दीपार्थं कूर्मचक्राणि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३१ ॥ ऋषिच्छंदो देवतांगन्यासध्यानार्चनादिकम् ॥ बीजशक्ती कालवेधौ ज्ञात्वा मंत्राणि साधयेत् ॥ ३२ ॥ पंचशुद्धासनं प्राणायामन्यासाक्षमालिकाः ॥ दोषसंस्कारशुद्धादीन् ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥३३॥ साध्यसाधककर्माणि लेखन्या द्रव्यपंचकम् ॥ स्थानं यंत्रप्रमाणं च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३४॥ अथवासनादिदिग्वर्णनाडीतत्त्वानुसंगतिम् ॥ देवताकालमुद्रां च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३५ ॥ उत्पत्तिरसनावर्णान्मूर्तिसंस्कारसंस्थितिम् ॥ कुंडद्रव्यप्रमाणादीन् ज्ञात्वा होमं समाचरेत् ॥ ३६ ॥ अग्निप्रभां धूम्रवर्णं ध्यानगंधशिखाकृतीः॥ दूतचेष्टादिकं ज्ञात्वा कल्पयेत्तु शुभाशुभम् ॥ ३७ ॥ मंत्रतत्त्वानुसंधानं देहावेशादिलक्षणम् ॥ मंत्रोच्चारणभेदे च ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ३८ ॥ मंडलं कलशं दिव्य शुद्धगंधाष्टकादिकम् ॥दीक्षां वामप्रदायीं च ज्ञात्वा दीक्षां समाचरेत् ॥३९॥ नित्यं नैमित्तिकं काम्यं नियमं नाम वासनाम् ॥ पूजाधारणयंत्राणि ज्ञात्वा कर्माणि साधयेत् ॥ ४० ॥ पूजागृहप्रवेशादि कुलपूजनलक्षणम् ॥ कुलद्रव्यादिशुद्धिं च ज्ञात्वा

पूजां समाचरेत् ॥ ४१ ॥ अथ गुरुशिष्यपरीक्षणम् ॥ ज्ञानेन क्रियया वापि गुरुः शिष्यं परीक्षयेत् ॥ संवत्सरं तदर्द्धं वा तदर्द्धं वा प्रयत्नतः ॥४२॥ शिष्योऽपि लक्षणैरेतैः कर्याद्गुरुपरीक्षणम् ॥ आनंदाद्यैर्जपैःस्तोत्रैर्ध्यानहोमार्चनादिषु ॥ ४३ ॥ ज्ञानोपदेशसामर्थ्यं मंत्रशुद्धमपीश्वरम् ॥ बोधकत्वं च विज्ञाय शिष्यो भूयान्न चान्यथा ॥ ४४ ॥ (कुलार्णवतंत्रे) श्रीगुरुः परमेशानि शुद्धवेशो मनोहरः ॥ सर्वलक्षणसंपन्नः सर्वावयवशोभितः ॥ ४५ ॥ अग्रगण्यो गभीरश्च पात्रापात्रविशेषवित् ॥ शिवविष्णुसमः साधुर्न च दर्शनदूषकः ॥ ४६ ॥ नित्यनैमित्तिके काम्ये रतः कर्मण्यनिन्दिते ॥ यदृच्छालाभसंतुष्टो गुणदोषविभेदकः ॥ इत्यादिलक्षणोपेतः श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥ ४७ ॥ अथ गुरुमाहात्म्यम् ॥ अत्रिनेत्रः शिवः साक्षादचतुर्बाहुरच्युतः ॥ अचतुर्वदनो ब्रह्मा श्रीगुरुः कथितः प्रिये ॥४८॥ अथ त्याज्यगुरुः ॥ निन्दितस्तु पितुर्मंत्रस्तथा मातामहस्य च ॥ सोदरस्य कनिष्ठस्य वैरिपक्षाश्रितस्य च ॥ ४९ ॥ शूद्राणां च तथा स्त्रीणां गुरुत्वं न कदाचन ॥ योग्यमाद्यं गुरुं त्यक्त्वा शिष्यः शूद्रं क्रियाविदम् ॥ गुरुं समाश्रयेदन्यं यः प्रयाति स दुर्गतिम् ॥ ५० ॥ अथ त्याज्यशिष्यः ॥ न देयमर्थलुब्धाय पिशुनायास्थिराय च ॥ भक्तिश्रद्धाविहीनाय शुश्रूषाविमुखाय च ॥ ५१ ॥ दीक्षामुहूर्तनिर्णयः ॥ वैशाखे श्रावणे वापि आश्विने कार्तिकेऽथवा ॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे वा कुर्य्यान्मंत्रस्य दीक्षणम् ॥ ५२ ॥ (सिद्धांतशेखरे) ॥ शरत्काले च मंत्रस्य दीक्षा श्रेष्ठफलप्रदा ॥ फाल्गुने मार्गशीर्षे च ज्येष्ठे दीक्षा तु मध्यमा ॥ ५३ ॥ आषाढे श्रावणे माघे कनिष्ठा सन्निराहृता ॥ निन्दितश्चाधिमासस्तु पौषो भाद्रपदस्तथा ॥ ५४ ॥ मुक्तिकामैः कृष्णपक्षे भूतिकामैः सिते सदा ॥ पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ ५५ ॥ त्रयोदशी च दशमी प्रशस्ताः सर्वकामदाः ॥ रवौ गुरौ विधौ दीक्षा कर्तव्या बुधशुक्रयोः ॥ ५६ ॥ अश्विनीरोहिणीस्वातीविशाखाहस्तभेषु च ॥ ज्येष्ठोत्तरात्रये चैव कुर्य्यान्मंत्राभिषेचनम् ॥ ५७ ॥ श्रवणार्द्राधनिष्ठाश्च पुष्यः शतभिषा तथा ॥ दीक्षानक्षत्रजातानीत्याहुस्तंत्रार्थकोविदाः ॥ ५८ ॥ मेषकर्कटकन्यासु तुलायां वृश्चिके तथा ॥ मकरे कुम्भके चैव दीक्षा सर्वशुभावहा ॥ ५९ ॥ षष्ठी भाद्रपदे मास्याश्विने कृष्णा त्रयोदशी ॥ कार्तिके नवमी शुक्ला श्रावणे कृष्णपंचमी ॥

॥ ६० ॥ एतानि देवपर्वाणि तीर्थकोटिफलानि च ॥ निन्दितेष्वपि मासेषु दीक्षोक्ता ग्रहणे शुभा ॥ ६१ ॥ न मासतिथिवारादिशोधनं सूर्यपर्वाणि ॥ सिद्धिर्भवति मंत्रस्य विनाभ्यासेन वेगतः ॥ ६२ ॥ (रुद्रयामले) सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे महापर्वणि चैव हि ॥ मंत्रदीक्षां प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत् ॥ ६३ ॥ (संहितायाम्) विषुवेऽप्ययनद्वंद्वे संक्रांत्यां दमनोत्सवे ॥ दीक्षा कार्यान्यकालेऽपि पवित्रे गुरुपर्वणि ॥ ६४ ॥ (शैवागमे च) ॥ सतीर्थेऽर्कविधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च ॥ पुण्यक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे देवीपीठे चतुष्टये ॥ प्रयागे श्रीगिरौ कश्यां कालाकालं न शोधयेत् ॥ ६५॥ (उपदेशसुधातंत्रे) ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे चैव सिद्धक्षेत्रे शिवालये ॥ मंत्रमात्रप्रकथनमुपदेशः स उच्यते ॥६६॥ (सारसंहितायाम्) तिथिं विनापि दीक्षायां विशिष्टं वासरं शृणु ॥ दुर्लभे सद्गुरूणां च सकृत्संग उपस्थिते ॥ ६७ ॥ तदनुज्ञा यदा लब्धा स दीक्षावसरो महान् ॥ ग्रामे वा यदि वारण्ये क्षेत्रे वा यदि वा निशि ॥ आगच्छति गुरुर्दैवो यदा दीक्षा तदा भवेत् ॥ ६८ ॥ (तत्त्वसारे) यदेवेच्छा तदा दीक्षा गुरोराज्ञानुरूपतः ॥ न तिथिर्न व्रतो होमो न स्नानं न जपक्रिया ॥ दीक्षायाः कारणं किंतु स्वेच्छा वाज्ञा गुरोरिह ॥ ६९ ॥ (वैशंपायनसंहितायाम्) ॥ संध्यागर्जितनिर्घोषभूकंपोल्कानिपातनम् ॥ एतानन्यांश्च दिवसान् स्मृत्युक्तांश्च परित्यजेत् ॥ ७० ॥ (नारदीये) आचार्यादनभिप्राप्तमंत्रश्चादत्तदक्षिणः ॥ अभ्यस्तोऽपि सदा मंत्रः श्रेयसे नावकल्पते ॥ ७१ ॥ अथानुष्ठानारंभे मुहूर्तनिर्णयः (रुद्रयामले) कार्तिकाश्विनवैशाखमाघेऽथ मार्गशीर्षके ॥ फाल्गुने श्रावणे मंत्रपुरश्चर्या प्रशस्यते ॥ ७२ ॥ (वैशंपायनसंहितायाम्) ॥ मंत्रस्यारंभणं मेषे धनधान्यप्रदं भवेत् ॥ वृषे मरणमाप्नोति मिथुनेऽपत्यनाशनम् ॥ ७३ ॥ कर्कटे सर्व्वसिद्धिः स्यात् सिंहे मेधाविनाशनम् ॥ कन्या लक्ष्मीप्रदा नित्यं तुलायां सर्वसिद्धयः ॥ ७४ ॥ वृश्चिके स्वर्णलाभः स्याद्धनुर्मानविनाशनम् ॥ मकरः पुण्यदः प्रोक्तः कुंभो धनसमृद्धिदः ॥ मीनो दुःखप्रदो नित्यमेवं मासविधिक्रमः ॥ ७५ ॥ (तंत्रसारे) चन्द्रतारानुकूले च शुक्लपक्षे शुभे दिने ॥ आरंभे तु पुरश्चर्य्या हरौ सुप्ते न चाचरेत् ॥ ७६ ॥ (स्मृतितत्त्वे) ॥पूर्णिमा पंचमी चैव द्वितीया सप्तमी तथा ॥ त्रयोदशी च दशमी

प्रशस्ता सर्वकामदा ॥ या तिथिर्यस्य देवस्य तस्यां वा शुभदः स्मृतः ॥ ७७ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) मंत्रारंभो रवौ शुक्रे बुधे जीवे विशेषतः ॥ शनौ मृत्युः क्षयो भौमे सोमे मध्यफलं स्मृतम् ॥ ७८ ॥ (मुहूर्तगणपतौ) पुनर्वसुद्वये हस्ते त्र्युत्तरे श्रवणत्रये ॥ रेवतीद्वितये हस्तेऽनुराधारोहिणीद्वये ॥ शांतिकं पौष्टिकं कर्म्म पुण्याहे कीर्तितं बुधैः ॥ ७९ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) अश्विनीरोहिणी स्वातीविशाखाहस्तभेषु च ॥ ज्येष्ठोत्तरात्रयेष्वेव कुर्यान्मंत्राभिषेचनम् ॥ ८० ॥ (शब्दकल्पद्रुमे) आर्द्रायां कृत्तिकायां च मंत्रारंभः प्रशस्यते ॥ यदीशस्य कृशानोर्वा मंत्रारंभं यथाक्रमम् ॥ ८१ ॥ स्थिरलग्नं विष्णुमंत्रे शिवमंत्रे चरं ध्रुवम् ॥ द्विस्वभावगतं लग्नं शक्तिमंत्रे प्रशस्यते ॥ ८२ ॥ अथ भक्ष्याभक्ष्यनिर्णयः ॥ (शारदातिलके)॥ भक्ष्यं हविष्यं शाकानि विहितानि फलं पयः ॥ मूलं सक्तुर्यवो त्पन्नो भक्ष्याण्येतानि मंत्रिणाम् ॥ ८३ ॥ (पुरश्चरणदीपिकायाम्) चरुमूलफलक्षीरदधिभिक्षान्नसक्तवः ॥ शाकाश्चाष्टविधं चान्नं साधकस्योच्यते बुधैः ॥ ८४ ॥ (नारदीये) ॥ पयोव्रतस्य सिद्धिः स्याल्लक्षेणैव न संशयः ॥ शाकभक्ष्यहविष्याशी कलौ लक्षत्रयं जपेत् ॥ ८५॥ (देवीभागवते) भिक्षान्नं शुद्धमानीय कृत्वा भागचतुष्टयम् ॥ एको भागो द्विजे भक्तो गोग्रासे च द्वितीयकः ॥ ८६ ॥ अतिथिभ्यस्तृतीयस्तु तदूर्ध्वं शिशुभार्ययोः ॥ आश्रमस्य यथा यस्य कृत्वा ग्रासाविधिं क्रमात्॥ ८७॥ तदूर्ध्वं [redacted] स्याद्वा वानप्रस्थगृहस्थयोः ॥ कुक्कुटांडप्रमाणं तु ग्रासमानं विधीयते ॥ ८८ ॥अष्टौ ग्रासान्गृहस्थश्च वानप्रस्थस्तदर्धकम् ॥ ब्रह्मचारी यथेष्टं च गोमूत्रविधिपूर्वकम्॥८९॥ ब्रह्मपत्रे तु भुंजीत मध्यपत्रविवर्जिते । दक्षं ब्रह्मोत्तरं विष्णुर्मध्यपत्रं महेश्वरः॥अन्यथा भोजनाद्दोषात् सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ ९० ॥ अथ जपस्थाननिर्णयः ॥ (पुरश्चरणचंद्रिकायाम्) पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम् ॥ तीर्थप्रदेशाः सिंधूनां संगमः पावनं वनम् ॥ ९१ ॥ उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः ॥ देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम्॥ साधनेषु प्रशस्यंते स्थानान्येतानि मंत्रिणाम् ॥ ९२ ॥ (नारदीये)॥शिवस्य सन्निधाने च सूर्याग्न्योर्वा गुरोरपि ॥ दीपस्य ज्वलितस्यापि जपकर्म प्रशस्यते ॥ ९३ ॥ अटवी पर्वते पुण्ये नदीतीराणि यानि च ॥ (तंत्रांतरेऽपि) अश्वत्थामलकीमूलं गोशाला जलमध्यतः ॥ ९४ ॥ (रुद्रयामले) म्लेच्छ

दुष्टमृगव्यालशंकातंकादिवर्जिते ॥ कांते च पावने निंदारहिते भक्तिसंयुते ॥ ९५ ॥ (समयाचारतंत्रे) शृणु देवि विशेषेण उत्तराम्नाय हेतवे ॥ वेश्यागृहे श्मशाने वा गत्वा मैथुनमाचरेत् ॥ ९६ ॥ ततो जपादिकं देवि कृत्वाशु लभते फलम् ॥ अथवा स्वगृहे रात्रौ भक्तिमान् यः समाचरेत् ॥ स प्राप्नोति फलं सर्वं चिंताभयविवर्जितः ॥ ९७ ॥ (ज्ञानार्णवेऽपि) यत्र वा कुत्रचिन्नागे लिंगं यत्प श्चिमासुखम् ॥ स्वयंभूर्बाणलिंगं वा वृषशून्यं जलास्थितम् ॥ ९८ ॥ (फेत्कारिणीतंत्रे) एकलिंगे श्मशाने वा शून्यागारे चतुष्पथे ॥ तत्रस्थः साधयेद्योगी विद्यां त्रिभुवनेश्वरीम् ॥ ९९ ॥ (महाकपिलपंचरात्रे) कुटीविरक्तामित्येते देशाः स्युर्मंत्रसिद्धिदाः ॥ एकांते मठिकामध्ये स्थातव्यं हठयोगिना ॥ १०० ॥ (स्थानभेदेन जपमाहात्म्यम्) गृहे शतगुणं विद्याद्गोष्ठे लक्षगुणं भवेत् ॥ कोटिर्देवालये पुण्यमनंतं शिवसन्निधौ ॥ १०१ ॥ (शिववचनात्) गृहे जपं समं विद्याद्गोष्ठे शतगुणं भवेत् ॥ नद्यां शतसहस्रं स्यादनंतं शिव सन्निधौ ॥ १०२ ॥ समुद्रतीरे च ह्रदे गिरौ देवालयेषु च ॥ पुण्याश्रमेषु सर्वेषु जपः कोटिगुणो भवेत् ॥ १०३ ॥ (स्थानभेदेन कालभेदः) वटेऽरण्ये श्मशाने च शून्यागारे चतुष्पथे ॥ अर्धरात्रेऽपि मध्याह्ने पुरश्चरणमारभेत् ॥ १०४ ॥ (स्थानलक्षणम्) ग्रामा त्क्रोशमितं स्थानं नद्यादौ स्वेच्छया मितम् ॥ नगरादाथ क्रोशं क्रोशयुग्ममथापि वा ॥ आहारादिविहारार्थं तावतीं भूमिमाक्रमेत् ॥ (एकलिंगलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) पंचक्रोशांतरे यत्र न लिंगान्तरमीक्ष्यते ॥ तदेकलिंगमाख्यातं तत्र सिद्धिरनुत्तमा ॥ १०५ ॥ (श्मशानलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) दह्यंते व्यसवो यत्र शवकीलकसंकुले ॥ गृध्रगोमायुकाकाद्यैर्मांसलुब्धैर्यदावृतम् ॥ तच्छ्मशानमिति ख्यातं पिशाचगणसेवितम् ॥ १०६ ॥ (चितालक्षणम्) असंस्कृता चिता ग्राह्या न तु संस्कारसंयुता ॥ चांडालादिषु संप्राप्ता केवलं शीघ्रसिद्धिदा ॥ १०७ ॥ (अत्राधिकारिणः) महाबलो महाबुद्धिर्महासाहसिकः शुचिः ॥ महास्वच्छो दयावांश्च सर्व भूतहिते रतः ॥ १०८ ॥ (शून्यागारलक्षणं त्रिशक्तिरत्ने) काकादिनीडसंयुक्तं क्रिमिच्छत्रादिसंयुतम् ॥ नागैर्दूरनिर्मुक्तं साध्र

सोऽत्रवकारणम् ॥ सौधं संवृद्धवासौधं शून्यागारं तदुच्यते ॥ १०९ ॥ (चतुष्पथलक्षणं फेत्कारिणीतंत्रे) चतुर्णां च पथां यत्र संपातो युगपद्भवेत् ॥ तच्चतुष्पथमित्युक्तं रजन्यामिष्टदायकम् ॥ ११० ॥ (मठलक्षणं कुलार्णवे) अल्पद्वारमरंध्रगर्तविवरं नात्युच्चनीचायतं सम्यग्गोमयसांद्रलिप्तममलं निःशेषजंतूज्झितम् ॥ बाह्ये मंडपवेदिकूपरुचिरं प्राकारसंवेष्टितं प्रोक्तं योगमठस्य लक्षणमिदं सिद्धैर्हठाभ्यासिभिः ॥१११॥ (अथ दिङ्निर्णयः) उपविश्यासने मंत्री प्राङ्मुखो वा ह्युदङ्मुखः॥रात्रावुदङ्मुखैः कार्यं देवकार्यं सदैव हि ॥११२॥ (महाभारते उद्योगपर्वणि) सुपर्ण उवाच ॥ अनुशिष्टोऽस्मि देवेन गालवायातियोगिना ॥ ब्रूहि कामं तु कां यामि द्रष्टुं प्रथमतो दिशम् ॥ ११३ ॥ पूर्वां वा दक्षिणां वाहमथवा पश्चिमां दिशम् ॥ उत्तरां वा द्विजश्रेष्ठ कुतो गच्छामि गालव ॥ ११४ ॥ गालव उवाच ॥ यस्यामुदयते पूर्वं सर्वलोकप्रभावनः ॥ सविता यत्र संध्यायां साध्यानां वर्तते तु यः ॥ नतद्वारं द्विजश्रेष्ठ दिवसस्य तथाध्वनः ॥ ११५ ॥ (शिवपूजनादिग्विभागः शिवरहस्ये) उत्तराभिमुखैः कार्यं श्रीमहादेवपूजनम् ॥ प्राङ्मुखेनाथवा कार्यं श्रीमहादेवपूजनम् ॥ पश्चिमाभिमुखैर्वापि कर्तव्यं शिवपूजनम्॥दक्षिणाभिमुखैर्मर्त्यैर्न कर्तव्यं शिवार्चनम्॥११६॥(ताराकाल्युपासनायां दिग्विभागः फेत्कारिण्याम्) प्राङ्मुखोदङ्मुखो वापि वक्ष्यमाणक्रमेण तु ॥ श्रीकामः शान्तिकामो वा पश्चिमाभिमुखः स्थितः ॥ ११७ ॥ (कालिकापुराणे) दिग्विभागेषु कौबेरी दिक् शिवाप्रीतिदायिनी ॥ तस्मात्तन्मुख आसीनः पूजयेच्चंडिकां सदा ॥ ११८ ॥ (अथ स्नाननिर्णयः) स्नानं त्रिषवणं प्रोक्तमशक्तौ द्विः सकृत्तथा ॥ अस्नातस्य फलं नास्ति न च पितृनतर्पतः ॥ ११९ ॥ (अथ तिलकनिर्णयः) केशवाद्यभिधानैस्तु स्थानेषु द्वादशस्वपि ॥ ललाटोदरहृत्कंठदक्षपार्श्वांसकं ततः ॥ १२० ॥ वामपार्श्वांसकर्णे च पृष्ठदेशे ककुद्यपि ॥ ललाटे तु गदं कुर्याद्धृदये नंदकं पुनः ॥ १२१ ॥ शंखं चक्रं भुजद्वंद्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्द्धनि ॥ इत्थं तु वैष्णवः कुर्याच्छैवः कुर्यात्त्रिपुंड्रकम् ॥ १२२ ॥ अग्निहोत्रोत्थितं भस्मादायाग्निरिति मंत्रतः ॥ अभिमंत्र्य त्र्यंबकेन कुर्यात्पंच त्रिपुंड्रकम् ॥ १२३ ॥ (अथ

आसननिर्णयः ॥ (मंत्रमहोदधौ) जपेन्निधाय दर्भास्त्रीन्कुशचर्मवरासने ॥ काष्ठपल्लववंशाश्मगोशकृत्तृणमृन्मयम् ॥ विषमं कठिनं मंत्री त्यजेदासनमाधिदम् ॥ १२४ ॥ (तंत्रांतरे) वंशासने दरिद्रत्वं पाषाणे व्याधिसंभवः ॥ धरण्यां दुःखसंभूतिर्दौर्भाग्यं दारुकासने ॥ १२५ ॥ तूलकम्बलवस्त्राणि पट्टव्याघ्रमृगाजिनम् ॥ कल्पयेदासनं धीमान्सौभाग्यज्ञानसिद्धिदम् ॥ १२६ ॥ तृणासने यशोहानिः पल्लवे चित्तविभ्रमः ॥ कृष्णाजिने ज्ञानसिद्धिर्मोक्षश्रीर्व्याघ्रचर्मणि ॥ १२७ ॥ स्यात्पौष्टिकं च कौशेयं शांतिकं वेत्रविष्टरम् ॥ वंशासने व्याधिनाशो कम्बले दुःखमोचनम् ॥ १२८ ॥ स्यादाभिचारिकं नीले रक्ते वश्यादिकं भवेत् ॥ धवले शांतिकं मोक्षः सर्वार्थश्चित्रकम्बले ॥ सर्वाभावे त्वासनार्थं कुशविष्टरमिष्यते ॥ १२९ ॥ (हंसमाहेश्वरे) लोम्नि चैव यदासीनस्तदा सर्वं विनश्यति ॥ लोमस्पर्शनमात्रेण सिद्धिहानिः प्रजायते ॥ कुशासने मंत्रसिद्धिर्नात्र कार्या विचारणा ॥ १३० ॥ जान्वोरंतरे कृत्वा सम्यक्पादतले उभे ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी स्वस्तिकं तत्प्रचक्षते ॥ ऊर्वोरुपरि विन्यस्य सम्यक्पादतले उभे ॥ अंगुष्ठौ च निबध्नीयाद्धस्ताभ्यां व्युत्क्रमात्ततः ॥ १३१ ॥ पद्मासनमिति प्रोक्तं योगिनां हृदयंगमम् ॥ एकं पादमधः कृत्वा विन्यस्योरौ तथोत्तरम् ॥ ऋजुकायो विशेद्योगी वीरासनमितीरितम् ॥ १३२ ॥ (अथ मालानिर्णयः) अरिष्टपुत्रजीवैश्च शंखपद्मैर्मणिस्तथा ॥ कुशग्रंथिश्च रुद्राक्षा उत्तमं चोत्तरोत्तरम् ॥ १३३ ॥ (मंत्रखंडे) स्फाटिकी मौक्तिकी वापि प्रोतव्या सितसूत्रकैः ॥ सर्वकर्मसमृद्ध्यर्थं जपो रुद्राक्षमालया ॥ १३४ ॥ वैष्णवे तुलसीमाला गजदंतैर्गणेश्वरे ॥ त्रिपुराया जपे शस्ता रुद्राक्षै रक्तचन्दनैः ॥ १३५ ॥ (मंत्रखंडे) रेखयाष्टगुणं विद्यात् पुत्रजीवैर्दश स्मृतम् ॥ शतं चन्दनशंखैश्च प्रवालैस्तु सहस्रकम् ॥ १३६ ॥ स्फाटिकैर्लक्षसाहस्रं मौक्तिकैर्लक्षमेव च ॥ दशलक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते ॥ १३७ ॥ कुशग्रन्थ्या च रुद्राक्षैरनन्तगुणितं भवेत् ॥ अष्टोत्तरशतैर्माला पञ्चाशच्चतुराधिकैः ॥ १३८ ॥ सप्तविंशतिभिः कार्या एकग्रीवा समेरुका ॥ मुखं मखेन संयोज्य पुच्छं

पुच्छेन योजयेत् ॥ १३९ ॥ प्रोतव्या सितसूत्रेण सत्कर्मफलसिद्धये ॥ पट्टसूत्रकृता माला देव्याः प्रीतिकरी मता ॥ १४० ॥ कार्पा सैर्वैष्णवी माला पद्मसूत्रैरथापि वा ॥ ऊर्णाभिर्वल्कलैर्वापि शैवी माला प्रकीर्तिता ॥ १४१ ॥ कार्पाससूत्रैरन्येषां त्रिदध्याज्जपमालिकाम ॥ त्रिंशाद्भिः स्याद्धनं पुष्टिः सप्तविंशातिभिर्भवेत् ॥ १४२ ॥ पंचविंशतिभिर्मोक्षः पंच स्यादभिचारणे ॥ पंचाशाद्भिः कुलेशानि सर्वसिद्धिरुदीरिता ॥ १४३ ॥ जप्त्वाक्षमालां सकलां भ्रामयेदाशिखामणेः ॥ प्रदक्षिणाः पुनर्व्युत्क्रमाराभ्यैवं समाचरेत्॥१४४॥स्वयं वामेन हस्तेन जपमालां न संस्पर्शेत् ॥ अदीक्षितो द्विजो वापि स्पृशेच्चेच्छुद्धिमाचरेत् ॥ १४५ ॥ न धारयेत्करे मूर्ध्नि कंठे च जपमालिकाम् ॥ जपकाले जपं कृत्वा सदा शुद्धस्थले क्षिपेत् ॥१४६॥ गुरुं प्रकाशयेद्धीमान्मंत्रं नैव प्रकाशयेत् ॥ अक्षमालां च मुद्रां च गुरोरपि न दर्शयेत् ॥ १४७ ॥ कम्पनात्सिद्धिहानिस्स्याद्धननं बहुदुःखकृत् ॥ शब्दे जाते भवेद्रोगी करभ्रष्टा विनाशकृत् ॥ १४८ ॥ छिन्ने सूत्रे भवेन्मृत्युस्तस्माद्यत्नपरो भवेत् ॥ जपांते कर्णदेशे वा उच्चस्थानेऽथवा न्यसेत् ॥ १४९ ॥ इति ॥ (अथ रुद्राक्षमाहात्म्यं पद्मपुराणे) शिखायां हस्तयोः कंठे कर्णयोश्चापि यो नरः ॥ रुद्राक्षं धारयेद्भक्त्या शैवं लोकमवाप्नुयात्॥ १५० ॥रुद्राक्षे देहसंस्थे तु कुक्कुरो म्रियते यदि॥सोऽपि रुद्रपदं याति किं पुनर्मानवा गुह ॥१५१॥ यो ददाति द्विजातिभ्यो रुद्राक्षं भुवि षण्मुखम् ॥ तस्य प्रीतो भवेद्रुद्रः प्रयच्छति निजं पदम् ॥१५२॥ नववक्त्रं तु रुद्राक्षं धारयेद्वामबाहुना ॥ चतुर्दशमुखं चैव शिखायां धारयेद्बुधः॥१५३॥ सप्तविंशतिरुद्राक्षमालया देहसंस्थया ॥ यत्करोति नरः पुण्यं सर्वं कोटिगुणं भवेत् ॥१५४॥ (स्कंदपुराणे विशेषः) रुद्राक्षान्कण्ठदेशे दशनपरिमितान्मस्तके विंशती द्वे षट् षट् कर्णप्रदेशे करयुगलगता द्वादश द्वादशैव ॥ बाह्वोरिन्दोः कलाभिः पृथुकगिरिशिखासूत्रयोरेकमेकं वक्षस्यष्टाधिकं स्यात्कलयति सततं स स्वयं नीलकंठः ॥ १५५ ॥ (मुखभेदेन रुद्राक्षमाहात्म्यं स्कंदपुराणे) कार्तिकेय उवाच ॥ एकद्वित्रिचतुःपंचषट्सप्तवसवो नव ॥ दशैकादश द्वादश त्रयोदश चतुर्दश ॥१५६॥ एतेषां तु मुखानां तु देवता कोऽत्र शंकर ॥गुणं च कीदृशं तेषां कथयस्व यथार्थतः ॥ १५७ ॥ शंकर

उवाच ॥ एकवक्त्रः शिवः साक्षाद्ब्रह्महत्यां व्यपोहति॥द्विवक्त्रो देवदेव्यौ च गोवधं नाशयेद्ध्रुवम् ॥ १५८ ॥ त्रिवक्त्रो दहनः साक्षाद्भ्रूणहत्यां व्यपोहति ॥ चतुर्वक्त्रः स्वयं ब्रह्मा ब्रह्महत्यां व्यपोहति ॥ १५९ ॥ पंचवक्त्रः स्वयं रुद्रः कालाग्निर्नाम नामतः ॥ षड्वक्त्रः कार्तिकेयस्तु धारयेद्दक्षिणे भुजे ॥१६०॥ ब्रह्महत्यादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ सप्तवक्त्रो महासेनो ह्यनंतो नाम नागराट् ॥१६१॥ गुरुतल्पादिभिः पापैर्मुच्यते नात्र संशयः ॥ अष्टवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो विनायकः ॥ १६२ ॥ पृष्ठोदरकरेणापि संस्पृशेद्वा गुरुस्त्रियम् ॥ एवमादीनि पापानि चातिपापानि सर्वशः ॥१६३॥ विघ्नास्तस्य च नश्यंति मुक्तो याति परां गतिम् ॥ गुणा ह्येतेषु सर्वेषु अष्टवक्त्रेषु धारणात् ॥१६४॥ नववक्त्रो भैरवः स्याद्धारयेद्वामके भुजे ॥ कपिलो मुक्तिदः प्रोक्तो मम तुल्यबलो भवेत् ॥ १६५ ॥ लक्षकोटिसहस्राणि ब्रह्महत्यां करोति यः ॥ तत्सर्वं दहते शीघ्रं नववक्त्रस्य धारणात्॥१६६॥ दशवक्त्रो महासेनः साक्षाद्देवो जनार्दनः॥ ग्रहाश्चैव पिशाचाश्च वैताला ब्रह्मराक्षसाः ॥१६७॥पन्नगाश्च विनश्यंति दशवक्त्रस्य धारणात्॥ वक्त्रैकादशरुद्राक्षो रुद्र एकादशः स्मृतः॥१६८ ॥ शिखायां धारयेन्नित्यं तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ अश्वमेधसहस्रस्य वाजपेयशतस्य च ॥१६९॥ हेमशृंगस्य लक्षस्य सम्यग्दत्तस्य यत्फलम्॥तत्फलं समवाप्नोति रुद्रैकादशधारणात् ॥१७०॥रुद्राक्षद्वादशाक्षस्य कंठदेशे च धारणात्॥ आदित्यस्तुष्यते नित्यं द्वादशार्कव्यवस्थितः ॥ १७१ ॥ त्रयोदशमुखः कामः सर्वकाम फलप्रदः ॥ चतुर्दशास्यः श्रीकंठो वंशोद्धारकरः परः ॥१७२॥(अस्य धारणविधानं पद्मपुराणे) पंचामृतं पञ्चगव्यं स्नानकाले प्रयोजयेत् ॥ रुद्राक्षस्य प्रतिष्ठायां मन्त्रः पंचाक्षरो यथा ॥ ॐ त्र्यंबकादिमन्त्रं च यथा तेन प्रयोजयेत् ॥ १७३ ॥ (तत्र मंत्रः) ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्द्धनम् ॥ उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ ॐ हों अघोरे घोरे हुं घोरतरे हुं ॐ ह्रीं श्रीं सर्वतः सर्वांगे नमस्ते रुद्ररूपे हुम् ॥ इति मन्त्रः॥ अनेनापि च मंत्रेण रुद्राक्षस्य द्विजोत्तमः ॥ प्रतिष्ठां विधिवत्कुर्य्यात्ततोऽधिककफलं भवेत् ॥ ततो यथा

१ मतांतरे हरगौर्याविति पाठः । २ पद्मपुराणे-त्रिवक्त्रोऽग्निस्त्रिजन्मोत्थपापराशिं प्रणाशयेदिति पाठः । ३ पद्मपुराणे-पञ्चवक्त्रस्तु कालाग्निरगम्याभक्ष्यपापनुत् । इति पाठः । ४ पद्मपुराणे-गर्भहत्यां व्यपोहतीति पाठः । ५ पद्मपुराणे-शिवसायुज्यकारकः । इति पाठः । ६ पद्मपुराणे-द्वादशास्यो भवेदर्कः इति पाठः ।

स्वमंत्रेण धारयेद्भक्तिसंयुतः ॥ १७४ ॥ (तत्र क्रमेण मंत्रः) ॐ ॐ ह्रसं नमः १ ॐ ॐ नमः २ ॐ ॐ नमः ३ ॐ ह्रीं नमः ४ ॐ हूं नमः ५ ॐ हूं नमः ६ ॐ हुं नमः ७ ॐ सः हूं नमः ८ ॐ हं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रीं नमः ११ ॐ हूं ह्रीं नमः १२ ॐ क्षां चौं नमः १३ ॐ नमो नमः १४ ॥ इति रुद्राक्षधारणम् ॥ (अथ गोमुखीनिर्णयः) वस्त्रेणाच्छादितकरं दक्षिणं यः सदा जपेत् ॥ तस्य स्यात्सफलं जाप्यं तद्धीनमफलं स्मृतम् ॥ १७५ ॥ भूतराक्षसवेतालाः सिद्धगंधर्वचारणाः ॥ हरंति प्रकटं यस्मात्तस्माद्गुप्तं जपेत्सुधीः ॥१७६॥ अथांगुलीनिर्णयः ॥ (शिवाज्ञाविद्याग्रंथे) अंगुष्ठं मोक्षदं विद्यात्तर्जनी शत्रुनाशिनी ॥ मध्यमा धनदा शांतिकरस्त्वे वा ह्यनामिका ॥ १७७ ॥ कनिष्ठा कर्षणे शस्ता जपकर्मणि शोभने ॥ अंगुष्ठेन विना कर्म कृतं तदफलं यतः ॥ १७८ ॥ (ग्रंथांतरे) मध्यमानामिकांगुष्ठै रक्षमाला मणीशतैः ॥ एवं जपस्य चैकस्य क्रमोऽयं चालयेज्जपेत् ॥१७९॥ अंगुष्ठेन तु मोक्षाय मध्यमाधविवृद्धये॥जपेदनामिकांगुष्ठैर्नेतराभ्यां कदाचन ॥ अंगुष्ठमध्यमायोगात्सर्वसिद्धिप्रदासने ॥ (मतान्तरे) अंगुष्ठमध्यमाभ्यां च चालयेन्मध्यमध्यतः ॥ तर्जन्या न स्पृशेदेनां मुक्तिदो गणनक्रमः ॥१८०॥ अथ जपनिर्णयः (गोभिलमते) नैरन्तर्य्यविधिः प्रोक्तो न दिनं व्यतिलङ्घयेत् ॥ दिवसातिक्रमे तेषां सिद्धिरोधः प्रजायते ॥ १८१ ॥ शनैः शनैरतिस्पष्टं न द्रुतं न विलम्बितम् ॥ न न्यूनं नातिरिक्तं वा जपं कुर्य्याद्दिनेदिने ॥ १८२ ॥ (तंत्रसारे) मनः संहृत्य विषयान्मन्त्रार्थगतमानसः ॥ न द्रुतं न विलंबं च जपेन्मौक्तिकपंक्तिवत् ॥१८३॥ उच्चरेदर्थमुद्दिश्य मानसः स जपः स्मृतः ॥ जिह्वोष्ठौ चालयेत्किंचिद्देवतागतमानसः ॥ १८४ ॥ किंचिच्छ्रवणयोग्यः स्यादुपांशुः स जपः स्मृतः॥ जिह्वाजपः शतगुणः सहस्रं मानसः स्मृतः ॥ जिह्वाजपः स विज्ञेयः केवलं जिह्वया बुधैः ॥ १८५ ॥ वर्णलक्षं जपेन्मंत्रं तदर्धं वा महेश्वरि ॥ एकलक्षावधिं कुर्य्यान्नातो न्यूनं कदाचन ॥ १८६ ॥ कल्पान्ते तु कृते संख्या त्रेतायां द्विगुणा स्मृता ॥ द्वापरे त्रिगुणा प्रोक्ता कलौ संख्या चतुर्गुणा ॥ १८७ ॥ (मंत्रमहोदधौ)

---

१ स्कन्दपुराणे धारणमंत्रभेदः-ॐ ऐं नमः १ ॐ श्रीं नमः २ ॐ धुं धुं नमः ३ ॐ ह्रां हूं नमः ४ ॐ श्रीं नमः ५ ॐ ह्रीं नमः ६ ॐ ह्रीं नमः ॐ कं नमः ८ ॐ ह्रीं नमः ९ ॐ ह्रीं नमः १० ॐ श्रीं नमः ११ ॐ ह्रां ह्रीं नमः १२ ॐ ह्रैं स्त्रीं नमः १३ ॐ हं मां नमः १४-इति भेदः

पुरश्चरण एकस्मिन्कृते जन्मांतरौघतः ॥ मंत्रो यदि न सिद्धः स्यात्तदा तत्पुनराचरेत् ॥ १८८ ॥ (ग्रंथांतरे) सम्यगनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धिर्न जायने ॥ पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १८९॥ पुनरनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते॥ पुनस्तेनैव कर्तव्यं ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ १९० ॥ पुनः सोऽनुष्ठितो मंत्रो यदि सिद्धो न जायते ॥ उपायास्तत्र कर्तव्याः सप्त शंकरभाषिताः ॥ १९१ ॥ भ्रामणं रोधनं वश्यं पीडनं शोषपोषणे ॥ दहनांतं क्रमात्कुर्यात्ततः सिद्धो भवेत्पुनः ॥१९२॥ (मंत्रमहोदधौ) यद्वा समुद्रगामिन्यां नद्यामिंदुरविग्रहे ॥ स्पर्शान्मोक्षांतमाजप्य जुहुयात्तद्दशांशतः ॥ १९३ ॥ विप्रान्संभोज्य नानान्नैर्मंत्राणां सिद्धिमाप्नुयात् ॥ सम्यग्जपपरस्यापि सिद्ध्यंति मन्त्रोऽचिरात् ॥ १९४ ॥ (अगस्त्यसंहितायाम्) ॥ ग्रहणेऽर्कस्य चंद्रोर्वा शुचिः पूर्वमुखोषितः ॥ नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः ॥ स्पर्शाद्विमुक्तिपर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ १९५ ॥ (रुद्रयामले) अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः ॥ ग्रासाद्विमुक्तिपर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ इति कृत्वा न संदेहो जपस्य फलभाग्भवेत् ॥ १९६ ॥ श्राद्धादेरनुरोधेन यदि जाप्यं त्यजेन्नरः ॥ स भवेद्देवताद्रोही पितॄन् सप्त नयेदधः ॥१९७॥ अथ होमनिर्णयः ॥ (होमकालः) वसन्तश्चैव पूर्वाह्णे मध्याह्ने ग्रीष्म उच्यते ॥ अपराह्णे भवेद्वर्षा शरच्चैवार्द्धरात्रिके ॥ उषो हेमंतकश्चैव संध्यायां शैशिरः स्मृतः ॥ १९८ ॥ (पुरश्चरणचंद्रिकायाम्) ततो जपदशांशेन होमं कुर्याद्दिने दिने ॥ अथवा लक्ष संख्यायां पूर्णायां होममाचरेत् ॥१९९॥ ॥ (अथ होमस्थानं वायवीयसंहितायाम्) अथाग्निकार्यं वक्ष्यामि कुण्डे वा स्थण्डिलेऽपि वा ॥ वेद्यामप्यायसे पात्रे मृन्मये वा नवे शुभे ॥ स्थंडिले वा प्रकुर्वीत सुसिद्धैः सिकतैः सितैः ॥ २०० ॥ ॥ (अथ कुंडस्वरूपम्) चतुरस्रं योनिमर्द्धचन्द्रं त्र्यस्रं सुवर्तुलम् ॥ षडस्रं पंकजाकारमष्टास्रं तानि नामतः ॥ २०१ ॥ सर्वसिद्धिकरं कुंडं चतुरस्रमुदाहृतम् ॥ पुत्रप्रदं ॥ ६ ॥
योनिकुंडमर्द्धेंद्वाभं शुभप्रदम् ॥ २०२ ॥ शत्रुक्षयकरं त्र्यस्रं वर्तुलं शांतिकर्मणि ॥ छेदमारणयोः कुंडं षडस्रं पद्मसन्निभम् ॥ पुष्टिदं रोगशमनं कुंडमष्टास्रमीरितम् ॥ २०३ ॥ (वर्णभेदेन कुंडप्रकारः) विप्राणां चतुरस्रं स्याद्राज्ञां वर्तुलमिष्यते ॥ वैश्यानामर्द्धचन्द्राभं

शूद्राणां त्र्यस्रमीरितम् ॥ चतुरस्रं तु सर्वेषां केचिदिच्छन्ति तांत्रिकाः ॥२०४॥ (अथ कुंडप्रमाणं नारदीये) कुंडं तु नारदेनोक्तं हस्तमात्रं शुभं मतम् ॥ यावत्कुंडस्य विस्तारः खननं तावदीरितम् ॥२०५॥(हस्तप्रमाणम्) चतुर्विंशत्यंगुलाढ्यं हस्तं तस्य विदो विदुः ॥ कर्तुर्दक्षिणहस्तस्य मध्यमांगुलिपर्वणः ॥ २०६ ॥ (होमप्रमाणेन कुंडप्रमाणम्) मुष्टिमात्रमितं कुंडं शतार्द्धे संप्रचक्षते ॥ शतहोमेऽरत्निमात्रं हस्तमात्रं सहस्रके ॥ २०७ ॥ द्विहस्तमयुते लक्षे चतुर्हस्तमुदीरितम् ॥ दशलक्षे तु षड्हस्तं कोट्यामष्टकरं स्मृतम् ॥ मानहीनाधिकं कुंडमनेकभयदं भवेत् ॥ २०८ ॥ (कुंडस्यांगानि) कुंडरूपं तु जानीयात् परमं प्रकृतेर्वपुः ॥ प्राच्यां शिरः समाख्यातं बाहू दक्षिणसौम्ययोः ॥ उदरं कुंडमित्युक्तं योनिपादौ तु पश्चिमे ॥ २०९ ॥ (अथ कुंडप्रमाणेन मेखलाप्रमाणम्) कुंडवन्मेखलां कृत्वा योनिं कृत्वा ततः परम् ॥ कुंडानां यादृशं रूपं मेखलानां तु तादृशम् ॥२१० ॥ कुंडानां मेखलास्तिस्रो मुष्टिमात्रे तु ताः क्रमात् ॥ उत्सधोयामतो ज्ञेया कण्ठार्द्धगलसंमिताः ॥ २११ ॥ अरत्निमात्रे कुंडे स्युस्तास्त्रिद्व्येकांगुलात्मिकाः ॥ एकहस्तमिते कुंडे वेदाग्निनयनांगुलाः ॥ २१२ ॥ मेखलानां भवेदंतः परितो नेमिरंगुलात् ॥ एकहस्तस्य कुंडस्य वर्द्धयेत्तत्क्रमात्सुधीः ॥ २१३॥ दशहस्तांतमन्येषामर्द्धांगुलवशात्पृथक् ॥ कुंडे द्विहस्ते ता ज्ञेया रसवेदगुणांगुलाः ॥ २१४ ॥ चतुर्हस्तेषु कुंडेषु वसुतर्कयुगांगुलाः ॥ कुंडे रसकरे ताः स्युर्दशाष्टस्वंगुलान्विताः ॥ २१५ ॥ वसुहस्तमिते कुंडे भानुपंक्त्यष्टकान्विताः ॥ दशहस्तामिते कुंडे मनुभानुदशाङ्गुलाः ॥ त्रिस्तारोत्सेधतो ज्ञेया मेखलाः सर्वतो बुधैः ॥२१६ ॥ (योनिप्रमाणम्) होतुरग्रे योनिरासामुपर्यश्वत्थपत्रवत् ॥ मुष्ट्यारत्न्येकहस्तानां कुंडानां योनिरीरिता ॥ २१७ ॥ षट्चतुर्द्व्यंगुलायामविस्तारोन्नतिशालिनी ॥ एकांगुलं तु योन्यग्रं कुर्यादीषदधोमुखम् ॥ २१८ ॥ एकैकांगुलितो योनिं कुंडेष्वन्येषु वर्द्धयेत् ॥ यवद्वयक्रमेणैव योन्यग्रमपि वर्द्धयेत् ॥२१९ ॥ स्थलादारभ्य नालं स्याद्योन्या मध्यं सरन्ध्रकम् ॥ नार्पयेत्कुंडकोणेषु योनिं तां तत्र वित्तमः ॥२२० ॥

१ स्थलात् भूमिमारभ्य इत्यर्थः । नालं योन्याधारं मृन्मयमूर्ध्वाकारं कल्पयेत् । सरंध्रकं मेखलावालम्बुपरिस्रवणार्थं रन्ध्रं कल्पयेदित्यर्थः ।

(नाभिमानम्) कुंडानां कल्पयेदंतर्नाभिमंबुजसन्निभाम्॥ तच्चकुंडानुरूपं वा मानमस्या निगद्यते ॥२२१॥मुष्ट्यरत्न्येकहस्तानां नाभिरुत्से धतारतः॥द्वित्रिवेदांगुलोपेतां कुंडेष्वन्येषु वर्द्धयेत्॥२२२॥यवयववक्रमेणेव नाभिं पृथगुदारधीः॥ योनिकुंडे योनिमब्जकुंडे नाभिं विवर्जयेत्॥ ॥ २२३ ॥ नाभिक्षेत्रं त्रिधा भित्त्वा मध्ये कुर्वीत कर्णिकाम्॥बहिरंशद्वयेनाष्टौ पत्राणि परिकल्पयेत्॥२२४॥ (शाकल्यप्रमाणं महार्णवे) तिलास्तु द्विगुणाः प्रोक्ता यवेभ्यश्चैव सर्वदा ॥ अन्ये सौगंधिकाः स्निग्धा गुग्गुल्वादि यवैः समाः ॥ २२५ ॥ (त्रिकारिकायाम्)आयुःक्षयं यवाधिक्यं यवसाम्यं धनक्षयम् ॥ सर्वकामसमृद्ध्यर्थं तिलाधिक्यं सदैव हि ॥२२६॥ (अथ द्रव्यभेदेनाहुतिप्रमाणं शारदातिलके) अथात्र होममानेन प्रमाणमभिधीयते ॥ कर्षमात्रं घृतं होमे शुक्तिमात्रं पयः स्मृतम्॥ २२७॥ उक्तानि पंच गव्यानि तत्समानि मनीषिभिः॥तत्समं मधुदुग्धान्नमक्षमात्रमुदाहृतम् ॥ २२८ ॥ दधि प्रसृतिमात्रं स्याल्लाजाः स्युर्मुष्टिसंमिताः ॥ पृथुकास्तत्प्रमाणाः स्युः सक्तवोऽपि तथा मताः ॥२२९॥ गुडं पलार्द्धमानं स्याच्छर्करापि तथा मता॥ग्रासार्द्धं चरुमानं स्यादिक्षुः पर्वावधिर्मतः ॥ २३० ॥ एकैकं पत्रपुष्पाणि तथाऽपूपानि कल्पयेत्॥कदलीफलनारंगफलान्येकैकशो विदुः ॥ २३१ ॥ मातुलुंगं चतुःखण्डं पनसं दशधा कृतम् ॥ अष्टधा नारिकेलानि खण्डितानि विदुर्बुधाः ॥ २३२ ॥ त्रिधा कृतं फलं बिल्वं कपित्थं खण्डितं त्रिधा ॥ उर्वारुकफलं होमे चोदितं खण्डितं धिया ॥ २३३ ॥ फलान्यन्यानि खण्डानि समिधः स्युर्दशांगुलाः ॥ दूर्वात्रयं समुद्दिष्टं गुडूची चतुरंगुला ॥ २३४ ॥ व्रीहयो मुष्टिमात्राः स्युर्मुद्गा माषा यवा अपि॥ तण्डुलाः स्युस्तदर्द्धांशाः कोद्रवा मुष्टिसंमिताः ॥ २३५ ॥ गोधूमा रक्तकलमा विहिता मुष्टिमानतः ॥ तिलाश्चुलुकमात्राः स्युस्सर्षपास्त त्प्रमाणकाः ॥ २३६ ॥ शुक्तिप्रमाणं लवणं मरिचान्येकविंशतिः॥ पुरं बदरमानं स्याद्रामठं तत्समं स्मृतम् ॥ २३७ ॥ चन्दनागुरुकर्पूरकस्तूरीकुंकुमानि च ॥ तिंतिडीबीजमानानि समुद्दिष्टानि देशिकैः ॥ २३८ ॥ (आयाग्न्यंगानि) बधिरत्वं कर्णहोमे नेत्रे त्वंधत्वमाप्नुयात् । नासिकायां मनःपीडा शिरोहोमो हि मृत्युदः ॥ २३९ ॥ यतः काष्ठं ततः श्रोत्रं यतो भूम्यथ नासिका॥ यतोऽल्पज्वलनं नेत्रं यतो भस्म ततः शिरः॥

यतः प्रज्वलितो वह्निस्तन्मुखं जातवेदसः ॥ २४० ॥ (अग्निवर्णेन शुभाशुभपरीक्षणम्) स्वर्णसिंदूरबालार्ककुंकुमक्षोदसंनिभः ॥ भेरीवारि
दहस्तीनां ध्वनिर्वह्नेः शुभावहः ॥२४१॥ नागचम्पकपुन्नागबकुलाः केतकानि च ॥ यूथिकाननिभो गंधो गंधो वह्नेः शुभावहः ॥ २४२ ॥
काकस्वरस्वरो वह्नेर्यजमानस्य दुःखदः ॥ कृष्णे कृष्णगतेर्वर्णे यजमानं विनाशयेत् ॥ २४३ ॥ एवं दुष्टेषु चिह्नेषु प्रायश्चित्तोपदेशकः ॥
मूलेनाज्येन जुहुयात्पञ्चविंशतिमाहुतीः ॥ २४४ ॥ (अथ पूर्णाहुतिविचारः संस्कारभास्करे शौनकः) अंते पर्णाहुतिं हुत्वा समुद्रादूर्मिस
क्ततः॥ सततमाज्यधारां तां पूर्णाहुतिमथाचरेत्॥२४५॥(ग्रंथांतरे)चतुर्गृहीतमाज्यं तद्गृहीत्वा स्रुचि मध्यतः ॥वस्त्रतांबूलपूगादिफलपुष्प
समन्विताम्॥२४६॥अधोमुखस्रुवच्छन्नां गंधाक्षतैरलंकृताम्॥ पर्वं दक्षिणहस्तेन पश्चाद्वामेन पाणिना ॥२४७॥ अग्रमध्यम मध्यस्थं मूलम
ध्यममध्यतः॥पाणिद्वयेन होतव्यं पाणिरेको निरर्थकः॥२४८॥(शांतिरत्ने)ऐशान्यामाहरेद्भस्म स्रुचा वाथ स्रुवेण वा॥अंकनं कारयेत्तेन शिर
कंठांसकेषु च॥२४९॥(होमेऽशक्तेरुपायो योगिनीहृदये)होमकर्मण्यशक्तानां विप्राणां द्विगुणो जपः॥यद्यदङ्गं भवेद्भग्नं तत्संख्याद्विगुणो जपः
॥२५०॥ होमाभावे जपः कार्यो होमसंख्याचतुर्गुणः॥विप्राणां क्षत्रियाणां च रससंख्यागुणः स्मृतः॥वैश्यानां वसुसंख्याकमेषां स्त्रीणामयं
विधिः ॥२५१॥ (अगस्त्यसंहितायान्तु) यदि होमेऽप्यशक्तः स्यात्पूजायां तर्पणेऽपि वा ॥तावत्संख्याजेपनैव ब्राह्मणाराधनेन च॥ २५२ ॥
(अथ यंत्रलेखनार्थे पात्रनिर्णयः) स्वर्णादिपात्रे संलिख्य मातृकायंत्रमुत्तमम् ॥ काश्मीरचन्दनेनापि भस्मना वाथ सुव्रत ॥ २५३ ॥
काश्मीरं शक्तिसंस्कारे चन्दनं वैष्णवे मनौ ॥ शैवे भस्म समाख्यातं मातृकायंत्रलेखने ॥ २५४ ॥ (धूपादिसमर्पणाङ्गनिर्णयः रुद्रयामले)
निवेदयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम् ॥ दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः ॥ २५५ ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु
दक्षिणे ॥ नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ धूपदीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत् ॥ २५६ ॥ (अथ गंधनिर्णयः)सर्वेषु गंधजा
तेषु प्रशस्तो मलयोद्भवः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दद्यान्मलयजं सदा ॥ २५७ ॥ (देवभेदेन गंधाः) कृष्णागुरुः सकर्पूरः सहितो मलयोद्भवैः॥

वैष्णवप्रीतिदो गन्धः कामाख्यायाश्च भैरवे ॥ २५८ ॥ कुंकुमागरुकस्तूरीचन्द्रभागैः समीकृतैः ॥ त्रिपुराप्रीतिदो गंधस्तथा चंड्याश्च शंभुना ॥ २५९ ॥ (देवभेदेन गंधाष्टकम्) गंधाष्टकं तत्रिविधं शक्तिविष्णुशिवात्मकम् ॥ चन्दनागुरुकर्पूरचोरकुंकुमरोचनाः ॥ जटामांसी कपियुताः शक्तेर्गंधाष्टकं विदुः ॥ २६० ॥ चन्दनागुरुह्रीबेरकुष्ठकुंकुमसेव्यकाः ॥ जटामांसीमुरमिति विष्णोर्गंधाष्टकं विदुः ॥ २६१ ॥ चंदनागुरुकर्पूरतमालजलकुंकुमम् ॥ कुशीतं कुष्ठसंयुक्तं शैवं गंधाष्टकं विदुः ॥ २६२ ॥ (गंधार्पणे अंगुलीविचारः) अनामिकया देवस्य ऋषीणां च तथैव च ॥ गंधानुलेपनं कार्यं प्रयत्नेन विशेषतः ॥ २६३ ॥ पितॄणामर्पयेद्गंधं तर्जन्या च सदैव हि ॥ तथैव मध्यमांगुल्या धार्यो गंधः स्वयं बुधैः ॥ २६४ ॥ अथ फलपुष्पनिर्णयः ॥ (मंत्रमहोदधौ) श्वेतं पीतं हरेरिष्टं रक्तं रविगणेशयोः ॥ अक्षतानर्कधत्तूरौ विष्णौ नैवार्पयेत्सुधीः ॥२६५॥ बंधूकं केतकीं कुंदं केसरं कुटजं जपाम् ॥ शंकरे नार्पयेद्विद्वान्मालतीं यूथिकामपि ॥ २६६ ॥ शक्तौ दूर्वार्कमंदारान्मालूरं तगरं रवौ ॥ विनायके तु तुलसीं नार्पयेज्जातुचिद्बुधः ॥२६७॥ (स्नाने विहिते पुष्पस्पर्शे दोषः लघुहारीतः) स्नानं कृत्वा च ये केचित्पुष्पं गृह्णंति वै द्विजाः ॥ देवतास्तन्न गृह्णंति भस्मीभवति काष्ठवत् ॥ २६८ ॥ पुष्पं पत्रं फलं देवे न प्रदद्यादधोमुखम् ॥ पुष्पांजलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥ २६९ ॥ (मंत्रमहोदधौ) चम्पकं कमलं त्यक्त्वा कलिकामपिवर्जयेत् ॥ कुरंटकं कांचनारं वर्जयेद्बृहतीयुगम् ॥॥ २७० ॥ अथ सर्वदेवोपयोगिधूपः ॥ (तंत्रसारे) गुग्गुलुं सरलं दारु पत्रं मलयसंभवम् ॥ ह्रीवेरमगरुं कुष्ठं गुडं सर्जरसं घनम् ॥ २७१ ॥ हरीतकीं नखीं लाक्षां जटामांसीं च शैलजम् ॥ षोडशाङ्गं विदुर्धूपं दैवे पित्र्ये च कर्मणि ॥२७२॥ अथ दीपनिर्णयः ॥ (दीपपात्रं कालिकापुराणे) सुवृत्तवर्तिसस्नेहपात्रेऽभग्ने सुदर्शने ॥ मृन्मये वृक्षकोटौ तु दीपं दद्यात्प्रयत्नतः ॥ २७३ ॥ तैजसं दारवं लौहमार्त्तिक्यं नारिकेलजम् ॥ तृणध्वजोद्भवं चापि दीपपात्रं प्रशस्यते ॥२७४॥ (दीपविचारः) न मिश्रीकृत्य दद्यात्तु दीपं स्नेहे घृतादिकम् ॥ घृतेन दीपकं नित्यं तिलतैलेन वा पुनः ॥२७५॥ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः ॥ दक्षिणे च सितां वर्तिं वामतो रक्तवर्तिकाम् ॥२७६॥

नैव निर्वापयेद्दीपं देवार्थमुपकल्पितम् ॥ दीपहर्ता भवेदंधः काणो निर्वापको भवेत् ॥२७७॥ (अथ वाद्यनिर्णयो योगिनीतंत्रे) शिवागारे भल्लकं च सूर्यागारे तु शंखकम् ॥ दुर्गागारे वंशवाद्यं माधुरीं च न वादयेत् ॥२७८॥(जयसिंहकल्पद्रुमे)वादित्राणामभावे तु पूजाकाले च सर्वदा ॥ घंटाशब्दो नरैः कार्यः सर्ववाद्यमयी यतः ॥ २७९ ॥ (अथ नैवेद्यनिर्णयः) भक्ष्यं भोज्यं च लेह्यं च पेयं चोष्यं च पंचमम् ॥ सर्वत्र चैतन्नैवेद्यमाराध्यास्ये निवेदयेत् ॥ २८० ॥(नैवेद्यपात्राणि)तैजसेषु च पात्रेषु सौवर्णे राजते तथा॥ ताम्रे वा प्रस्तरे वाथ पद्मपात्रेऽथवा पुनः॥ २८१ ॥ यज्ञदारुमये वापि नैवेद्यं स्थापयेद्बुधः ॥सर्वाभावे च माहेये स्वहस्तघटिते यदि ॥ २८२ ॥ (नैवेद्यल०) अर्वाग्विसर्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते॥ विसर्जिते जगन्नाथे निर्माल्यं भवति क्षणात्॥२८३ ॥नैवेद्यस्यागानिषेधः ॥ (आह्निकतत्त्वे) तृषार्ताः पशवो रुद्धाः कन्यका च रजस्वला ॥ देवता च सनिर्माल्या हंति पुण्यं पुराकृतम् ॥२८४॥ (रुद्रयामले)निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्यं तद्विधानतः॥तन्न चेद्भुज्यते मोहाद्शोकुमायान्ति देवताः ॥ २८५ ॥ अग्राह्यं शिवनैवेद्यं पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ शालिग्रामशिलासंगात्सर्वं याति पवित्रताम् ॥ ॥ २८६ ॥ (उच्छिष्टाधिकारी मंत्रमहोदधौ) विष्वक्सेनो हरेरुक्तश्चंडेश्वर उमापतेः ॥ विकर्तनस्य चंडांशुर्वक्रतुंडो गणेशितुः ॥ शक्तेरुच्छिष्टचांडाली स्मृता उच्छिष्टभोजिनः ॥ २८७ ॥ अथ वस्त्रनिर्णयः ॥ (जयसिंहकल्पद्रुमे) पीतकौशेयवसनं विष्णुप्रीत्यै प्रकीर्तितम् ॥ रक्तं शक्त्यर्कविघ्नानां शिवस्य च सितं प्रियम् ॥ मलहीनं तथाऽच्छिद्रं क्षौमं कार्पासमेव च ॥ २८८ ॥ अथ प्रदक्षिणानिर्णयः ॥ (लिंगार्चनचंद्रिकायाम्) एका चंड्यां रवौ सप्त तिस्रो दद्याद्विनायके ॥ चतस्रो विष्णवे दद्याच्छिवे तिस्रः प्रदक्षिणाः ॥ २८९ ॥ (ग्रंथांतरे) एका चंड्यां रवेः सप्त तिस्रः कार्या विनायके ॥ हरेश्चतस्रः कर्तव्याः शिवस्यार्द्धं प्रदक्षिणा॥ २९० ॥ (शिवप्रदक्षिणामाहात्म्यम्) पूजां कृत्वा च यः शंभोर्न करोति प्रदक्षिणाम्॥ सा पूजा निष्फला तस्य पूजकः स च दांभिकः ॥ २९१ ॥ भक्त्या करोति यः सम्यक् केवलं तु प्रदक्षिणम्॥ पूजा सर्वा कृता तेन स सम्यक्छिवपूजकः ॥ २९२ ॥ अथ कूर्म्मनिर्णयः ॥ (कूर्मचक्रस्यावश्यकता यामले) क्षेत्रमध्यं समाश्रित्य कूर्मचक्रं विचिंतयेत ॥ कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम् ॥ तज्जपस्य फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते ॥

॥ २९३ ॥ (तंत्रराजे) कूर्मस्थितिं सुविज्ञाय यो जपेदवधिस्थितिः ॥ स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च ॥२९४॥ (पुरश्चरणचंद्रिकोक्तकूर्मचक्रम्) वर्तुलं नवकोष्ठं तत्कृत्वा कूर्माकृतिं लिखेत् ॥ स्वरयुग्मं क्रमेणैव ऐंद्र्याद्यष्टसु दिक्षु च ॥ २९५ ॥ कादीन्वर्णान्लक्षमीशे मध्ये क्षेत्राधिपं यजेत् ॥ क्षेत्रनामाद्यवर्णस्तु यस्मिन्कोष्ठे स्थितो भवेत् ॥ २९६ ॥ मुखं तु तस्य जानीयाद्धस्तावुभयतः स्थितौ ॥ कोष्ठे कुक्षी उभौ पादौ द्वौ शिष्टं पुच्छमीरितम् ॥२९७॥ मुखस्थो लभते सिद्धिं करस्थः स्वल्पजीवनः ॥ कुक्षिस्थितिरुदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ २९८ ॥ पुच्छस्थः पीड्यते मंत्री बन्धनोच्चाटनादिभिः ॥ कूर्मचक्रमिति प्रोक्तं मंत्राणां सिद्धिसाधनम् ॥ ॥ २९९ ॥ (मंत्रमहोदधौ) नवधा तां धरां कृत्वा पूर्वादिषु समालिखेत् ॥ कोष्ठेषु सप्त वर्गांश्च लक्षौ मध्ये तथा स्वरान् ॥ ३०० ॥

पुरश्चरणचन्द्रिकोक्तं कूर्मम् ।

	ईशानभुजा	पूर्वमुख	आग्नेयभुजा	
उत्तर कुक्षि दक्षि	लं• क्षं• अं• अः•	अ• आ• क ख ग घ ङ	इ• ई• च छ ज झ ञ	दक्षिण कुक्षि वाम
	ओ औ• श ष स ह	प्रजा	उ• ऊ ट ठ ड ढ ण	
	ए• ऐ• य र ल व	लृ• लॄ• प फ ब भ म	ऋ ॠ• त थ द ध न	
	वायुपाद	पश्चिमपुच्छ	नैर्ऋत्यपाद	

मंत्रमहोदधिप्रोक्तं कूर्मम् ।

	ईशान	पूर्व	अग्नि	
उत्तर	ळ• क्ष•	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	दक्षिण
	श ष स ह	अं अः | अ आ | इ ई ओ औ | | उ ऊ ए ऐ | लृ लॄ ऋ ॠ	ट ठ ड ढ ण	
	य र ल व	प फ ब भ म	त थ द ध न	
	वायुकोण	पश्चिम	नैर्ऋत्यकोण	

कक्षपुटप्रोक्तं कूर्मम् ।

	ईशान	पूर्व	आग्नि	
	दक्षभुजा महाशंख ळ क्ष	मुख वृषभ क ख ग घ ङ	वामभुजा शूरराज च छ ज झ ञ	
उत्तर	[illegible] पद्मयोनि श ष स ह	हृदय अमृत अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः	[illegible] वासुकि ट ठ ड ढ ण	दक्षि०
	[illegible] य र ल व	[illegible] प फ ब भ म	वामांघ्रि पूज्य अमर त थ द ध न	
	वायव्य	पश्चिम	नैर्ऋत्यकोण	

क्षेत्रनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेत्ततः ॥ उपविश्य जपं कुर्यान्नान्यस्मिन्दुःखदे स्थले॥२०१॥ (कक्षपुटो) देवस्थाने सुनिश्चित्य कूर्मचक्रं सुसिद्धिदम् ॥ अष्टवर्गं लिखेद्धीमान्मध्यतो यावदुत्तरम् ॥ ३०२ ॥ लक्ष्मीशपदे क्षेत्रे वेद्यास्ते नवकोष्ठके ॥ हृदास्यभुजकट्यंघ्रिपुच्छे वर्गाः क्रमात्स्थिताः ॥३०३॥ पादादि यदि संज्ञानि तेषु क्षेत्राधिपा नव॥ अमृतो वृषभश्चैव शूरराजश्च वासुकिः ॥ ३०४ ॥ अमरा अजरश्चैव पूज्यशक्तियुतस्तथा ॥ पद्मयोनिर्महा शंखो ज्ञेयास्तत्तदनुक्रमात् ॥ मध्यात्पूर्वादितः पूज्या मंत्रमत्रैव चोच्यते ॥ ३०५ ॥ अथ मंत्रः ॐ अमुकक्षेत्रपाल देवीपुत्रावतरावतर बलिं पिशितं गृह्ण २ खल २ सर्वविघ्नान् हन२ स्वाहा ॥ वि० ॥ अनेन मंत्रेण अमृतादयः सर्वे क्षेत्रपालाः पूज्याः स्वस्वास्थितभूम्यां यः क्षेत्रपालः तस्योद्देशेन तन्नाम्ना बलिर्देयः ॥३०६॥ यत्र यत्र भवेद्वर्गे क्षेत्रनामाद्यमक्षरम्॥ [illegible] वर्गे तु करकुक्ष्यंघ्रिकल्पना ॥ २०७ ॥ मुखस्थः क्षोभयेन्मंत्री करस्थः स्वल्पभोगभाक् ॥ कुक्षिस्थो ह्युदासीनः पादस्थो दुःखमाप्नुयात् ॥ २०८ ॥ पुच्छस्थो बंधनं च जपाद्राप्नोति निश्चितम् ॥ दीपस्थानं ततः क्षेत्रे ज्ञात्वा मंत्राञ्शुचिर्जपेत् ॥ ३०९ ॥ ([illegible])(क्षेत्राधिपस्य नाम्ना हि दीपस्थानं विचारयेत् ॥ मुखं च नवधा कृत्वा स्वरवर्णादिकं लिखेत् ॥ ३१० ॥ साध्यनामादिमो वर्णो यत्र कोष्ठे भवेद्यदि ॥ अथवा कूर्मकोष्ठे तु यत्र नामाक्षरं भवेत् ॥३११॥ दीपस्थानं हि तज्ज्ञेयं तत्र स्थित्वा मनुं जपेत्) [illegible] ॥ यदि स्यात्स शुभो मंत्रः क्षिप्रमेव सुसिध्यति ॥ ३१२ ॥ (तंत्रराजे) कूर्मसंस्थितिं सुविज्ञाय यो [illegible] ॥ स प्राप्नोति फलान्युक्तान्यन्यथा नाशमेति च ॥३१३॥ (यामले) कूर्मचक्रमविज्ञाय यः कुर्याज्जपयज्ञकम् ॥ तज्जपस्य

मं० म० फलं नास्ति सर्वानर्थाय कल्पते ॥ ३१४ ॥ (देवीयामले) कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गंगासागरसंगमे ॥ महाकाले च काश्यां च कूर्मस्थानं न सं० १ क०१

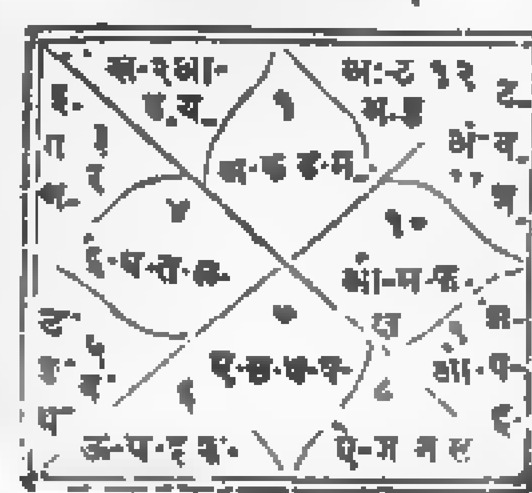
॥ १० ॥ चिंतयेत् ॥३१५॥ (गौतमीये) पर्वते सिंधुतीरे वा पुण्यारण्ये नदीतटे ॥ यदि कुर्यात्पुरश्चर्यां तत्र कूर्मं न चिंतयेत् ॥ ग्रामे वा यदि वास्तौ वा गृहे तरं० १

तं च विचिंतयेत् ॥३१६॥ (विश्वामित्रकल्पे) काशी पुरी च केदारो महाकालश्च नासिकम्॥ त्र्यंबकं च महाक्षेत्रं पंच दीपा इमे भुवि॥३१७॥

सिद्धादियोगे मालिनीविजये अकडमचक्रम् ।



सिद्धादियोगे [illegible]कडमचक्रम् ।



इति कूर्मः ॥ अथ सिद्धादिमंत्रविचारः ॥ (मालिनीविजये) ऋणासिद्धादियोगेषु मंत्र दाने विशेषतः ॥ प्रसिद्धं नाम गृह्णीयाज्जागर्ति मनुजो यतः ॥ ३१८ ॥ (सिद्धादि चक्रं मालिनीविजये) द्वादशारे तथा चक्रे कूटप्रांतविवर्जितान् ॥ आद्यंतान्विलिखेद्वर्णान् पूर्वतो यावदीश्वरः ॥ ३१९ ॥ अङ्कानेकादिभान्यंतांल्लिखेत्पूर्वादितः क्रमात् ॥ सिद्धः साध्यः सुसिद्धोऽरिश्चतुर्धा तु स्फुटो भवेत् ॥ ३२० ॥ मंत्र साधकयोराद्यो वर्णः स्याद्यत्र कोष्ठगः ॥ स एव सततं ग्राह्यः स्ववर्णान्मंत्र वर्णतः ॥ ३२१ ॥ नवैकपंचमे सिद्धः साध्यः षड्दशयुग्मके ॥ त्रिसप्तैकादशे मित्रं वेदाष्टद्वादशे रिपुः ॥३२२॥ (मंत्रमहोदधौ) नाम्नो मंत्रस्य वर्णौघं चतुर्भिर्विभजेत् सुधीः ॥ एकादिशेषे सिद्धादि क्रमाज्ज्ञेयं विचक्षणैः ॥ ३२३ ॥ सिद्धः सिध्यति कालेन साध्यस्तु जपहोमतः ॥ सुसिद्धः प्रातिमात्रेण साधकं भक्षयेदरिः ॥ ३२४ ॥ अथारिमंत्रचक्रम् ॥ अथारिमंत्रविचारः (समयाचारतंत्रे) मंत्राक्षरेण मंत्रं च दीपना

अथारिमंत्रचक्रम्.

वैरी	अआ	ऋॠ	ऌॡ	उऊ	ज	ल	ड	फ	फ	क
वैरी	ग	ठ	प	ब	ट	ख	तथ	द	स	

भ्रोर्भवेद्यदि ॥ साधकस्य च नाम्नाथ किं न सिध्यंति मंत्रिणः ॥३२५॥ तस्माच्चक्रं विचार्यैव मित्रं चेत्सर्वसिद्धिदम् ॥ अरित्वमद्वयस्येह गकारेण परस्परम् ॥३२६॥ ऋद्वयस्य ठकारेण ठकारस्य च ऋद्वयम् ॥ लृद्वयस्य पकारेण पकारस्य च लृद्वयम् ॥ ३२७ ॥ उद्वयस्य बकारेण ॥ १० ॥

पकारस्योयुगेन तु॥जकारस्य टकारेण ऌकारस्य खकारतः ॥३२८॥ डकारस्य तकारेण फकारस्य घकारतः ॥फकारस्य च रेफेण फकारस्य सकारतः ॥ अरित्वमेषां वर्णानामन्येषां मित्रभावना ॥३२९॥ (अरिमंत्रदोषोद्धारो मालिनीविजये) अरिमंत्रो गृहीतश्चेदज्ञानवशतस्तदा॥ तस्य त्यागः प्रकर्तव्यस्तत्प्रकारोऽधुनोच्यते ॥ ३३० ॥ सुदिने स्थापयेत्कुंभं सर्वतोभद्रमंडले ॥ विलोमं च जपेन्मंत्रं पूरयेत्तन्तु पाथसा ॥३३१॥तत्र देवं समावाह्य जपेदावरणार्चितः ॥तदग्रे स्थंडिलं कृत्वा प्रतिष्ठाप्यानलं ततः॥३३२॥जुहुयान्मूलमंत्रेण विलोमेन शतं घृतैः॥ दिक्पतिभ्यो वलिं दद्यात्पायसान्नैर्घृतान्वितैः ॥३३३॥पुनः संपूज्य देवेशं प्रार्थयेन्मनुनामुना॥अनुकूटमनालोच्य मया तरलबुद्धिना॥३३४॥ यदुपात्तं पूजितं च प्रभो मंत्रस्य रूपकम् ॥ तेन मे मनसः क्षोभमशेषं विनिवर्तय ॥ ३३५ ॥ पूजनं प्रत्यहं वा तु भूयाच्छ्रेयः सनातनम् ॥ तनोतु मम कल्याणं पावनीं भक्तिरस्तु मे ॥ ३३६ ॥ एवं सम्प्रार्थ्य देवेशं कर्पूरागरुचन्दनैः ॥ विलोमं विलिखेन्मंत्रं ताडपत्रे तदर्चयेत् ॥ ३३७ ॥ प्रबध्य तु निजे मूर्ध्नि स्नायात्कुंभस्थितैर्जलैः ॥ पुनः सम्पूर्य तत्तोयैर्न पश्येन्मंत्रपत्रकम् ॥ ३३८ ॥ सम्पूज्य कुंभसहितं तडागे वा विनिःक्षिपेत् ॥ विप्रान्सम्भोज्य मुच्येत पीडयाऽसौ च मानवः ॥ ३३९ ॥ अथ ऋणधनशोधनम् (मालिनीविजये) नामाद्यक्षरमारभ्य यावन्मंत्रादिवर्णकम् ॥ कृत्वा स्वरैर्बुधो भिद्यात्तदन्याद्विपरीतकम् ॥३४०॥ कृत्वाऽधिको मंत्रवर्णे ऋणी चेन्मंत्रमुत्तमम् ॥स्वयं ऋणी च तन्मंत्रं त्यजेत्पूर्वऋणी यतः ॥ ३४१ ॥ (प्रकारांतरेऽपि) मंत्रसाधकनामार्णः साधकस्य तथैव च ॥ अष्टाभिस्तु हरेद्भागं शेषैर्ऋणधनम्भवेत् ॥ ३४२ ॥ विना शुद्धिं जपोपयोगिमंत्रः ॥ येषां मनूनां सिद्धादिशोधनं नास्ति तान्ब्रुवे ॥ एकवर्णास्त्रिवर्णो वा पंचार्णो रसवर्णकः ॥ ३४३ ॥ सप्तार्णो नववर्णश्च रुद्रार्णो रदनाक्षरः ॥ अष्टार्णो हंसमंत्रश्च कूटो वेदोदितो ध्रुवम् ॥३४४॥ स्वप्नलब्धः स्त्रिया प्राप्तो मालामंत्रो नृकेसरी॥ प्रसादो रविमंत्रश्च वाराहो मातृकाः परा ॥ ३४५॥ त्रिपुरा काममंत्रश्चाज्ञासिद्धः पक्षिनायकः॥ बौद्धमंत्रा जैनमंत्रा नैव सिद्धादिशोधनम्॥ एतद्भिन्नेषु मन्त्रेषु शुद्धिरावश्यकी मता ॥ ३४६ ॥ (सिद्धसारस्वते विशेषः) नपुंसकस्य मंत्रस्य सिद्धादीन्नैव शोधयेत् ॥ ३४७ ॥ शापरहितमंत्राः ॥ भीष्मपर्वणि या गीता सा प्रशस्ता कलौ युगे ॥ विष्णोः सहस्रनामाख्यं स्तोत्रं पापप्रणाशनम् ॥ ३४८ ॥

गजेन्द्रमोक्षणं चैव तथा कारुण्यकः स्तवः ॥ नारसिंहं तथा स्तोत्रं स्तोत्रं श्रीरामसंज्ञकम् ॥ ३४९ ॥ देव्याः सप्तशतीस्तोत्रं तथा नामसहस्रकम् ॥ श्लोकाष्टकं नीलकंठं शैवं नामसहस्रकम् ॥ ३५० ॥ त्रिपुरायाः प्रसादाख्यं सूर्यस्य स्तवराजकम् ॥ पैत्रो रुचिस्तवो गश्च इन्द्राक्षीस्तोत्रमेव च ॥ ३५१ ॥ वैष्णवं च महालक्ष्म्याः स्तोत्रमिंद्रेण भाषितम् ॥ भार्गवाख्येन रामेण शतान्यन्यानि कारणात् ॥ ३५२ ॥ अथ कलिसिद्धिप्रदा मन्त्राः ॥ (मंत्रमहोदधौ) सिद्धिप्रदा कलियुगे ये मंत्रास्तान्वदाम्यतः॥ त्र्यर्ण एकाक्षरोऽनुष्टुप् त्रिविधो नरकेसरी ॥ ३५३ ॥ एकक्षरोऽर्जुनोऽनुष्टुब् द्विविधस्तुरगाननः ॥ चिंतामणिः क्षेत्रपालो भैरवो यक्षनायकः ॥ ३५४ ॥ गोपालो गजवक्त्रश्च चेटका यक्षिणी तथा ॥ मातंगी सुंदरी श्यामा तारा कर्णपिशाचिनी ॥ ३५५ ॥ शबर्येकजटा वर्मा काली नीलसरस्वती ॥ त्रिपुरा कालरात्रिश्च कलाविष्टप्रदा इमे ॥ ३५६ ॥ कलौ चतुर्वर्णोपयोगिमंत्राः ॥ अघोरा दक्षिणामूर्तिरुमा माहेश्वरो मनुः ॥ हयग्रीवो वराहश्च लक्ष्मीनारायणस्तथा ॥ ३५७ ॥ प्रणवाद्याश्चतुर्वर्णा वह्निमंत्रास्तथा रवेः ॥ प्रणवाद्यो गणपतिर्हरिद्रागणनायकः ॥ ३५८ ॥ सौरोऽष्टाक्षरमंत्रश्च तथा रामषडक्षरः ॥ मंत्रराजो भुवादिश्च प्रणवो वैदिको मनुः ॥ ३५९ ॥ वर्णत्रयाय दातव्या एते शूद्राय नो बुधैः ॥ सुदर्शनं पाशुपतमाग्नेयास्त्रं नृकेसरी ॥ वर्णद्वयाय दातव्या नान्यवर्णे कदाचन ॥ ३६० ॥ छिन्नमस्ता च मातंगी त्रिपुरा कालिका शिवः ॥ लघुश्यामा कालरात्रिर्गोपालो जानकीपतिः ॥ ३६१ ॥ उग्रतारा भैरवश्च देया वर्णचतुष्टये ॥ मृगीदृशां विशेषेण मंत्रा ये ते सुसिद्धिदाः ॥ ३६२ ॥ ब्राह्मणाः क्षत्रिया वैश्याः शूद्रा नार्योऽधिकारिणः ॥ श्रद्धावंतो देवगुरुद्विजपूजासु सर्वथा ॥ ३६३ ॥ मायां कामं श्रियं वाचं प्रदद्यान्मुखजन्मने ॥ मायामृते बाहुजेभ्य ऊरुजेभ्यः श्रियं गिरम् ॥ ३६४ ॥ वाणीबीजं तु शूद्रेभ्योऽन्येभ्यो वर्म वषण्नमः ॥ ३६५ ॥ (कुलार्णवे) दासस्य शिवभक्तस्य हितप्रियकरस्य च ॥ शूद्रस्यापि प्रदातव्यं नमोऽन्तं प्रणवं विना ॥ ३६६ ॥ विना हि प्रणवं मन्त्रः स्त्रीशूद्राणां प्रकीर्तितः ॥ प्रणवेन समायुक्तास्तन्मंत्राश्च विषोपमाः ॥ ३६७ ॥ (आग

मेऽपि) स्वाहाप्रणवसंयुक्तं मंत्रं शूद्रे ददेद्द्विजः॥शूद्रश्चांडालतामेति विप्रः शूद्रत्वमेव हि॥३६८॥अथ मंत्राणां पुंस्त्रीनपुंसकविचारः॥(शारदा तिलके) पुंमंत्रा हुंफडंताः स्युर्द्विठांतास्तु स्त्रियो मताः ॥ नपुंसका नमोंताः स्युरित्युक्ता मनवस्त्रिधा ॥३६९॥ (मंत्रमहोदधौ)पुंस्त्रीनपुंसकाः प्रोक्ता मनवस्त्रिविधा बुधैः ॥ वषडंता फडंताश्च पुमांसो मनवः स्मृताः ॥ ३७० ॥ वौषट्स्वाहांतगा नार्यो हुंनमोंता नपुंसकाः ॥ वश्यो च्चाटनरोधेषु पुमांसः सिद्धिदायकाः ॥ ३७१ ॥ क्षुद्रकर्मरुजां नाशे स्त्रीमंत्राः शीघ्रसिद्धिदाः ॥ अभिचारे स्मृता क्लीबा एवं ते मन वस्त्रिधा ॥ ३७२ ॥ (अग्निचन्द्रसम्बंधिमंत्रा ग्रंथांतरे) प्रणवाक्षररेफहकारप्राया मंत्रा आग्नेयाः ॥ इन्द्रामृताक्षरप्राया मन्त्राः सौम्याः ॥ सूर्ये वहति आग्नेयानां प्रबोधकालश्चन्द्रे सौम्यानाम् ॥ स्वप्रबोधकाले मन्त्रग्रहणे जपे च कृते तात्कालिकसिद्धिः स्यादेवेति ॥३७३॥ (बीजमन्त्रादिप्रकारो मन्त्रमहोदधौ)बीजमन्त्रास्तथा मन्त्रा मालामन्त्रास्तथापरे॥ त्रिधा मन्त्रगणाः प्रोक्ता बुधैरागमवेदिभिः ॥ ॥ ३७४ ॥ बीजमन्त्रा दशार्णांतास्ततो मन्त्रा नखावधिः ॥ विंशत्यधिकवर्णा ये मालामन्त्रास्तु ते स्मृताः ॥ ३७५ ॥ बाल्ये वयसि सिद्ध्यंति बीजमन्त्रा उपासितुम्॥मन्त्रा सिद्धा यौवने तु मालामन्त्राश्च वार्द्धके ॥३७६॥ उक्तान्यस्यामवस्थायामभीष्टप्राप्तये सुधीः॥ बीज मंत्रादिमंत्राणां द्विगुणं जपमाचरेत् ॥ ३७७॥ (गुप्तचैतन्यशक्तियुक्तमंत्राः शिवोऽपि) गुप्तवीर्याश्च ये मंत्रा न दास्यंति फलं प्रिये॥मंत्राश्चै तन्यसहिताः सर्वसिद्धिकराः स्मृताः ॥ ३७८ ॥ चैतन्यरहिता मन्त्रा प्रोक्ता वर्णास्तु केवलाः ॥ फलं नैव प्रयच्छंति लक्षको टिजपादपि ॥ ३७९ ॥ अथ कामनापरत्वेन मन्त्रादौ बीजनिर्णयः ॥ (मालिनीविजये) यदि दोषे तु सर्वत्र मायाकाममथापि वा ॥ क्षिप्त्वा ह्यादौ श्रियं दद्यात्सर्वदोषविमुक्तये ॥ ३८० ॥ प्रणवो भुवनेशानि रमाबीजमनोभवम् ॥ जीवनं सर्वमन्त्राणामित्याहुर्भगवा न्छिवः ॥ ३८१ ॥ श्रीबीजाद्यं यदा जाप्यं तदा लक्ष्मीरचञ्चला ॥ कामाद्यं जपनादेव सर्वलोकं वशं नयेत् ॥ ॥ ३८२ ॥ वागादिजपनादेव वाक्सिद्धिर्जायतेऽचिरात् ॥ शक्तिबीजादिको मंत्रो निर्दोषमचिरादिशेत् ॥ ३८३ ॥ पुटनात्प्रणवाभ्यां

तु मोक्षमाप्नोति निश्चितम् ॥ एवं मंत्रवरं जप्त्वा किं न सिध्यति मंत्रवित् ॥ ३८४ ॥ अथ कामनापरत्वेन मंत्रांते पल्लव
निर्णयः (हरगौरीतंत्रे) मन्त्राणां पल्लवो वासो मंत्राणां प्रणवः शिरः ॥ शिरःपल्लवसंयुक्तो मंत्रः कामदुघो भवेत् ॥ ३८५ ॥ वश्या
कर्षणहोमेषु स्वाहांतः सिद्धिदायकः ॥ वौषट्पल्लवसंयुक्तो मंत्रः पुष्ट्यादिसाधकः ॥ ३८६ ॥ हुंकारपल्लवोपेतो मारणे ब्राह्मणं विना॥यंत्रभंज
नकार्येषु सुघोरभयनाशने ॥ ३८७ ॥ वषडंतः प्रकल्प्यस्तु महद्बाधाविनाशकः॥उच्चाटने तु संप्रोक्तो मंत्रः फट्पल्लवान्वितः॥ ३८८॥ (मनुमते)
वषड् वश्ये फडुच्चाटे हुं स्तंभे खं च मारणे ॥ स्वाहा तुष्ट्यै ठः ठः पुष्ट्यै नमः सर्वार्थसाधने ॥ ३८९ ॥मतांतरे ॥ वषड् वश्ये फडुच्चाटे
हुं द्वेषे खं च मारणे ॥ ठः स्तंभे वौषडाकर्षे नमः संपत्तिहितवे॥स्वाहा पुष्टिस्तथा तुष्टिरित्येते मंत्रपल्लवाः ॥ ३९०॥ अथ मंत्राणां छिन्नादिक
दोषनिर्णयः ॥(शारदातिलके) छिन्नादिदुष्टा मन्त्रास्ते पालयन्ति न साधकम्॥ छिन्नो रुद्धः शक्तिहीनः पराङ्मुख उदीरितः॥३९१॥बधिरो
नेत्रहीनश्च कीलितः स्तंभितस्तथा ॥ दग्धस्त्रस्तश्च भीतश्च मलिनश्च तिरस्कृतः ॥३९२॥ भेदितश्च सुषुप्तश्च प्रध्वस्तो बालकस्ततः॥३९३॥
कुमारश्च युवा प्रौढो वृद्धो निस्त्रिंशकस्तथा॥ निर्बीजः सिद्धिहीनश्च मंदः कूटस्तथा पुनः॥३९४ ॥ निरंशकः सत्त्वहीनः केकरो बीजहीनकः॥
धूमिलालिंगितौ स्यातां मोहितस्तु क्षुधार्तकः ॥ ३९५ ॥ अतिदृप्तोऽगहीनः स्यादतिक्रुद्धः समीरितः ॥ अतिक्रूरश्च सव्रीडः शांतमानस एव
च ॥ ३९६ ॥ स्थानभ्रष्टस्तु विकलः सोऽतिवृद्धः प्रकीर्तितः ॥ निःस्नेहः पीडितश्चापि वक्ष्याम्येषां च लक्षणम् ॥ ३९७ ॥(अथ लक्षणानि)
मनोर्यस्यादिमध्यांतेष्वानिलं बीजमुच्यते ॥ संयुक्तं वापि युक्तं वा स्वराक्रांतं त्रिधा पुनः॥३९८॥चतुर्धा पंचधा वाथ स मंत्रश्छिन्नसंज्ञकः॥
आदिमध्यावसानेषु भूबीजद्वंद्वलांछितः ॥ ३९९ ॥ रुद्धमंत्रः स विज्ञेयो भुक्तिमुक्तिविवर्जितः ॥ ४०० ॥ मायात्रितत्त्वं श्रीबीजं रावहीनश्च
यो मनुः ॥ शक्तिहीनः स कथितो यस्य मध्ये न विद्यते ॥४०१॥ कामबीजं मुखे माया शिरस्यंकुशमेव च॥असौ पराङ्मुखः प्रोक्तो हकारो
बिंदुसंयुतः ॥ ४०२ ॥ आद्यंतमध्येष्विंदुर्वा स भवेद्बधिरः स्मृतः ॥ पंचवर्णो मनुर्यः स्याद्रेफार्केंदुविवर्जितः ॥ ४०३ ॥ नेत्रहीनः स विज्ञेयो

दुःखशोकामयप्रदः ॥आदिमध्यावसानेषु हसः प्रासादवाग्भवौ॥ स्फुरो बिन्दुमाञ्जीवो रावश्चापि चतुष्फलः ॥ ४०४ ॥ माया वमामि च पदं नास्ति यस्मिन्स कीलितः॥एकं मध्ये द्वयं मूर्ध्नि यस्मिन्नस्त्रपुरंदरौ ॥ ४०५ ॥विद्यते स तु मंत्रः स्यात्स्तंभितः सिद्धिरोधकः॥वह्निर्वायुसमायुक्तो यस्य मंत्रस्य मूर्द्धनि ॥ ४०६ ॥ सप्तधा दृश्यते तं तु दग्धं मन्वीत मंत्रवित् ॥अस्त्रं द्वाभ्यां त्रिभिः षड्भिरष्टभिर्दृश्यतेऽक्षरैः॥४०७॥ त्रस्तः सोऽभिहितो यस्य मुखे न प्रणवः स्थितः॥शिवो वा शक्तिरथवा भीताख्यः स प्रकीर्तितः॥४०८॥आदिमध्यावसानेषु मंत्रेष्वाणचतुष्टयम्॥अस्य मन्त्रः स मलिनो मन्त्रवित्तं विवर्जयेत्॥४०९॥यस्य मध्ये दकारो वा क्रोधो वा मूर्द्धनि द्विधा॥अस्त्रं तिष्ठति मंत्रश्च स तिरस्कृत ईरितः ॥४१०॥ भ्योद्वयं हृदयं शीर्षे वषड् वौषट् च मध्यतः॥यस्यासौ भेदितो मंत्रस्त्याज्यः सिद्धिषु सूरिभिः॥४११॥त्रिवर्णो हंसहीनो यः सुषुप्तः समुदाहृतः॥ मंत्रो वाप्यथवा विद्या सप्ताधिकदशाक्षरः॥४१२॥फट्कारपञ्चकादियो मदोन्मत्त उदीरितः॥तद्वदस्त्रं स्थितं मध्ये यस्य मंत्रः स मूर्च्छितः॥४१३॥ विरामस्थानगं यस्य हृतवीर्यस्स कथ्यते॥ आदौ मध्ये तथा मूर्ध्नि चतुरस्त्रयुतो मनुः ॥४१४॥ ज्ञातव्यो हीन इत्येष यः स्यादष्टादशाक्षरः ॥ एकोनविंशत्यर्णो वा यो मंत्रस्तारसंयुतः॥४१५॥हृल्लेखांकुशबीजाढ्यस्तं प्रध्वस्तं प्रचक्षते॥सप्तवर्णो मनुर्बालः कुमारोऽष्टाक्षरःस्मृतः॥४१६॥ षोडशार्णो युवा प्रौढश्चत्वारिंशल्लिपिर्मनुः ॥ त्रिंशदर्णश्चतुःषष्टिवर्णो मंत्रः शताक्षरः ॥ ४१७ ॥ चतुःशताक्षरश्चापि वृद्ध इत्यभिधीयते ॥ नवाक्षरो ध्रुवयुतो मनुर्निस्त्रिंश ईरितः॥४१८॥अस्यावसाने हृदयं शिरोमंत्रश्च मध्यतः॥शिखी वर्म च न स्यातां वौषट् फट्कार एव वा॥ ॥४१९॥शिवशक्त्यर्णहीनो वा स निर्बीज इतीरितः॥एषु स्थानेषु फट्कारः षोढा यस्मिन्प्रदृश्यते ॥४२०॥ स मंत्रः सिद्धिहीनः स्यान्मंदः पंक्त्यक्षरो मनुः॥कूट एकाक्षरो मंत्रः स एवोक्तो निरंशकः ॥४२१॥ द्विवर्णः सत्त्वहीनः स्याच्चतुर्वर्णश्च केकरः॥षडक्षरो बीजहीनः सार्धसप्ताक्षरो मनुः ॥४२२ ॥ सार्द्धद्वादशवर्णो वा धूमितः स तु निंदितः ॥ सार्द्धबीजत्रयस्तद्वदेकविंशतिवर्णकः ॥ ४२३ ॥ विंशत्यर्णस्त्रिंशदर्णो य स्यादालिंगितस्तु सः॥द्वात्रिंशदक्षरो मंत्रो मोहितः परिकीर्तितः ॥४२४ ॥ चतुर्विंशतिवर्णो यः सप्तविंशतिवर्णकः ॥ क्षुधार्तः स तु विज्ञेयः यश्चतुस्त्रिंशदर्णकः ॥ ४२५ ॥ एकादशाक्षरो वापि पंचविंशतिवर्णकः॥त्रयोविंशतिवर्णो वा मंत्रो दृप्त उदाहृतः ॥ ४२६ ॥ षड्विंशत्यक्षरो

मंत्रः षट्त्रिंशद्वर्णकस्तथा ॥ त्रिंशदेकोनवर्णो वाप्यंगहीनोऽभिधीयते ॥ ४२७ ॥ अष्टाविंशत्यक्षरो य एकत्रिंशदथापि वा ॥ अतिक्रूरः स कथितो निंदितः सर्वकर्मसु ॥ ४२८ ॥ त्रिंशदक्षरको मंत्रस्त्रयस्त्रिंशदथापि वा ॥ अतिक्रूरः स गदितो निंदितः सर्वकर्मसु ॥ ४२९ ॥ ऊनचत्वारिंशदर्णः सप्तत्रिंशदथापि वा ॥ कथयंत्यतिरिक्तं तं मंत्रं मंत्रविशारदाः ॥ ४३० ॥ चत्वारिंशकमारभ्य द्विषष्टिर्यावदापयेत् ॥ तावत्संख्या निगदिता मन्त्राः सव्रीडसंज्ञकाः ॥ ४३१ ॥ पंचषष्ट्यक्षरा ये स्युर्मंत्रास्ते शांतमानसाः ॥ एकोनशतपर्यंतं पंचषष्ट्यक्षरादितः ॥ ४३२ ॥ ये मंत्रास्ते निगदिता स्थानभ्रष्टाह्वया बुधैः ॥ त्रयोदशाक्षरा ये स्युर्मंत्राः पञ्चदशाक्षराः ॥४३३॥ विकलास्तेऽभिधीयंते शतं सार्धशतं तथा ॥ शतद्वयं द्विनवतिरेकहीनाथवापि सा ॥ ४३४ ॥ शतत्रयं वा यत्संख्या निःस्नेहास्ते समीरिताः ॥ चतुःशतान्यथारभ्य यावद्वर्णसहस्रकम् ॥ ४३५ ॥ अतिवृद्धाः प्रयोगेषु परित्याज्याः सदा बुधैः ॥ सहस्रार्णाधिका मंत्रा दंडकाः पीडिताह्वयाः॥४३६॥ द्विसहस्राक्षरा मंत्राः खंडशः शतधा कृताः ॥ ज्ञातव्याः स्तोत्ररूपास्ते मंत्रा एते यथा स्थिताः ॥ ४३७ ॥ तथा विद्याश्च बोद्धव्या मंत्रिभिः काम्यकर्मसु ॥ दोषानिमानविज्ञाय यो मंत्रान्भजते जडः ॥ ४३८ ॥ सिद्धिर्न जायते तस्य कल्पकोटिशतैरपि ॥ इत्यादिदोषदुष्टांस्तान्मंत्रानात्मनि योजयेत् ॥ शोधयेद्रुद्धपवनो बद्धया योनिमुद्रया ॥ ४३९ ॥ अथ छिन्नत्वादिकदोषनिवारणार्थं दश संस्काराः (मंत्रमहोदधौ) । मंत्रश्चरणसंपन्नो मंत्रो हि फलदायकः ॥ किं होमैः किं जपैश्चैव किं मंत्रन्यासविस्तरैः ॥ ४४० ॥ छिन्नत्वादिकदोषा ये पंचाशन्मंत्रसंस्थिताः ॥ तैर्दोषैः सकला व्याप्ता मनवः सप्तकोटयः ॥ ४४१ ॥ अतस्तद्दोषशांत्यर्थं संस्कारदशकं चरेत् ॥ जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधकं तथा ॥ ४४२ ॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः ॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिर्दशैता मंत्रसंस्क्रियाः ॥ ४४३ ॥ (अथ जननसंस्कारः) भूर्जपत्रे लिखेत्सम्यक् त्रिकोणं रोचनादिभिः ॥ वारुणं कोणमारभ्य सप्तधा विभजेत्समम् ॥ ४४४ ॥ एवमीशाग्निकोणाभ्यां जायंते तत्र योनयः ॥ नववेदमितास्तत्र विलिखेन्मातृकां क्रमात् ॥ ४४५ ॥ अकारादिहकारांतामाशादिवरुणावधिः ॥ देवीं तत्र समावाह्य पजयेच्चंदनादिभिः ॥ ततः समुद्धरेन्मंत्रं जननं तदुदीरितम् ॥ ४४६ ॥ (अथ द्वितीयो

दीपनसंस्कारः) जपो हंसपुटस्यास्य सहस्रं दीपनं स्मृतम् ॥ ४४७ ॥ (अथ तृतीयो बोधनसंस्कारः) नभोवह्नीन्दुयुक्तर्द्धिसंपुटस्य जपो मनोः ॥ सहस्रपंचकमितो बोधनं तत् स्मृतं बुधैः॥४४८॥(चतुर्थं ताडनमाह)सहस्रं प्रजपेदत्र पुटितं ताडनं हि तत्॥(पंचमम् अभिषेकमाह) वाग्धंसतारैर्जसेन सहस्रं पयसा मनुम् ॥ अभिषिंचेत वागाद्यैरभिषेकोऽयमीरितः ॥४४९॥ (षष्ठं विमलीकरणमाह) हरिवह्न्यन्वितस्तारो वषडंतो ध्रुवादिकः ॥ सहस्रं तत्पुटो जप्यो विमलीकरणे मनुः ॥ ४५० ॥ (सप्तमं जीवनमाह) स्वधावषट्पुटं जप्यात्सहस्रं जीवने मनुम् ॥ (अष्टमं तर्पणमाह) क्षीराज्ययुक्तपाथोभिस्तर्पणे तर्पयेन्मनुम् ॥ ४५१ ॥ (नवमं गोपनमाह) जपेन्मायापुटं मंत्रं सहस्रं गोपनं हितम्॥ (दशममाप्यायनमाह) बाला तार्तीयबीजेन गगनाद्येन संपुटम् ॥ सहस्रं प्रजपेन्मंत्रमेतदाप्यायनं मतम् ॥ ४५२ ॥ संस्कारदशकं प्रोक्तं मनूनां दोषनाशकम् ॥ ४५३ ॥ (अथ शारदातिलकोक्ता दश संस्काराः) कर्मण्यतिजडा मंत्रा मंत्रिणां योजिता अपि ॥ तस्मात्तद्दोषनाशाय कर्तव्याः संस्क्रिया दश ॥ ४५४ ॥ मंत्राणां दश संस्काराः कथ्यन्ते सिद्धिदायिनः ॥ जननं जीवनं पश्चात्ताडनं बोधनं तथा ॥ ४५५ ॥ अथाभिषेको विमलीकरणाप्यायने पुनः ॥ तर्पणं दीपनं गुप्तिश्चैताः स्युर्मंत्रसंस्क्रियाः ॥ ४५६ ॥ (जननमाह) मंत्राणां मातृकामध्यादुद्धारो जननं स्मृतम् ॥ ४५७ ॥ (जीवनमाह) प्रणवांतरितान्कृत्वा मंत्रवर्णाञ्जपेत्सुधीः ॥ एतज्जीवनमित्याहुर्मंत्रतंत्रविशारदाः ॥ ४५८ ॥ (ताडनमाह) मंत्रवर्णान्समालिख्य ताडयेच्चन्दनाम्भसा ॥ प्रत्येकं वायुना मंत्री ताडनं तदुदाहृतम् ॥ ४५९ ॥ (बोधनमाह) विलिख्य मंत्रं तं मंत्री प्रसूनैः करवीरजैः ॥ तन्मंत्राक्षरसंख्यातैर्हन्याद्रेफेन बोधनम् ॥ ४६० ॥ (अभिषेकमाह) स्वतन्त्रोक्तविधानेन मंत्री मंत्रार्णसंख्यया ॥ अश्वत्थपल्लवैर्मंत्रमभिषिंचेद्विशुद्धये ॥ ४६१ ॥ (विमलीकरणमाह) संचिंत्य मनसा मंत्रं ज्योतिर्मंत्रेण निर्दहेत् ॥ मंत्रे मलत्रयं मंत्री विमलीकरणं त्विदम् ॥ ४६२ ॥ (आप्यायनमाह) तारं व्योमाग्निमनुयुग्दंडी ज्योतिर्मनुर्मतः ॥ कुशोदकेन जप्तेन प्रत्यर्णप्रोक्षणं मनोः ॥ तेन मंत्रेण विधिवदेतदाप्यायनं मतम् ॥४६३॥ (तर्पणमाह) मंत्रेण वारिणा सिंचेन्मंत्रेण तर्पणं स्मृतम् ॥ ४६४ ॥ (दीपनगोपनमाह) परमापरमायोगो गोपनदीक्षमुच्यते ॥जप्यमानस्य मंत्रस्य

गोपनं स्वप्रकाशनम् ॥ ४६५ ॥ संस्कारा दश ते प्रोक्ताः सर्वतंत्रेषु गोपिताः ॥ यान् कृत्वा संप्रदायेन मंत्री वांछितमश्नुते ॥ ४६६ ॥ तांबूले भूर्जपत्रे वा लिखित्वा च कर्तव्याः ॥ (अथ शंकरोक्ताः सप्त उपायाः) भ्रामणं बोधनं वश्यं पीडनं पोषशोषणे ॥ दहनांतं क्रमात् कुर्यात्ततः सिद्धो भवेद्ध्रुवम् ॥ ४६७ ॥ भ्रामणं वायुबीजेन प्रथमं क्रमयोगतः ॥ तन्मंत्रं यंत्रमालिख्य सिक्तकर्पूरचन्दनैः ॥४६८॥ उशीरचन्दनाभ्यां तु यंत्रं संपुटमालिखेत् ॥ पूजनाज्जपनाद्धोमाद्भ्रामितः सिद्धिदो भवेत् ॥ ४६९ ॥ भ्रामितो यदि नो सिद्धो बोधनं तस्य कारयेत ॥ सारस्वतेन[1] बीजेन संपुटीकृत्य संजपेत् ॥ ४७० ॥ एवं रुद्धो भवेत्सिद्धो न चेदेतद्वशी कुरु॥ अलक्तं चन्दनं कुष्ठं हरिद्रा मादनं शिला ॥ ४७१ ॥ एतैस्तु यंत्रमालिख्य भूर्जपत्रे सुशोभने ॥ धृत्वा कंठे भवेत् सिद्धः पीडनं तस्य कारयेत् ॥ ४७२ ॥ अधरोत्तर योगेन पदानि परिजाप्य वै ॥ ध्यायेच्च देवतां तद्वदधरोत्तररूपिणीम् ॥४७३॥ विद्यामादित्यदुग्धेन[2] लिखित्वाक्रम्य चांघ्रिणा ॥ तथाभूतेन मंत्रेण होमः कार्यो दिनेदिने ॥४७४॥ पीडितो लज्जयाविष्टः सिद्धिः स्यादथ पोषयेत् ॥ बालायास्त्रितयं बीजमाद्यंते तस्य[3] योजयेत् ॥ ४७५ ॥ गोक्षीरमधुनालिख्य विद्यां पाणौ विधारयेत ॥ पोषितोऽयं भवेत् सिद्धो न चेत्कुर्वीत शोषणम् ॥ ४७६ ॥ द्वाभ्यां च वायुबीजाभ्यां[4] मंत्रं कुर्याद्विदर्भितम् ॥ एषा विद्या गले धार्या लिखित्वा वरभस्मना ॥ ४७७ ॥ शोभितो न स्व सिद्ध्येच्च दहनीयोऽग्निबीजतः ॥ आग्नेयेन तु बीजेन मंत्रस्यैकैकमक्षरम् ॥ ४७८ ॥ आद्यंतमध ऊर्ध्वं च योजयेद्दाहकर्मणि ॥ ब्रह्मवृक्षस्य तैलेन मंत्रमालिख्य धारयन् ॥ ४७९ ॥ कंठदेशे ततो मंत्रसिद्धिः स्याच्छंकरोदिता ॥ इत्येतत्कथितं सम्यक् केवलं तव भक्तितः ॥ एकेनैव कृतार्थः स्याद्बहुभिः किमु सुव्रते ॥ ४८० ॥ अथोत्कीलनविधिः (मंत्रमहोदधौ) शिवेन कीलिता विद्या तदुत्कीलनमुच्यते ॥ मायातारपुटां मंत्री जप्यादष्टोत्तरं शतम् ॥४८१॥ मंत्रस्यादौ तथैवांते भवेत्सिद्धिप्रदा तु सा॥ एष नूनं विधिर्गोप्यः सिद्धिकामेन मंत्रिणा ॥ ४८२ ॥ (तंत्रांतरे) भूर्जपत्रे ष्टगंधेन[5] अष्टोत्तरशतं मूले विलिख्य पंचोपचारैः संपूज्य ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ ततस्ताम्रपात्रे जलमा

१ सारस्वतबीजम् ऐं । २ आदित्योऽर्कः । ३ ह्रीं । ४ यं क्लीं सौः । ५ गोरोचनम्, कर्पूरम्, गजमदः, मृगमदः,अगरम्, केशरम्, चन्दनद्वयं च इत्यष्टगन्धः ।

पूर्य प्रत्येकं क्षिपेत् ॥ अथवा नद्यादौ क्षिपेत् उत्कीलनं भवति ॥ ४८३ ॥ (अन्यत्) ॥ मृत्तिकया नराकारामिष्टदेवप्रतिमां कृत्वा प्राणान्संस्थाप्य ततो भूर्जपत्रेऽष्टगंधेन मंत्रं विलिख्य प्रतिमां हृदये संस्थाप्य मासांतरे पंचोपचारैः संपूजयेत् ।अष्टोत्तरशतं मूलं च जपेत्॥ मासांते गुरोराज्ञया नद्यादौ प्रवाहयेत् ॥ ब्राह्मणांश्च भोजयेत् तदा उत्कीलनं भवति ॥ ४८४ ॥ अथ पुरश्चरणनिर्णयः ॥ (मंत्रसिद्धभाण्डागारे) फलिष्यतीति विश्वासः सिद्धेः प्रथमलक्षणम् ॥ द्वितीयं श्रद्धया युक्तं तृतीयं गुरुपूजनम् ॥ ४८५ ॥ चतुर्थं समताभावं पञ्चमेन्द्रियनिग्रहम् ॥ षष्ठं च प्रमिताहारं सप्तमं नैव विद्यते ॥ ४८६ ॥ (मंत्रमहोदधौ) निश्चयोत्साहधैर्याश्च तत्त्वज्ञानस्य दर्शनात् ॥ अल्पाशी त्यक्तसङ्गश्च षड्भिर्मंत्रः प्रसिध्यति ॥ ४८७ ॥ (कुलप्रकाशतंत्रे) उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रसादतः ॥ मंत्रप्रभावाद्भक्त्या च मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ४८८ ॥ (शिवेऽपि) मनःसंहारणं शौचं मौनं मंत्रार्थचिंतनम् ॥ अव्यग्रत्वमनिर्वेदो मंत्रसिद्धेस्तु हेतवः ॥ ४८९ ॥ (ग्रंथांतरे) अभ्यासात्सिद्धिमाप्नोति भोगयुक्तोऽपि मानवः ॥ सकलः साधितार्थोऽपि सिद्धो भवति भूतले॥४९०॥ अशुचिर्वा शुचिर्वापि गच्छंस्तिष्ठन् स्वपन्नपि ॥ मंत्रैकशरणो विद्वान् मनसैवं समभ्यसेत् ॥न दोषो मानसे जापे सर्वदेशेऽपि सर्वदा॥४९१॥ (मंत्रसिद्धिभांडागारे) प्रवासी बहुभक्षी च प्रजल्पी नियमारतः ॥ नीचसंगाच्च लौल्याच्च षड्भिर्मंत्रो न सिध्यति ॥ ४९२ ॥ (स्त्रीभोगत्यागे महत्फलं देवीभागवते) मैथुनञ्च तदालापं तद्गोष्ठीमपि वर्जयेत् ॥ कर्मणा मनसा वाचा सर्वावस्थासु सर्वदा ॥ ४९३ ॥ सर्वत्र मैथुनत्यागं ब्रह्मचर्यं प्रचक्षते ॥ राज्ञश्चैव गृहस्थस्य ब्रह्मचर्यमुदाहृतम् ॥ ४९४ ॥ ऋतुस्नातेषु दारेषु संगतिस्तु विधानतः ॥ संस्कृतायां सवर्णायामृतुं दृष्ट्वा प्रयत्नतः॥रात्रौ तु गमनं कार्यं ब्रह्मचर्यं हरेन्न तत्॥४९५॥(शिवरहस्ये)व्यासाद्यैरपि दुर्वृत्तैः ६ नः स्त्रीसंग्रहो मुदा॥ दुर्लभः पुरुषाणां तु नित्यमिंद्रियनिग्रहः॥४९६॥ विषयेभ्यस्तु सर्वेभ्यः स्त्रीरूपविषयो महान् ॥ पुमांसं मोहयत्येव विरक्तमपि सत्वरम्॥विषयेभ्यो निवृत्तिश्चेज्जितं तेन न संशयः॥४९७॥(पुरश्चरणे वणिग्दत्तधनं वर्ज्यं शिवरहस्ये)वणिग्दत्तेन वित्तेन तनुं यः पोषयिष्यति॥भुक्त्वा स नरकं घोरं प्रयात्येव न संशयः ॥ ४९८ ॥ (योगिनीहृदये) ॥ ईश्वर उवाच ॥ सर्वहिंसाविनिर्मुक्तः सर्वप्राणिहिते रतः ॥ सोऽस्मिञ्शास्त्रेऽधिकारी

स्यात्तदन्ये भ्रष्टसाधकाः ॥४९९॥ (कुलार्णवे पंचमखंडे पंचदशोल्लासे)॥ देव्युवाच॥ कुलेश श्रोतुमिच्छामि पुरश्चरणलक्षणम् ॥ स्थानाद्दा
रादिभेदेन वद मे परमेश्वर॥५००॥ईश्वर उवाच॥शृणु देवि प्रवक्ष्यामि यन्मां त्वं परिपृच्छसि ॥ तस्य श्रवणमात्रेण मंत्रतत्त्वं प्रकाशते ॥
॥ ५०१ ॥ जपयज्ञात्परो यज्ञो नापरोऽस्तीह कश्चन ॥ तस्माज्जपेन धर्मार्थकाममोक्षं च साधयेत् ॥५०२॥ सर्वपादान् परित्यज्य मंत्रपादं
समाचरेत् ॥ आब्रह्मजीवे दोषाश्च नियमातिक्रमोद्भवाः ॥ ५०३ ॥ ज्ञानाज्ञानकृताः सर्वे प्रणश्यंति यथा प्रिये ॥ संसारे दुःखभूयिष्ठे यदी
च्छेत्सिद्धिमात्मनः ॥ ५०४ ॥ पंचांगोपासनेनैव मंत्रजापी सुखं व्रजेत् ॥ मंत्रं यंत्रं पंजरं च स्तोत्रं नामसहस्रकम् ॥ ५०५ ॥ पूजा त्रैका
लिकी नित्यं जपस्तर्पणमेव च ॥ होमो ब्राह्मणभुक्तिश्च पुरश्चरणमुच्यते॥ ५०६ ॥ यद्यदंगं च विहितं तत्संख्याद्विगुणं जपम् ॥ कुर्याद्वि
त्रिचतुःपंचसंख्यं वा साधकः प्रिये ॥ ५०७ ॥ कुर्वीत सांगसिद्ध्यर्थं तदशक्तेन भक्तितः ॥ सर्वदांगविहीनस्य मंत्री नेष्टमवाप्नुयात्॥५०८॥
सम्यक्सिद्धैकमंत्रस्य पंचांगसेवनेन च ॥ सर्वमंत्राश्च सिध्यंति तत्प्रभावात्कुलेश्वरि ॥ ५०९ ॥ उपदेशस्य सामर्थ्याच्छ्रीगुरोश्च प्रभावतः ॥
मंत्रप्रतापाद्भक्तेश्च मंत्रसिद्धिः प्रजायते ॥ ५१० ॥ सिद्धमंत्रं गुरोर्लब्ध्वा मंत्रोऽयं शीघ्रसिद्धये ॥ पूर्वजन्मकृताभ्यासान्मंत्रोऽयं शीघ्रसिद्धिदः
॥५११॥ दीक्षापूर्वं कुलेशानि पारंपर्यक्रमागतम् ॥ न्यासलब्धं तु यन्मंत्रं तच्च सिद्धं न संशयः ॥५१२॥ मासमात्रं जपेन्मंत्रं भूतलिप्यर्ण
संपुटम् ॥ क्रमोत्क्रमात्सहस्रं तु तस्य सिद्धो भवेन्मनुः॥५१३॥ मण्डलं पूजयेन्मंत्रं मातृकाक्षरसंपुटम् ॥ अनुलोमविलोमेन मंत्रसिद्धिः
प्रजायते ॥ ५१४ ॥ विषद्वाक्षरसंयुक्तं मातृकाक्षरसंपुटम् ॥ क्रमोत्क्रमं तु तज्जप्त्वा मासात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ५१५ ॥ मातृकाजपमात्रेण
मंत्राणां कोटिकोटयः ॥ जागृताः स्युर्न संदेहो यत्तत्सर्वं तदुद्भवम् ॥५१६॥ अनेन कोटिमंत्रेण चित्तव्याकुलकारकम् ॥ मंत्रगुरुकृपाव्यास
मेकं स्यात्सर्वसिद्धिदम् ॥ ५१७ ॥ यदीच्छया श्रुतं मंत्रं छद्मनापि च्छलेन वा ॥ यत्र स्थितं च वाग्ध्वस्तं तज्जपेन ह्यनर्थकृत् ॥ ५१८ ॥
पुस्तके लिखितान्मंत्रानालोक्य प्रजपन्ति ये ॥ ब्रह्महत्यासमं तेषां पातकं परिकीर्तितम्॥५१९॥स्नानासनप्राणायामन्यासमालाजपक्षणम् ॥
मनसा यः स्मरेत्स्तोत्रं वचसा वा मनुं पठेत् ॥ ५२० ॥ उभयोर्निष्फलं देवि भिन्नभांडोदकं यथा ॥ शाणोल्लीढानि शस्त्राणि यथा स्यु

निशितानि वै ॥ ५२१ ॥ मंत्राश्च मूर्तिमायांति संस्कारैर्दशभिस्तथा ॥ तेषां हविष्यं शाकादि हविष्याणि फलं पयः ॥ ५२२ ॥ मूलं सक्तुर्यवान्नं च ह्यष्टावेतानि मंत्रिणाम् ॥ यथान्नपानपूगस्य कुरुते धर्मसंचयम् ॥५२३॥ अन्नदातुः फलस्यार्द्धं कर्तुश्चार्द्धं न संशयः ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन परान्नं वर्जयेत्सुधीः ॥ ५२४ ॥ पुरश्चरणकर्तुश्च करो दग्धः प्रतिग्रहैः ॥ मनो दग्धं परस्त्रीभिः कार्यसिद्धिः कथं भवेत् ॥ ५२५ ॥ मनोऽन्यत्र शिवोऽन्यत्र शक्तिरन्यत्र मारुतः ॥ न सिद्ध्यंति वरारोहे लक्षकोटिजपादपि ॥५२६॥ वादार्थं पठ्यते विद्या परार्थः क्रियते जपः ॥ ख्यात्यर्थं दीयते दानं कथं सिद्धिर्वरानने ॥ ५२७ ॥ धनार्थं गम्यते तीर्थे दंभार्थं क्रियते तपः ॥ काम्यार्थं देवतायात्रा कथं सिद्धिर्वरानने ॥ ५२८ ॥ अनित्येन तु देहेन न्यासं देवार्चनं जपम् ॥ होमं कुर्वंति ये मूढाः सर्वं भवति निष्फलम् ॥ ५२९ ॥ तपोर्चनादिकं सर्वमपवित्रं भवेत् प्रिये ॥ मलिनांगपराः केशा मुखं दुर्गंधसंयुतम् ॥ यो जपेत्तं तदा हन्याद्देवता सुजुगुप्सितम् ॥ ५३० ॥ (मंत्रमहोदधौ) भूशय्यां ब्रह्मचर्यं च त्रिकालं देवतार्चनम् ॥ नैमित्तिकार्चनं देवस्तुतिं विश्वासमाश्रयेत् ॥ ५३१ ॥ प्रत्यहं प्रत्यहं तावन्नैव न्यूनाधिकं क्वचित् ॥ एवं जपं समाप्यान्ते दशांशं होममाचरेत् ॥ ५३२ ॥ तत्तत्कल्पोदितैर्द्रव्यैस्तदाधानमुदीर्यते ॥ प्राणायामं षडंगं च कृत्वा मूलेन मंत्रवित् ॥ ५३३ ॥ हविष्यं निशि भुंजीत त्रिःस्नाय्यभ्यंगवार्जितः ॥ व्यग्रतालस्यनिष्ठीवक्रोधं पादप्रसारणम् ॥ ५३४ ॥ अन्यभाषां त्यजेन्नैव जपकाले सदा सुधीः ॥ स्त्रीशूद्रभाषणं निद्रां तांबूलं शयनं दिवा ॥ प्रतिग्रहं नृत्यगीते कौटिल्यं वर्जयेत्सदा ॥ ५३५ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) लवणं पललं चैव क्षारं क्षौद्रं रसांतरम् ॥ माषमुद्गमसूरांश्च कोद्रवांश्चणकानपि ॥ ५३६ ॥ असद्भाषणमन्यार्च्यं वर्जयेदन्यपूजनम् ॥ विनाश्रमोचितं नित्यमथ नैमित्तिकं चरेत् ॥ ५३७ ॥ तांबूलं गंधलेपं च पुष्पधारणमेव च ॥ मैथुनं तत्कथालापं तद्गोष्ठीं परिवर्जयेत् ॥ ५३८ ॥ असंकल्पितकृत्यं च ह्यनिवेदितभोजनम् ॥ न छिंद्यान्नखरोमाणि न स्पृशेद्यदमंगलम् ॥ ५३९ ॥ नार्द्रवस्त्रो जपं कुर्याद्धोमं दानं प्रतिग्रहम् ॥ सर्वं तद्राक्षसं विद्याद्बहिर्जानु च यत्कृतम् ॥ ५४० ॥ न पदा पादमाक्रम्य तथैव हि पदा करौ ॥ न चासमाहितमना न च संश्रावयञ्जपेत् ॥ ५४१ ॥ न च चंक्रमणेश्चैव न पार्श्वं चावलोकयेत् ॥ न प्रवृत्तो न

जल्पंश्च न प्रावृतशिरास्तथा॥ ५४२ ॥ अथानुष्ठाने छिक्कादिदोषनिवारणविधिः (योगिनीहृदये) पतितानामंत्यजानां दर्शने भाषणे कृते ॥ क्षुतेऽधोवायुगमने जृंभणे जपमुत्सृजेत् ॥ ५४३ ॥ तथाचम्य च तन्न्यासो प्राणायामं षडंगकम् ॥ कृत्वाचम्य जपेच्छेषं यद्वा सूर्यादिदर्शनम् ॥ ॥ ५४४ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) सकृदुच्चरिते शब्दे प्रणवं समुदीरयेत् ॥ प्रोक्तपामरशब्देऽपि प्रणवं सकृदुच्चरेत्॥ ५४५ ॥ (याज्ञवल्क्ये) परिवाग्यमलोपः स्याज्जपादिषु कथंचन ॥ व्याहरेद्वैष्णवं मंत्रं स्मरेद्वा विष्णुमव्ययम् ॥५४६॥ क्षुते निष्ठीवने चैव दंतोच्छिष्टे तथानृते॥ पतितानां च संभाषे कर्णंच दक्षिणं स्पृशेत् ॥५४७॥ अग्निरापश्च वेदश्च सोमसूर्यानिलास्तथा ॥ सर्वे एव हि विप्रस्य कर्णे तिष्ठंति दक्षिणे ॥ ५४८ ॥ (सनत्कुमारसंहितायाम्) जपकाले यदा पश्येदशुचिं मंत्रवित्तमः ॥ प्राणायामं तदा कुर्यात्ततः शेषं समाचरेत् ॥ ५४९ ॥ यदा चैव पठेन्मंत्री स्वयमप्यशुचिः पुनः ॥ आचम्य प्रयतो भूत्वा न्यासं पूर्ववदाचरेत् ॥ ५५० ॥ (पुरश्चरणे सूतकनिर्णयः) विनियोगं समारभ्य यथायथमथाचरेत् ॥ पुरश्चरणमध्ये तु सूतकं नैव विद्यते ॥५५१॥ (सूतकनिवृत्तिः) जातसूतकमादौ स्यादंते वै मृतसूतकम् ॥ सूतकद्वयनिर्मुक्तः स मंत्रः सर्वसिद्धिदः ॥ ५५२ ॥ तस्माद्देवि प्रयत्नेन ध्रुवेण पुटितं ध्रुवम् ॥ अष्टोत्तरशतं वापि सप्तवारं जपेदतः ॥ जपांते च ततो जप्त्वा चतुर्वर्गफलाप्तये ॥ ५५३ ॥ (तत्रैव) ब्रह्मबीजं मनो दत्त्वा चाद्यंते च महेश्वरि ॥ सप्तवारं जपेन्मंत्री सूतकद्वयमुक्तये ॥ ५५४ ॥ पुरश्चरणादौ गायत्रीजपावश्यकता॥(मंत्रमहोदधौ) सर्वे शाक्ता द्विजाः प्रोक्ता न शैवा न च वैष्णवाः ॥ आदिदेवीमुपासंते गायत्रीं वेदमातरम्॥तस्मादादौ प्रयत्नेन गायत्रीं प्रयुतं जपेत् ॥ ५५५ ॥ (तंत्रांतरे) यस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरश्चरणमारभेत् ॥ व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् ॥ विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ ५५६ ॥ (शाक्तानंदतरंगिण्याम्) हविष्येणैव भोक्तव्यं कृत्वा देहविशोधनम् ॥ प्रातः स्नात्वाथ सावित्र्या जपेत्पंचसहस्रकम् ॥ ५५७ ॥ त्रिसहस्रं सहस्रं वा जपेदष्टोत्तरं शुचिः ॥ ज्ञाताज्ञातस्य पापस्य क्षयार्थं प्रथमं ततः ॥ ५५८ ॥ वाचिकसंकल्पापेक्षया मानसिकसंकल्पो मुख्यः ॥ (बीजार्णवतंत्रे षोडशपटले) संकल्पो मानसो देवि चतुर्वर्गफलप्रदः ॥ अत एव महेशानि संकल्पो मानसः स्मृतः ॥ ५५९ ॥ स्थूलो हि परमेशानि संकल्पो व्यर्थ उच्यते ॥ संकल्पेन

विना देवि यत्किंचित्कुरुते सुधीः ॥ व्यर्थमेव हि देवेशि तत्सर्वं मानसेन च ॥ ५६० ॥ (देवतापञ्चाङ्गनिर्णयः पुरश्चरणचन्द्रिकायाम्) पटलं पद्धतिर्वर्म तथा नामसहस्रकम् ॥ स्तोत्राणि चेति पंचांगं देवताराधने स्मृतम् ॥५६१॥ कवचं देवतागात्रं पटलं देवताशिरः ॥पद्धति देवहस्तौ तु मुखं साहस्रकं स्मृतम् ॥ ५६२ ॥ (पंचांगोपासनानिर्णयः देवीरहस्यतंत्रे)जप्त्वा मंत्री मंत्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः ॥ तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः ॥ ५६३ ॥ भोजयेत्तद्दशांशेन मंत्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ जीवहीनो यथा देहो सर्वकर्मसु न क्षमः ॥ पुरश्चरण हीनोऽयं तथा मंत्रः प्रकीर्तितः ॥ ५६४ ॥ (ग्रहणस्पर्शकालनिश्चयकरणम्) चक्षुषा दर्शनं राहोर्यत्तद्ग्रहणमुच्यते ॥ तत्र कर्माणि कुर्वीत गणनामात्रतो नहि ॥ ५६५ ॥ (अथ पुरश्चरणविधिः श्रीबीजार्णवतंत्रे षोडशपटले देवीं प्रति शिववाक्यम्) एकदा परमेशानि कामाख्यायां महेश्वरि ॥ दृष्ट्वोपरागं यत्कर्म तच्छृणुष्व वरानने॥५६६॥कुतः स्नानं कुतः संध्या प्राणायामः कुतः प्रिये ॥भूतशुद्धिः कुतो भद्रे कुतः पूजा वरानने ॥ ५६७ ॥ कालातीतभयाद्देवि सर्वं संत्यज्य कामिनि ॥ संकल्पं मानसं कृत्वा जपं कृत्वा वरानने ॥ ५६८ ॥ पंचांग विधिना देवि सिद्धो भवति नान्यथा ॥ मंत्रविद्या महेशानि कवचं स्तव एव च ॥ ५६९॥ ध्यानं वा परमेशानि न्यासो वा कमलानने ॥ एकोच्चारेण देवेशि भवंति दश कोटयः ॥ ५७० ॥ असंख्यः स जपो देवि ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ तत्कथं परमेशानि क्रियते जपसंख्यकम् ॥ ५७१ ॥ अत एव वरारोहे होमो नास्ति शुचिस्मिते ॥ अभिषेकश्च देवेशि तथा च तर्पणादिकम् ॥५७२॥ भोजनं च महेशानि नास्ति वै कमलानने ॥ चन्द्रसूर्यग्रहे देवि पंचांगं नास्ति कामिनि ॥ पंचांगेन विना देवि सिद्धो भवति नान्यथा ॥ ५७३ ॥ प्रथमे प्रहरे देवि चन्द्रग्रासो यदा भवेत् ॥ चन्द्रग्रहणकाले तु जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७४ ॥ दिवसे च यदा भद्रे भास्करग्रहणं भवेत् ॥ रात्रौ भुक्त्वा च पीत्वा च जपयज्ञादिकं चरेत् ॥ ५७५ सर्वेषु विष्णुमंत्रेषु शिवगाणपयोस्तथा ॥ शक्तिमंत्रो महेशानि प्रशस्तः सततं जपे ॥ ५७६ ॥ संकल्पो यस्तु देवेशि मानसे समुपस्थितः ॥ तं संकल्पं विजानीयाद्ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ ५७७ ॥ तस्मात्तु चंचलापांगि संकल्पं नैव कारयेत् ॥ इति बीजार्णवे तंत्रे शिवेनैव प्रकाशितम् ॥ ५७८ ॥ (पुरश्चरणचन्द्रिकायाम्) ग्रहणेऽर्कस्य चेन्दोर्वा शुचिः पूर्वमुखोपितः ॥

नद्यां समुद्रगामिन्यां नाभिमात्रोदके स्थितः॥ ५७९ ॥ ग्रहणान्मोक्षपर्यंतं जपेन्मन्त्रं समाहितः ॥ अनंतरं दशांशेन क्रमाद्धोमादिकं चरेत् ॥ ५८० ॥ तदंते महतीं पूजां कुर्याद्ब्राह्मणतर्पणम् ॥ ततो मंत्रप्रसिद्ध्यर्थं गुरुं संपूज्य तोषयेत्॥ एवं च मंत्रसिद्धिः स्याद्देवता च प्रसीदति ॥ ५८१ ॥ (रुद्रयामले) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ अपि शुद्धोदकैः स्नात्वा शुचौ देशे समाहितः ॥ ५८२ ॥ ग्रहणान्मुक्तिपर्यंतं जपेन्मंत्रमनन्यधीः ॥ इति कृत्वा न संदेहो जपस्य फलभाग्भवेत्॥५८३॥(तंत्रांतरेऽपि) यस्तु श्रद्धानुरोधेन ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः ॥ न करोति पुरश्चर्यां नरके स विपच्यते॥५८४॥अथ सूर्योदयमारभ्य द्वितीयसूर्योदयपर्यंतं पुरश्चरणं (देवीरहस्ये) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते॥सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्योदयांतरम्॥ तावज्जप्त्वा निरातंको मंत्रः कल्पद्रुमो भवेत्॥५८५॥ कृष्णाष्टमीमारभ्य कृष्णाष्टमीपर्यंतमेकमासपुरश्चरणं(मुंडमालायाम्) अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते॥ कृष्णाष्टमीं समारभ्य यावत् कृष्णाष्टमी भवेत्॥सहस्रसंख्याजपे तु पुरश्चरणमिष्यते ॥५८६॥ कृष्णचतुर्दशीमारभ्य शुक्लनवमीपर्यंतमेकादशदिनपुरश्चरणम् ॥ (मुंडमालायाम्) कृष्णां चतुर्दशीं प्राप्य नवम्यन्तं महोत्सवे ॥ अष्टमीनवमीरात्रौ पूजां कुर्याद्विशेषतः ॥ ५८७ ॥ दशम्यां पारणं कुर्यान्मत्स्यमांसादिभिर्युतम् ॥ षट्सहस्रं जपेन्नित्यं भक्तिभावपरायणः ॥५८८॥ अष्टमीमारभ्य चतुर्दशीपर्यंतं सप्तदिनपुरश्चरणम् ॥ (कालीतंत्रे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ अष्टम्याश्च चतुर्दश्यां पक्षयोरुभयोरपि ॥ ५८९ ॥ सूर्योदयात्समारभ्य यावत्सूर्योदयांतरम् ॥ तावज्जप्त्वा निरातंकं सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥ ५९० ॥ भौमशनिवारपुरश्चरणं (कालीतंत्रे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ कुजे वा शनिवारे वा नरमुण्डं समाहृतम् ॥ ५९१ ॥ पंचगव्येन मिलितं चंदनाद्यैर्विशेषतः ॥ निक्षिप्य भूमौ हस्तार्द्धमानतः काननांतरे ॥ ५९२ ॥ तत्र तद्दिवसे रात्रौ सहस्रं यदि साधकः ॥ एकाकी प्रजपेन्मंत्रं स भवेत्कल्पपादपः ॥ ५९३ ॥ कार्तिकफाल्गुनवैशाखेषु शुक्लपक्षे प्रतिपदामारभ्यैकादश्यंतमेकादशदिने वैष्णवमंत्रपुरश्चरणविधानम् (चन्द्रपीठे) ऊर्जे तपसि राधे वा शुक्लपक्षे तु वैष्णवे ॥ एकादश्यन्तमैशे तु भूतांतः फाल्गुने स्मृतम् ॥ ५९४ ॥ चतुर्दशीमारभ्य चतुर्दशीपर्यंतं पञ्चदश दिनानि माहेश्वरपुरश्चरणविधानम् ॥ अथवान्यप्रकारेण

पुरश्चरणमिष्यते ॥ चतुर्दशीं समारभ्य यावदन्या चतुर्दशी ॥ ५९५ ॥ तावज्जपेन्महेशानि पुरश्चरणमिष्यते ॥ केवलं जपमात्रेण मंत्राः सिद्धा भवंति हि ॥ ५९६ ॥ बलिहोमादिदानेन विशेषात्पीठपूजने ॥ योगिपीठं महापीठं कामरूपं तथापरम् ॥ तयोरेकतमं पूज्यं रुद्रदेह इवापरः ॥ ५९७ ॥ भाद्रमार्गमाघेषु नवरात्रे वा गणेशमंत्रपुरश्चरणविधानं (चन्द्रपीठे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ भाद्रेऽपि विघ्नराजत्वं माघमार्गौ स्ववासरात् ॥ ५९८॥ अन्येष्वपि च मंत्रेषु पर्वोक्तं नवरात्रकम् ॥जपो मातृकया प्रातः कालान्मध्यंदिनावधि ॥ ५९९ ॥ रात्रौ याममितः कार्यः पयोमूलफलाशिना ॥ चतुर्थयामे कर्तव्या मालामंत्रे दशांशतः ॥ ६०० ॥ विंशांशाद्वा दशांशाद्वा अन्येष्वपि हुतं मतम् ॥ दक्षिणा च यथोक्ता च वित्तशाठ्यं न कारयेत् ॥ एवं मंत्रः प्रयोगार्हो भवत्येव न संशयः ॥ ६०१॥ आश्विने चैत्रे वा प्रतिपदामारभ्य महानवमीपर्यंतं नवरात्रे शक्तिपुरश्चरणविधानं (चन्द्रपीठे) अथवान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ महालक्ष्मीं समारभ्य आमहानवमीश्वरीम् ॥ कृष्णामा नवमी चैव मधौ शक्तेर्मनो स्मृते ॥ ६०२ ॥ शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यंतं षड्दिन पुरश्चरणविधानम् (तंत्रांतरे) अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ शरत्काले चतुर्थ्यादिनवम्यंतं विशेषतः॥ ६०३॥ भक्तितः पूजयित्वा तु रात्रौ तावत्सहस्रकम् ॥ जपेदेव तु विजने केवलं तिमिरालये ॥ ६०४ ॥ अष्टम्यादिनवम्यंतमुपवासपरो भवेत् ॥ स भवेत्सर्वसिद्धीशो नात्र कार्या विचारणा ॥ ६०५ ॥ पुत्रजन्मोत्सवदिने पुरश्चरणविधानं (देवीरहस्ये) अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ पुत्रजन्मोत्सवदिने सूतिकाकुल मंदिरे ॥ ६०६॥ मांत्रिको मूलमंत्रं स्वं जपेद्दशादिनावधि ॥ दशांशसंस्कृतं मंत्रं कुर्यात्सिद्धो भवेन्मनुः ॥ ६०७ ॥ मृतसूतकदिने पुरश्चरणविधानम् ॥ (देवीरहस्ये)अथ वान्यप्रकारेण पुरश्चरणमिष्यते ॥ मृतकाशौचादिवसे प्रथमे साधको जपेत् ॥६०८॥मनुं दशादिनं रात्रौ धीरो भूत्वा यथार्थतः ॥ एकादशाहानि सुधीः कुर्यान्मंत्रं सुसंस्कृतम् ॥ कर्मणा मनसा वाचा मंत्रः कल्पद्रुमो भवेत् ॥ ६०९ ॥ (अथ मंत्रसिद्धिचिह्नानि वक्रतुंडकल्पे) चित्तप्रसादो मनसश्च तुष्टिरल्पाशिता स्वप्नपराङ्मुखत्वम् ॥ स्वप्ने प्रपाकफलं भवान्ति सिद्धस्य चिह्नानि भवंति सद्यः ॥ ६१० ॥ (भैरवी तंत्रे) ज्योतिः पश्यति सर्वत्र शरीरं वा प्रकाशयुक् ॥ निजं शरीरमथवा देवतामयमेव हि ॥६११॥ (नारदपंचरात्रे) नानाश्चर्यादि हृदये

मंत्रसिद्धिमयानि वै ॥ अन्यानंदप्रदान्याशु प्रत्यक्षेण बहिस्तथा ॥६१२ ॥ जडधीस्तु क्षणं विप्र क्षणमस्ति प्रहर्षितः ॥क्षणं दुंदुभिनिर्घोषं शृणोत्यस्यांतरिक्षतः ॥ ६१३ ॥ क्षणं च मधुरं वाद्यं नानागतिसमन्वितम् ॥ आजिघ्रति क्षणं गंधान् कर्पूरमृगनाभिजान् ॥ ६१४ ॥ उत्पन्नं क्षणं वापि पश्यत्यात्मानमात्मनि॥ चंद्रार्ककिरणाकीर्णं क्षणमालोकयेन्नभः ॥ ६१५ ॥ गजगोवृषनादांश्च शृणुयाच्च क्षणं द्विज ॥ निर्भरांबुदसंक्षोभं क्षणमाकंपयन्त्यपि ॥६१६॥ तारकाणि विचित्राणि योगिनो नभसि स्थितान् ॥ पश्यंति दाह्यंतं च क्षणं मंत्रव्रती सदा ॥ ॥ ६१७ ॥ क्षणं किलकिलारावं हंसबर्हिरवं तथा ॥ क्षणं मेघोदयं पश्येत्क्षणं रात्रिं दिने सति ॥ ६१८ ॥ रात्रौ दिवसवल्लोकं संपूर्य क्षण मीक्षते॥बलेन परिपूर्णश्च तेजसा भास्करोपमः ॥ ६१९ ॥ पूर्णेंदुसदृशः कांत्या गमने विहगोपमः ॥ शमेन युक्तः प्रौढेन गांभीर्येण सत्वेन च ॥ ६२० ॥ स्वल्पासनेनासंवृत्तो बहुनापि न बध्यते ॥ विण्मूत्रयोरनल्पत्वं भवेत्तंद्राजयस्तथा ॥६२१॥ जपध्यानगतो मंत्री न खेदमधिगच्छति ॥ ६२२ ॥ विना भोजनपानाभ्यां पक्षमासादिकं मुने ॥ इत्येवमादिभिश्चिह्नैर्महाविस्मयकारिभिः ॥ ६२३ ॥ एवमादीनि चिह्नानि यदा पश्यति मंत्रवित्॥सिद्धिं मंत्रस्य जानीयाद्देवतायाः प्रसन्नताम्॥ततो जपेऽधिकं यत्नं प्रकुर्याज्ज्ञानलब्धये ॥ ६२४ ॥ (तंत्रांतरे) मंत्राराधनशक्तस्य प्रथमं वत्सरत्रयम् ॥ जायंते बहवो विघ्ना नियतं तस्य नारद ॥ ६२५ ॥ नोद्वेगः साधके यावत् कर्मणा मनसा यदि ॥ तृतीयवत्सरादूर्ध्वं स्वयं सिध्यति मंत्रराट् ॥ ६२६ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखंडे निर्णयप्रकरणे प्रथमस्तरंगः ॥ १ ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ मुद्राप्रकारः ॥ अथ मुद्राः प्रवक्ष्यामि सर्वतंत्रेषु गोपिताः ॥ याभिर्विरचिताभिश्च मोदंते मंत्रदेवताः ॥ १ ॥ अर्चने जपकाले च ध्याने काम्ये च कर्मणि ॥ स्नाने चावाहने शंखे प्रतिष्ठायां च रक्षणे ॥ २ ॥ नैवेद्ये च तथान्यत्र तत्तत्कल्पप्रकाशिते ॥ स्थाने मुद्राः प्रद्रष्टव्याः स्वस्वलक्षणलक्षिताः ॥ ३ ॥ आवाहनादिका मुद्रा नव साधारणी मता ॥ तथा षडंगमुद्राश्च सर्वमंत्रेषु योजयेत् ॥ ४ ॥ एकोनविंशतिर्मुद्रा विष्णोरुक्ता मनीषिभिः ॥ शंखचक्रगदापद्मवेणुश्रीवत्सकौस्तुभाः ॥ ५ ॥ वनमाला तथा ज्ञान मुद्रा बिल्वाह्वया तथा ॥ गरुडाख्या परा विष्णोर्मुद्रा संतोषवर्द्धिनी ॥ ६ ॥ नारसिंही च वाराही हयग्रीवी धनुस्तथा ॥ बाणमुद्रा

ततः पर्शुर्जगन्मोहिनिका च सा ॥ ७ ॥ काममुद्रा परा ख्याता शिवस्य दश मुद्रिकाः ॥ लिंगयोनित्रिशूलाख्या मालेष्टाभिर्मृगाख्यिका ॥ ॥ ८ ॥ खट्वांगा च कपालाख्या डमरुः शिवतोषिका ॥ सूर्यस्यैकैव पद्माख्या सप्तमुद्रा गणेशितुः ॥ ९ ॥ दंतपाशांकुशाविघ्नपर्शुलड्डुक संज्ञकाः ॥ बीजपूराह्वया मुद्रा विज्ञेया विघ्नपूजने ॥ १० ॥ पाशांकुशवराभीतिखड्गचर्म्मधनुःशराः ॥ मौशली मुद्रिका दौर्गी मुद्राः शक्तेः प्रियंकराः ॥ ११ ॥ लक्ष्मीमुद्रार्चने लक्ष्म्या वाग्वादिन्यास्तु पूजने ॥ अक्षमाला तथा वीणा व्याख्यापुस्तकमुद्रिका ॥ १२ ॥ सप्तजिह्वाह्वया मुद्रा विज्ञेया वह्निपूजने ॥ मत्स्यमुद्रा च कूर्माख्या लेलिहा मुंडसंज्ञिका ॥ १३ ॥ महायोनिरिति ख्याता सर्वसिद्धि समृद्धिदा ॥ शक्त्यर्चने महायोनिः श्यामादौ मुंडमुद्रिका ॥ १४ ॥ मत्स्यकूर्मलेलिहाख्या सर्वसाधारणी मता ॥ दश मुद्राश्च विज्ञेया त्रिपुरायाः प्रपूजने ॥ १५ ॥ संक्षोभद्रावणाकर्षवश्योन्मादमहांकुशाः ॥ खेचरी बीजयोन्याख्या त्रिखंडा परिकीर्तिता ॥ १६ ॥ कुंभ मुद्राभिषेके स्यात्पद्ममुद्रासने तथा ॥ कालकर्णी प्रयोक्तव्या विघ्नप्रशमकर्म्मणि ॥ १७ ॥ गालिनी च प्रयोक्तव्या जलशोधनकर्म्मणि ॥ श्रीगोपालार्चने वेणुर्नृहरेर्नारसिंहिका ॥ १८ ॥ वराहस्य च पूजायां वराहाख्यां प्रदर्शयेत् ॥ रामार्चने धनुर्बाणमुद्रे पर्शुस्तथार्चने ॥ ॥ १९ ॥ पर्शुरामस्य विज्ञेया तथा परशुमुद्रिका ॥ वासुदेवाह्वया ध्याने कुंतमुद्रा तु रक्षणे ॥ २० ॥ सर्वत्र प्रार्थने चैव प्रार्थनाख्यां नियोजयेत् ॥ उद्देशानुक्रमादासामुच्यते लक्षणं तथा ॥ २१ ॥ अथावाहनादिनवमुद्रालक्षणम् ॥ हस्ताभ्यामंजलिं बद्ध्वानामिका मूलपर्वभिः ॥ अंगुष्ठौ निःक्षिपेत्सेयं मुद्रा त्वावाहनी मता ॥ इत्यावाहनी मुद्रा ॥ १ ॥ अधोमुखी त्वियं चेत्स्यात्स्थापनी मुद्रिका स्मृता ॥ इति स्थापनी मुद्रा ॥२॥ उच्छ्रितांगुष्ठमुष्ट्योस्तु संयोगात्सन्निधापनी ॥ इति संनिधापनी मुद्रा ॥ ३ ॥ अंतःप्रवेशितांगुष्ठा सेत्र संशोधनी मता ॥ इति संशोधनी मुद्रा ॥ ४ ॥ उत्तानमुष्टियुगला सम्मुखीकरणी मता ॥ इति संमुखीकरणमुद्रा ॥ ५ ॥ देवतांगे षडंगानां न्यासः स्यात् शकलीकृतिः ॥ इति शकलीकरणमुद्रा ॥ ६ ॥ सव्यहस्तकृता मुष्टिर्दीर्घाधोमुखसर्जनी ॥ अत्रा गुंठनमुद्रेयमभितो भ्रामिता मता ॥ इत्यवगुंठनी मुद्रा ॥ ७ ॥ अन्योन्याभिमुखी श्लिष्टा कनिष्ठानामिका पुनः ॥ तथैव तर्जनीमध्या

धेनुमुद्रा समीरिता ॥ अमृतीकरणं कुर्यात्तया साधकसत्तमः ॥ इत्यमृतीकरणे धेनुमुद्रा ॥ ८ ॥ अन्योन्यग्रथितांगुष्ठा प्रसारितकरांगुली ॥
महामुद्रेयमुदिता परमीकरणे बुधैः ॥ इति परमीकरणे महामुद्रा ॥ प्रयोजयेदिमा मुद्रा देवताह्वानकर्मणि ॥ ९ ॥ इत्यावाह
नाद्यो नव मुद्राः ॥ अथ षडंगन्यासोपयोगिषण्मुद्रालक्षणम् ॥ अंगन्यासस्य या मुद्रास्तासां लक्षणमुच्यते॥ ऋजवो हस्तशाखाश्च हृदये
च शिरस्यथ ॥ तर्जनीमध्यमांगुष्ठमधोमुष्टेशिखां तथा॥ करद्वंद्वाङ्गुलीः सर्वाः कवचे स्युः प्रमोदिकाः॥नाराचमुद्रिकामध्ये तर्जनीध्वनिरी
रिता ॥ विष्वक्सेनेन स्मृता मुद्रा नेत्रयोर्म्मध्यतर्जनी ॥ नेत्रत्रयं यत्र भवेदनामा मध्यतर्ज्जनी ॥ इति षडंगमुद्रा ॥ अथैकोनविंशति
विष्णुमुद्रालक्षणम् ॥ वैष्णवीनां तु मुद्राणां कथ्यंते लक्षणान्यथ ॥ वामांगुष्ठं तु संगृह्य दक्षिणेन तु मुष्टिना ॥ कृत्वोत्तानां ततो मुष्टि
मंगुष्ठं तु प्रसारयेत् ॥ वामांगुल्यस्तथाश्लिष्टाः संयुक्ताः स्युः प्रसारिताः ॥ दक्षिणांगुष्ठसंस्पृष्टा मुद्रैषा शंखमुद्रिका ॥ इति शंखमुद्रा ॥ १ ॥
हस्तौ च संमुखौ कृत्वा सभुग्नौ सुप्रसारितौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ लग्नौ मुद्रैषा चक्रसंज्ञिका ॥ इति चक्रमुद्रा ॥ २ ॥ अन्योन्याभिमुखौ
हस्तौ कृत्वा तु ग्रथितांगुलीः ॥ अंगुष्ठमध्यमे भूयः संलग्ने संप्रसारिते ॥ गदामुद्रेयमुदिता विष्णोः संतोषवर्द्धिनी ॥ इति गदामुद्रा ॥ ३॥
हस्तौ तु संमुखौ कृत्वा संहतप्रोन्नतांगुलीः ॥ तलांतमिलितांगुष्ठौ कृत्वैषा पद्ममुद्रिका ॥ इति पद्ममुद्रा ॥४॥ ओष्ठे वामकरांगुष्ठे लग्नस्तस्य
कनिष्ठके ॥ दक्षिणांगुष्ठसंसर्गात्त्कनिष्ठा प्रसारिता ॥ तर्जनीमध्यमानामाः किंचित्संकोच्य चालिताः ॥ वेणुमुद्रा भवेदेषा सुगुप्ता
प्रेयसी हरेः ॥ इति वेणुमुद्रा ॥ ५ ॥ अन्योन्यस्पृष्टकरयोर्म्मध्यमानामिकांगुलीः ॥ अंगुष्ठेन तु बध्नीयात्कनिष्ठामूलसंस्थिते ॥ तर्ज्जन्यौ
कारयेदेषा मुद्रा श्रीवत्ससंज्ञिका ॥ इति श्रीवत्समुद्रा ॥ ६ ॥ अनामां पृष्ठसंलग्नां दाक्षिणस्य कनिष्ठिकाम् ॥ कनिष्ठयान्ययाबध्य तर्ज्जन्या
दक्षया तथा ॥ वामानामां च बध्नीयाद्दक्षिणांगुष्ठमूलकै ॥ अंगुष्ठमध्यमे वामे संयोज्य सरलाः पराः ॥ चतस्रोऽप्यग्रसंलग्ना मुद्रा कौस्तुभ
संज्ञिका ॥ इति कौस्तुभमुद्रा ॥ ७ ॥ स्पृशेत्कंठादिपादांतं तर्ज्जन्यांगुष्ठया तथा ॥ करद्वयेन मालावन्मुद्रेयं वनमालिका ॥ इति
वनमाला मुद्रा ॥ ८ ॥ तर्जन्यंगुष्ठकौ सक्तावग्रतो हृदि विन्यसेत् ॥ वामहस्तांबुजं वामे जानुमूर्द्धनि विन्यसेत् ॥ ज्ञानमुद्रा भवेदेषा

रामचंद्रस्य प्रेयसी ॥ इति ज्ञानमुद्रा ॥९॥ अंगुष्ठं वाममुद्धाटितमितरकरांगुष्ठकेनाथ बद्धा तस्याग्रं पीडयित्वांगुलिभिरपि च ता वामहस्तां गुलीभिः ॥ बद्धा गाढं हृदि स्थापयतु विमलधीर्व्याहरन्मारबीजं बिल्वाख्या मुद्रिकेषा स्फुटमिह कथिता गोपनीया त्रिधिज्ञैः ॥ इति बिल्वाख्यमुद्रा ॥ १० ॥ हस्तौ तु विमुखौ कृत्वा ग्रंथयित्वा कनिष्ठिके ॥ मिथस्तर्जनिके श्लिष्टे श्लिष्टावंगुष्ठकौ तथा ॥ मध्यमानामिका द्वे तु द्वौ पक्षाविव चालयेत् ॥ एषा गरुडमुद्राख्या विष्णोः संतोषवर्द्धिनी ॥ इति गरुडमुद्रा ॥ ११ ॥ जानुमध्ये करौ दत्त्वा चिबुकोष्ठौ समावृतौ ॥ हस्तौ च भूमिसंलग्नौ कंपमानः पुनःपुनः ॥ मुखं च विवृतं कुर्याल्लेलिहानां च जिह्विकाम् ॥ नारसिंही भवेदेषा मुद्रा तत्प्रीतिवर्द्धिनी ॥ इति नारसिंही मुद्रा॥१२॥अंगुष्ठाभ्यां तु करयोरथाक्रम्य कनिष्ठिके ॥ अधोमुखीभिः सर्वाभिर्मुद्रेयं नृहरेर्मता ॥ इति द्वितीया नृहरिमुद्रा ॥१२॥ दक्षोपरि करं वामं कृत्वोत्तानमधः सुधीः ॥ नामयेदिति संप्रोक्ता मुद्रा वाराहसंज्ञिका ॥ इति वाराहमुद्रा ॥ १३ ॥ दक्षहस्तं चोर्द्ध्वमुखं वामहस्तमधोमुखम् ॥ अंगुल्यग्रं तु संयुक्तं मुद्रा वाराहसंज्ञिका ॥ इति वाराहमुद्रा द्वितीया ॥ १३ ॥ वामहस्ततले दक्षा अंगुलीस्ता अधोमुखीः ॥ संरोप्य मध्यमा तासामुन्नाम्याधो विकुंचयेत् ॥ हयग्रीवप्रिया मुद्रा तन्मूर्तेरनुकारिणी ॥ इति हयग्रीवमुद्रा ॥ १४ ॥ वामस्य मध्यमाग्रं तु तर्जन्यग्रेण योजयेत् ॥ अनामिकां कनिष्ठां च तस्यांगुष्ठेन पीडयेत् ॥ दर्शयेद्वामके स्कंधे धनुर्मुद्रेयमीरिता ॥ इति धनुर्मुद्रा ॥ १५ ॥ दक्षमुष्टेस्तु तर्जन्या दीर्घया बाणमुद्रिका ॥ इति बाणमुद्रा ॥ १६ ॥ तते तलं तु करयोस्तिर्यक् संयोज्य चांगुलीम् ॥ संहतां प्रसृतां कुर्यान्मुद्रेयं पर्शुसंज्ञिका ॥ इति परशुमुद्रा ॥ १७ ॥ उर्द्ध्वस्थांगुष्ठमुष्टी द्वे मुद्रा त्रैलोक्यमोहिनी । इति जगन्मोहिनी मुद्रा ॥ १८॥ हस्तौ तु संपुटौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ तथा ॥तर्जन्यौ मध्यमा पृष्ठे ह्यंगुष्ठौ मध्यमाश्रितौ ॥ काममुद्रेयमुदिता सर्वदेवप्रियंकरी ॥ इति काममुद्रा ॥ १९ ॥ इति विष्णुमुद्राः ॥ अथ शिवस्य दशमुद्रालक्षणम् ॥ महादेवप्रियाणां च कथ्यंते लक्षणान्यथ । उच्छ्रितं दक्षिणांगुष्ठं वामांगुष्ठेन बंधयेत् ॥ वामांगुलीर्दक्षिणाभिरंगुलीभिश्च बन्धयेत् । लिंगमुद्रेयमाख्याता शिवसान्निध्यका

१ ज्ञानार्णवे-यथा हस्तगतं चापं तथा हस्तं कुरु प्रिये । चापमुद्रेयमाख्याता वामहस्ते व्यवस्थिता॥२-यथा हस्तगता बाणास्तथा हस्तं कुरु प्रिये । बाणमुद्रेयमाख्याता रिपुदर्पनिकृंतनी ॥

रिणी ॥ इति लिंगमुद्रा ॥ १ ॥ मिथः कनिष्ठिके बद्ध्वा तर्जनीभ्यामनामिके ॥ अनामिकोर्द्ध्वसंश्लिष्टे दीर्घमध्यमयोरथ ॥ अंगुष्ठाग्रद्वयं न्यस्येद्योनिमुद्रेयमीरिता ॥ इति योनिमुद्रा॥ २ ॥ अंगुष्ठेन कनिष्ठां तु बद्ध्वा शिष्टांगुलित्रयम्॥ प्रसारयेत्त्रिशूलाख्या मुद्रैषा परिकीर्तिता॥ इति त्रिशूलमुद्रा ॥ ३ ॥ अंगुष्ठतर्जन्यग्रे तु ग्रंथयित्वांगुलित्रयम् ॥ प्रसारयेदक्षमाला मुद्रेयं परिकीर्तिता ॥ इत्यक्षमाला मुद्रा ॥४॥ अधः स्थितो दक्षहस्तः प्रसृतो वरमुद्रिका ॥ इति वरमुद्रा ॥ ५ ॥ ऊर्ध्वीकृतो वामहस्तः प्रसृतोऽभयमुद्रिका ॥ इत्यभयमुद्रा ॥ ६ ॥ मिलितानामिकांगुष्ठं मध्यमाग्रे नियोजयेत ॥ शिष्टांगुल्युच्छ्रिते कुर्यान्मृगमुद्रेयमीरिता ॥ इति मृगमुद्रा ॥ ७ ॥ पंचांगुल्यो दक्षिणास्तु मिलिता दधूर्द्ध्वमूर्द्धता ॥ खट्वांगमुद्रा विख्याता शिवस्यातिप्रिया मता॥ । इति खट्वांगमुद्रा ॥८॥ पात्रवद्वाम हस्तं च कृत्वांके वामके तथा ॥ निधायोच्छ्रितवत्कुर्यान्मुद्रा कापालिकी मता ॥ इति कपालाख्यमुद्रा ॥ ९ ॥ मुष्टिं च शिथिलां बद्ध्वा हीपत्कुंचितमध्यमाम् ॥ दक्षिणान्तूर्द्ध्वमुन्नम्य कर्णदेशे प्रचालयेत् ॥ एषा मुद्रा डमरुका सर्वविघ्नविनाशिनी॥ इति डमरुमुद्रा ॥१०॥ इति शिवस्य दश मुद्राः ॥ अथ गणेशसप्तमुद्रालक्षणम् ॥ ततो गणेशमुद्राणामुच्यंते लक्षणानि तु ॥ उत्तानोर्ध्वमुखी मध्या सरला बद्ध मुष्टिका ॥ दंतमुद्रा समाख्याता सर्वागमविशारदैः ॥ इति दंतमुद्रा ॥ वाममुष्टेस्तु तर्जन्या दक्षमुष्टेस्तु तर्जनीम् ॥ संयोज्यांगुष्ठ काग्राभ्यां तर्जन्यग्रे समुत्क्षिपेत् ॥ एषा पाशाह्वया मुद्रा विद्वद्भिः परिकीर्तिता ॥ इति पाशमुद्रा ॥ २ ॥ ऋज्वीं च मध्यमां कृत्वा तर्जनीं मध्यपर्वणि ॥ संयोज्याकुंचयेत्किंचिन्मुद्रैषांकुशसंज्ञिका ॥ इत्यंकुशमुद्रा ॥ ३ ॥ तर्जनी मध्यमानामा कनिष्ठांगुष्ठमुच्छ्रिता ॥ अधोमुखी दीर्घरूपा मध्यमा विघ्ननामिका ॥ इति विघ्नमुद्रा ॥ ४॥परशुमुद्रा निगदिता प्रसिद्धा लड्डुमुद्रिका ॥ बीजपूराह्वया मुद्रा प्रसिद्धत्वादुपेक्षिता ॥ इति परशुलड्डुकबीजपूरादिमुद्राः ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ इति गणेशसप्तमुद्राः ॥ अथ शक्तिदशमुद्राः ॥ शाक्तेयीनां च मुद्राणां कथ्यंते लक्षणानि तु॥ पाशांकुशवराभीतिधनुर्बाणाः समीरिताः॥ (इति षड् मुद्राः पूर्ववत् ज्ञेयाः) कनिष्ठानामिकां बद्ध्वा स्वां

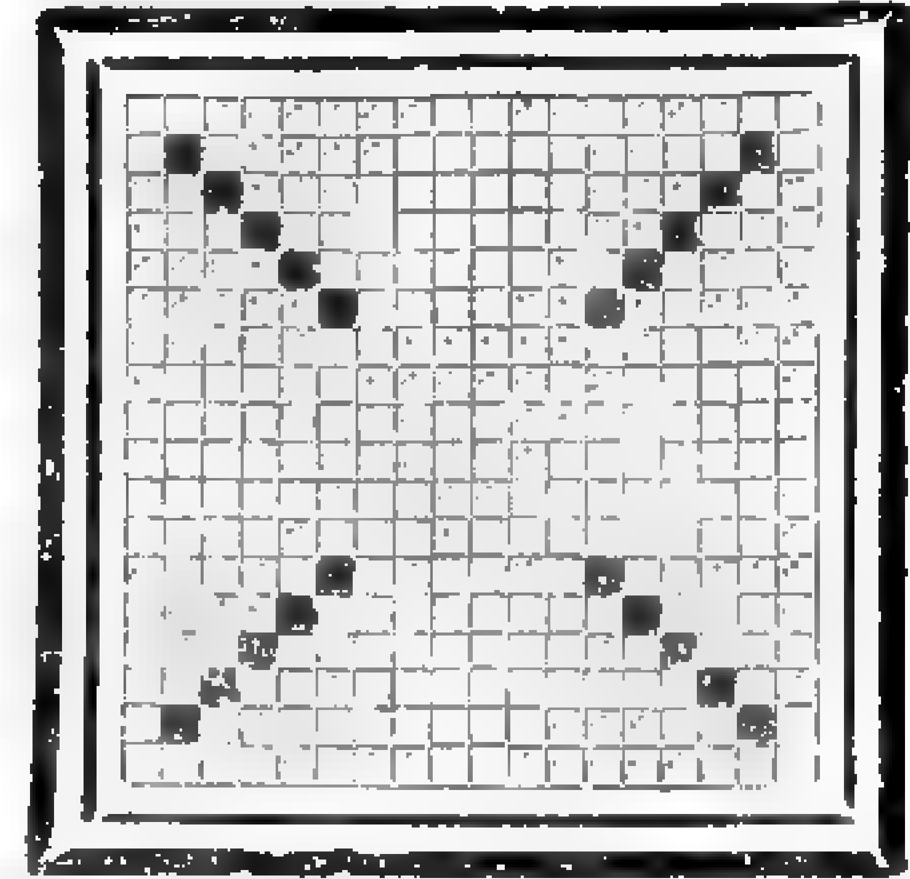
गुष्ठेनैव दक्षतः ॥ मितांगुली च प्रसृते संस्पृष्टे खड्गमुद्रिका ॥ ७ ॥ वामहस्तं तथा तिर्य्यक् कृत्वा चैव प्रसार्य च ॥ आकुंचितांगुलिं कुर्याच्चर्म्ममुद्रेयमीरिता ॥ इति चर्ममुद्रा ॥८॥ मुष्टिं कृत्वा तु हस्ताभ्यां वामस्योपरि दक्षिणम् ॥ कुर्यान्मुसलमुद्रेयं सर्वविघ्नविनाशिनी ॥ इति मुसलमुद्रा ॥९॥ मुष्टिं कृत्वा कराभ्यां च वामस्योपरि दक्षिणम् ॥ कृत्वा शिरसि संयोगाद्दुर्गामुद्रेयमीरिता ॥ इति दौर्गी मुद्रा ॥१०॥ अथ लक्ष्मीमुद्रा-एका ॥ चक्रमुद्रां तथा बद्ध्वा मध्यमे द्वे प्रसार्य्य च ॥ कनिष्ठिके तथानीय तदग्रे मुष्टिके क्षिपेत् ॥ लक्ष्मीमुद्रा परा ह्येषा सर्वसम्पत्प्रदायिनी ॥ इति लक्ष्मीमुद्रा ॥ १ ॥ अथ सरस्वत्याः पंचमुद्रालक्षणम् ॥ वीणावादनवद्धस्तौ कृत्वा संचालयेच्छिरः ॥ वीणामुद्रेयमाख्याता सरस्वत्याः प्रियंकरी ॥ इति वीणामुद्रा ॥ १ . वाममुष्टिं स्वाभिमुखीं कृत्वा पुस्तकमुद्रिका ॥ इति पुस्तकमुद्रा ॥ २ ॥ दक्षिणांगुष्ठतर्जन्यावग्रलग्ने पराङ्मुखे ॥ प्रसार्य्य संहितोत्ताना ह्येषा व्याख्यानमुद्रिका ॥ श्रीरामस्य सरस्वत्या अत्यंतप्रेयसी मता ॥ ३ ॥ (अक्षमालादिमुद्रिकाः पूर्वोक्ता ज्ञेयाः) इति सरस्वतीपंचमुद्राः ॥ अथ वह्निमुद्रा-एका ॥ मणिबंधस्थितौ कृत्वा प्रसृतांगुलिकौ करौ ॥ कनिष्ठांगुष्ठयुगले मिलितौ तौ प्रसारयेत् ॥ सप्तजिह्वाख्यमुद्रेयं वैश्वानरप्रियंकरी ॥ इति सप्तजिह्वाख्याग्निमुद्रा ॥ १ ॥ अथानेकमुद्रा लक्षणम् ॥ कनिष्ठांगुष्ठकौ सक्तौ करयोरितरेतरम् ॥ तर्ज्जनी मध्यमानामा संहता भुग्नवर्जिताः ॥ मुद्रैषा गालिनी प्रोक्ता शंखकस्योपचालिना ॥ इति गालिनी मुद्रा ॥ १ ॥ दक्षांगुष्ठे परांगुष्ठे क्षिप्त्वा हस्तद्वयेन तु ॥ सावकाशामेकमुष्टिं कुर्यात्सा कुंभमुद्रिका ॥ इति कुंभमुद्रा ॥ २ ॥ मुष्ट्योरूर्द्ध्वकृतांगुष्ठौ तर्जन्यग्रे तु विन्यसेत् ॥ सर्वरक्षाकरी ह्येषा कुंभमुद्रेयमीरिता ॥ इति कुंभमुद्रा द्वितीया ॥ २ ॥ प्रसृतांगुलिकौ हस्तौ मिथः श्लिष्टौ च संमुखौ ॥ कुर्य्यात्स्वहृदये सेयं मुद्रा प्रार्थनसंज्ञिका ॥ इति प्रार्थनामुद्रा ॥३॥ अंजल्यंजलिमुद्रा स्याद्वासुदेवाभिधा न सा ॥ इत्यंजलिमुद्रा ॥ ४ ॥ अंगुष्ठावुन्नतौ कृत्वा मुष्ट्योः संलग्नयोर्द्वयोः ॥ तावेवाभिमुखौ कुर्य्यान्मुद्रेषा कालकर्णिका ॥ इति कालकर्णी मुद्रा॥५॥दक्षिणा निविडा मुष्टिरनामार्पिततर्ज्जनी ॥ मुद्रा विस्मयसंज्ञा स्याद्विस्मयावेशकारिणी ॥ इति विस्मयमुद्रा ॥६॥ मुष्टिरु-

र्द्धकृतांगुष्ठा दक्षिणा नादमुद्रिका ॥ तर्जन्यंगुष्ठसंयोगादग्रतो विंदुमुद्रिका ॥ इति विंदुमुद्रा ॥ ७ ॥ अधोमुखे वामहस्ते ऊर्द्ध्वं स्यादक्ष
हस्तकम् । क्षिप्त्वांगुलीरंगुलीभिः संग्रथ्य परिवर्तयेत् ॥ एषा संहारमुद्रा स्याद्विसर्जनविधौ स्मृता ॥ इति संहारमुद्रा ॥ ८ ॥ दक्षपाणिपृष्ठ
देशे वामपाणितलं न्यसेत् ॥ अंगुष्ठौ चालयेत्सम्यङ्मुद्रेयं मत्स्यरूपिणी ॥ इति मत्स्यमुद्रा ॥९॥ वामहस्तस्य तर्ज्जन्यां दक्षिणस्य करस्य च।
वामस्य पितृतीर्थेन मध्यमानामिके तथा ॥ अधोमुखैश्च तैः कुर्याद्दक्षिणस्य करस्य च। कूर्मपृष्ठसमं कुर्याद्दक्षं पाणिं च सर्वतः ॥ कूर्म्म
मुद्रेयमाख्याता देवताध्यानकर्मणि ॥ इति कूर्ममुद्रा ॥ १० ॥ पृष्ठे क्रोडांतरेंऽगुष्ठमुष्टिं कृत्वा करस्य च ॥ मध्यमाग्रं तु
दक्षस्य तथालंब्य प्रयत्नतः ॥ मध्यमेनाथ तर्ज्जन्यामंगुष्ठाग्रे तु योजयेत् ॥ दक्षिणं योजयेत्पाणिं वाममुष्टौ तु साधकः ॥ दर्शये
दक्षिणे भागे मुंडमुद्रेयमुच्यते ॥ इति मुंडमुद्रा ॥ ११ ॥ तर्ज्जनीमध्यमानामाः समाः कुर्यादधोमुखीः । अनामायां क्षिपेद्वृद्धामूर्द्ध्वं
कृत्वा कनिष्ठिकाम् । लेलिहा नाम मुद्रेयं जीवन्यासे प्रकीर्तिता ॥ इति लेलिहा मुद्रा ॥ १२ ॥ तर्जन्यनामिकामध्ये कनिष्ठाक्रम
योगतः । करयोर्योजयत्येव कनिष्ठामूलदेशतः ॥ अंगुष्ठाग्रे तु निःक्षिप्य महायोनिः प्रकीर्तिता ॥ इति महायोनिमुद्रा ॥ १३ ॥
परिवृत्तकरौ स्पृष्टावंगुष्ठौ कारयेत्समौ । अनामांतर्गते कृत्वा तर्जन्यौ कुटिलाकृती ॥ कनिष्ठिके नियुंजीत निजस्थाने महेश्वरि । त्रिखंडेयं
समाख्याता त्रिपुराध्यानकर्म्मणि ॥ इति त्रिखंडमुद्रा ॥ १४ ॥ मध्यमामध्यगे कृत्वा कनिष्ठेंऽगुष्ठरोधिते । तर्जन्यौ दंडवत्कुर्या
न्मध्यमोपर्यनामिके ॥ एषा च प्रथमा मुद्रा सर्वसंक्षोभकारिणी ॥ इति प्रथमा मुद्रा ॥ १५ ॥ एतस्या एव मुद्राया मध्यमे सरले तथा॥
क्रियेते परमेशानि सर्वविद्राविणी परा ॥ इति सर्वविद्राविणी मुद्रा ॥ १५ ॥ मध्यमातर्ज्जनीभ्यां च कनिष्ठानामिके समे । अंकुशाकार
रूपाभ्यां मध्यमे परमेश्वरि ॥ अंगुष्ठं तु नियुंजीत कनिष्ठानामिकोपरि ॥ इयमाकर्षिणी मुद्रा त्रैलोक्याकर्षिणी मता ॥ इत्याकर्षिणी
मुद्रा ॥ १६ ॥ पुटाकारौ करौ कृत्वा तर्जन्यावंकुशाकृती । परिवर्तक्रमेणैव मध्यमे तदधोगते ॥ क्रमेण देवि तेनैव कनिष्ठानामिकादयः ।

संयोज्या निबिडाः सर्वा अंगुष्ठवप्रदेशतः ॥ मुद्रेयं परमेशानि सर्ववश्यकरी मता ॥ इति सर्ववश्यकरी मुद्रा ॥ १७ ॥ संमुखौ तु करौ कृत्वा मध्यमामध्यगेंऽत्यजे । अनामिके तु सरले तद्बहिस्तर्जनीद्वयम् ॥ दंडाकारौ ततोंऽगुष्ठौ मध्यमानखदेशिकौ । मुद्रैषोन्मादिनी नाम्ना क्लेदिनी सर्वयोषिताम् ॥ इत्युन्मादिनी मुद्रा ॥ १८ ॥ अस्यां त्वनामिकायुग्ममधः कृत्वांकुशाकृति । तर्जन्यावपि तेनैव क्रमेण विनियोजयेत् ॥ इत्थं महांकुशा मुद्रा सर्वकामार्थसाधनी ॥ इति महांकुशमुद्रा ॥ १९ ॥ सव्यं दक्षिणदेशेषु सव्यदेशे तु दक्षिणम् । बाहुं कृत्वा महादेवि हस्तौ संपरिवर्तयेत् ॥ कनिष्ठानामिके देवि मुक्ते तेन क्रमेण च । तर्जनीभ्यां समाक्रांते सर्वोर्द्ध्वमपि मध्यमे ॥ अंगुष्ठौ च महादेवि सरलावपि कारयेत् । इयं सा खेचरी मुद्रा पार्थिवस्थानयोजिता ॥ इति खेचरी मुद्रा ॥ २० ॥ परिवृत्य करौ स्पृष्टावर्द्धचन्द्राकृती प्रिये । तर्जन्यंगुष्ठयुगलं युगपत्कारयेत्ततः ॥ अधः कनिष्ठावष्टब्धे मध्यमे विनियोजयेत् । अथैव कुटिले योज्ये सर्वाधस्तदनामिके ॥ बीजमुद्रेयमचिरात्सर्वसिद्धिप्रदायिनी ॥ इति बीजमुद्रा ॥ २१ ॥ मध्यमे कुटिले कृत्वा तर्जन्युपरि संस्थिते । अनामिकामध्यगते तथैव हि कनिष्ठिके ॥ सर्वा एकत्र संयोज्य अंगुष्ठपरिपीडिताः । एषा तु प्रथमा मुद्रा योनिमुद्रेति संज्ञिता ॥ इति प्रथमा योनिमुद्रा ॥ २२ ॥ वामहस्तेन मुष्टिं तु बद्ध्वा कर्णप्रदेशकम् । तर्जनीं सरलां कृत्वा भ्रामयेन्मनुवित्तमः ॥ सौभाग्यदंडिनी मुद्रा न्यासकालेऽपि सूचिता ॥ इति सौभाग्यदंडिनी मुद्रा ॥ २३ ॥ अंतरंगुष्ठमुष्ट्या तु निरुध्य तर्जनीमिमाम् ॥ रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा न्यासकाले तु सूचिता ॥ इति रिपुजिह्वाग्रहा मुद्रा ॥ २४ ॥ बद्ध्वा तु योनिमुद्रां वै मध्यमे कुटिले कुरु ॥ अंगुष्ठेन तदग्रे तु मुद्रेयं भूतिनी मता ॥ इति भूतिनी मुद्रा ॥ २५ ॥ वाममुष्टिं विधायाथ तर्जनीमध्यमे ततः ॥ प्रसार्य तर्जनीमुद्रा निर्दिष्टा वज्रपाणिना ॥ इति तर्जनी मुद्रा ॥ २६ ॥ मुष्टिं कृत्वा कनिष्ठाद्वयं वेष्टयेत् तर्जनीं प्रसार्याकुंचयेत् ॥ इति क्रोधमुद्रा ॥ २७ ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे मुद्राप्रकरणे द्वितीयस्तरंगः ॥ २ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ भद्रमंडलप्रकरणम् ॥ तत्रादौ एकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतो- भद्रमण्डलम् ॥ (व्रतराजे हेमाद्रौ स्कांदे) प्रागुदीच्यां गता रेखाः कुर्यादेकोनविंशतिम् ॥ खंडेन्दुस्त्रिपदः कोणे शृंखला पंचभिः पदैः ॥ १ ॥ एकादशपदा वल्ली भद्रं तु नवभिः पदैः ॥ चतुर्विंशत्पदा वापी विंशत्या परिधिः पदैः ॥ २ ॥ मध्ये षोडशभिः कोष्ठैः पद्म मष्टदलं स्मृतम् ॥ श्वेतेंदुः शृंखला कृष्णा वल्लीं नीलेन पूरयेत् ॥ ३ ॥ भद्रारुणा सिता वापी परिधिः पीतवर्णिका ॥ बाह्यांतरदले श्वेता कर्णिका पीतवर्णिका ॥ ४ ॥ परिध्या वेष्टितं पद्मं बाह्ये सत्त्वं रजस्तमः ॥ तन्मध्ये स्थापयेद्देवान् ब्रह्माद्यांश्च सुरेश्वरान् ॥ ५ ॥ (तत्र देवताः व्रतराजे) तत्रादौ संकल्पः ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ ममेह जन्मनि जन्मांतरे वा कृतकायिकवाचिकमानसिकसांसर्गिकदोषपरिहारार्थमिहामुत्र सुख सौभाग्यसुखसंपत्त्यादिकफलप्राप्त्यर्थं श्रीअमुकदेवताप्रीतये अमुककालमारभ्यामुकदिनपर्यंतं मया आचरितस्य व्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा एतत्सर्वतोभद्रमण्डले वेदपुराणोक्तमंत्रैर्ब्रह्मादिपद्

एकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमंडलम्



पंचाशद्देवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये॥इति संकल्पः ॥ अक्षतान्गृहीत्वा॥ततो मध्ये ॥ ब्रह्मजज्ञानं, गौतमो वामदेवो ब्रह्मा त्रिष्टुप् मध्ये ब्रह्मावाहने विनियोगः॥ ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विसीमतः सुरुचोवेन आवः॥सबुध्न्या उपमा अस्यविष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः॥ एह्येहि धातस्तु समस्तसृष्टेः पद्मोद्भवः पद्मसुखप्रदातः।सुरासुरैर्वंदितपादपद्म यज्ञे ममास्मिन्कुरु सन्निधानम्॥ भो ब्रह्मन् इहागच्छ इह तिष्ठ पूजां गृहाण मम संमुखः सुप्रसन्नो वरदो भव ॥ १ ॥ इत्येवंप्रकारेण सर्वत्र देवतानामावाहनादिकं ज्ञेयम् ॥ ततः उदीचीमारभ्य वायवी पर्यंतं सोमादयोऽष्टौ लोकपालाः स्थापनीयाः ॥ तत्र क्रमः-आप्यायस्व, राहूगणो गौतमः सोमो गायत्री उत्तरे सोमावाहने विनियोगः ॥

ॐ आप्यायस्वसमेतुतेविश्वतःसोमवृष्णियं भवावाजस्यसंगथे ॥ कुबेरं गुह्यकाध्यक्षं सुरासुरनमस्कृतम् ॥ धनदं शिबिकारूढं चिंतयामि सदाप्रियम् ॥ उत्तरे सोमम् ॥ २ ॥ अभित्वा, आजीगर्तिः शुनःशेप ईशानो गायत्री ईशान्यामीशानावाहने विनियोगः ॥ ॐ अभित्वा देवस वितरीशानंवार्याणां सदावन्भागमीमहे ॥ आवाहयाम्यहं देवीमीशानं च वरप्रदम् ॥ सर्वलोकप्रपूज्यं त्वामीशानं पूजयाम्यहम् ॥ ईशान्यामीशानम् ॥ ३ ॥ इन्द्रंवो, मधुच्छंदा इंद्रो गायत्री पूर्वे इंद्रावाहने विनियोगः ॥ इंद्रंवोविश्वतस्परिहवामहेजनेभ्यः अस्माकमस्तुकेवलः ॥ आवाहयाम्यहं देवं महेंद्रं च महाप्रभुम् ॥ पीतवर्णं गजारूढं वज्रपाणिं सुरेश्वरम् ॥ पूर्वे इंद्रम् ॥ ४ ॥ अग्निं दूतं, काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री आग्नेय्यामग्न्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ अग्निंदूतंवृणीमहेहोतारंविश्ववेदसम् अस्ययज्ञस्यसुक्रतुम् ॥ अथाग्निमूर्तिं ध्यायामि सर्वाभीष्टफलप्रदाम् ॥ एकजिह्वां द्विशीर्षां च जटामुकुटमण्डिताम् ॥ आग्नेय्यामग्निम् ॥ ५ ॥ यमाय सोमं, वैवस्वतो यमो यमोऽनुष्टुप् दक्षिणे यमावाहने विनियोगः ॥ ॐ यमायसोमᳬसुनुतयमायजुहुताहविः यमᳬहयज्ञोगच्छत्यग्निदूतोअरंकृतः ॥ आवाहयाम्यहं देवं यमं महिषवाहनम् ॥ ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं भैरवं रक्तलोचनम् ॥ दक्षिणे यमम् ॥ ६ ॥ मोषुणो, घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री नैर्ऋत्यां निर्ऋत्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ मोषुणः परापरा निर्ऋतिर्दुर्हणावधीत् ॥ पदीष्टतृष्णयासह ॥ आवाहयाम्यहं देवं निर्ऋतिं श्वेतरूपिणम् ॥ लंबकेशं विरूपाक्षं खड्गपाणिं दुरासदम् ॥ नैर्ऋत्यां निर्ऋतिम् ॥ ७ ॥ तत्त्वायामि, शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् पश्चिमे वरुणावाहने विनियोगः ॥ ॐ तत्त्वायामिब्रह्मणावन्दमानस्तदाशास्तेयजमानोहविर्भिः ॥ अहेडमानोवरुणेहबोध्युरुशᳬसमानआयुःप्रमोषीः ॥ आवाहयाम्यहं देवं वरुणं कमलेक्षणम् ॥ रक्तांबरधरं देवं रक्तमालाविभूषितम् ॥ पश्चिमे वरुणम् ॥ ८ ॥ वायोशतं, वामदेवो वायुरनुष्टुप् वायव्यां वाय्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ वायो शतᳬ हरीणांयुवस्वपोष्याणाम् ॥ उतवातेसहस्त्रिणोरथ आयातुपाजसा ॥ अहमावाहयिष्यामि वायुं सर्वत्र व्यापिनम् ॥ ऊर्ध्वकेशं विरूपाक्षं सर्वचैतन्यरूपिणम् ॥ वायव्यां वायुम् ॥ ९ ॥ ज्मयाअत्र, मित्रावरुणौ वसवस्त्रिष्टुप् वायुसोमयोर्मध्ये वस्वावाहने विनियोगः ॥ ॐ ज्मयाअत्रवसवोरंतदेवाउरावंतरिक्षेमर्जयंतशुभ्राः ॥ अर्वाक्पथउरुज्रयः कृणुध्वं श्रोतादूतस्य

जग्मुपोनोअस्य॥ धरो ध्रुवश्च सोमश्च आपश्चैव नलोऽनलः ॥प्रत्यूषश्च प्रभातश्च वसवोऽष्टौ प्रकीर्तिताः ॥ वायुसोममध्ये अष्टौ वसून्॥ १० ॥
आरुद्रासः, श्यावाश्व एकादश रुद्रा जगती सोमेशयोर्मध्ये एकादशरुद्रावाहने विनियोगः ॥ ॐ आरुद्रासइंद्रवंतः सजोषसोहिरण्यरथाः
सुवितायगंतन इयंवोअस्मत्प्रतिहर्यतेमतिस्तृष्णजेनदिवउत्साउदन्यवे ॥ अजैकपादहिर्बुध्न्यो विरूपाक्षोऽथ रैवतः ॥ हरश्च बहुरूपश्च
त्र्यंबकश्च सुरेश्वरः ॥ सविता च जयंतश्च पिनाकी रुद्र एव च ॥ सोमेशानयोर्मध्ये एकादश रुद्रान् ॥ ११ ॥ त्यांनु, मत्स्यः
सामदो द्वादशादित्या गायत्री ईशानेंद्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ त्यांनुक्षत्रिया॰ अवआदित्यान्याचिषामहे सुमृलीकाँ
अभिष्टये ॥ धाता मित्रो यमश्चेन्द्रो वरुणः सूर्य एव च ॥ भगो विवस्वान् पुरुषः सविता विष्णुरेव च ॥ त्वष्टेति द्वादशादित्यान्
पूजयामि यथाविधि ॥ ईशानेन्द्रयोर्मध्ये द्वादशादित्यान् ॥ १२ ॥ अश्विनावर्तिः, राहुगणो गोतमोऽश्विनावुष्णिक् इन्द्राग्न्योर्मध्ये
अश्व्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ अश्विनावर्तिरस्मदागोमद्दस्राहिरण्यवत् ॥ अर्वाग्रथंसमनसानियच्छतम् ॥ रूपेणाप्रतिमौ देवौ सूर्यस्य
तनयावुभौ ॥ वडवागर्भसंभूतौ मंडले विशतामुभौ ॥ इंद्राग्न्योर्मध्ये अश्विनौ ॥ १३ ॥ ओमासः, मधुच्छंदा विश्वेदेवा गायत्री अग्नि
यमयोर्मध्ये विश्वेदेवावाहने विनियोगः ॥ ॐ ओमासश्चर्षणीधृतोविश्वेदेवासआगत दाश्वांसोदाशुषः सुतम्॥ क्रतुर्दक्षो वसुः सत्यः कामलौ
धूम्रलोचनौ। पुरूरवार्द्रवश्चैव विश्वेदेवा इमे दश॥सोमपा अग्निष्वात्ताश्च बर्हिषदस्तु कालकाः। एकशृंगो वसुश्चैव द्वितीयः सोमपास्तथा॥
अग्नियममध्ये विश्वेदेवान् सपितृकान् ॥ १४ ॥ अभित्यं, देवो गौतमो वामदेवः सप्त यक्षा अष्टी यमनिर्ऋत्योर्मध्ये सप्तयक्षावाहने
विनियोगः॥ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योः कविक्रतुमर्चामिसत्यसवंरत्नधामाभिप्रियंमतिंकविमूर्ध्वायस्यामतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनिहिरण्य
पाणिरमिमतिसुक्रतुः कृपास्वः॥ अहमावाहयिष्यामि सप्तयक्षान्महाबलान् ॥ पुण्यरूपान् पुण्यजनान् पुण्यकर्मरतान्सदा ॥ यमनिर्ऋति
मध्ये सप्त यक्षान् ॥ १५ ॥ आयंगौः, सार्पराज्ञी सर्पा गायत्री निर्ऋतिवरुणमध्ये सर्पावाहने विनियोगः ॥ ॐ आयंगौः पृश्निरक्रमीदसद
न्मातरंपुरः पितरंचप्रयन्त्स्वः ॥ आवाहयाम्यहं देवान्भूतनागान् महाबलान् ॥ सर्पराजान्महाकायान्मणिमंडलभूषितान् ॥ निर्ऋति

॥ २३ ॥

वरुणमध्ये भूतनागान् ॥१६॥ अप्सरसाम्, ऐतश ऋष्यशृंगो गंधर्वाप्सरसोऽनुष्टुप् वरुणवाय्वोर्मध्ये गंधर्वाप्सरस आवाहने विनियोगः ॥
ॐ अप्सरसांगंधर्वाणांमृगाणांचरणेचरन् ॥ केशीकेतस्यविद्वान्सखास्वादुर्मदिंतमः ॥ आवाहयामि गंधर्वान् साप्सरोगीततत्परान् ॥
हाहाहूहूश्चैवमाद्यान् गंधर्वाप्सरसस्तथा ॥ वरुणवायुमध्ये गंधर्वाप्सरोभ्यो नमः गंधर्वाप्सरसः ॥ १७॥ यदक्रंदः, औचथ्यो दीर्घतमाःस्कंद
त्रिष्टुप् ब्रह्मसोममध्ये स्कंदावाहने विनियोगः ॥ ॐ यदक्रंदःप्रथमंजायमानउद्यन्त्समुद्रादुतवापुरीषात् ॥ श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूउपस्तु
त्यंमहिजातंतेअर्वन् ॥ एह्येहि षण्मुख सुरेश्वर तारकारे श्रीनीलकंठवरवाहनशक्तिपाणे॥ओंकारकोटरसुरेश्वरपूज्यमान सांनिध्यमत्र कुरु
ब्रह्मकुबेरमध्ये ॥ इति स्कंदम्॥१८॥तत्रैव ॥ ऋषभम्, ऋषभो वैराजो नंदीश्वरोऽनुष्टुप् ब्रह्मसोमयोर्मध्ये नंदीश्वरावाहने विनियोगः ॥ ॐ
ऋषभं मासमानानां संपत्नानां वृषासहिम्॥हंतारं शत्रूणां कृधि विराजं गोपतिं गवाम्॥आवाहयाम्यहं देवं वृषभं सर्वपूजितम्॥ महादेवा
सने मुख्यं सर्वसिद्धिप्रदायकम् ॥ स्कंदादुत्तरे नंदिनम् ॥ १९ ॥ कद्रुद्राय, घोरः कण्वः शूलो गायत्री तदुत्तरे शूलावाहने विनियोगः ॥
ॐ कद्रुद्रायप्रचेतसेमीढुष्टमायतव्यसे वोचेमशंतमंहृदे॥आवाहयामि तं शूलं शस्त्रराजं महोज्ज्वलम्॥दुष्टारिघातनेदक्षंशिवबाहुविराजितम्॥
तत्रैव शूलम्॥२०॥कुमारं, कुमारो महाकालस्त्रिष्टुप् तदुत्तरे महाकालावाहने विनियोगः ॥ॐ कुमारंमातायुवतिःसमुब्धंगुहाबिभर्तिनददाति
पित्रे॥अनीकमस्यनमिनज्जनासः पुरःपश्यंतिनिहितमरतौ ॥ नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम्॥सर्वव्यापिनमीशानं रुद्रं वै विश्वरूपि
णम् ॥ शूलादुत्तरे महाकालम् ॥२१ ॥ अदितिः, लौक्यो बृहस्पतिर्दक्षोऽनुष्टुप् ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षावाहने विनियोगः॥ ॐ अदितिर्ह्यजनि
ष्टदक्षयादुहितानव तान्देवाअन्वजायंतभद्राअमृतबंधवः ॥ आवाहयामि तान् देवान् कैलासाधिपपार्षदान्॥दक्षादिप्रमुखान् सप्तगणाञ्शिव
सुखावहान् ॥ ब्रह्मेशानयोर्मध्ये दक्षादिसप्तगणान् ॥ २२ ॥ तामग्निवर्णां, सौभरिर्दुर्गात्रिष्टुप् ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये दुर्गावाहने विनियोगः ॥ ॐ
तामग्निवर्णांतपसाज्वलंतींवैरोचनीं कर्मफलेषुजुष्टाम्॥दुर्गांदेवींशरणमहंप्रपद्येसुतरासितरसेनमः॥आगच्छ कोकिले दुर्गे सिंहारूढे महाभुजे ॥
विंध्याचलकृतावासे मंडले त्वं समाविश ॥ ब्रह्मेंद्रमध्ये दुर्गाम् ॥ २३ ॥ इदंविष्णुः, काण्वो मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ब्रह्मेंद्रयोर्मध्ये

विष्णवावाहने विनियोगः ॥ ॐ इदंविष्णुर्विचक्रमेत्रेधानिदधेपदम् ॥ समूढमस्यपा७ँसुरे ॥ आवाहयाम्यहं देवं श्रीविष्णुं कमलापतिम् ॥
जगच्चक्षुर्विश्वजन्मस्थितिसंहारकारकम् ॥ दुर्गापूर्वे विष्णुम् ॥ २४ ॥ उदीरतामवरः, शंखः स्वधा पितरस्त्रिष्टुप् ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधावाहने
विनियोगः ॥ ॐ उदीरतामवरउत्परासउन्मध्यमाःपितरःसोम्यासः॥असुंयईयुरवृकाऋतज्ञास्तेनोऽवंतुपितरोहवेषु॥कव्यमादाय सततं पितृ
भ्यो या प्रयच्छति ॥ तिष्ठत्युदीच्यां दिश्यर्कच्छविमावाहये स्वधाम् ॥ ब्रह्माग्न्योर्मध्ये स्वधाम् ॥ २५ ॥ परंमृत्यो,संकुशिको मृत्युरोगास्त्रि
ष्टुप् ब्रह्मयमयोर्मध्ये मृत्युरोगावाहने विनियोगः ॥ ॐ परंमृत्योअनुपरेहिपंथांयस्तेस्वइतरोदेवयानात् ॥ चक्षुष्मतेशृण्वतेतेब्रवीमिमानः
प्रजांरीरिषोमोतवीरान्॥इहोपहूतो भगवान् मृत्युः शामित्रकर्मणि ॥ न कश्चिन्म्रियते तावद्यावदास्त इहांतकः॥ब्रह्मयममध्ये मृत्युरोगान् ॥
॥ २६ ॥ गणानांत्वा, शौनको गृत्समदो गणपतिर्जगती ब्रह्मनिर्ऋत्योर्मध्ये गणपत्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ गणनांत्वागणपतिंहवामहे
कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम्॥ज्येष्ठराजंब्रह्मणांब्रह्मणस्पतआनःशृण्वन्नूतिभिःसीदसादनम्॥एकदंतं महाकायं पद्मकांचनसन्निभम्॥लंबोदरं
विशालाक्षं वंदेऽहं गणनायकम् ॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिम् ॥ २७ ॥ शन्नोदेवीः, आंबरीषः सिंधुद्वीप आपो गायत्री ब्रह्मवरुणयोर्मध्ये
अवावाहने विनियोगः ॥ ॐ शन्नोदेवीरभीष्टयआपोभवन्तुपीतये ॥ शंयोरभिस्रवंतुनः ॥ स्वच्छाः पवित्रा जनशुद्धिबीजा यादोभिर-
त्यंतभयंकराश्च ॥ कुर्वंतु सान्निध्यमथांबुवेगास्सर्वस्य विश्वस्य च जीवरूपाः ॥ ब्रह्मवरुणमध्ये अपः ॥ २८ ॥ मरुतो यस्य, राहूगणो
गौतमो मरुतो गायत्री ब्रह्मवाय्वोर्मध्ये मरुदावाहने विनियोगः ॥ ॐ मरुतोयस्याहिक्षयेपाथादिवोविमहसः ससुगोपात
मोजनः ॥ आगच्छ त्वं महादेव मृगारूढ प्रभंजन ॥ यज्ञसंरक्षणार्थाय मंडले त्वं स्थिरो भव ॥ ब्रह्मवायुमध्ये मरुद्भ्यो
नमः मरुतः ॥ २९ ॥ स्योनापृथिवि, काण्वो मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ब्रह्मणः पादमूले कर्णिकाधः पृथिव्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ
स्योनापृथिविनो भवानृक्षरानिवेशनी॥यच्छानः शर्मसप्रथाः ॥ एह्येहि वसुधे देवि शैलजीवनकानने ॥ ब्रह्मणः पादमूले तु सान्निध्यं कुरु
मे सदा॥ब्रह्मपादमूले पृथिवीम्॥३०॥इमंमेगंगे,सिंधुक्षित्प्रैयमेधो गंगादिनद्यो जगती(तत्रैव) गंगादिनद्यावाहने विनियोगः ॥ ॐ इमंमेगंगे

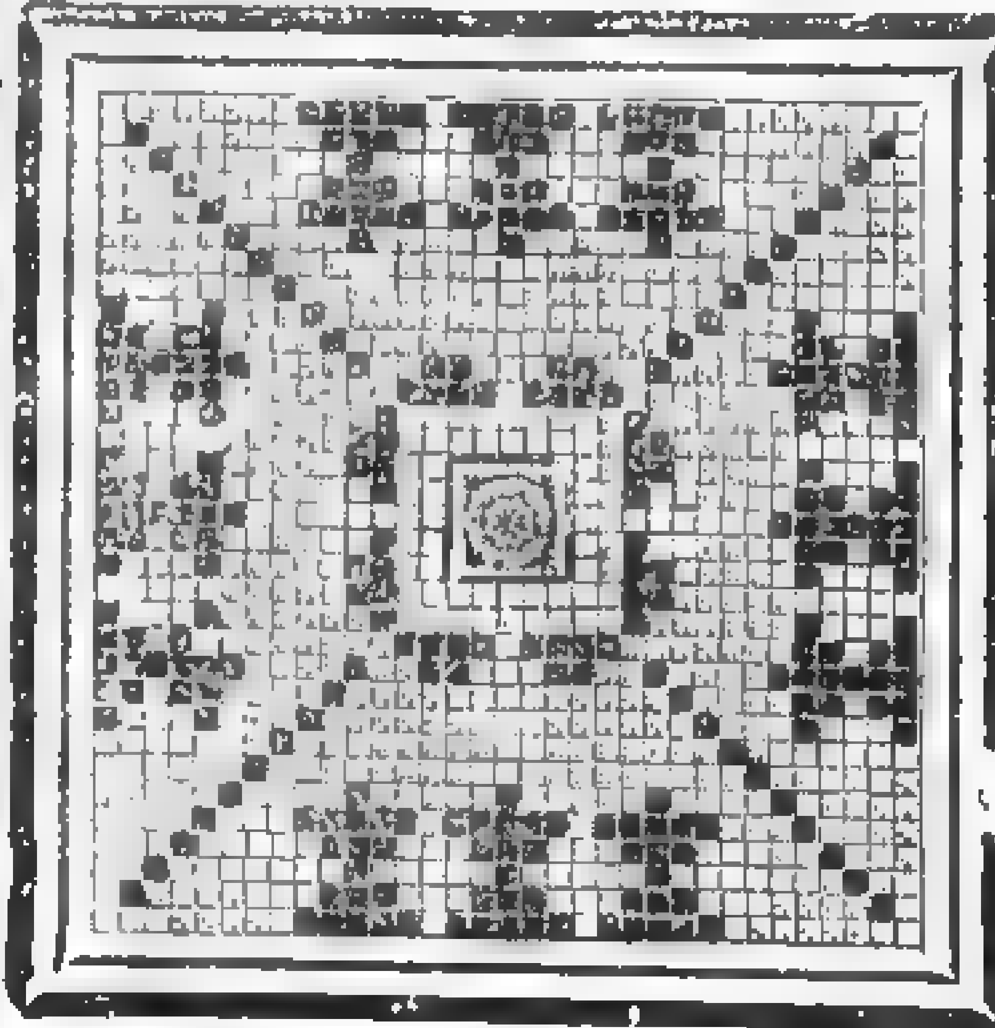
यमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तोम ५ सचतापरुष्णया॥ असिक्नियामरुद्वृधेवितस्तयार्जीकियेश्रृणुह्यासुयोमया ॥ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति॥नर्मदे सिंधुकावेरि सांनिध्यं कुर्वतामिह ॥ तत्रैव गंगादिसप्तसरितः ॥ २१ ॥ धाम्नो, गौतमो वामदेवः सागरोऽनुष्टुप् (तत्रैव)सप्तसागरावाहनेविनियोगः॥ॐधाम्नोधाम्नोराजन्नितोवरुणनोमुंच॥यदापोअघ्न्याइतिवरुणेतिशपामहेततोवरुणनोमुंचमायिवापोमोषधीर्हिंसीरतोविश्वव्यचाभूस्त्वेतोवरुणनोमंच॥क्षारेक्षुरसमद्योदान् घृतोदक्षीरकोदकौ॥दधिमंडोदशुद्धोदौ सप्तैतान् स्थापयाम्यहम्॥तत्रैव सप्तसागरान्॥२२॥ तदुपरि मेरुं नाममंत्रेण पूजयेत्॥ मेरवे नमः, मेरुमावाहयामि ॥ २३ ॥ ततो मंडलाद्बहिः सोमादिसन्निधौ क्रमेण आयुधान्यावाहयेत् ॥ तत्र क्रमः ॥ सोमसमीपे गदायै नमः, गदामावाहयामि ॥ २४ ॥ ईशानसमीपे-त्रिशूलाय नमः, त्रिशूलमावाहयामि ॥ २५ ॥ इन्द्रसमीपे-वज्राय नमः, वज्रमावाहयामि ॥ २६ ॥ अग्निसमीपे-शक्तये नमः, शक्तिमावाहयामि ॥२७॥ यमसमीपे-दंडाय नमः दंडमावाहयामि ॥ २८ ॥ निर्ऋतिसमीपे खड्गाय नमः खड्गमावाहयामि ॥ २९ ॥ वरुणसमीपे-पाशाय नमः पाशमावाहयामि ॥ ३० ॥ वायुसमीपे-अंकुशाय नमः अंकुशमावाहयामि ॥ ३१ ॥ तद्बाह्ये उत्तरे-गौतमाय नमः गौतममावाहयामि ॥ इति सर्वत्र ॥ ३२ ॥ ईशान्यां भारद्वाजाय नमः भारद्वाजम्०॥३३॥ पूर्वे-विश्वामित्राय नमः विश्वामित्रम्० ॥३४॥ आग्नेय्यां-कश्यपाय नमः कश्यपम्० ॥ ३५ ॥ दक्षिणे जमदग्नये नमः जमदग्निम्० ॥ ३६ ॥ नैर्ऋत्यां-वसिष्ठाय नमः वसिष्ठम्० ॥ ३७ ॥ पश्चिमे-अत्रये नमः अत्रिम्० ॥ ३८ ॥ वायव्याम् अरुंधत्यै नमः अरुंधतीम्० ॥ ३९ ॥ तद्बाह्ये-पूर्वादिक्रमेण ऐंद्र्यै नमः ऐंद्रीम्० ॥ ४०॥ कौमार्यै नमः कौमारीम्०॥४१॥ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीम्० ॥ ४२ ॥ वाराह्यै नमः वाराहीम्० ॥ ४३ ॥ चामुंडायै नमः चामुंडाम्० ॥ ४४ ॥ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीम्० ॥ ४५॥ उत्तरस्यां-माहेश्वर्यै नमः माहेश्वरीम्० ॥ ४६ ॥ वैनायक्यै नमः वैनायकीम्० ॥ ४७ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सहैवावाहयेत् पूजयेदिति ॥ अत्र एकदेवतायाः षट्पंचाशद्गणनायामाधिक्यम् ॥ तत्र शूलमहाकालयोः एकनक्षत्रत्वात् अग्नेस्त्रिशूलस्य ग्रहणात् पृथक्त्वं न, गणेशे सत्यपि एक एव देवता तेन न विरोधः ॥ देवतास्तु षट्पंचाशदेवेत्यलमिति ॥ इत्येकोनविंशतिरेखात्मकं सर्वतोभद्रमंडलं समाप्तम् ॥

५

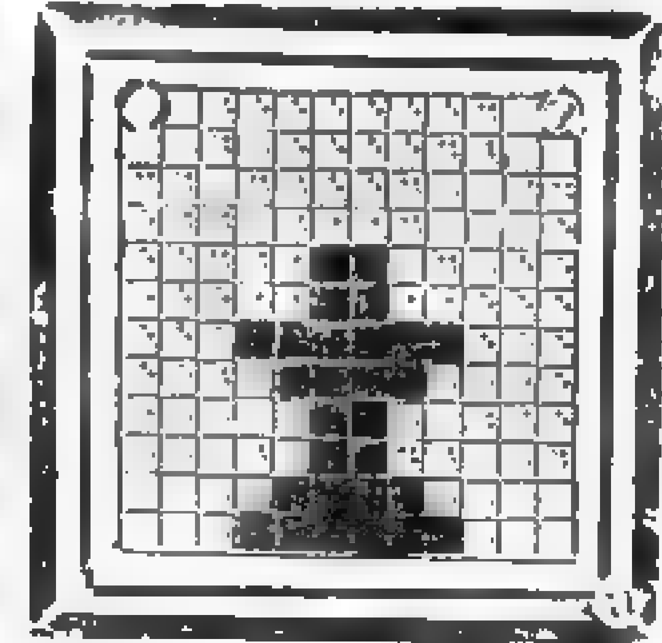
अथ चतुस्त्रिंशद्रेखात्मकं द्वादशलिंगतोभद्रमंडलं सदैवतमाह॥ (उक्तं च रुद्रयामले) रुद्र उवाच॥ उद्धारं कथयिष्येऽहं मदर्चार्थं तव प्रिये ॥ चतुस्त्रिंशत् समा रेखाः कुर्यात्पूर्वोत्तराः शुभाः ॥१॥ मध्ये वृत्तं समालेख्यं तन्मध्ये तु दशारकम् ॥ बहिरष्टदलं पद्मं ततः षोडशपत्रकम्॥२॥ चतुर्विंशतिपत्राढ्यं द्वात्रिंशत्पत्रकं तथा ॥ चत्वारिंशत्पत्रकं तु वृत्तं सूर्यसमप्रभम् ॥३॥खंडेंदुस्त्रिपदैः कोणे शृंखला दशकोष्ठिका ॥ एकविंशत्पदा वल्ली भद्रं तु षट्पदैस्तथा ॥ ४ ॥ अष्टादशपदं लिंगं भद्रं चाष्टपदं तथा ॥ त्रयोदशपदीं वापीं कुर्याल्लिंगस्य सन्निधौ॥ ५॥ पूज्योपर्यपि भद्राणि भवंति नवभिः पदैः ॥ एवं द्वादशलिंगाढ्यं वापीषोडशकान्वितम् ॥ ६ ॥ षट्पदाष्टकभद्राढ्यं पूज्यं द्वादशकात्मकम् ॥ मध्ये विंशति भद्रं तु कथितं पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ वर्णक्रमः॥ वर्णक्रममथो वक्ष्ये मंडलस्य च सिद्धये ॥ घृष्टतंडुलपिष्टेन कृष्णवर्णेन निर्मितम् ॥ ८ ॥ लिंगजातं सितेंदुः स्याद्वल्ली बिल्वदलप्रभा ॥ शृंखला कृष्णवर्णा च पीतं भद्रद्वयं भवेत् ॥ ९ ॥ सिता वाप्यस्तथा पूज्या मध्यभद्रे त्वयं क्रमः ॥ पूज्योपर्यरुणे भद्रे सिते द्वे मध्यमं सितम् ॥ १० ॥ सत्त्वं रजस्तमश्चैव बाह्यतः परिधित्रयम् ॥ एवं सुशोभितं कार्यं मंडल शिवपूजने ॥ अथ देवतास्थापनम् ॥ देशकालौ संकीर्त्य अद्य पुण्यतिथौ मम इह जन्मनि जन्मांतरे च सुखसौभाग्यसंतानादिफल प्राप्त्यर्थम् उमामहेश्वरदेवताप्रीतये मया आचरितस्य अमुकव्रतस्य फलप्राप्तिद्वारा लिंगतोभद्रमंडलदेवतावाहनप्रतिष्ठापूजनं च करिष्ये॥ इति संकल्पः ॥ मंडलबाह्ये ईशानकोणे ॥ गुरवे नमः गुरुमावाहयामि स्थापयामि । एवं सर्वत्र १ ॥ आग्नेय्यां-गणपतये नमः२ ॥ नैर्ऋते दुर्गायै नमः ३ ॥ वायव्ये-क्षेत्रपालाय नमः ४ ॥ ततः भद्रमध्ये-श्रीसदाशिवाय नमः ५ ॥ इति स्थापयेत्॥ ततः अष्टदले-पूर्वस्यां दिशि कालाग्निरुद्राय नमः ॥ कूर्माय नमः ॥ मण्डूकाय नमः १ ॥ आग्नेय्यां-वराहाय नमः ॥ अनन्ताय नमः २ ॥ दक्षिणे-पृथिव्यै नमः ॥ स्कंदाय नमः ३ ॥ नैर्ऋत्यां-दिशि नलाय नमः ॥ यमाय नमः ४ ॥ पश्चिमे-पत्रेभ्यो नमः ॥ केसरेभ्यो नमः ॥ कर्णिकायै नमः ५ ॥ वायव्यां-सिंहासनाय नमः ॥ पद्मासनाय नमः ६॥ उत्तरे-धर्म्माय नमः ॥ ज्ञानाय नमः ॥ वैराग्याय नमः ७॥ ऐशान्याम्-ऐश्वर्याय नमः॥ चिदाकाशाय नमः ८ ॥ पीठमध्ये-योगपीठात्मने नमः ॥ इत्येकविंशतिदेवताः संस्थापयेत् ॥ ततः कर्णिकोपरि ॥ पूर्वे-पृथिव्यै नमः १ ॥

दक्षिणे-कपालाय नमः २॥ पश्चिमे-सरिद्भ्यो नमः ३ ॥ उत्तरे-सागरेभ्यो नमः ४ ॥ कर्णिकासमीपे-चत्वारि श्वेतभद्राणि तद्देवतास्थापनम्॥ पूर्वे-तत्पुरुषाय नमः १॥ दक्षिणे अघोराय नमः२॥ पश्चिमे-सद्योजाताय नमः ३॥उत्तरे-वामदेवाय नमः ४॥तत्समीपे-कृष्णानि अष्टौ भद्राणि तद्देवतास्थापनम्॥ऐशान्ये-भगवत्यै नमः १॥ पूर्वे-उमायैनमः२॥आग्नेय्यां-शंकरप्रियायैनमः ३॥दक्षिणे-पार्वत्यैनमः४॥नैर्ऋत्ये गौर्यै नमः५॥ पश्चिमे-काल्यै नमः ६॥वायव्यां-कौर्म्यै नमः ७॥उत्तरे-विश्वंभर्यै नमः८॥ततः कृष्णभद्राणाम् अधः अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ ऐशान्ये-नंदिन्यै नमः १ ॥ पूर्वे-महाकालाय नमः २ ॥ आग्नेय्यां-वृषभाय नमः ३ ॥ दक्षिणे-भृंगकिरीटिने नमः ४ ॥ नैर्ऋत्यां-स्कंदाय नमः ॥ ५ ॥ पश्चिमे-उमापतये नमः ६ ॥ वायव्यां-चण्डेश्वराय नमः ७ ॥ उत्तरे सोमसूत्राय नमः ८ ॥ अथ लिंगोपरि चत्वारि श्वेत भद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ पूर्वे-धात्रे नमः १ ॥ दक्षिणे-मित्राय नमः २ ॥ पश्चिमे-यमाय नमः ३ ॥ उत्तरे-रुद्राय नमः ४ ॥ ततः तत्समीपलिंगोपरि अष्टौ पीतभद्राणि तद्देवतास्थापनम् ॥ ऐशान्ये-वरुणाय नमः १ ॥ पूर्वे-सूर्य्याय नमः २ ॥ आग्नेय्यां-भगाय नमः ३ ॥ दक्षिणे-विवस्वते नमः ४ ॥ नैर्ऋत्यां-पुरुषोत्तमाय नमः ५ ॥ पश्चिमे-सवित्रे नमः ६ ॥ वायव्ये-त्वष्ट्रे नमः ७ ॥ उत्तरे-विष्णवे नमः ८ ॥ ततः द्वादशलिंगदेवतास्थापनं पूर्वादिचतुर्दिक्षु ॥ पूर्वे-शिवाय नमः १ ॥ एकनेत्राय नमः २ ॥ एकरुद्राय नमः ३ ॥ दक्षिणे-त्रिमूर्तये नमः १ ॥ श्रीकंठाय नमः २ ॥ वामदेवाय नमः ३ पश्चिमे-ज्येष्ठाय नमः १ ॥ श्रेष्ठाय नमः २ ॥ रुद्राय नमः ३ ॥ उत्तरे कालाय नमः १ कलविकरणाय नमः २ ॥ बलविकरणाय नमः ३ ॥ अथ श्वेतषोडशवापीदेवतास्थापनमीशानादि क्रमेण ॥ अणिमायै नमः १ ॥ महिमायै नमः २ ॥ लघिमायै नमः ३ ॥ गरिमायै नमः ४ ॥ प्राप्त्यै नमः ५ ॥ प्राकाम्यायै नमः ६ ॥ ईशितायै नमः ७ ॥ वशितायै नमः ८ ॥ ब्राह्म्यै नमः ९ ॥ माहेश्वर्यै नमः १० ॥ कौमार्यै नमः ११ ॥ वैष्णव्यै नमः १२ वाराह्यै नमः १३ ॥ इन्द्राण्यै नमः १४ ॥ चामुडायै नमः १५ ॥ चण्डिकायै नमः १६ ॥ ततः वापीसमीपे अष्टौ रक्तभद्राणि तद्देवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ॥ असितांग भैरवाय नमः १॥ रुरुभैरवाय नमः २॥ चंडभैरवाय नमः ३॥ क्रोधभैरवाय नमः ४॥ उन्मत्तभैरवाय नमः ५ ॥ कालभैरवाय नमः ६॥

भीषणभैरवाय नमःनमः७॥संहारभैरवायनमः८॥ अथाष्टवल्लीदेवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण घृताच्यै नमः १॥ मेनकायै नमः २ ॥ रंभायै नमः३॥उर्वश्यै नमः ४॥ तिलोत्तमायै नमः५॥सुकेश्यै नमः६॥मंजुघोषायै नमः७॥अप्सरोभ्यो नमः८॥ततः अथचतुस्त्रिंशद्रेखात्मकंद्वादशलिंगतोभद्रम० मण्डलमध्ये परिधिसमीपे श्रृंखलादेवतास्थापनमाग्नेय्यादिक्रमेण-आग्नेय्यां भवाय नमः१॥शिवाय नमः २ ॥ रुद्राय नमः ३ पशुपतये नमः ४॥ उग्राय नमः ५॥ महादेवाय नमः ६ ॥ भीमाय नमः ७ ॥ ईशानाय नमः ८ ॥ अनन्ताय नमः ९ वासुकये नमः १०॥ ततः नैर्ऋते परिधिसमीपे श्रृंखलादेवतास्थापनम् ॥ तक्षकाय नमः १ ॥ कुलरिकाय नमः २ ॥ कर्कोटकाय नमः ३ शंखपालाय नमः ४ ॥ कंबलाय नमः ५ अश्वतराय नमः ६ ॥ वैन्याय नमः ७ ॥ अंगाय नमः ८ ॥ हैहयाय नमः ९॥ अर्जुनाय नमः १०॥ वायव्ये-दश-श्रृंखलादेवतास्थापनम् ॥ शकुंतलाय नमः १ ॥ भरताय नमः २ ॥ नलाय नमः ३ ॥ रामाय नमः ४ ॥ सार्वभौमाय नमः ५ ॥ निषधाय नमः ६ ॥ विंध्याचलाय नमः ७ ॥ माल्यवते नमः ८ ॥ पारियात्राय नमः ९ ॥ सह्याय नमः॥१०॥ ततः ऐशान्ये-परिधिसमीपे दशश्रृंखलादेवतास्थापनम् ॥ हेमकूटाय नमः १ ॥ गन्धमादनाय नमः २ ॥ कुलाचलाय नमः ३ ॥ हिमवते नमः ४ ॥ रैवताचलाय नमः ५ ॥ देवगिरये नमः ६ ॥ मलयाचलाय नमः ७ ॥ कनकाचलाय नमः ८ ॥ पृथिव्यै नमः ९ ॥ अनन्ताय नमः१० ॥ अथ चतुर्दिक्षु खंडेन्दुदेवतास्थापनमैशान्यादिक्रमेण ॥ ऐशान्ये–अश्विनीकुमाराभ्यां नमः १ ॥ आग्नेय्यां-विश्वेभ्यो देवेभ्यो नमः २ ॥ नैर्ऋते पितृभ्यो नमः ३ ॥ वायव्यां-नागेभ्यो नमः ४ ॥

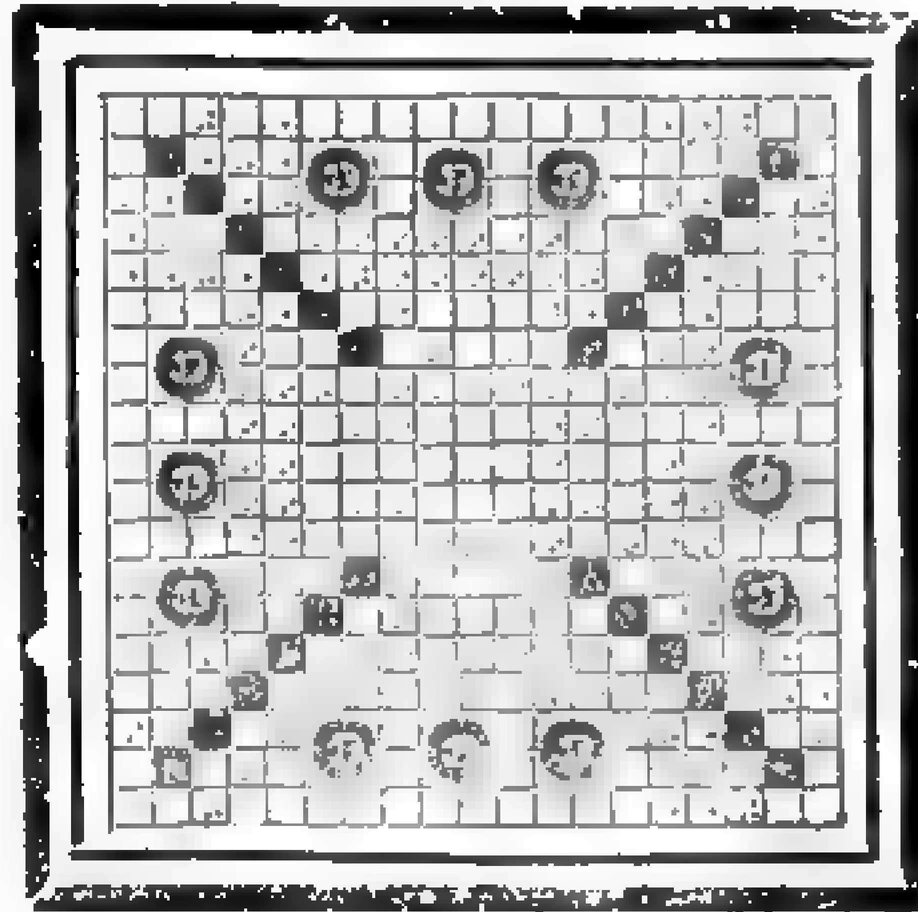


ततः मंडलाद्बहिः प्रथमं सत्त्वपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ इन्द्राय नमः १ ॥ अग्नये नमः २ ॥ यमाय नमः ३ ॥ निर्ऋतये नमः ४ ॥ वरुणाय नमः ५ ॥ वायवे नमः ६ ॥ कुबेराय नमः ७ ॥ ईश्वराय नमः ८ ॥ इन्द्रेशानयोर्मध्ये-ब्रह्मणे नमः ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये-अनन्ताय नमः १० ॥ तद्बहिः रजःपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ वज्राय नमः १ ॥ शक्तये नमः २ ॥ दण्डाय नमः ३ ॥ खड्गाय नमः ४ ॥ पाशाय नमः ५ ॥ अंकुशाय नमः ६ ॥ गदायै नमः ७ ॥ त्रिशूलाय नमः ८ ॥ पद्माय नमः ९ ॥ चक्राय नमः ॥ १० ॥ तद्बहिः तमोमयकृष्णपरिधौ पूर्वादिक्रमेण देवतास्थापनम् ॥ कश्यपाय नमः १ ॥ अत्रये नमः २ ॥ भरद्वाजाय नमः ३ ॥ विश्वामित्राय नमः ४ ॥ गौतमाय नमः ५ ॥ जमदग्नये नमः ६ ॥ वसिष्ठाय नमः ७ ॥ अरुंधत्यै नमः ८ ॥ ततः पूर्वे-ऋग्वेदाय नमः १ ॥ दक्षिणे-यजुर्वेदाय नमः २ ॥ पश्चिमे-सामवेदाय नमः ३ ॥ उत्तरे-अथर्ववेदाय नमः ४ ॥ एवमष्टोत्तरशत १०८ देवताः संस्थाप्य षोडशोपचारैः संपूज्य ततः प्रधानदेवतां मण्डलमध्ये संस्थाप्य पूजयेत् ॥ इति द्वादशलिंगतोभद्रमण्डलविधानम् ॥ अथ त्रयोदशरेखात्मकं लघुगौरीतिलकाख्यमेकलिंगतोभद्रमण्डलम् ॥ तिर्यगूर्ध्वगता रेखाः कार्याः स्निग्धास्त्रयोदश ॥ कोणेंदुस्त्रिपदः कार्यः शृंखलास्त्रिपदाः सिताः ॥ १ ॥ वल्ली च षट्पदा नीला भद्रं रक्तं प्रकल्पयेत् ॥ पदैर्द्वादशभिः स्पष्टमुत्तरे पूर्वदक्षिणे ॥ २ ॥ पश्चिमायां महारुद्रमष्टाविंशतिकोष्ठकैः ॥ लिंगपार्श्वे तथा मूर्धन्यष्टौ कोष्ठाः सुपीतकाः ॥३॥ लिंगमेकं तथा गौर्य्यस्तिस्रश्चात्र तु मंडले ॥ पूजयेन्मण्डलं चैव तस्य गौरी प्रसीदति ॥ देवता पूर्वोक्ता एव ॥ इति लघुगौरीतिलकाख्यमेकलिंगतोभद्रमण्डलम् ॥ अथ सूर्य्यभद्रम् ॥ रेखाविंशतिसंयुक्तं भीमरथ्यास्तु मंडलम् ॥ सूर्यव्रतेषु सर्वेषु शस्यते मंडलं त्विदम् ॥ १ ॥ खंडेंदुस्त्रिपदः कार्यः शृंखला षट्पदा मता ॥ त्रयोदशपदैर्वल्ली भद्रं तु त्रिपदं मतम् ॥ २ ॥ सूर्यत्रयं प्रकुर्वीत सप्तविंशतिभिः पदैः ॥ सूर्यत्रयं चतुष्कोणे पदमर्धसितं भवेत् ॥३ ॥ पदैस्तु नवभिः कृत्वा भवेत्सूर्यत्रयं ततः ॥

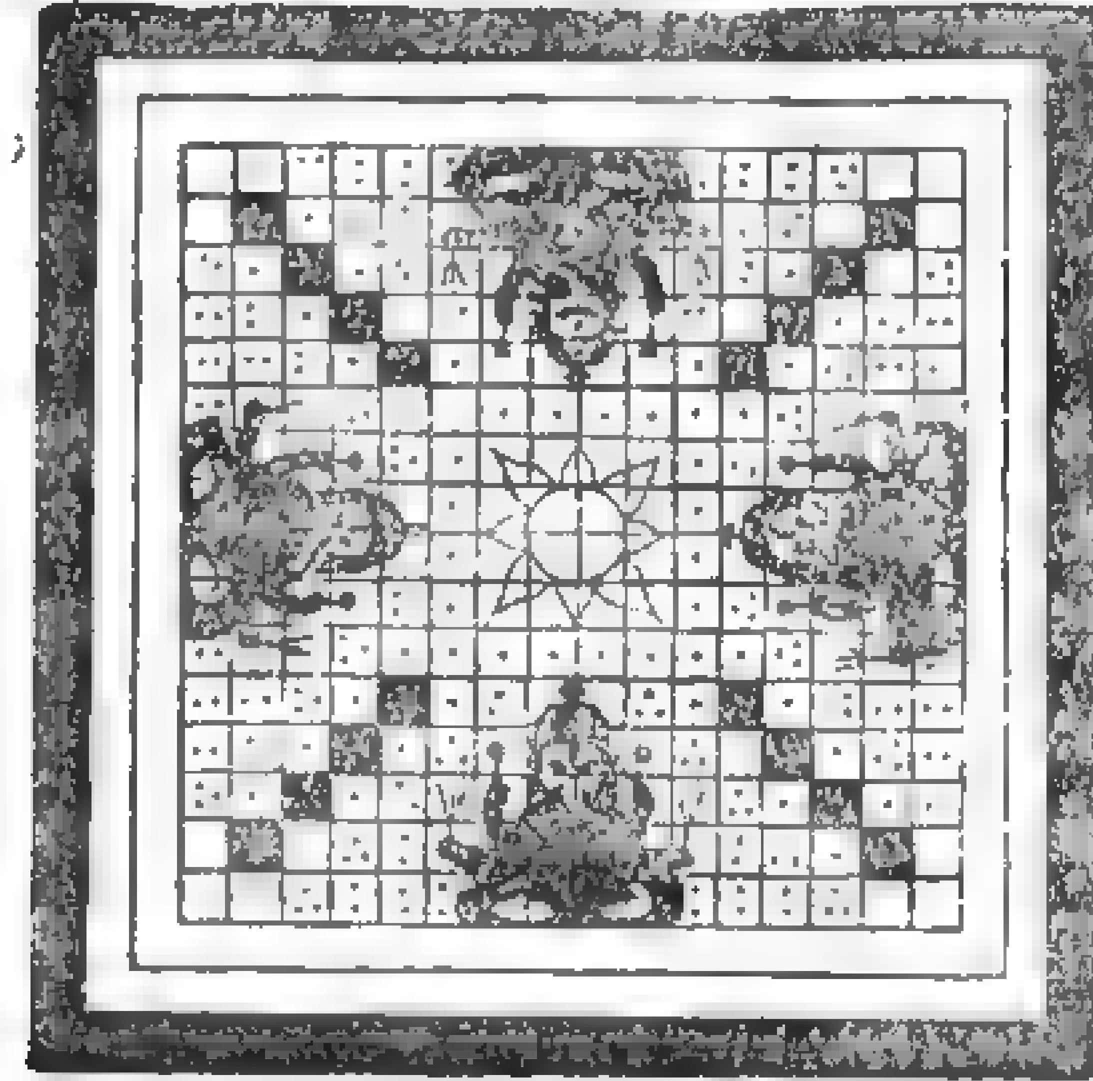


सूर्योपरि भवेद्भद्रं पदं द्वादशसंमितम् ॥ ४ ॥ उर्ध्वमिदं प्रकुर्वीत चतुर्भिस्तु सितैः पदैः ॥ परिधिः षोडशपदा पद्मं नवपदं ततः ॥ ५ ॥
सत्त्वं रजस्तम इति रेखाः स्युर्मंडलाद्बहिः ॥ कृष्णा च शृंखला ज्ञेया वल्ली नीला प्रकीर्तिता ॥ ६ ॥ भद्रान् पीतान् प्रकुर्वीत रवीन्
रक्तान् प्रकारयेत् ॥ पीतश्च परिधिः प्रोक्तः पद्मं रक्तं तथैव च ॥ ७ ॥ इति भद्रमार्तण्डे सूर्यभद्रम् ॥ अथ गणपतिभद्रम् ॥ अथातः
संप्रवक्ष्यामि मंडलं सर्वसिद्धिदम् ॥ नाम्ना च विघ्नमर्दाख्यं विनायकव्रते हितम् ॥ १ ॥ तिर्यगूर्ध्वं सप्तदश रेखाः कार्याः सुशोभनाः ॥

सूर्यमण्डलम् ॥



गणपतिभद्रमण्डलम् ॥



खंडेंदुस्त्रिपदः कोणे शृंखला च चतुष्पदैः ॥ ९ ॥ कार्या नवपदा वल्ली भद्रं रक्तं चतुष्पदम् ॥ ततो विंशतिकोष्ठेषु कार्यो गणपतिः शुभः ॥ कोष्ठद्वयेन मुकुटं गणेशस्य च कारयेत् ॥ पीतश्च परिधिः कार्यः पदैर्विंशतिभिस्तथा ॥ ४ ॥ मध्ये षोडशकोष्ठेषु पद्मं कार्यं सुशोभनम् ॥ सर्वतोभद्रदेवान्वै विशेषेणात्र योजयेत् ॥ इति गणपतिभद्रम् ॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे भद्रमंडलप्रकरणे तृतीयस्तरंगः ॥ ३ ॥

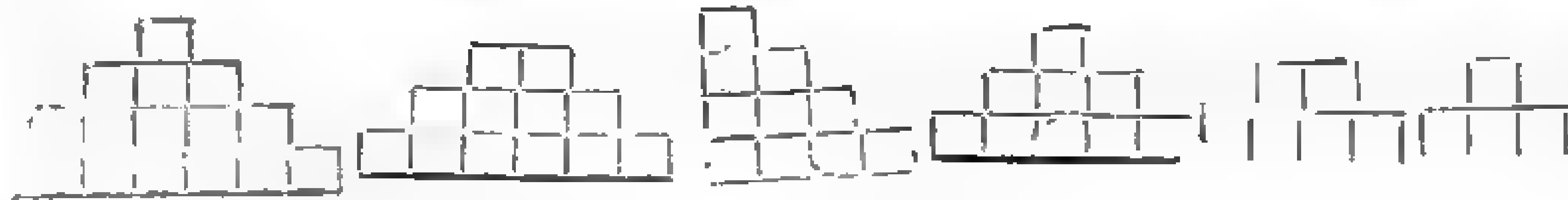
अथ मंडलानां मध्ये उक्तखंडेन्दुशृंखलादिस्वरूपज्ञानाय तच्चिह्नानि ।



इदं खंडेंदुस्त्रिपदस्तस्य चिह्नम् ॥ अत्र श्वेतवर्णः ।

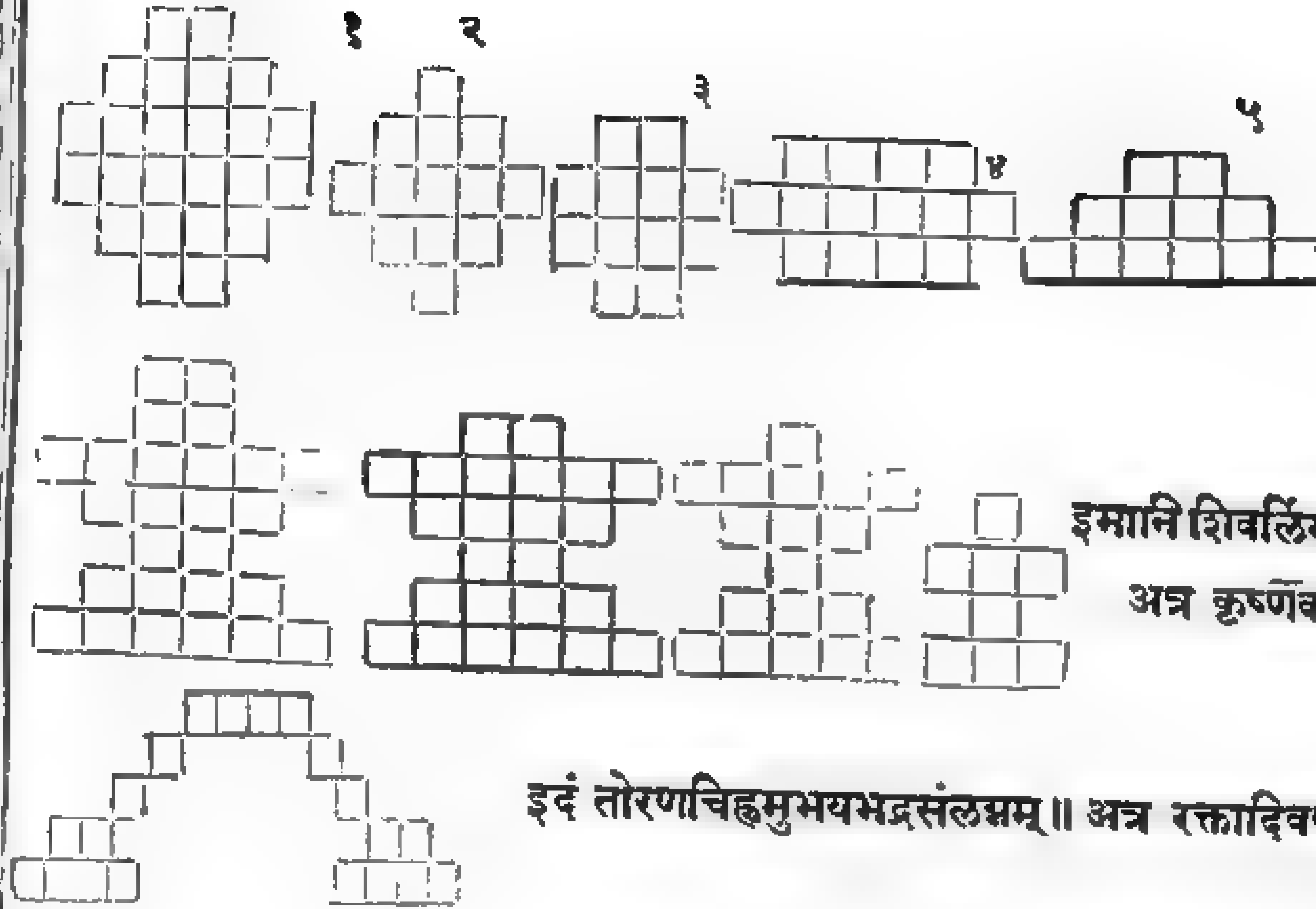
इदं शृंखलाचिह्नम् ॥ अत्र कृष्णवर्णः ।

इयमेकादशादिपदात्मिका वल्ली तस्याश्चिह्नम् ॥ अत्र हरितवर्णः पीतश्च क्वचित् ।



इमानि भद्रचिह्नानि ।
अत्र वर्णस्तु पीतः ।

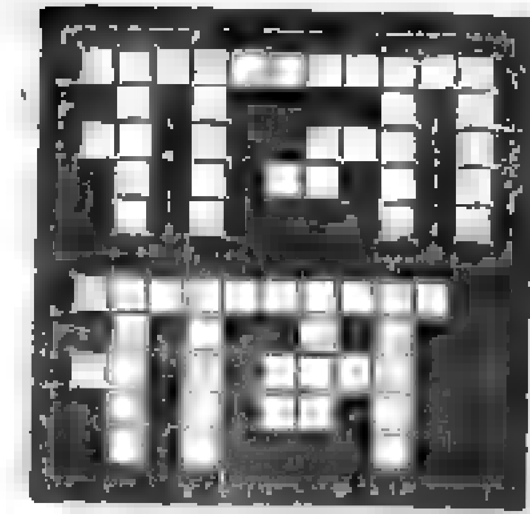
इमानि वापीचिह्नानि ॥ अत्र श्वेतवर्णः। पंचमी खण्डवापी।

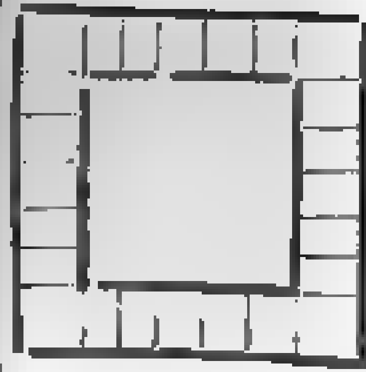


इमानि शिवलिंगचिह्नानि। अत्र कृष्णवर्णः।

इदं तोरणचिह्नमुभयभद्रसंलग्नम्॥ अत्र रक्तादिवर्णः।

इदं राममुद्राचिह्नम्।





इदं परिधिचिह्नम् ॥ अत्र पीतश्वेतरक्तकृष्णवर्णाः ।

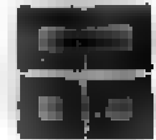
अथ स्पष्टालीखितमंडलानां कोष्ठकमध्ये पंचरंगानां पूरणार्थं विंदुचिह्नानि संति तेषां सूचना ।

एतादृशेषु श्वेतवर्णं श्वेतधान्यं वा पूरयेत् ।

एकबिन्दुयुक्तेषु श्वेतकोष्ठकेषु कोष्ठकेषु पीतवर्णं पीतधान्यं वा पूरयेत् ।

यत्र विंदुद्वयं तत्र रक्तवर्णं रक्तधान्यं वा पूरयेत् ।

यत्र विंदुत्रयं तत्कोष्ठकेषु हरितवर्णं हरितधान्यं वा पूरयेत् ।



कृष्णवर्णयुक्तकोष्ठकेषु कृष्णवर्णं कृष्णधान्यं वा पूरयेत् ।

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ सर्वदेवोपयोगिपद्धतिप्रारंभः ॥ तत्रादौ पंचांगपूजनं (देवीरहस्ये) जप्त्वा मंत्री मंत्रराजं हुत्वा देवे दशांशतः॥ तर्पयेत्तद्दशांशेन मार्जयेत्तद्दशांशतः ॥ भोजयेत्तद्दशांशेन मंत्रसिद्धिर्भवेद्ध्रुवम् ॥ अथ पञ्चांगपूजने मंत्रोद्धरणक्रमः (आगमचिंतामणौ) होमतर्पणयोः स्वाहा न्यासपूजनयोर्नमः ॥ मंत्रांते योजयेन्मंत्री जपकाले यथा तथा ॥ अथ संक्षेपतः सर्वासां देवतानां नित्यपूजाविधिः (रुद्रयामले) आदौ ऋष्यादिविन्यासः करशुद्धिस्ततः परम् ॥ अंगुलीव्यापकौ कृत्वा हृदादिन्यास एव च ॥ १ ॥ तालत्रयं च दिग्बंधः प्राणायामस्ततः परम् ॥ ध्यानं पूजा जपश्चैव सर्वतंत्रेष्वयं विधिः ॥ २ ॥ अथ पूजादिमाहात्म्यम् ॥ पूजया विपुलं राज्यमग्निकार्येण

सम्पदः ॥ जपेन पापसंशुद्धिर्ज्ञानध्यानेन मुच्यते ॥ ३ ॥ त्रिकालं गन्धपुष्पाद्यैरर्चिते देवते निशि ॥ पुरश्चरणकृत्येन विनैवासौ प्रसीदति ॥ ४ ॥ (तंत्रांतरेऽपि) एकदा वा भवेत्पूजा न जपेत्पूजनं विना ॥ जपांते च भवेत्पूजा पूजांते वा जपेन्मनुम् ॥५॥ मासार्द्धमथवा मासमथवा द्विगुणं तथा ॥ यावत्फलाप्तिमान्योगी तावदेवं समाचरेत् ॥ ६ ॥ (मंत्रमहोदधौ) पूजनेन फलार्द्धं स्यादन्यदन्तैस्तु साधनैः ॥ (तंत्रांतरेऽपि) यदि पूजाद्यशक्तः स्याद्द्रव्याभावेन सुंदरि ॥ केवलं जपमात्रेण पुरश्चर्या विधीयते ॥ ७ ॥ नियमः पुरुषे ज्ञेयो न योषित्सु कदाचन ॥ न न्यासो योषितां चात्र न ध्यानं न च पूजनम् ॥ ८ ॥ केवलं जपमात्रेण मंत्राः सिध्यंति योषिताम् ॥ ९ ॥ अथ पूजायां पंचांगशुद्धिः ॥ (ज्ञानार्णवे) आत्मा स्थानं मंत्रहव्ये देवशुद्धिस्तु पंचमी ॥ यावन्न कुरुते देवि तस्य देवार्चनं कुतः ॥ पंचशुद्धिं विना पूजा ह्यभिचाराय कल्पते ॥ १० ॥ (अथात्मशुद्धिप्रकारः) सुस्नातैर्भूतशुद्ध्यैश्च प्राणायामादिभिः प्रिये ॥ षडंगाद्यखिलन्यासैरात्मशुद्धिरितीरिता ॥ ११ ॥ (अथ मंत्रशुद्धिप्रकारः) ग्रंथिता मातृकावर्णैर्मूलमंत्राक्षराणि च ॥ क्रमोत्क्रमाद्द्विरावृत्त्या मंत्रशुद्धिरितीरिता ॥ १२ ॥ (अथ द्रव्यशुद्धिप्रकारः) पूजाद्रव्याणि मूलास्त्रैः प्रोक्षणीयैर्विशेषतः ॥ दर्शयेद्धेनुमुद्रादि द्रव्यशुद्धिरितीरिता ॥ ॥ १३ ॥ (अथ देवशुद्धिप्रकारः) पीठे देवं प्रतिष्ठाप्य संकलीकृत्य मंत्रवित् ॥ मूलमंत्रेण दीपादीन्माल्यादीनुदकेन च ॥ १४ ॥ त्रिवारं प्रोक्षयेद्विद्वान् देवशुद्धिरितीरिता ॥ पंचशुद्धिं विधायेत्थं पश्चाद्यजनमाचरेत् ॥ १५ ॥ (स्थानमंत्रेण स्थानं शोधयेत्) अथ षोडशोपचाराः ॥ पाद्यार्घ्याचमनीयं च स्नानं वसनभूषणे ॥ गंधपुष्पधूपदीपनैवेद्याचमनं तथा ॥ १६ ॥ तांबूलमर्चनस्तोत्रं तर्पणं च नमस्क्रियाम् ॥ प्रयोजयेत्प्रपूजायामुपचारांस्तु षोडश ॥ १७ ॥ अथ पंचोपचाराः ॥ गंधं पुष्पं तथा धूपं दीपं नैवेद्यमेव च ॥ अखंडफल

---

१ बृहत्पाराशरसंहितायाम्-आवाहयेद्देवमृचा तु पुरुषोत्तमम् । द्वितीययासनं दद्यात्पाद्यं चैव तृतीयया ॥ अर्घ्यं चतुर्थ्या दातव्यं पञ्चम्याचमनं तथा । षष्ठ्या स्नानं प्रकुर्वीत सप्तम्या वस्त्रधौतकम् ॥ यज्ञोपवीतं चाष्टम्या नवम्या गन्धमेव च । पुष्पं देयं दशम्या तु एकादश्या च धूपकम् ॥ द्वादश्या दीपकं दद्यात्त्रयोदश्या निवेदयेत् । चतुर्दश्या नमस्कारं पञ्चदश्या प्रदक्षिणा । षोडश्योद्वासनं कुर्याच्छेषकर्माणि पूर्ववत् । ततः सर्वं जपेद्भूयः पौरुषं सूक्तमेव च ॥ इति ॥

मासाद्य कैवल्यं लभते ध्रुवम् ॥ १८ ॥ (आसनाद्युपचारफलं शैवरत्नाकरे) आवाहनं तु यो दद्यात्स च क्रतुफलं लभेत् ॥ आसनं रुचिरं दत्त्वा शक्रतत्त्वमवाप्नुयात् ॥ १९ ॥ पाद्येन पातकं हन्यादर्घ्येणाप्नोत्यनर्घ्यताम् । ततश्चाचमनं दत्त्वा सुचित्तः सुखितां व्रजेत् ॥ २० ॥ स्नानं व्याधिभयं हन्याद्वस्त्रेणायुष्यवर्द्धनम् ॥ उपवीतं तु यो दद्याद्ब्रह्मवेत्तृत्वमेव ॥ च ॥ २१ ॥ भूषणानि च यो दद्यादनापद्यमवाप्नुयात् ॥ गंधेन लभते काममक्षतैरक्षतो भवेत् ॥ २२ ॥ नानापुष्पप्रदानेन स्वर्गे राज्यमवाप्नुयात् ॥ धूपो दहति पापानि दीपो मृत्युविनाशनः ॥ २३ ॥ सर्वमान्यस्तु नैवेद्यं दत्त्वा तृप्तिरतो भवेत् ॥ मुखवासनदानेन कीर्तिमान् भवति ध्रुवम् ॥ २४ ॥ नीराजनेन शुद्धात्मा दर्पणेन प्रकाशयेत् ॥ फलदः पुत्रवान्मर्त्यस्तांबूलात्स्वर्गमाप्नुयात् ॥ २५ ॥ प्रदक्षिणं तु यः कुर्यात्पापं हंति पदे पदे ॥ दण्डप्रणामं यः कुर्य्याद्देवमुद्दिश्य सन्निधौ ॥ २६ ॥ वर्षाणि वसते स्वर्गे देहांते रेणुसंख्यया ॥ स्तोत्रेण दिव्यदेहोऽपि वाग्मी भवति तत्क्षणात् ॥ २७ ॥ पुराणपठनेनैव सर्वपापक्षयो भवेत् ॥ २८ ॥ अथ सर्वदेवतापूजनोपयोगितिथ्यादिकम् ॥ चैत्रे शुक्लचतुर्दश्यां दमनैः पूजयेद्धरम् ॥ नारायणं तु द्वादश्यामष्टम्यां गिरिनंदिनीम् ॥ सप्तम्यां भास्करं देवं चतुर्थ्यां गणनायकम् । एवं तत्तत्तिथौ तं तं पवित्रैः श्रावणेऽर्चयेत् ॥ माघकृष्णचतुर्दश्यां विशेषाच्छिवपूजनम् । आश्विनाद्यनवाहेषु दुर्गापूजा यथाविधि ॥ गोपालं पजयेद्विद्वान्नभःकृष्णाष्टमीदिने । रामं चैत्रासिते पक्षे नवम्यामर्चयेत्सुधीः ॥ वैशाखाद्यचतुर्दश्यां नरसिंहं प्रपूजयेत् ॥ यजेच्छुक्लचतुर्थ्यां तु गणेशं भाद्रमाघयोः ॥ महालक्ष्मीं यजेद्विद्वान् भाद्रकृष्णाष्टमीदिने । माघस्य शुक्लसप्तम्यां विशेषाद्दिननायकम् ॥ या काचित्सप्तमी शुक्ला रविवारयुता यदि । तस्यां दिनेशं संपूज्य दद्यादर्घ्यं पुरोदितम् ॥ ॥ अथ सर्वमंत्रानुष्ठानोपयोगि प्रारम्भात्पूर्वकृत्यम् ॥ तत्रादौ चन्द्रतारादिबलान्विते सुदिने सुमुहूर्ते तीर्थपुण्यक्षेत्रनिर्जनस्थानादावनुष्ठानयोग्यभूमिपरिग्रहणं कृत्वा तत्र मार्जनदहनखननसंप्लावनादिभिः स्मृत्युक्तैः शोधनोपायैः शुद्धिं संपाद्य जपस्थानस्य चतुर्दिक्षु क्रोशं क्रोशद्वयं वा क्षेत्रं चतुरस्रमाहारादिविहारार्थं परिकल्प्य जपस्थानभूमौ कूर्मशोधनं कुर्य्यात् ॥ ततः पुरश्चरणात् प्राक् तृतीयदिवसे क्षौरादिकं विधाय प्रायश्चित्तांगविष्णुपूजाविष्णुतर्पणविष्णुश्राद्धं होमं चांद्रायणादिव्रतं च कुर्य्यात् ॥ व्रताशक्तौ गोदानं द्रव्य

दानं च कुर्य्यात् ॥ सर्वकर्मणामशक्तौ प्रायश्चित्तांगपंचगव्यप्राशनं कुर्य्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ यत्त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके ॥ प्राशनं पंचगव्यस्य दहत्वग्निरिवेंधनम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा प्रणवेन पंचगव्यं पिबेत् ॥ तद्दिने उपवासं कुर्यात् ॥ अशक्तश्चेत् पयःपानहविष्यान्नेनैकभुक्तिव्रतम् । पुरश्चरणात् पूर्वदिने स्वदेहशुद्ध्यर्थं पुरश्चरणाधिकारप्राप्त्यर्थं चायुतगायत्रीजपं कुर्य्यात् ॥ तथा च देशकालौ संकीर्त्य ज्ञाताज्ञातपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवतापुरश्चरणाधिकारार्थममुकमंत्रेण सिध्यर्थं च गायत्र्ययुत जपमहं करिष्ये ॥ इति संकल्प्य गायत्र्ययुतं जपेत् । ततो गायत्र्याचार्य्यमृर्षिं विश्वामित्रं तर्पयामि । गायत्रीछंदस्तर्पयामि । सवितारं देवं तर्पयामि ॥ इति तर्पणं कुर्यात् । ततस्तस्यां रात्रौ देवतोपास्तौ शुभाशुभस्वप्नं विचारयेत् । तथा च स्नानादिकं कृत्वा हरिपादांबुजं स्मृत्वा कुशासनादिशय्यायां यथासुखं स्थित्वा वृषभध्वजं प्रार्थयेत् । तत्र मंत्रः ॐ भगवन्देव देवेश शूलभृद्वृषवाहन ॥ इष्टानिष्टं समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वत ॥ १ ॥ ॐ नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिंगलाय महात्मने ॥ वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ॥ २ ॥ स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषतः ॥ क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर ॥ ३ ॥ इति मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारं शिवं प्रार्थ्य निद्रां कुर्य्यात् ॥ ततः निशि दृष्टं स्वप्नं प्रातर्गुरवे विनिवेदयेत् ॥ अथवा स्वयं स्वप्नं विचारयेत् ॥ इति पूर्वकृत्यम् ॥ अथ प्रातःकृत्यम् ॥ पुरश्चरणदिवसे श्रीमत्साधकेन्द्रः प्रातःकालात्पूर्वं दंडद्वयात्मके ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद्बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्यान्यवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्य स्वशिरसि सहस्रदलपंकजे कोटींदुप्रकाशपीठे श्रीगुरुं

१ देवीभागवते-यस्य कस्यापि मंत्रस्य पुरश्चरणमारभेत् । व्याहृतित्रयसंयुक्तां गायत्रीं चायुतं जपेत् ॥ नृसिंहार्कवराहाणां तांत्रिकं वैदिकं तथा । विना जप्त्वा तु गायत्रीं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥

२ लिंगं चन्द्रार्कयोर्बिंबं भारतीं जाह्नवीं गुरुम् । रक्ताब्धितरणं युद्धे जयोऽनलसमर्चनम् ॥ शिखिहंसरथांगाढ्ये रथेस्थानं च मोहनम् । आरोहणं तारकस्य धराळाभश्च निम्नगा ॥ प्रासादः स्यन्दनः पद्मं छत्रं कन्या द्रुमः फली । नागो दीपो हयः पुष्प वृषभोऽश्वश्च पर्वतः ॥ सुराघटो ग्रहास्तारा नारी सूर्य्योदयोऽप्सराः । हर्म्यशैलविमानानामारोहो गगने गमः ॥ मद्य मांसादनं विष्ठालेपो रुधिरलेपनम् । दध्योदनादनं राज्याभिषेको गोवृषध्वजाः ॥ सिंहः सिंहासनं शंखो वादित्रं रोचनादिभिः । चन्दनं तर्पणं येषां स्वप्ने संदर्शनं शुभम् ॥ तैलाभ्यक्तः कृष्णवर्णो नग्नोनागतवायसौ । शुष्ककंटकिवृक्षश्च चांडालो दीर्घकंधरः ॥ प्रासादस्तलहीनश्च नैते स्वप्ने शुभावहाः ॥ इति विचारयेत् ॥

ध्यायेत् ॥ तथा च-आनंदमानंदकरं प्रसन्नं ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ॥ योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं श्रीसद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य ॥ प्रातःप्रभृति सायांतं सायादिप्रातरंततः ॥ यत्करोमि जगन्नाथ तदस्तु तव पूजनम् ॥ १ ॥ इत्यनेन मंत्रेण सर्वं गुरवे निवेद्य तदाज्ञां गृहीत्वा मूलमंत्रदेवतायाः प्रातः स्मरणं कुर्य्यात्॥प्रातः स्मरणं कृत्वा गुरुमंत्रदेवतात्मनामैक्यं विभाव्य अजपाजपं गुरवे समर्पयेत् ॥ (अथाजपाजपसंकल्पः संक्षेपतः) आधारे लिंगनाभौ हृदयसरसिजे तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥वासांते बालमध्ये डफकठसहिते आदियुक्ते स्वराणां हंक्षंतत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ ॥ १ ॥ षट्शतं तु गणेशस्य षट्सहस्रं प्रजापतेः ॥ षट्सहस्रं गदापाणेः षट्सहस्रं पिनाकिनः ॥ २ ॥ आत्मनस्तत्सहस्रं च सहस्रं परमात्मनः ॥ सहस्रं श्रीगुरुभ्यश्च ह्येवं तानि नियोजयेत् ॥ ३ ॥ हंसो गणेशो विधिरेव हंसो हंसो हरिर्हंसमयश्च शंभुः ॥ हंसोऽपि जीवः परमात्महंसो हंसो गुरुर्हंसमयश्च शंभुः ॥ ४ ॥ इति पठित्वा अहोरात्रोच्चारितं षट्शताधिकमेकविंशतिसहस्रमुच्छ्वासनिश्वासात्मकमजपागायत्रीमंत्रजपं श्रीगणेशब्रह्मविष्णुरुद्रजीवात्मपरमात्मश्रीगुरुभ्यो यथासंख्यं समर्पयामि ॥ इत्युक्त्वाष्टोत्तरशतावृत्ति हंसगायत्रीं जपेत् ॥ अथ हंसगायत्रीमंत्रः ॥ हरिः ॐ हंसो हंसस्य विद्महे हंसो हंसस्य धीमहि ॥ हंसो हंसः प्रचोदयात् ॥ इति जपित्वा, त्रैलोक्य चैतन्यमयि त्रिशक्ते श्रीविश्वमातर्भवदाज्ञयैव ॥ प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयामि ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य भूमिं प्रार्थयेत् ॥ तत्र मंत्रः-समुद्रमेखले देवि पर्वतस्तनमण्डले ॥ विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥१॥इति भूमिं संप्रार्थ्य श्वासानुसारेण भूमौ पादं दत्त्वा बहिर्व्रजेत् ॥ इति प्रातःकृत्यम् । ततो ग्रामाद्बहिः नैर्ऋत्यकोणे जनवर्जिते उत्तराभिमुखः अनुपानत्कः वस्त्रेण शिरः प्रावृत्य मलमोचनं कृत्वा मृत्तिकया जलेन यथासंख्यं शौचं कृत्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य गंडूषं च कृत्वा दंतधावनं कुर्यात् । तथा च आम्रचम्पकापामार्गाद्यन्यतमं द्वादशांगुलं दन्तकाष्ठं गृहीत्वा प्रार्थयेत् । आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजाः पशुधनानि च ॥ श्रियं प्रज्ञां च मेधां च त्वं नो देहि वनस्पते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ।' ॐ ह्रीं तडित् स्वाहा ' इति मंत्रेण काष्ठं छित्त्वा' ॐ क्लीं कामदेवाय सर्वजनप्रियाय नमः ।

इत्यनेन दंतान् संशोध्य 'ऐं' मंत्रेण जिह्वामुल्लिख्य दन्तकाष्ठं क्षालयित्वा नैर्ऋत्यां शुद्धदेशे निक्षिपेत्। मूलेन मुखं प्रक्षाल्याचम्य स्नानं कुर्यात् ॥ तत्रादौ तीर्थस्नानप्रयोगः । गंगायमुनादिनद्यभावे तडागादिकं गत्वा ततः पाणिपादं प्रक्षाल्य नाभिमात्रे जले गत्वा शिखां बद्ध्वा आचम्य देशकालौ संकीर्त्य मम ज्ञाताज्ञातसमस्तपापक्षयार्थं करिष्यमाणामुकदेवतामंत्रपुरश्चरणाधिकारार्थं शरीरशुद्ध्यर्थं चामुकप्रायश्चित्तांगभूतमादौ तीर्थस्नानमहं करिष्ये । इति संकल्प्य स्नात्वा पुनः आचम्य देवर्षिपितृतर्पणं कृत्वा ततो यक्ष्मणे तिलजलं दद्यात् । तथा च-ॐ यन्मया दूषितं तोयं मलैः शारीरसम्भवैः ॥ तस्य पापस्य शुद्ध्यर्थं यक्ष्मैतत्ते तिलोदकम् ॥ १ ॥ इति यक्ष्मणे तिलोदकं दत्त्वा ततस्तीरमागत्य-ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम॥भूमौ दत्तेन तृप्यंतु तृप्ता यांतु परां गतिम्॥१॥इति जलांजलिं तटे निक्षिप्य पुनराचम्य सूर्य्यायार्घ्यं दद्यात् । तथा च-ॐ एहि सूर्य्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते ॥ अनुकंपय मां देव गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा जलाद्बहिर्निष्क्रम्य शुष्कं शुभं कार्पासोत्पन्नवस्त्रं श्वेतवर्णं प्रयोगोक्तं वा परिधाय स्नायी वस्त्रं परिपीडय गृहं गच्छेत् ॥ इति तीर्थस्नानप्रयोगः ॥

अथ गृहस्नानप्रयोगः ॥ तात्कालिकोद्धृतोदकेन उष्णोदकेन वा स्नानं कृत्वा न तु पर्युषितशीतोदकेन, ताम्रादिबृहत्पात्रे जलं गृहीत्वा तीर्थान्यावाहयेत् ॥ तत्र मंत्रः-ॐ ब्रह्मांडोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ॥ तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥ १ ॥ ॐ गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥ नर्मदे सिंधुकावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ॥ २ ॥ आवाहयामि त्वां देवि स्नानार्थमिह सुंदरि ॥ एहि गंगे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥ ३ ॥ ॐ पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा ॥ आगच्छंतु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम ॥ ४ ॥ इति तीर्थान्यावाह्य ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमंत्रेणाभिमंत्र्य वरुणमंत्रेण स्नात्वा वक्ष्यमाणैश्चतुर्भिर्मंत्रैः कुशत्रयेण शिरसि जलं प्रक्षिपेत् ॥ तत्र मंत्रः-ॐ सिसृक्षोर्निखिलं विश्वं मुहुश्शुक्रं प्रजापते ॥ मातरः सर्वभूतानामापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ १ ॥ अलक्ष्मीर्मलरूपा या सर्वभूतेषु संस्थिता ॥ क्षालयंती निजस्पर्शादापो देव्यः पुनंतु माम् ॥ २ ॥ यन्मे केशेषु

दौर्भाग्यं सीमंते यच्च मूर्द्धनि ॥ ललाटे कर्णयोरक्ष्णोरापस्तद् घ्नंतु वो नमः ॥ ३ ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यमारिपक्षक्षयः सुखम् ॥ संतोषः क्षांतिरास्तिक्यं विद्या भवतु वो नमः ॥४॥ इति शिरः प्रोक्ष्य हस्तेन जलमादाय नासिकायां संयोज्य ॐ ऋतं च सत्यमित्यघमर्षणमंत्रं पठित्वा जलं वामभागे निक्षिपेत् ॥ एवं स्नात्वा शुष्कं शुभ्रं कार्पासोत्पत्तिवस्त्रं परिधाय सूर्यमंत्रेण सूर्यायार्घ्यं दत्त्वा स्नानीयवस्त्रं परिपीड्याचम्य शैवः पंचत्रिपुंड्रं वैष्णवो द्वादशोर्द्ध्वपुण्ड्रं तिलकं कुर्य्यात् ॥ अथ तिलकधारणप्रकारः ॥ तत्रादौ शैवे भस्मात्रिपुंड्रप्रकारः ॥ वामहस्ते दक्षिणहस्तेनाग्निहोत्रोत्थितं भस्मादाय उदकमिश्रणानन्तरम् ॐ अग्निरिति भस्म, ॐ वायुरिति भस्म, ॐ जलमिति भस्म, ॐ स्थलमिति भस्म, ॐ व्योमेति भस्म, सर्वं ह वा इदंभस्म मन एतानि चक्षूंषि भस्मानीति भस्माभिमंत्र्य ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ तत्पुरुषाय नमः इति मंत्रेण भाले त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ १ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ अघोराय नमः इति दक्षिणांसे तिलकं कुर्य्यात् ॥ २ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ सद्योजाताय नमः इति मंत्रेण वामांसे तिलकं कुर्य्यात् ॥ ३ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ वामदेवाय नमः इति मंत्रेण जठरे तिलकं कुर्य्यात् ॥ ४ ॥ पुनः ॐ त्र्यंबकं पठित्वा ॐ ईशानाय नमः इति मंत्रेण वक्षसि च त्रिपुंड्रं कुर्य्यात् ॥ ५ ॥ इति पंचत्रिपुंड्रं कृत्वा रुद्राक्षमालां च धारयन् सन्ध्यावन्दनादि कर्म कुर्यात्। इति भस्मात्रिपुंड्रप्रकारः ॥ अथ वैष्णवानामूर्ध्वपुंड्रविधानम् ॥ गोपीचंदनतुलसीमूलसिंधुजाह्नवीतीरोद्भवमृदा केशवादिद्वादशनामभिर्ललाटादिषु द्वादशस्थानेषु ऊर्द्ध्वपुंड्रतिलकं कुर्य्यात् तत्र क्रमः॥ ॐ केशवाय नमः इति ललाटे कार्य्यम् ॥ १ ॥ ॐ नारायणाय नमः इति उदरे कार्यम् ॥ २ ॥ ॐ माधवाय नमः इति हृदये कार्यम् ॥ ३ ॥ ॐ गोविंदाय नमः इति कण्ठे कार्यम् ॥४॥ ॐ विष्णवे नम इति दक्षिणपार्श्वे कार्यम् ॥५॥ ॐ मधुसूदनाय नमः इति दक्षबाहौ कार्यम् ॥ ६ ॥ ॐ त्रिविक्रमाय नमः इति दक्षिणकर्णे कार्यम् ॥७॥ ॐ वामनाय नमः इति वामपार्श्वे कार्यम् ॥८॥ ॐ श्रीधराय नमः इति वामबाहौ कार्यम् ॥९॥ ॐ हृषीकेशाय नमः इति वामकर्णे कार्यम् ॥ १० ॥ ॐ पद्मनाभाय नमः इति पृष्ठे कार्यम् ॥ ११ ॥ ॐ दामोदराय नमः इति

---

१ ललाटे तु गदां कुर्य्याद्धृदये नंदकं पुनः । शंखं चक्रं भुजद्वंद्वे शार्ङ्गं बाणं च मूर्धनि ॥ एतानि चिह्नानि धारयेत् ॥

ककुदि कार्यम् ॥ १२ ॥ एवं द्वादशस्थानेषु तिलकं कुर्य्यात् ॥ इति वैष्णवोर्ध्वपुंड्रविधानम् ॥ इति तिलकं कृत्वा वैदिकीं संध्यां विधाय शिवमंत्रेण तांत्रिकीं कुर्य्यात् ॥ अथ तांत्रिकसंध्याप्रयोगः ॥ देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताराधनयोग्यताजननार्थं मंत्रसंध्यामहं करिष्ये । इति संकल्प्य ॐ ह्रां आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ ह्रूं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिकरांगन्यासौ कृत्वा मूलेन जलं संवीक्ष्य अस्त्राय फट् इति संप्रोक्ष्य अनेनैव दर्भेण संताड्य कवचाय हुम् इत्यभ्युक्ष्य तज्जलेन कुंभमुद्रया मूर्ध्नि सिंचेत् ॥ ततो वामपाणौ दक्षेण तीर्थजलमादाय हृदयादिषडंगमंत्रेणाभिमंत्र्य तद्गलितोदकबिंदुभिर्दक्षहस्तेन हृदयादिषडंगन्यासमंत्रद्वारा षड्भिः शिरसि मार्जयेत् ॥ ६ ॥ पुनः ॐ आं ह्रां व्योमव्यापिने नमः इति मार्जयेत् ॥ ७ ॥ ॐ सद्योजातंप्रपद्यामिसद्योजातायवैनमः । भवेभवेनातिभवेभजस्वमांभवोद्भवाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ वामदेवाय नमः । ज्येष्ठाय नमः । श्रेष्ठाय नमः । रुद्राय नमः । कालाय नमः । कलविकरणाय नमः । बलाय नमः । बलविकरणाय नमः । बलप्रमथनाय नमः । सर्वभूतदमनाय नमः । मनोन्मनाय नमः ॥ ९ ॥ ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यःसर्वशर्वेभ्योनमस्तेअस्तुरुद्ररूपेभ्यः ॥ १० ॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥ ११ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मेअस्तु सदाशिवोम्॥ ओ३म् ह्रांह्रींह्रूं मूलमंत्रैश्च एतैर्मंत्रैर्मार्जयेत् । वामहस्तस्थजलं वामनासासमीपमानीय इडया देहांतरादाकृष्य पापौघं प्रक्षाल्य कृष्णवर्णं तदुदकं दक्षिणया विरेच्य वामहस्तस्थं दक्षिणेनादाय पुरःकल्पितवज्रशिलायामस्त्रमंत्रेण क्रोधादास्फालयेत् ॥ ततः पूर्ववदाचम्य करांगन्यासौ कृत्वा अर्घपात्रे जलं कृत्वा तदादाय मूलमुच्चार्य्य शिवरूपाय सूर्य्याय इममर्घ्यं स्वाहा इति त्रिरर्घ्यं दत्त्वा मूलेनोपस्थाय गायत्रीमूलमंत्रं जपेत् ॥ गायत्रीमंत्रो यथा-ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति गायत्रीमष्टविंशतिमष्टोत्तरशतं वा मूलं च संजप्य जपं निवेद्य नमस्कुर्य्यात् ॥ इति तांत्रिकसंध्याप्रयोगः ॥ अथ द्वारपूजाप्रयोगः ॥ पूजागृहद्वारमागत्यास्त्राय फडिति द्वारं

संप्रोक्ष्य दक्षिणशाखायाम्-ॐ गं गणपतये नमः ॥ १ ॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम्-ॐ वं वटुकाय नमः ॥ १ ॥ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ॥ २ ॥ द्वारोपरि-ॐ सं सरस्वत्यै नमः ॥ १ ॥ देहल्याम्-ॐ-अस्त्राय फट् इति पूजयेत् ॥ इति द्वारपूजाप्रयोगः ॥ अथ क्षेत्रकीलनम् ॥ जपस्थाने गत्वा पृथ्वीग्रहणं कुर्यात् ॥ तद्यथा-गृहीतस्यास्य मंत्रस्य पुरश्चरणसिद्धये ॥ मयेयं गृह्यते भूमिर्मंत्रोऽयं सिद्धिमाप्नुयात् ॥ १ ॥ इति भूमिं संगृह्य अश्वत्थोदुंबरप्लक्षान्यतमवितस्तिमात्रान् दशकीलान् 'ॐ नमः सुदर्शनयास्त्राय फट्'इति मंत्रेण अष्टोत्तरशतकृत्वोऽभिमंत्रितान्-ॐ ये चात्र विघ्नकर्तारो भुवि दिव्यंतरिक्षगाः॥विघ्नभूताश्च[1] ये चान्ये मम मंत्रस्य सिद्धिषु॥१॥ मयैतत्कीलितं क्षेत्रं परित्यज्य विदूरतः ॥ अपसर्पंतु ते सर्वे निर्विघ्ना सिद्धिरस्तु मे ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु दशकीलान् निखनेत् ॥ ततस्तेषु ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण प्रत्येककीलान् संपूज्य तत्रैव पूर्वादिक्रमेण इन्द्रादिलोकपालानावाह्य पंचोपचारैः संपूज्य जपस्थानमध्ये गणेशं कूर्म्मानंतवसुधाक्षेत्रपालांश्च संपूज्य दिक्पालेभ्यः क्षेत्रपालगणपतिभ्यश्च माषभक्तबलिं दत्त्वा तद्बाह्ये भूतबलिं दद्यात्॥ तत्र मंत्रः-ये रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः ॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च मे ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः ॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम् ॥ २ ॥ इति मंत्रद्वयेन दशदिक्षु बाह्ये माषभक्तबलिं दद्यात् ॥ ततो वामकरांगुलिभिरर्घ्यजलेनोत्सृज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा । ॐ भूतानि यानीह वसंति भूतले बलिं गृहीत्वा विधिवत्प्रयुक्तम् ॥ संतोषमासाद्य व्रजंतु सर्वे क्षमंतु तान्यत्र नमोऽस्तु तेभ्यः ॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा प्रणम्य हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचामेत् ॥ इति क्षेत्रकीलनम् ॥ अथ प्रयोगविधानम् ॥ ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ॥ यः स्मरेत्पुंडरीकाक्षं स बाह्याभ्यंतरः शुचिः ॥ १ ॥ इति मंत्रेण मंडपांतरं प्रोक्ष्य तत्र तावत् आसनभूमौ कूर्मशोधनं कार्यम्॥यत्र जपकर्ता एक एव तत्र कूर्ममुखे उपविश्य जपं तत्रैव दीपस्थापनं च कुर्यात् ॥ यत्र बहवो जापकास्तत्र कूर्ममुखोपरि दीपमेव स्थापयेत् । एवं कूर्मशोधनं विधाय तत्रासनाधो जलादिना त्रिकोणं

१ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः ॥ इति पाठान्तरम् ॥

कृत्वा तत्र ॐ कूर्माय नमः ॥ १ ॥ ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पृथिव्यै नमः ॥ ३ ॥ इति गंधाक्षतं पुष्पैः संपूज्य तदुपरि कुशासनं तदुपरि मृगाजिनं तदुपरि कंबलाद्यासनमास्तीर्य्य स्थापितानां त्रयाणामासनानामुपरि क्रमेण ॐ अनंतासनाय नमः ॥ १ ॥ ॐ विमलासनाय नमः ॥ २ ॥ ॐ पद्मासनाय नमः ॥ ३ ॥ इति मंत्रत्रयेण त्रीन् दर्भान् प्रत्येकं निदध्यात् एवमासनं संस्थाप्य तत्र प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य आसनं शोधयेत्। तत्र मंत्रः-ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरुपृष्ठऋषिः, कूर्मो देवता, सुतलं छंदः, आसने विनियोगः ॥ ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ॥ त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥१॥ इति मंत्रेणासनं प्रोक्षयेत्। ततः मूलमंत्रेण शिखां बद्ध्वा-ॐ केशवाय नमः ॥ १ ॥ नाराणाय नमः ॥ २ ॥ माधवाय नमः ॥ ३ ॥ इति त्रिराचम्य प्राणायामं कुर्य्यात्।तद्यथा-दक्षिणहस्तांगुष्ठेन दक्षनासापुटं निरुध्य वामनासापुटेन मूलं षोडशवारं जपन् शनैःशनैः प्राणाख्य वायुमाकृष्य शिरसि सहस्रारे धारयेदिति पूरकम् ॥ १ ॥ पुनः दक्षहस्तानामिकातर्जन्यंगुष्ठैर्नासापुटद्वयं निरुध्य मूलं चतुःषष्टिवारं जपन् कुंभयेत् ॥ २ ॥ पुनर्दक्षनासापुटांगुष्ठनिरोधनं त्यक्त्वा मूलं द्वात्रिंशद्वारं जपन् शनैःशनैस्तद्वायुं रेचयेत् ॥ ३ ॥ इति प्राणायामत्रयं कृत्वा देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रः श्रीअमुकदेवशर्म्माहममुकदेवताया अमुकमंत्रसिद्धिप्रतिबंधकाशेषदुरितक्षयपूर्वकामुकमंत्रसिद्धिकामोऽद्यारभ्य यावता कालेन सेत्स्यति तावत्कालममुकमंत्रस्येयत्संख्याकजपतद्दशांशहोमतद्दशांशतर्पणतद्दशांशाभिषेकतद्दशांशब्राह्मणभोजनरूपपुरश्चरणं जपरूपपुरश्चरणं वा करिष्ये इति संकल्प्य ॐ सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण तालत्रयेण दिग्बंधनं कृत्वा भूतशुद्धिं कुर्य्यात्[1] ॥ अथ भूतशुद्धिप्रकारः ॥ ॐ सूर्यः सोमो यमः कालः संध्या भूतानि पंच च ॥ एते शुभाशुभस्येह कर्मणो मम साक्षिणः ॥ १ ॥ भो देव प्राकृतं चित्तं पापाक्रांतमभून्मम ॥ तन्निस्सारय चित्तान्मे पापं तेऽस्तु नमोनमः ॥ २ ॥ इति प्रार्थ्य दक्षिणभागे-श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ १ ॥ वामभागे-ॐ गणेशाय नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा भूतशुद्धिं कुर्य्यात् । तथा च कुंभकप्राणायामे

---

१ यामले-भूतशुद्धिं लिपिन्यासौ विना यस्तु प्रपूजयेत्। विपरीतं फलं दद्यादभक्त्या पूजने यथा ॥

मूलाधारात् कुण्डलिनीं परदेवतां बिसतंतुनिभां समुत्थाप्य ब्रह्मरंध्रगतां स्मृत्वा हृदयस्थं जीवं प्रदीपकलिकाकारं गृहीत्वा सुषुम्नामार्गेण ब्रह्मरंध्रं गत्वा ॐ हंसः सोऽहम् इति मंत्रेण जीवं ब्रह्मणि संयोजयेत्।ततः पादादिजानुपर्यंतं चतुष्कोणं वज्रलांछितं स्वर्णवर्णं पृथ्वीमंडलं (ॐ लं) इति भूबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ १ ॥ जान्वादिनाभिपर्यंतमर्द्धचन्द्राकारं पद्मद्वयांकितं श्वेतवर्णमपां स्थानं सोममंडलम्(ॐ वँ)इति वरुणबीजाढ्यं स्मरेत् ॥ २ ॥ नाभ्यादिहृदयपर्यंतं त्रिकोणं स्वस्तिकांकितं रक्तवर्णमाग्निमंडलम् (ॐ रँ) इति वह्निबीजाढ्यं स्मरेत् ॥३॥ हृदयादिभ्रूमध्यपर्यंतं वृत्तं षड्बिंदुलांछितं धूम्राभं वायुमंडलम् (ॐ यँ) इति बीजाढ्यं स्मरेत्॥४॥भ्रूमध्यादारभ्य ब्रह्मरंध्रांतं वृत्तं स्वच्छं मनोहरमाकाशमण्डलम् (ॐ हँ) बीजाढ्यं स्मरेत् ॥ ५॥ इति एवं भूतगणं स्मृत्वा ततः पूर्वोक्तभ्रूमंडले-पादेन्द्रियं १ गगनं २ घ्राणं ३ गंधः ४ ब्रह्मा ५ निवृत्तिः ६ समानः ७ गंतव्यदेश ८ श्च एवमष्टौ पदार्थाश्चिंत्याः ॥ १ ॥ जलमंडले-हस्तेन्द्रिय १ ग्रहण २ ग्राह्य ३ रसना ४ रस ५ विष्णु ६ प्रतिष्ठो ७ दानाः ध्येयाः ॥ २ ॥ तेजोमंडले-वायु १ विसर्ग २ विसर्जनीय ३ चक्षु ४ रूप ५ शिवः ६ विद्या ७ व्यानाः ८ ध्येयाः ॥ ३ ॥ वायुमंडले-उपस्था १ नन्दः २ स्त्री ३ स्पर्शन ४ स्पर्श ५ ईशान ६ शांत्य ७ पानाः ८ ध्येयाः ॥ ४ ॥ आकाशमंडले-वाग् १ वक्तव्य २ वदन ३ श्रोत्र ४ शब्द ५ सदाशिव ६ शांत्यतीताः ७ प्राणा ८ इत्यष्टौ चिंत्याः ॥ ५ ॥ एवं भूतानि संचिंत्य पूर्वपूर्वकार्यस्योत्तरोत्तरं कारणे विलापनं ब्रह्मपर्य्यंतं कार्य्यम् तथा च-ॐ लं फट् इत्यनेन पंचगुणां पृथ्वीमप्सु उपसंहरामीति जले भुवं विलापयेत् ॥ १ ॥ ॐ वँ हुं फट् इति चतुर्गुणा अपोऽग्नौ उपसंहरामीति वह्नौ जलं विलापयेत् ॥ २ ॥ ॐ रँ हुं फट् इति त्रिगुणं तेजो वायावुपसंहरामीति वह्निं वायौ विलापयेत् ॥ ३ ॥ ॐ यँ हुं फट् इति द्विगुणं वायुमाकाश उपसंहरामीति वायुमाकाशे विलापयेत् ॥ ४ ॥ ॐ हँ हुं फट् इत्येकगुणमाकाशमहंकार उपसंहरामीत्याकाशमहंकारे विलापयेत् ॥ ५ ॥ ॐ अहंकारं महत्तत्त्व उपसंहरामीत्यहंकारं महत्तत्त्वे विलापयेत् ॥ ६ ॥ ॐ महत्तत्त्वं प्रकृतावुपसंहरामीति महत्तत्त्वं प्रकृतौ विलापयेत् ॥ ७ ॥ ॐ प्रकृतिमात्मन्युपसंहरामीत्यनेन मायामात्मनि विलापयेत्॥८॥एवं शुद्धसच्चिन्मयो भूत्वा पापपूरुषं चिंतयेत्। तथा च वासनामयं वाम

कुक्षिस्थितं कृष्णमंगुष्ठपरिमाणकं ब्रह्महत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटियुतं तत्संसर्गिपदद्वंद्वमुपपातकमस्तकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं सुदुःसहमेवं पापपुरुषं चिन्तयित्वा पूरकप्राणायामे (ॐ यँ) इति वायुबीजेन द्वात्रिंशद्वारं षोडशवारं वा आवर्तितेन पापपुरुषं शोषयेत् ॥ १ ॥ ततः स्वशरीरयुतं पापं कुंभके (ॐ रं) इति वह्निबीजेन चतुः षष्टि ६४ वारमावर्तितेन तदुत्थेनाग्निना दहेत् ॥ २ ॥ ततो रेचकप्राणायामे (ॐ यँ) इति वायुबीजं षोडशवारं द्वात्रिंशद्वारं वा जपित्वा दक्षिणनाड्या तद्भस्म स्वशरीराद्बहिः रेचयेत् ॥ ३ ॥ ततो देहोत्थं भस्म (ॐ वँ) इत्युच्चारितेन सुधाबीजेन तदुत्थाऽमृतेन संप्लाव्य पश्चात् (ॐ लँ) इति भूबीजेन तद्भस्म घनीभूतं पिंडं कृत्वा कनकांडवद्भावयेत् ॥ ४ ॥ ततः (ॐ हँ) इति आकाशबीजं जपन् तत्पिण्डं मुकुराकारं भावयित्वा तस्य मूर्द्धादिनखांता अवयवा मनसा रचनीयाः ॥ ५ ॥ ततः पुनरपि सृष्टिमार्गेण त्रह्मणः सकाशादाकाशादीनि भूतान्युत्पादयेत् । तथा च त्रह्मणः प्रकृतिः १ प्रकृतेर्महत् २ महतोऽहंकारः ३ अहंकारादाकाशः ४ आकाशाद्वायुः ५ वायोरग्निः ६ अग्नेरापः ७ अद्भ्यः पृथिवी ८ पृथिव्या ओषध्यः ९ ओषधीभ्योऽन्नम् १० अन्नाद्रेतः ११ रेतसः पुरुषः १२ इत्युत्पाद्य ॐ हंसः सोऽहम् इति मंत्रेण ब्रह्मणैकीभूतं जीवं स्वहृदयांबुजे संस्थाप्य कुंडलीं मूलाधारगतां स्मरेत् । अथ ध्यानम् ॥ रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः पाशं कोदंडमिक्षूद्भवगुणमथ चाप्यंकुशं पंचबाणान्॥ बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः ॥१॥ इति भूतशुद्धिप्रकारः ॥ एवं भूतशुद्धिं कृत्वा स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणान् प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथ स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रकारः॥अस्य स्वप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः,ऋग्यजुःसामानि च्छन्दांसि, प्राणशक्तिर्देवता,आँ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, स्वशरीरेऽमुकदेवताप्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः॥ॐ ब्रह्मविष्णुमहेश्वरऋषिभ्यो नमः शिरसि ॥१॥ ॐ ऋग्यजुःसामच्छंदोभ्यो नमो मुखे॥२॥ॐ प्राणशक्तये नमः हृदये॥३॥ॐ बीजाय नमः गुह्ये॥४॥ह्रीं शक्तये नमः पादयोः॥५॥क्रौं कीलकाय नमः सर्वांगे ॥६॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ ङंकंखंघंगं नाभौ वाय्वग्निवार्भूम्यात्मने हृदयाय नमः ॥ १ ॥ ॐ ञंचंछंझंजं शब्दस्पर्शरूपरसगंधात्मने

शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ णंटंठंडंढं श्रोत्रत्वङ्नयनजिह्वाघ्राणात्मने शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ नंतंथंदंधं वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने कवचाय हुं ॥ ४ ॥ ॐ मंपंफंबंभं वक्तव्यादानगमनविसर्गानंदात्मने नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ शंयंरंवंलंहंषंक्षंसंळं बुद्धिमनोहंकारचित्तात्मने अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासं कृत्वा नाभेरारभ्य पादांतम् (आँ) इति पाशबीजं विन्यसेत् ॥ १ ॥ हृदयादारभ्य नाभ्यंतम् (ह्रीं) इति शक्तिबीजं न्यसेत् ॥ २ ॥ मस्तकादारभ्य हृदयांतं (क्रों) इति सृणिबीजं न्यसेत् ॥ ३ ॥ ॐ यं त्वगात्मने नमः ॥ ॐ रं असृगात्मने नमः ॥ ॐ लं मांसात्मने नमः ॥ ॐ वं मेदात्मने नमः ॥ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः ॥ ॐ षं मज्जात्मने नमः ॥ ॐ सं शुक्रात्मने नमः ॥ ॐ हों ओजात्मने नमः ॥ ॐ हैं प्राणात्मने नमः ॥ ॐ सं जीवात्मने नमः इति दशि हृदि विन्यसेत् ॥ ४ ॥ ॐ यंरंलंवंशंषंसंहंळंक्षं इति मूर्द्धादिचरणावधि व्यापकं कुर्यात् ॥ ५ ॥ ततः मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः ॥ १ ॥ ॐ जयादिपीठशक्तिभ्यो नमः ॥ २ ॥ इति नत्वा ॐ आँह्रींक्रों पीठाय नमः ॥ इति पीठे प्राणशक्तिं देवीं ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ पाशं चापासृक्कपाले सृणीषुञ्शूलं हस्तैर्बिभ्रतीं रक्तवर्णाम् ॥ रक्तोदन्वत्पोतरक्तांबुजस्थां देवीं ध्यायेत्प्राणशक्तिं त्रिनेत्राम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा हृदि करं निधाय ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः प्राण इह प्राणः ॥ १ ॥ पुनः ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँहँसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः जीव इह स्थितः ॥ २ ॥ पुनः ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँक्षँहँसः ह्रीं ॐ मम शरीरेऽमुकदेवतायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॥ ३ ॥ इति वारत्रयेण स्वशरीरे स्वेष्टदेवतायाः प्राणं प्रतिष्ठाप्य ततः (ॐ) इति प्रणवेन १५ पंचदशावृत्तिं कृत्वा अनेन मम देहस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान् संपादयामि इति वदेत् ॥ इति स्वप्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ एवं प्रतिष्ठाप्य देवतारूपमात्मानं भावयन् प्राणायामं कृत्वा देवं यजेत् ॥ अथांतर्मातृकान्यासः ॥ ॐ अस्यान्तर्मातृकान्या

१ देवो भूत्वा देवं यजेत् । इति वचनात् । २ यथा पर्वतधातूनां दोषान् दहति पावकः । एवमन्तर्गतं पापं प्राणायामेन दह्यते ।

समंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छंदः, मातृकासरस्वती देवता, हलो वीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निक्षिप्य प्राणायामं कुर्य्यात्। तथा च इडया अइउऋऌएऐओऔ एभिः स्वरैः पूरयेत् । पुनः कुचुटुतुपु इति वर्गपंचकेन कुंभयेत् ॥ पुनः यरलवशषसह एभिरष्टभिर्वर्णै रेचयेत् । इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्य्यात् । तथा च ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १, ॐ इं गायत्रीछंदसे नमः ईं मुखे २ ॐ उ सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये ३, ॐ एँ हल्भ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये ४, ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः ५, ॐ अं क्षं कीलकाय नमः अः सर्वाङ्गे ६, इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १, ॐइंचंछंजंझंञंई तर्जनीभ्यां नमः २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः४, ॐ ओंपंफंबंभंमंऔंकनिष्ठिकाभ्यां नमः,ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६, इति करन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊँ शिखायै वषट् ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐंकवचायहुं ४, ॐपंफंबंभंमंऔं नेत्रत्रयायवौषट् ५, ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंक्षंअः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः॥ ततः कण्ठस्थषोडशदलपद्मे-ॐ अंआंइंईंउंऊंऋंॠंऌंॡंएंऐंओंऔंअंअः इति षोडशस्वरान् न्यसेत्॥१॥ पुनः हृदयस्थे द्वादशदले-ॐ कं नमः । ॐ खं नमः ॐ गं नमः । ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः । ॐ चं नमः । ॐ छं नमः।ॐ जं नमः । ॐ झं नमः । ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः। इति द्वादशवर्णान् विन्यसेत्॥२॥ततः नाभौ दशदले ॐ डं नमः । ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः । ॐ थं नमः । ॐ दं नमः । ॐ धं नमः। ॐ नं नमः। ॐ पं नमः । ॐ फं नमः । इति दशवर्णान् विन्यसेत् ॥ ३ ॥ तदधोलिंगे षड्दले-ॐ वं नमः । ॐ भं नमः । ॐ मं नमः । ॐ यं नमः । ॐ रं नमः । ॐ लं नमः । इति वादिलांतान्षड्वर्णान् विन्यसेत् ॥ ४ ॥ आधारे गुदे चतुर्दले-ॐ वं नमः । ॐ शं नमः । ॐ षं नमः । ॐ सं नमः। इति वादिसांतांश्चतुर्वर्गान् विन्यसेत् ॥ ५ ॥ ॥ २६ ॥
ललाटे द्विदले-ॐ हं नमः । ॐ क्षं नमः इति द्वौ वर्णौ विन्यसेत् ॥ ६ ॥ इति न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ आधारे लिंगनाभौ प्रकटित

१ स्त्रीलिंगपूजने स्त्रीलिंग न्यसेत् ॥

हृदये तालुमूले ललाटे द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्धे चतुष्के ॥ वासान्ते वालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां हंक्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलदलगतं वर्णरूपं नमामि ॥ १ ॥ इत्यंतर्मातृकान्यासः ॥ इत्यंतर्मातृकान्यासं कृत्वा वहिर्मातृकान्यासं कुर्य्यात् ॥

॥ अथ वहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥ ॐ अस्य श्रीवहिर्मातृकान्यासमंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, क्षं कीलकम्, अखिलाप्तये न्यासे विनियोगः ॥ इति जलं भूमौ निःक्षिप्य प्राणयामं कुर्य्यात्। तथा च इडया अइउऋऌएऐओऔ एभिः स्वरैः पूरयेत्। पुनः कुचुटुतुपु इति वर्गपंचकेन कुंभयेत्। पुनः यरलवशषसह एभिरष्टभिर्वर्णैं रेचयेत्। इति प्राणायामं कृत्वा ऋष्यादिन्यासादिकं कुर्य्यात् । तथा च। ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि १, ॐ इं गायत्रीछन्दसे नमः ईं मुखे २, ॐ उं सरस्वतीदेवतायै नमः ऊं हृदये ३,ॐ एं हल्भ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये४, ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः५, ॐ अंक्षंकीलकाय नमः अः सर्वांगे ६ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं अंगुष्ठाभ्यां नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं तर्जनीभ्यां नमः २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं मध्यमाभ्यां नमः ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं अनामिकाभ्यां नमः ४, ॐ ओंपंफंवंभंमंऔं कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५, ॐ अंयंरंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । इति करन्यासः ॥ ॐ अंकंखंगंघंङंआं हृदयाय नमः १, ॐ इंचंछंजंझंञंईं शिरसे स्वाहा २, ॐ उंटंठंडंढंणंऊं शिखायै वषट् ३, ॐ एंतंथंदंधंनंऐं कवचाय हुं ४,ॐ ओंपंफंवंभंमंऔं नेत्रत्रयाय वौषट् ५,ॐ अंयं रंलंवंशंषंसंहंलंक्षंअः अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः। इति विन्यस्य मातृकान्यासं कुर्य्यात्। तथा च । ॐ अं नमः शिरसि १, आं नमः मुखे २, ॐ इं नमः दक्षिणनेत्रे ३, ॐ ईं नमः वामनेत्रे ४, ॐ उं नमः दक्षिणकर्णे ५, ॐ ऊं नमः वामकर्णे ६, ॐ ऋं नमः दक्षिणनासापुटे ७, ॐ ॠं नमः वामनासापुटे ८, ॐ ऌं नमः दक्षिणकपोले ९, ॐ ॡं नमः वामकपोले १०, ॐ एं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११, ॐ ऐं नमः अधरोष्ठे १२, ॐ ओं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३, ॐ औं नमः अधोदंतपंक्तौ १४, ॐ अं नमः मूर्ध्नि १५, ॐ

१ जपार्थं सर्वदेवानां विन्यासे च लिपिं विना। कृते तद्विफलं विद्यात्तस्मादादौ लिपिं न्यसेत् ॥ २ स्त्रीलिंगपूजने स्त्रीलिंगं न्यसेत् ॥ ३ तन्त्रसारे तु ललाटे ॥ ४ दक्षिणगण्डे ॥ ५ वामगण्डे ॥ ६ कण्ठे इति वा पाठः ॥

अः नमः मुखवृत्ते १६, ॐ कं नमः दक्षिणबाहुमूले १७, ॐ खं नमः दक्षिणकूर्परे १८, ॐ गं नमः दक्षिणमणिबंधे १९ ॐ, घं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २०, ॐ ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१, ॐ चं नमः वामबाहुमूले २२, ॐ छं नमः वामकूर्परे २३, ॐ जं नमः वाममणिबंधे २४, ॐ झं नमः वामहस्तांगुलिमूले २५, ॐ ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६, ॐ टं नमः दक्षिणपादमूले २७, ॐ ठं नमः दक्षिणजानुनि २८, ॐ डं नमः दक्षिणगुल्फे२९, ॐ ढं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३०, ॐ णं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१, ॐ तं नमः वामपादमूले३२ॐ थं नमः वामजानुनि ३३ ॐ दं नमः वामगुल्फे ३४ ॐ धं नमः वामपदांगुलिमूले ३५ॐ नं नमः वामपदांगुल्यग्रे ३६ ॐ पं नमः दक्षिणपार्श्वे ३७ ॐ फं नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ बं नमः पृष्ठे ३९ ॐ भं नमः नाभौ ४० ॐ मं नमः उदरे ४१ ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ४२ ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांसे ४३ ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ४४ ॐ वं मेदआत्मने नमः वामांसे ४५ ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॐ सं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॐ हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ ॐ लं परमात्मने नमः जठरे ५०ॐ क्षं प्राणात्मने नमः मुखे ५१ इति विन्यस्य ध्यायेत् । पंचाशल्लिपिभिर्विभक्तमुखदोःपन्मध्यवक्षस्स्थलां भास्वन्मौलिनिबद्धचन्द्रशकलामापीनतुंगस्तनीम् ॥ मुद्रामक्षगुणं सुधाढ्यं कलशं विद्यां च हस्तांबुजैर्बिभ्राणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये ॥ १ ॥ इति बहिर्मातृकान्यासप्रयोगः ॥ अथ सृष्टिक्रमः ॥ तत्र तु विसर्गान्वितः प्रणवपुटितो वा मायालक्ष्मीबीजपूर्वो वा वाग्भवाद्यो वा न्यस्तव्यः । तत्र वाग्भवाद्यो यथा ऐं अं नमः जिह्वाग्रे[1] ऐं अः नमः कंठे २ ऐं कं नमः दक्षिणबाहुमूले ३ ऐं खं नमः दक्षिणकूर्परे ४ ऐं गं नमः दक्षिणमणिबंधे ५ ऐं घं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले ६ ऐं ङं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे ७ ऐं चं नमः वामबाहुमूले ८ ऐं छं नमः वामकूर्परे ९ ऐं जं नमः वाममणिबंधे १० ऐं झं नमः वामहस्तांगुलिमूले ११ ऐं ञं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे १२ ऐं टं नमः दक्षिणपादमूले १३ ऐं ठं नमः दक्षिणजानुनि १४ ऐं डं नमः दक्षि

१ जिह्वाग्रे ॥ २ मतांतरे-हृदयान्मस्तकांतम् ॥

णगुल्फे १५ ऐं ढं नमः दाक्षिणपादांगुलिमूले १६ ऐं णं नमः दाक्षिणपादांगुल्यग्रे १७ ऐं तं नमः वामपादमूले १८ ऐं थं नमः वाम जानुनि १९ ऐं दं नमः वामगुल्फे २० ऐं धं नमः वामपादांगुलिमूले २१ ऐं नं नमः वामपादांगुल्यग्रे २२ ऐं पं नमः दक्षिणपार्श्वे २३ ऐं फं नमः वामपार्श्वे २४ ऐं बं नमः पृष्ठे २५ ऐं भं नमः नाभौ २६ ऐं मं नमः उदरे २७ ऐं यं त्वगात्मने नमः हृदि २८ ऐं रं असृगात्मने नमः दक्षांसे २९ ऐं लं मांसात्मने नमः ककुदि ३० ऐं वं मेदआत्मने नमः वामांसे ३१ऐं शं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्ष भुजांतम् ३२ ऐं षं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामभुजांतम् ३३ ऐं सं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ३४ ऐं हं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ३५ ऐं ळं परमात्मने नमः हृदयादिमस्तकांतम् ३६ इति विन्यसेत् । इति सृष्टिक्रमः ॥ अथ स्थितिक्रमः ॥ तत्रादौ ध्यानम् ॥ सिन्दूरकांतिमसिताभरणां त्रिनेत्रां विद्याक्षसूत्रमृगपोतवरं दधानाम् ॥ पार्श्वस्थितां भगवतीमपि काञ्चनाङ्गीं ध्यायेत्कराब्जधृतपुस्तकवर्णमालाम् ॥ १ ॥ एवं ध्यात्वा न्यसेत् ॥ टंठंडं नमः ललाटे १ टंठंडं नमः मुखवृत्ते २ टंठंडं नमः दक्षनेत्रे ३ टंठंडं नमः वामनेत्रे ४ टंठंडं नमः दक्षकर्णे ५ टंठंडं नमः वामकर्णे ६ टंठंडं नमः दक्षनासायाम् ७ टंठंडं नमः वामनासायाम् ८ टंठंडं नमः दक्षगंडे ९ टंठंडं नमः वामगंडे १० टंठंडं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ टंठंडं नमः अधरोष्ठे १२ टंठंडं नमः ऊर्द्ध्वदंतपंक्तौ १३ टंठंडं नमः अधोदंपक्तौ १४ टंठंडं नमः शिरसि १५ टंठंडं नमः मुखे १६ टंठंडं नमः जिह्वाग्रे १७ टंठंडं नमः कंठदेशे १८ टंठंडं नमः दक्षिणबाहुमूले १९ टंठंडं नमः दक्षिणकूर्परे २० टंठंडं नमः दक्षिणमणिबंधे २१ टंठंडं नमः दक्षिणहस्तांगुलिमूले २२ टंठंडं नमः दाक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २३ टंठंडं नमः वामबाहुमूले २४ टंठंडं नमः वामकूर्परे २५ टंठंडं नमः वाममणिबंधे २६ टंठंडं नमः वाम हस्तांगुलिमूले २७ टंठंडं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २८ टंठंडं नमः दाक्षिणपादमूले २९ टंठंडं नमः दाक्षिणजानुनि ३० टंठंडं नमः दाक्षिणगुल्फे ३१ टंठंडं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३२ टंठंडं नमः दाक्षिणपादांगुल्यग्रे ३३ टंठंडं नमः वामपादमूले ३४ टंठंडं नमः वामजानुनि ३५ टंठंडं नमः वामगुल्फे ३६ टंठंडं नमः वामपादांगुलिमूले ३७ टंठंडं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३८ टंठंडं नमः दक्षपार्श्वे

३९ टंठंडं नमः वामपार्श्वे ४० टंठंडं नमः पृष्ठे ४१ टंठंडं नमः उदरे ४२ टंठंडं नमः हृदये ४३ टंठंडं नमः दक्षांसे ४४ टंठंडं नमः ककुदि ४५ टंठंडं नमः वामांसे ४६ टंठंडं नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४७ टंठंडं नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४८ टंठंडं नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४९ टंठंडं नमः हृदयादिवामपादांतम् ५० टंठंडं नमः हृदयादिमस्तकांतम् ५१ इति विन्यसेत् ॥ इति स्थितिक्रमः ॥ अथ संहारक्रमः ॥ तत्रादौ ध्यानम् ॥ अक्षस्रजं हरिणपोतमुदग्रटंकं विद्यां करैरविरतं दधतीं त्रिनेत्राम् ॥ अर्द्धेन्दुमौलिमरुणामरविंदवासां वर्णेश्वरीं च प्रणुमः स्तनभारखिन्नाम् ॥ १ ॥ इति ध्यात्वा न्यसेत् । ॐ क्षं नमः ललाटे १ ॐ हं नमः मुखवृत्ते २ ॐ सं नमः दक्षनेत्रे ३ ॐ षं नमः वामनेत्रे ४ ॐ शं नमः दक्षकर्णे ५ ॐ वं नमः वामकर्णे ६ ॐ लं नमः दक्षनासायाम् ७ ॐ रं नमः वामनासायाम् ८ ॐ यं नमः दक्षगंडे ९ मं नमः वामगंडे १० ॐ भं नमः ऊर्ध्वोष्ठे ११ ॐ बं नमः अधरोष्ठे १२ ॐ फं नमः ऊर्ध्वदंतपंक्तौ १३ ॐ पं नमः अधोदंतपंक्तौ १४ ॐ नं नमः शिरसि १५ ॐ धं नमः मुखे १६ ॐ दं नमः दक्षिणबाहुमूले १७ ॐ थं नमः दक्षिणकर्परे १८ ॐ तं नमः दक्षिणमणिबंधे १९ ॐ णं नमः दक्षहस्तांगुलिमूले २० ॐ ढं नमः दक्षिणहस्तांगुल्यग्रे २१ ॐ डं नमः वामबाहुमूले २२ ॐ ठं नमः वामकूर्परे २३ ॐ टं नमः वाममणिबंधे २४ ॐ ञं नमः वामहस्तांगुलिमूले २५ ॐ झं नमः वामहस्तांगुल्यग्रे २६ ॐ जं नमः दक्षिणपादमूले २७ ॐ छं नमः दक्षिणजानुनि २८ ॐ चं नमः दक्षिणगुल्फे २९ ॐ ङं नमः दक्षिणपादांगुलिमूले ३० ॐ घं नमः दक्षिणपादांगुल्यग्रे ३१ ॐ गं नमः वामपादमूले ३२ ॐ खं नमः वामजानुनि ३३ ॐ कं नमः वामगुल्फे ३४ ॐ अः नमः वामपादांगुलिमूले ३५ ॐ अं नमः वामपादांगुल्यग्रे ३६ ॐ औं नमः दक्षपार्श्वे ३७ ॐ ओं नमः वामपार्श्वे ३८ ॐ ऐं नमः पृष्ठे ३९ ॐ एं नमः नाभौ ४० ॐ ॡं नमः उदरे ४१ ॐ ऌं नमः हृदये ४२ ॐ ॠं नमः दक्षांसे ४३ ॐ ऋं नमः ककुदि ४४ ॐ ऊं नमः वामांसे ४५ ॐ उं अस्थ्यात्मने नमः हृदयादिदक्षहस्तांतम् ४६ ॐ ईं मज्जात्मने नमः हृदयादिवामहस्तांतम् ४७ ॐ इं शुक्रात्मने नमः हृदयादिदक्षपादांतम् ४८ ॐ आं आत्मने नमः हृदयादिवामपादांतम् ४९ ॐ अं परमात्मने नमः

हृदयादिमस्तकांतम् ५० ॥ इति विन्यसेत् इति संहारक्रमः ॥ इति न्यासं कृत्वा विष्णुमंत्रे विष्णुकलामातृकान्यासः १ शैवमंत्रे श्रीकण्ठादिकलामातृकान्यासः २ गणेशमंत्रे गणेशकलामातृकान्यासः ३ देवीमंत्रे देवीकलामातृकान्यासः ४ -सूर्यमंत्रे सूर्यकलामातृकान्यासः ५ एवं तत्तत्प्रयोगेणावलोक्य न्यासं कुर्य्यात् । ततः ऋष्यादिन्यासं करन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च प्रयोगोक्तं कृत्वा मूलदेवतां ध्यात्वा ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः इति सर्वाङ्गे व्यापकं कृत्वा पीठपूजां कुर्य्यात् ॥ अथ पीठपूजाप्रयोगः ॥ पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडलेप्रयोगोक्तमंडलेवातन्मध्ये मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताःसंस्थापयेत् ।तत्र क्रमः पुष्पाक्षतानादाय स्ववामभागे श्रीगुरुभ्यो नमः।दक्षिणे गणपतये नमः । मध्ये स्वेष्टदेवतायै नमः । इति नत्वा पीठमध्ये ॐ मं मंडूकाय नमः१ ॐ कं कालाग्निरुद्राय नमः २ ॐ अं आधारशक्तये नमः ३ ॐ कूं कूर्म्माय नमः ४ ॐ अं अनंताय नमः ५ पृं पृथिव्यै नमः ६ ॐ क्षीं क्षीरसागराय नमः ७ ॐ रं रत्नदीपाय नमः ८ ॐ रं रत्नमंडपाय नमः ९ ॐ कं कल्पवृक्षाय नमः १० ॐ रं रत्नवेदिकायै नमः ११ ॐ रं रत्नसिंहासनाय नमः १२ आग्नेय्याम्-ॐ धं धर्म्माय नमः १३ नैर्ऋत्याम्- ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः १४ वायव्याम्-ॐ वैं वैराग्याय नमः १५ ऐशान्याम्- ॐ ऐं ऐश्वर्य्याय नमः १६ पूर्वे-ॐ अं अधर्माय नमः १७ दक्षिणे-ॐ अं अज्ञानाय नमः १८ पश्चिमे-ॐ अं अवैराग्याय नमः १९ उत्तरे-ॐ अं अनैश्वर्य्याय नमः २० पुनः पीठमध्ये- आँ आनंदकंदाय ॐ नमः २१ ॐ सं संविन्नालाय नमः २२ ॐ सं सर्वतत्त्वकमलासनाय नमः २३ ॐ प्रं प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः २४ ॐ विं विकारमयकेसरेभ्यो नमः २५ ॐ पं पञ्चाशद्वर्णाढ्यकर्णिकाभ्यो नमः २६ ॐ अं अर्कमंडलाय द्वादशकलात्मने नमः२७ ॐ सों सोममंडलाय षोडशकलात्मने नमः २८ ॐ वं वह्निमंडलाय दशकलात्मने नमः २९ ॐ सं सत्त्वाय नमः ३० ॐ रं रजसे नमः ३१ ॐ तं तमसे नमः ३२ ॐ आँ आत्मने नमः ३३ ॐ पं परमात्मने नमः ३४

---

१ आगमोक्तन विधिना नित्यं न्यासं करोति यः । देवताभावमाप्नोति मन्त्रसिद्धिः प्रजायते ॥ न्यासांगुलीनियमस्तु वामके-हृदयं मध्यमानामतर्जनीभिः स्मृतं शिरः । मध्यमातर्जनीभ्यां स्यादंगुष्ठेन शिखा स्मृता ॥ दशभिः कवचं प्रोक्तं तिसृभिर्नेत्रमीरितम् । अस्त्रादिकद्वयं प्रोक्तं तदा तर्जनिमध्यमे ॥ इति ॥

ॐ अं अंतरात्मने नमः ३५ ॐ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः ३६ ॐ मं मायातत्त्वाय नमः ३७ ॐ कं कलातत्त्वाय नमः ३८ ॐ विं विद्यातत्त्वाय नमः ३९ ॐ पं परतत्त्वाय नमः ४० इति पीठदेवताः संस्थाप्य प्रयोगोक्तनवपीठशक्तीः पूजयेत् ॥ अथ यात्रा साधनप्रयोगः ॥ (तत्रादौ कलशस्थापनप्रयोगः) देवदक्षिणतः त्रिकोणं मंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां (ह्रीं) विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मंत्रेण संपूज्य मूलेन फट् इति मंत्रेण त्रिपदाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य मूलेन नमः इति संपूजयेत् । ततः सुदर्शनायास्त्राय फट् इति मंत्रेण ताम्रादिकलशं प्रक्षाल्य आधारोपरि हस्तद्वयेन संस्थाप्य रक्तवस्त्रमाल्या दिना भूषयित्वा मूलेन नमः इति मंत्रेणापूर्य ॐ भूर्भुवः स्वः वरुण इहागच्छ इह तिष्ठ इति वरुणमावाह्य तन्मध्ये स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा गंधाक्षतपुष्पैः सम्पूजयेत् ॥ इति कलशस्थापनप्रयोगः १ (अथ त्रिरर्घ्यस्थापनं तत्रादौ शंखस्थापनम्) देव वामतः त्रिकोणमंडलं कृत्वा जलेन प्रोक्ष्य त्रिकोणांतर्मायां विलिख्य ॐ ह्रीं आधारशक्त्यै नमः इति मंत्रेण संपूजयेत् ततः मूलेन फट् इति त्रिपदमाधारं प्रक्षाल्य त्रिकोणमध्ये संस्थाप्य ॐ मं वह्निमण्डलाय दशकलात्मने अमुकपात्रासनाय नमः इत्याधारं संपूज्य आधारे पूर्वादिषु दशाग्निकलाः पूजयेत्। तथा च ॐ यं धूम्रार्चिषे नमः १ ॐ रं ऊष्मायै नमः २ ॐ लं ज्वलिन्यै नमः ३ ॐ वं ज्वालिन्यै नमः ४ ॐ शं विस्फुलिङ्गिन्यै नमः ५ ॐ पं सुश्रियै नमः ६ ॐ सं सुरूपायै नमः ७ ॐ हं कपिलायै नमः ८ ॐ ळं हव्यवाहायै नमः ९ ॐ क्षं कव्यवाहायै नमः १० इति पूजयेत् । ततः ॐ क्लीं महाजलचराय हुं फट् स्वाहा पांचजन्याय नमः । इति मंत्रेण क्षालितं शंखमाधारोपरि संस्थाप्य ॐ अं सूर्यमंडलाय द्वादशकलात्मने अमुकपात्राय नमः इति शंखं संपूज्य पात्रे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन द्वादश सूर्य्यकलाः पूजयेत् । तथा च-ॐ कंभं तपिन्यै नमः १ ॐ खंबं तापिन्यै नमः २ ॐ गंफं धूम्रायै नमः ३ ॐ घंपं

१ वामे शंखं प्रतिष्ठाप्य मध्ये चार्घ्यं प्रकल्पयेत् । दक्षिणे प्रोक्षणीपात्रमर्घत्रयं विकल्पयेत् ॥ इष्टार्घपात्रं देवेशि ब्रह्माद्या देवताः सदा । नृत्यंति सर्वयोगिन्यः प्रीताः सिद्धिं ददत्यपि ।
२ माया-ह्रीं ।

मरीच्यै नमः ४ ॐ डंनं ज्वालिन्यै नमः ५ ॐ चंधं रुच्यै नमः ६ ॐ छंदं सुषुम्नायै नमः ७ ॐ जंखं भोगदायै नमः ८ ॐ झंतं विश्वायै नमः ९ ॐ ञंणं बोधिन्यै नमः १० ॐ टंढं धारिण्यै नमः ११ ॐ ठंडं क्षमायै नमः १२ इति पूजयेत् ततः ॐ क्षँळँहँसँषँशँ वँलँरँयँमँभँबँफँपँनँधँदँथँतँणँढँडँठँटँञँझँजँछँचँङँघँगँखँकँअःअँऔँओँऐँएँॡँऌँॠँऋँऊँउँईँइँआँअँ इत्येकाधिकपंचाशद्विलोममातृकामुच्चार्य मूलेन नमः इति मंत्रेण शंखे जलमापूर्य ॐ सोममंडलाय षोडशकलात्मने अमुकपात्रामृताय नमः इति गंधादिभिः संपूज्य जले षोडशचन्द्रकलाः पूजयेत् तथा च ॐ अँ अमृतायै नमः १ ॐ आँ मानदायै नमः २ ॐ इँ पूषायै नमः ३ ॐ ईँ तुष्ट्यै नमः ४ ॐ उँ पुष्ट्यै नमः ५ ॐ ऊँ वृत्त्यै नमः ६ ॐ ऋँ धृत्यै नमः ७ ॐ ॠँ शशिन्यै नमः ८ ॐ ऌँ चन्द्रिकायै नमः ९ ॐ ॡँ कान्त्यै नमः १० ॐ एँ ज्योत्स्नायै नमः ११ ॐ ऐँ श्रियै नमः १२ ॐ ओँ प्रीत्यै नमः १३ ॐ औँ अंगदायै नमः १४ ॐ अं पूर्णायै नमः १५ ॐ अः पूर्णामृतायै नमः १६ इति संपूज्याभिमंत्रयेत्। तथा च-ॐ शंखादौ चन्द्रदैवत्यं कुक्षौ वरुणदेवता ॥ पृष्ठे प्रजापतिश्चैवमग्रे गङ्गा सरस्वती ॥ १ ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया॥शंखे तिष्ठंति विप्रेन्द्र तस्माच्छंखं प्रपूजयेत्॥२॥ इत्यभिमंत्र्य प्रार्थयेत्। तथा च ॐ त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे ॥ निर्मितः सर्वदेवैश्च पांचजन्य नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ इति संप्रार्थ्य ॐ पांचजन्याय विद्महे पावमानाय धीमहि। तन्नः शंखः प्रचोदयात् ॥ इति शंखगायत्रीमष्टधा जपित्वा शंखमुद्राः प्रदर्शयेत् इति शंखस्थापनम्। ततो देवस्याग्रे अर्घ्यं देवदक्षिणतः प्रोक्षणीपात्रं च एवमेव विधिना संस्थापयेत्। (शिवसूर्य्यार्चने शंखस्थाने ताम्रादिपात्रं स्थापयेत्। इति त्रिरर्घ्यस्थापनम् ॥ ततो विशेषार्घाद्वामतः श्रीपात्रम् १ गुरुपात्रम् २ देवपात्रम् ३ शक्तिपात्रम् ४ योगिनीपात्रम् ५ भोगपात्रम् ६ वीरपात्रम् ७ आत्मपात्रम् ८ बलिपात्रम् ९ एतानि नवपात्राणि पूर्ववत् संस्थाप्य दक्षिणे पाद्यार्घ्याचमनीयमधुपर्का इति चत्वारि पात्राणि पूर्ववत् संस्थापयेत्। अशक्तश्चेद्गुरुवीरात्मबलिभोगा इति पंच पात्राणि पाद्याद्युपचारार्थमेकं वा पात्रं स्थापयेत्। तत्राप्यशक्तश्चेत्तदैकमेव

१-आदौ कुंभं तथा शंखं श्रीपात्रं शक्तिपात्रकम्। गुरुपात्रं वीरपात्रं बलिपात्रं तथैव च ॥

शंखं संस्थापयेत् ॥ अथ घंटास्थापनम् ॥ देवदक्षिणतः घंटां संस्थाप्य नादं कृत्वा पूजयेत् तद्यथा-ॐ भूर्भुवः स्वः गरुडाय नमः आवाहयामि सर्वोपचारार्थं गंधाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि इत्यावाह्य "जगद्ध्वनिमंत्रमातः स्वाहा" इति मंत्रेण घंटास्थितगरुडं घंटां च संपूज्य गरुडमुद्रां प्रदर्शयेत् इति घंटास्थापनम् ॥ ततः गंधाक्षतपुष्पादींश्च पूजोपकरणार्थं स्वदाक्षिणपार्श्वे संस्थाप्य मूलेन नमः इति जलेन प्रोक्ष्य जलार्थं बृहत्पात्रं व्यजनं छत्रादर्शचामराणि च स्ववामे स्थापयेत् ॥ अथाखंडदीपस्थापनम् ॥ देवस्य दाक्षिणभागे घृतदीपं वामे तैलदीपं च स्थापयेत् । तत्र क्रमः । दीपपात्रं गोघृतेन तैलेन वाऽऽपूर्य मंत्रवर्णतंतुभिर्वर्त्तिं निक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य सुदर्शन मंत्रेण घृतदीपं पूजयेत् । तत्र मंत्रः "ॐ रांरीं रूं रैं रौंरः ॐ सहस्रारहुं फट् स्वाहा" इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूजयेत् । तैलदीपं पाशुपतास्त्र मंत्रेण पूजयेत् । तत्र मंत्रः"ॐ श्लीं पशुहुंफट् स्वाहा"इति मंत्रेण गंधपुष्पाभ्यां संपूजयेत्। इति संपूज्य हस्तद्वयेन दीपशिखां स्पृष्ट्वा मंत्रं पठेत्। तथा च–"ॐ घोराय घोरतमाय महारौद्राय वीरभद्राय ज्वालामालिने सर्वदुष्टोपसंहर्त्रे हुं फट् स्वाहा" इति मंत्रं पठित्वा पश्चात्तं तेज आत्मने समर्प्य ततो वाक्कायचित्तशोधनं कुर्य्यात् । ॐ हुं फट् स्वाहेति मुखे । ॐ रक्षरक्ष हुं फट् स्वाहेति हृदि हस्तं दत्त्वात्मरक्षां विधाय(आम) इति मंत्रेण चंदनपुष्पाणि कराभ्यां मर्दयित्वा पुष्पाक्षतानादाय॥ते सर्वे विलयं यांतु ये मां हिंसंति हिंसकाः॥ मृत्युरोगभयक्लेशाः पतंतु रिपुमस्तके ॥ १ ॥ इति मंत्रेणैशान्यां दिशि दूरतः पुष्पं क्षिप्त्वा हस्तौ प्रक्षाल्याचामेत् । ततः कूर्ममुखे स्वनामाक्षरस्थितकोष्ठे वा दीपं संस्थाप्य पूजनं कुर्य्यात् ॥ अथ पूजाप्रकारः ॥ तत्रादावग्न्युत्तारणप्रयोगः ॥ आचम्य प्राणाना यम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकदेवतानूतनयंत्रमूर्तीनां टंकघनादिदोषपरिहारार्थमग्न्युत्तारणं करिष्ये इति संकल्प्य स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां चाधोलिखितमंत्रैः कुर्यात् । तत्र मंत्राः । ॐ समुद्रस्यत्त्वावकयाऽग्नेपरि

१ आगमार्थं तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् । घंटानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घंटां प्रपूजयेत् ॥ २ दीपं घृतयुतं दक्षे तैलयुक्तं च वामतः । दक्षिणे च सिता वर्त्ति वामतो रक्तवर्तिकाम् ॥ ३ लिंगस्थां पूजयद्देवीं पुस्तकस्थां तथैव च । मंडलस्थां महामायां यंत्रस्थां प्रतिमासु च ॥ सौवर्णे राजते ताम्रे पट्टे भूर्जेऽथवा भुवि ॥ विना यंत्रेण चेत्पूजा देवता न प्रसीदति॥ अन्यत्रापि-यंत्रमित्याहुरेतस्मिन्देवः प्रीणाति पूजितः । विना यंत्रेण पूजायां देवता न प्रसीदति ॥ यंत्रं मंत्रमयं प्रोक्तं मंत्रात्मा देवतेति च । देहात्मनोर्यथा भेदो मंत्रदेवतयोस्तथा ॥

व्ययामासि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवो भव ॥ १ ॥ हिमस्य त्वा जरायुणाग्नेपरिंव्ययामासि ॥ पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवो भव ॥ २ ॥ उपज्जम्मन्नुपवेतसेवततरनदीष्वा ॥ अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकिताभिरागहि सेमन्नो ॥ यज्ञम्पावकवर्णर्ठंशिवं कृधि॥ ३ ॥ अपामिदन्न्य यनर्ठंसमुद्रस्य निवेशनम् ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवो भव ॥ ४ ॥ अग्ने पावक रोचिषामन्द्रयादेवाजि ह्वया ॥ आ देवान्वक्षियक्षि च॥ ५ ॥ सनः पावक दीदिवोऽग्नेदेवाँ२ऽइहावह ॥ उप यज्ञर्ठंहविश्चनः ॥ ६ ॥ पावकयायश्चितयन्त्याकृपा क्षामन्रुरुचउपसोनभानुना ॥ तूर्व्वन्नयामन्नेतशस्य नूरण ऽआयो घृणेन ततृषाणोऽअजरः ॥ ७ ॥नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्तेऽअस्त्व र्च्चिषे ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तुहेतयः पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवोभव ॥ ८॥ नृषदेव्वेडप्सुषदेव्वेड्बर्हिषदेव्वेड्वनसदेव्वेडुर्व्विदेव्वेत् ॥ ९ ॥ येदेवा देवानांय्यज्ञियायज्ञियानार्ठंसंव्वत्सरीणमुप भागमासते ॥ अहुतादो हविषो यज्ञेऽअस्मिन्त्स्वयम्पिबन्तु मधुनो घृतस्य१०॥ येदेवादेवेष्वधिदेवत्वमायन्न्येब्रह्मणःपुरऽएतारोऽअस्य ॥ येभ्योनऋतेपवते धामकिञ्चन ते दिवो न पृथिव्व्याऽअधिस्नुषु ॥ ११ ॥ प्राणदाऽअपानदाव्व्यानदाव्वर्चोदाव्वरिवोदाः ॥ अन्न्याँस्तेऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्मभ्यर्ठंशिवोभव ॥ १२ ॥ इत्य ग्न्युत्तारणं कृत्वा स्वच्छवस्त्रेण संशोष्य मूलमन्त्रोक्तासनमन्त्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य प्राणप्रतिष्ठां च कुर्यात् ॥ अथ प्राणप्रतिष्ठाप्रयोगः॥ देशकालौ संकीर्त्य ममामुकदेवतानूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये इति संकल्प्य प्रतिष्ठां कुर्यात् । अस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठामंत्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषयः । ऋग्यजुःसामानि छंदांसि । क्रियामयवपुः प्राणाख्या देवता । आँ बीजम् ।ह्रीं शक्तिः।क्रौं कीलकम् । अस्मिन्नूतनयंत्रे मूर्तौ वा प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः ।इति जलं क्षिपेत् । ततः करेणाच्छाद्य ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य प्राणा इह प्राणाः । पुनः ॐ आँह्रींक्रौंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवार

यंत्रस्य जीव इह स्थितः । पुनः ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँसः सोऽहं अस्यामुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि । पुनः ॐ आँह्रींक्रोंयँरँलँवँशँषँसँहँसः। सोऽहं अमुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहैवागत्य सुखं चिरं तिष्ठंतु स्वाहा। इति प्राणान् प्रतिष्ठाप्य। यः प्राणतो निमिषतो महित्वा० विधेम इति सन्निति त्रिवारं पठेत्॥ मनोज्योतिर्जुषतां० सुप्रतिष्ठा प्रतिष्ठा इत्युक्त्वा संस्कारसिद्ध्ये पंचदशप्रणवावृत्तीः कृत्वा अनेन अमुकदेवतासपरिवारयंत्रस्य गर्भाधानादिपंचदशसंस्कारान्संपादयामि इति वदेत्। ततः ॐयंत्रराजाय विद्महे महायंत्राय धीमहि। तन्नो यंत्रः प्रचोदयात्॥इत्यष्टोत्तरशतेनाभिमंत्र्य मूलदेवतां ध्यात्वा मूलेन मूर्ति प्रकल्प्यावाहयेत्॥ अथ पाद्यादिपूजनम् ॥ अक्षतानादाय-देवेश भक्तिसुलभ परिवारसमन्वित ॥ यावत्त्वां पूजयिष्यामि तावदेव इहावह ॥ १ ॥ आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थितो भव॥ यावत्पूजां करिष्यामि तावत्त्वं सन्निधौ भव ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा-ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इहागच्छ इह तिष्ठ । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य आवाहनीं मुद्रां प्रदर्शयेत्। इत्यावाहनम्॥ ॥ १ ॥ तवेयं महिमामूर्त्तिस्तस्यां त्वं सर्वग प्रभो ॥ भक्तिस्नेहसमाकृष्टदीपवत्स्थापयाम्यहम्॥ १॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव इह तिष्ठ इत्यक्षतान्निःक्षिप्य स्थापनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इति स्थापनम्॥ २ ॥ अनन्या तव देवेश मूर्त्तिशक्तिरियं प्रभो ॥ सान्निध्यं कुरु तस्यां त्वं भक्त्यानुग्रहतत्परः ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीअमुकदेवते इह सन्निधेहि । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निधापनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् इति सन्निधापनम्॥ ३ ॥ आज्ञया तव देवेश कृपांभोधे गुणांबुधे ॥ आत्मानंदैकतृप्तं त्वां निरुणध्मि पितर्गुरो ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवते इह सन्निरुध्य इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सन्निरोधनीं मुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सन्निरोधनम् ॥ ४ ॥ अज्ञानाद्दुर्मनस्त्वाद्वा वैकल्यात्साधनस्य च ॥ यदपूर्णं भवेत्कृत्यं तदप्यभिमुखो भव ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असुकदेव इह सम्मुखो भव। इत्यक्षतान्निःक्षिप्य सम्मुखीकरणमुद्रां प्रदर्शयेत्। इति सम्मुखीकरणम् ॥ ५ ॥ अभक्तवाङ्मनश्चक्षुःश्रोत्रदूराति

१ अत्र स्वेष्टदेवतानामोच्चारणं कुर्यात् । आवाह्य देवतामेकामर्चयन्नान्यदेवताम् । उभाभ्यां कुरुते शापं मंत्री सद्यक्रमालसः ॥

गयते ॥ स्वतेजःपञ्जरेणाशु वेष्टितो भव सर्वतः ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेव अवगुंठितो भव । इत्यक्षतान्निःक्षिप्य अवगुंठिनीं मुद्रां प्रदर्शयेत् । इत्यवगुंठनम् ॥६ ॥ यस्य दर्शनमिच्छंति देवाः स्वाभीष्टसिद्धये ॥ तस्मै ते परमेशाय स्वागतं स्वागतं च मे ॥ ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवते सुस्वागतं समर्पयामि इति सुस्वागतम् ॥ ७ ॥ देवदेव महाराज प्रियेश्वर प्रजापते ॥ आसनं दिव्यमीशानाद्दास्येऽहं परमेश्वर ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आसनं समर्पयामि ॥ ८ ॥ इत्यासनं दत्त्वा करौ वद्धा प्रार्थयेत् । स्वागतं देवदेवेश मद्भाग्यात्त्वमिहागतः ॥ प्राकृतं त्वमदृष्ट्वा मां बालवत्परिपालय ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रार्थनां समर्पयामि नमस्करोमि ॥ ८ ॥ इति प्रार्थ्य पाद्याद्युपचारैः पूजयेत् । तद्यथा—यद्भक्तिलेशसंपर्कात्परमानंदविग्रह । तस्मै ते चरणाब्जाय पाद्यं शुद्धाय कल्पये ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पाद्यं समर्पयामि । इति सामान्यार्घोदकेन शंखोदकेन वा पाद्यं दद्यात् ॥ इति पाद्यम् ॥ ९ ॥ तापत्रयहरं दिव्यं परमानन्दलक्षणम् ॥ तापत्रय विनिर्मुक्तस्तवार्घ्यं कल्पयाम्यहम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकदेवाय नमः इदमर्घ्यं समर्पयामि । अर्घ्योदकेनार्घ्यं दद्यात्॥इत्यर्घ्यम् ॥ १० ॥ सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्णसुखात्मने ॥ मधुपर्कमिदं देव कल्पयामि प्रसीद मे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि इति मधुपर्कम् ॥ ११ ॥ वेदानामपि वेदाय देवानां देवतात्मने । आचामं कल्पयामीश शुद्धानां शुद्धिहेतवे ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥ इत्याचमनम् ॥ १२ ॥ ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन लोकनाथ महाशय ॥ सर्वलोकेषु शुद्धात्मन्ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥१॥ मूलं पठित्वा अमुकदेवाय नमः इति सुगंधतैलं समर्पयामि । इति सुगंधतैलम् ॥ १३ ॥ ॐ गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ॥ स्नापितोऽसि मया देव तथा शांतिं कुरुष्व मे॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवायनमः

१–रुद्रयामले निवेदयेत्पुरोभागे गंधं पुष्पं च भूषणम् । दीपं दक्षिणतो दद्यात्पुरतो वा न वामतः ॥ वामतस्तु तथा धूपमग्रे वा न तु दक्षिणे ! नैवेद्यं दक्षिणे भागे पुरतो वा न पृष्ठतः ॥ धूपदीपौ सुभोज्यं च देवताग्रे निवेदयेत् ॥ २ शक्तिपूजायां स्त्रीलिंगेनोच्चारणं कुर्यात् ॥

जलस्नानं समर्पयामि ॥ इति जलस्नानम् ॥१४॥ कामधेनुसमुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ॥ पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा असुकदेवाय नमः पयःस्नानं समर्पयामि ॥ इति पयःस्नानम् ॥ १५॥ पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ॥ दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा असुकदेवाय नमः दधिस्नानं समर्पयामि ॥ इति दधिस्नानम् ॥१६॥ नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसंतोषकारकम्॥घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥१॥मूलंपठित्वा असुकदेवाय नमः घृतस्नानं समर्पयामि॥इतिघृतस्नानम्१७ तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु॥तेजःपुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१ ॥मूलं पठित्वाॐभूर्भुवःस्वः असुकदेवाय नमः मधुस्नानं समर्पयामि ॥ इति मधुस्नानम् ॥१८॥ इक्षुसारसमुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ॥ मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असुकदेवाय नमः शर्करोदकस्नानं समर्पयामि ॥ इति शर्करोदकस्नानम् ॥ १९ ॥ पयो दधि घृतं चैव मधु वै शर्करायुतम् ॥पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असुकदेवाय नमः पंचामृतस्नानं समर्पयामि । इति पञ्चामृतस्नानम् ॥२०॥ मलयाचलसंभूतं चन्दनागरुसंभवम्॥चन्दनं देवदेवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐभूर्भुवः स्वः असुकदेवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । इति गंधोदकस्नानम् ॥ २१ ॥ इति स्नापयित्वा पूर्वोक्तशुद्धोदकस्नानं कारयेत् । एवं स्नानं समर्प्य शिवसूर्य्यातिरिक्तदेवेषु शंखेन तत्तन्मूलमन्त्रेण यथाशक्त्यभिषेकं कृत्वा ॐ अनेन अभिषेककर्मणाऽसुकदेवता प्रीयताम् इति समर्प्य आचमनं दद्यात् ॥ततः-सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जानिवारणे॥मयैवोपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असुकदेवाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥ इति वस्त्रम् ॥ २२ ॥ नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् ॥ उपवीतं चोत्तरीयं गृहाण परमेश्वर ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असुकदेवाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥ इति यज्ञोपवीतम् ॥ २३ ॥ ॐ स्वभावसुंदरांगाय नानाशक्त्याश्रितः शिव॥भूषणानि विचित्राणि कल्पयाम्यमरार्चित ॥१॥ मूलं पठित्वा असुकदेवाय नमः आभूषणं

१ पीतं विष्णौ सितं शम्भौ रक्तं विघ्नार्कशक्तिषु ॥ सच्छिद्रं मलिनं जीर्णं त्यजनैकादिदूषितम् ॥ २ स्त्रीपूजने न तु दद्यात् ॥

समर्पयामि इत्युक्त्वा दक्षहस्तांगुष्ठस्पृष्टानामिकात्मिकया मुद्रया भूषणानि दद्यात् ॥ इत्याभूषणम् ॥ २४ ॥ श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गंधाढ्यं सुमनोहरम् ॥ विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः गंधं समर्पयामि ॥ अंगुष्ठकनिष्ठामूललग्ना गंधमुद्राः । इति गन्धम् ॥ २५ ॥ अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः ॥ मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः अक्षतान्समर्पयामि ॥ इत्यक्षतान्सर्वांगुलीभिर्दद्यात् ॥ ॥ २६ ॥ माल्यादीनि सुगंधीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ॥ मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥१॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः पुष्पं समर्पयामि ॥तर्जन्यावंगुष्ठमूललग्ने पुष्पमुद्रा ॥ २७ ॥ इति पुष्पम् ॥ एवं पुष्पांतं पूजयित्वा देवाज्ञया प्रयोगोक्तामावरणपूजां कुर्य्यात्।तत्र क्रमः। पुष्पांजलिमादाय। संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥अनुज्ञां देहि मे देव परिवारार्चनाय च ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं देवोपरि दत्त्वा पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य प्राचीक्रमेण प्रयोगोक्तावरणपूजां कुर्य्यात्। तत्र क्रमः। श्रीपदं पूर्वमुच्चार्य्य पादुकापदमुद्धरेत्॥ पूजयामि नमः पश्चात् पूजयेदंगदेवताः ॥ इत्युच्चरन् आवरणदेवताः पूजयेत्॥तत्सर्वं तत्तत्प्रयोगे ज्ञेयम्॥अथ धूपादिपूजनम्॥फडिति धूपपात्रं संप्रोक्ष्य नमः इति गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य पुरतो निधाय(रँ)इति वह्निर्बीजेन उपरि अग्निं संस्थाप्य तदुपरि मूलेन दशांगं दत्त्वा घंटां वादयन् । वनस्पतिरसोद्भूतो गंधाढ्यो गंध उत्तमः ॥ आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ १ ॥मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवःस्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः धूपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य वामभागे धूपपात्रं संस्थाप्य तर्जनीमूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्रा तां प्रदर्शयेत् । इति धूपम्॥२८॥ ततो दीपपात्रं गोघृतेनापूर्य मंत्राक्षरतंतुभिर्वर्तिं निःक्षिप्य प्रणवेन प्रज्वाल्य घंटां वादयन् नेत्रादिपादपर्यंतं दीपं

---

१ शक्तिश्चेत् रक्तचन्दनं दद्यात् ॥ २ पत्रं पुष्पं फलं दद्यात् न च दद्यादधोमुखम्। पुष्पांजलौ न तद्दोषस्तथा पर्युषितस्य च ॥ ३ धूपयेद्दक्षहस्तेन देवता नाभिदेशतः । जलपुष्पांजलिं दद्याद्दीपदानमितीरितम् ॥ ४ मंत्राक्षराणां संख्याकैस्तंतुभिर्ब्रह्मसूत्रजैः। वर्तिं कृत्वा घृतेनैव दीपं तत्र प्रदापयेत् ॥ ५ ॐ कारेण गौतमीये-दक्षिणं तु परित्यज्य वामं चैव निधापयेत् । अभोज्यं तद्भवेदन्नं पानीयं च सुरोपमम् ॥

प्रदर्शयन् ॥ ॐ सुप्रकाशो महादीपः सर्वतस्तिमिरापहः ॥ सबाह्याभ्यंतरज्योतिर्दीपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः दीपं समर्पयामि। इति पठित्वा देवस्य दक्षिणभागे निधाय ततः शंखजलमुत्सृज्य मध्यमांगुष्ठलग्नां दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् ॥ इति दीपम् ॥ २९ ॥ ततो देवस्याग्रे देवदक्षिणतो वा जलेन चतुरस्रं मण्डलं कृत्वा स्वर्णादिनिर्मितं भोजनपात्रं संस्थाप्य तन्मध्ये षड्रसोपेतं विविधप्रकारं वा नैवेद्यं निधाय ॐ ह्रीं नमः इति मंत्रेण अर्घ्यजलेन संप्रोक्ष्य मूलेन संवीक्ष्य अधोमुखदक्षिणहस्तोपरि तादृशं वामं निधाय नैवेद्येनाच्छाद्य-(ॐ यँ) इति वायुबीजेन षोडशधा संजप्य वायुना तद्गतदोषान् संशोष्य दक्षिणकरतले तत्पृष्ठलग्ने वामकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य- (ॐ रँ) इति वह्निबीजेन षोडशवारं संजप्य तदुत्पन्नाग्निना तद्दोषं दग्ध्वा वामकरतले (ॐ वँ) इत्यमृतबीजं विचिंत्य तत्पृष्ठलग्नं दक्षिणकरतलं कृत्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य-(ॐ वं) इति सुधाबीजं षोडशवारं संजप्य तदुत्थामृतधारया प्लावितं विभाव्य मूलेन प्रोक्ष्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य मूलेनाष्टधाभिमंत्र्य गंधपुष्पाभ्यां संपूज्य देवस्योद्गतं तेजः स्मृत्वा वामांगुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृष्ट्वा दक्षिणकरेण जलं गृहीत्वा॥ॐसत्पात्रसिद्धं सुहविर्विविधानेनैकभक्षणम्॥निवेदयामि देवेश सानुगाय गृहाण तत् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः नैवेद्यं समर्पयामि। इति भूतले देवदक्षिणे जलं क्षिप्त्वा वामहस्तेन अनामामूलयोरंगुष्ठयोगे ग्रासमुद्रां तां प्रदर्श्य देवं भुक्तवंतं विभाव्य जलं दद्यात् ॥ इति नैवेद्यम् ॥ ३० ॥नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं वरम् ॥ परमानन्दपूर्ण त्वं गृहाण जलमुत्तमम् ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सांगाय सपरिवाराय अमुकदेवाय नमः जलं समर्पयामि । इति मंत्रेण स्वर्णादिपात्रस्थं कर्पूरादिसुवासितं जलं निवेद्य देवेन तज्जलं प्राशितमिति भावयन् अंतःपटं दद्यात् ॥३१॥ अथ अंतःपटम् ॥ ब्रह्मेशाद्यैः परित उरुभिः सूपविष्टैः समेतैर्लक्ष्म्या शिंजद्वलयकरया सादरं वीज्यमानः ॥ नर्मक्रीडाप्रहसनपरान्पंक्तिभोक्तॄन् हसन्स भुंक्ते पात्रे कनकघटिते षड्रसान् देवदेवः ॥ १ ॥ शालीभक्तं सुपक्वं शिशिरकरसितं पायसापूपसूपं लेह्यं पेयं च चोष्यं सितममृतफलं परिकाद्यं सुखाद्यम् ॥ आज्यं प्राज्यं सभोज्यं नयनरुचिकरं राजिकैलामरीचस्वादीयः शाकराजीपरिकरममृताहारजोषं

जुषस्व २ ॥ इति अंतःपटं दत्त्वाचमनं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ३१ ॥ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि यस्य स्मरणमात्रतः ॥ शुद्धिमाप्नोति तस्मै ते पुनराचमनीयकम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः आचमनं समर्पयामि ॥ ३२ ॥ इत्याचमनं दत्त्वा मूलेन गंडूषार्थं जलं दद्यात् । पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युतम् ॥ एलाचूर्णादिसंयुक्तं तांबूलं प्रतिगृह्यताम् ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः तांबूलं समर्पयामि । इति तांबूलम् ॥ ३३ ॥ इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ॥ तेन मे सफलावा तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः फलं समर्पयामि ॥ इति फलम् ॥ ३४ ॥ शुद्धिः सत्वासना क्लृप्ता दर्पणं मंगलानि च ॥ मनोवृत्तिर्विचित्रा ते नृत्यरूपेण कल्पिता ॥१॥ ध्यानं संगीतरूपेण शब्दा वाद्यप्रभेदतः ॥ छत्राणि नवपद्मानि कल्पितानि मया प्रभो ॥ २ ॥ सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राणाद्याश्चामरा मताः ॥ अहंकारो गजत्वेन वेगः क्लृप्तो रथात्मना ॥ ४ ॥ इन्द्रियाणि च रूपाणि शब्दादिरथवर्त्मना ॥ मनः प्रग्रहरूपेण बुद्धिः सारथिरूपतः ॥ ४ ॥ सर्वमन्यत्तथा क्लृप्तं तवोपकरणात्मना ॥ एवं सार्द्धचतुःश्लोकान् पठित्वा छत्रादि समर्पयेत् । इति छत्राद्यर्पणम् ॥ ३५ ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंत पुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः दक्षिणां समर्पयामि । इति हिरण्यादिदक्षिणां दद्यात् ॥ ३६ ॥ शालिगोधूमपिष्टेन त्रिकोणाकारं प्रयोगोक्तं वा अमुकसंख्यापरिमितदीपं निर्माय सुवर्णादिस्थालीमध्ये संस्थाप्य घृतेनापूर्य कर्पूरादिवर्त्तीं निक्षिप्य (ह्रीं) इति मायाबीजेन प्रज्वाल्य मूलेनार्तिक्यं संपूज्य मूलं पठित्वा देवोपरि नेत्रादिपादपर्यंतं नववारं त्रिवारं वा भ्रामयेद्घंटां च नादयेत् । तत्र मंत्रः । अंतस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्य निरंतरम् ॥ त्रिधा देवोपरि भ्राम्य कुलदीपं निवेदयेत् ॥ १ ॥ चन्द्रादित्यौ च धरणी विद्युदग्निस्तथैव च ॥ त्वमेव सर्वज्योतिस्त्वमार्तिक्यं प्रतिगृह्यताम् ॥ २ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः नीराजनं समर्पयामि ॥ इत्युच्चरन् देवदक्षिणतः निधाय शंखजलमुत्सृजेत् । इति नीराजनम् ॥ ३७ ॥ कदलीगर्भसंभूतं कर्पूरं च प्रदीपितम् ॥ आरार्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः कर्पूरार्तिक्यं प्रदर्शयामि । इति

कर्पूरार्तिक्यम् ॥ ३८ ॥ यानि कानि च पापानि जन्मांतरकृतानि वै ॥ तानि सर्वाणि नश्यंतु प्रदक्षिणपदेपदे ॥ १ ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमुकदेवाय नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि । इत्युच्चरन् विष्णौ चतस्रः ४ शिवे तिस्रः३ दुर्गायामेका १ गणेशे तिस्रः३रवौ सप्त ७ प्रदक्षिणाः कार्याः । इति प्रदक्षिणा ॥३९॥ प्रपन्नं पाहि मामीश भीतं मृत्युग्रहार्णवात् ॥ इति वदन् साष्टांगं प्रणमेत् ॥ इति साष्टांगप्रणामः ॥४०॥ नानासुगंधपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ॥ पुष्पांजलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥ मूलं पठित्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अमकदेवाय नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि । इति पुष्पांजलिः ॥४१॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा ततः स्तुतिपाठेन देवं स्तुत्वा बद्धांजलिपूर्वकं प्रार्थयेत्॥ तद्यथा-ज्ञानतोऽज्ञानतो वाथ यन्मया क्रियते शिव ॥ मम कृत्यमिदं सर्वमिति देव क्षमस्व मे ॥ १ ॥ अपराधसहस्राणि क्रियंतेऽहर्निशं मया ॥ दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥ २ ॥ अपराधो भवत्येव सेवकस्य पदे पदे ॥ कोऽपरः सहतां लोके केवलं स्वामिनं विना ॥ ३ ॥ भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलंबनम् ॥ त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिव ॥ ४ ॥ बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य ततःऽन्यदुक्तं यद्यभावेन पत्रं पुष्पं फलं जलम् ॥ निवेदितं च नैवेद्यं गृहाण मानुकंपय ॥ इति पठित्वा देवस्य दक्षिणकरे पूजार्पणजलं दत्त्वा मालायाः संस्कारान् कुर्यात् ॥ अथ मालायाः संस्कारा ः ॥ तत्रादौ कुशोदकसहितैः पंचगव्यैर्मालां प्रक्षाल्य अश्वत्थपत्रनवकरचिते कमले स्थापयित्वा ॐ ह्रीं अँआँइँईँउँऊँऋँ ॠँऌँॡँएँऐँओँऔँअंअः कँखँगँघँङँचँछँजँझँञँटँठँडँढँणँतँथँदँधँनँपँफँबँभँमँयँरँलँवँशँषँसँहँक्षँ इत्येतानि मातृकाक्षराणि मूलमंत्रं च मालायां विन्यस्य पुनः पंचगव्येन प्रोक्ष्य ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमोनमः॥भवेभवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥१॥इति मंत्रेण शीतजलेन प्रक्षालयेत् । पुनः ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमःकालाय नमःकलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमः इति मंत्रेण चन्दनागुरुकर्पूरादिसुगंधद्रव्यैर्घर्षयेत्॥२॥अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ इति मंत्रेण तां धूपयेत् ॥३॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ॥ इति मंत्रेण मालयां चदनं

१ अप्रतिष्ठितमालाभिर्मंत्रं जपति यो नरः । सर्वं तद्विफलं विद्यात् क्रुद्धा भवति देवता॥

लेपयेत् ॥ ४ ॥ ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ इति मंत्रेण मेरुसहितं प्रत्येकमणिं सकृत्सकृद्वाभिमंत्रयेत् ॥ ५ ॥ ततः अस्या मालायाः इति शब्दं संयोज्य पूर्ववत् प्राणप्रतिष्ठामंत्रप्रयोगेण मालायाः प्राणप्रतिष्ठां कृत्वा ध्यायेत् ॥ ॐ ह्रीं माले माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥ १ ॥ इति मालां संप्रार्थ्य ॐ अविघ्नं कुरु माले त्वं सर्वकार्येषु सर्वदा ॥ इति मंत्रेण दक्षिणहस्ते मालामादाय हृदये धारयन् स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा मध्यमांगुलिमध्यपर्वणि संस्थाप्य ज्येष्ठाग्रेण भ्रामयित्वा एकाग्रचित्तो मंत्रार्थं स्मरन् प्रातःकालमारभ्य मध्यंदिनं यावत् यथाशक्ति मूलमंत्रं जपेत्। नित्यमेव समानो जपः कार्य्यो न तु न्यूनाधिकः। ततो जपांते ॐ त्वं माले सर्वदेवानां प्रीतिदा शुभदा मम॥शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥तेन सत्येन सिद्धिं मे देहि मातर्नमोऽस्तु ते। ॐ ह्रीं सिद्ध्यै नमः। इति मालां शिरसि निधाय गोमुखीरहस्ये स्थापयेत् नाशुचिः स्पर्शयेत् नान्यं दद्यात् अशुचिस्थाने न निधापयेत् स्वयोनिवत् गुप्तं कुर्य्यात्।ततः कवचस्तोत्रसहस्रनामादिकं पठित्वा पुनर्मूलमंत्रोक्तऋष्यादिन्यासं हृदयादिषडंगन्यासं च कृत्वा पंचोपचारैः संपूज्य पुष्पांजलिं च दत्त्वा जपंदेवेर्पितं कुर्य्यात् । तथा च अर्घोदकेन चुलुकमादाय ॐगुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ॥ सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात्त्वयि स्थितिः॥१॥ ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्म्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यावस्थासु मनसा वाचा कर्म्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेणशिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तंयत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा। मां मदीयं च सकलममुकदेवाय समर्पयामि नमः॥ॐ तत्सदिति ब्रह्मार्पणं भवतु।इति देवदक्षिणकरेजलसमर्पणं कृत्वा कृतांजलिपूर्वकं क्षमापनं पठेत्। अथ क्षमापनम्।आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्॥पूजाभागं न जानामि त्वंगतिःपरमेश्वर॥१॥ मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ॥ यत्पूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे ॥ २ ॥ यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ॥ तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥ ३ ॥ कर्मणा मनसा वाचा त्वत्तो नान्या गतिर्मम ॥ अंतश्चरासि भूतानामिष्टस्त्वं परमेश्वर ॥ ४ ॥ अन्यथा

१ जपस्थानार्चनस्थानं मालापुस्तकदर्शनम्। स्वभक्तेषु महेशानि दर्शनं नैव कारयेत् ॥ २ यथाशक्ति जपित्वा तं मन्त्रेण विनिवेदयेत् । क्षिपन्नर्घस्य पानीयं देवतादक्षिणे करे ॥

शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ॥ तस्मात्कारुण्यभावेन क्षमस्व परमेश्वर ॥ ५॥ मातृयोनिसहस्रेषु सहस्रेषु व्रजाम्यहम् ॥ तेषु तेष्वचला भक्तिरच्युतेऽस्तु सदा त्वयि ॥ ६ ॥ गतं पापं गतं दुःखं गतं दारिद्र्यमेव च ॥ आगता सुखसंपत्तिः पुण्याच्च तव दर्शनात् ॥७ ॥ देवो दाता च भोक्ता च देवरूपमिदं जगत् ॥ देवं जपति सर्वत्र यो देवः सोऽहमेव हि॥८॥क्षमस्व देव देवेश क्षम्यतां भुवनेश्वर॥तव पादांबुजे नित्यं निश्चला भक्तिरस्तु मे ॥ ९ ॥ इति कृतांजलिः प्रार्थयित्वा शंखमुद्धृत्य देवोपरि भ्रामयित्वा साधु वासाधु वाकर्म्म यद्यदाचरितं मया ॥ तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधनं मम ॥ १ ॥ इत्युच्चरन् देवस्य दक्षिणहस्ते किंचिज्जलं दत्त्वा प्राग्वदर्घ्यं देवशिरसि दत्त्वा शंखं यथास्थानं निवेश्य ततो गतसारनैवेद्यं देवस्योच्छिष्टं किंचिदुद्धृत्य तत्तदुच्छिष्टभोजिने विनिवेदयेत्।तद्यथा विष्णोरुच्छिष्टं विष्वक्सेनाय १ शिवस्योच्छिष्टं चंडेश्वराय २ सूर्यस्योच्छिष्टं चंडांशवे ३ गणेशोच्छिष्टं वक्रतुंडाय ४ शक्तेरुच्छिष्टमुच्छिष्टचांडाल्यै इत्युच्छिष्टाधिकारिणे ऐशान्यां दिशि दद्यात्। तच्छेषनैवेद्यं शिरसि धृत्वा नैवेद्यादिकं देवभक्तेषु विभज्य स्वयं भुक्त्वा विसर्जनं कुर्य्यात्। तथा च गच्छ गच्छ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ पूजाराधनकाले च पुनरागमनाय च॥ इत्यक्षतान्निक्षिप्य विसर्जनं कृत्वा देवं स्वहृदये स्थापयेत् । तथा च तिष्ठ तिष्ठ परस्थाने स्वस्थाने परमेश्वर ॥ यत्र ब्रह्मादयो देवा सर्वे तिष्ठंति मे हृदि॥१॥ इति हृदयकमले हस्तं दत्त्वा देवं संस्थाप्य मानसोपचारैः संपूज्य स्वात्मानं देवरूपं भावयन् यथासुखं विहरेत् । एवमेव विधिना जपं समाप्य जपान्ते तत्तद्दशांशतो नित्यहोमं वा कुर्य्यात् ॥ अथ मखोत्सवप्रारंभः ॥ यागभूमिं संशोध्य षोडशस्तंभसहितं मंडपं सवितानं चतुर्द्वारं तोरणवेष्टितं कृत्वा

१ नैवेद्यलक्षणम् । अर्वाग्विसर्जनाद्द्रव्यं नैवेद्यं सर्वमुच्यते । विसर्जिते जगन्नाथे निर्माल्यं भवति क्षणात् ॥ २ नैवेद्यग्रहणनिषेधः (आह्निकतत्त्वे) तृषार्ताः पशवो रुद्राः कन्यका च रजस्वला । देवता च स्वनिर्माल्या इति पुण्यं पुराकृतम् ॥ (रुद्रयामले विशेषः) निवेदितं च यद्द्रव्यं भोक्तव्यं तद्विधानतः । तत्र चेद्भुज्यते मोहाद्रौरवमायांति देवताः

३ ऐशान्यादिचतुर्दिक्षु चतुरस्तद्बहिः पुनरैशान्यादिचतुर्दिक्षु चतुरः ऐशानीप्राच्यंतराले एकः पूर्वाग्नेयांतराले एकः आग्नेययाम्यांतराले एकः याम्यनैर्ऋत्यंतराले एकः नैर्ऋत्यवारुण्यंतराले एकः पश्चिमवायव्यांतराले एकः वायव्योदीच्यंतराले एकः उत्तरैशान्यंतराले एकः एवं षोडशकदलीस्तम्भान्स्थापयेत् । ततः पूर्वे न्यग्रोधपत्रतोरणं दक्षिणे औदुम्बरं पश्चिमे अश्वत्थपत्रतोरणम् उत्तरे प्लक्षपत्रतोरणं बध्नीयात् पूर्वद्वारदक्षिणवामशाखयोः धनुराकारपताका रक्तं ध्वजं च अग्निकोणे तादृशं दक्षिणद्वारे धूम्रवर्णपताका कृष्णवर्णध्वजं च नैर्ऋत्ये—

दिव्यवस्त्रपट्टदुकूलादिभिर्देवतागारं श्रीगिरिं कृत्वा कदलीस्तंभविराजितं सुमनोहरपुष्पमालोपशोभितं मंडपं विधाय तन्मध्येहोमानुसारतः कुंडं चतुरस्रं प्रयोगोक्तं वा मेखलात्रययुतं योनिसहितं यथोक्तं कुर्यात्। अथवा स्थंडिलं कुर्यात्। कुंडमैशान्यां चंडिकापीठं पूर्वे ग्रहपीठं आग्नेय्यां-मातृकापीठं नैर्ऋत्ये-वास्तुपीठं कुंडात्पश्चिमेस्वस्तिवाचनवेदिकां च हस्तोच्चमानं सर्वं कुर्यात्। यतो यजमानः सुस्नातः कलत्र पुत्रादियुतः शुचिः स्त्रियः वस्त्राभरणगंधपुष्पैरलंकृत्य गलितस्वादुजलेन कलशं संपूर्य तन्मुखे महाफलं प्रतिष्ठाप्य पाणिभ्यां गृहीत्वा मंत्रवाद्यघोषणकर्ताऽभीष्टदेवतां ध्यात्वा यागभूमिमागत्य पश्चिमद्वारमंडपं प्रविशेत्। (अथ शान्तिकलशस्थापनम्) कलशं कुंडात्पश्चिमे तंदुलाष्टदलोपरि संस्थाप्य गंधादिभिः शांतिकलशं संपूज्य तत्र देवता विन्यसेत्। ॐ गं गणपतये नमः १ ॐ दुं दुर्गायै नमः २ ॐ सं सरस्वत्यै नमः ३ ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः ४ ॐ वां वास्तुपुरुषाय नमः ५ एवं पंचदेवताः संपूज्य स्थिरासनं संभाव्य गणपतिपूजना दिकं कुर्यात्। तद्यथा पूर्वोक्तासने कूर्मभूमावुपाविश्य पूर्वोक्तप्रकारेण गणेशादीन् नमस्कृत्य एं आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः १ ह्रीं विद्या तत्त्वं शोधयामि स्वाहा २ ह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ३ इति तत्त्वत्रयेणाचम्य मूलेन प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अस्मिन् पुण्याहे अमुकदेवताप्रीतये मया अमुककामनया ब्राह्मणद्वारा कृतजपदशांशेन क्रियमाणामुकदेवतायागसिद्ध्यै होममहं करिष्ये ॥ इत्यक्षतोदकेन संकल्प्य तदंगभूतमादौ गणेशपूजनं भूमिपूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं ब्राह्मणप्रार्थनापूर्वकं करिष्ये। इति संकल्प्य ब्राह्मणं प्रार्थयेत्। तत्र मंत्रः। ब्राह्मणाः संतु मे शस्ताः पापात्पांतु समाहिताः॥ देवानां चैव दातारस्त्रातारः सर्वदेहिनाम्॥ १॥ इति संप्रार्थ्य ततः गणेशपूजनादि क्रमेण कुर्यात्। ततो देशकालौ संकीर्त्य प्रारिप्सितकर्मणोंगभूतं मंडपशुद्धिं कुंडशुद्धिं च करिष्ये। इति संकल्प्य। ततःस्थापितकलशोदकमन्यपात्रे गृहीत्वा औदुम्बरशमीदूर्वासहितजलेन भूमिं त्रिवारं प्रोक्ष्य तेनोदकेन मंडपं प्रोक्ष्य

–पताकां कृष्णां नीलध्वजं च पश्चिमद्वारे पताकां श्वेतां पीतध्वजं च वायव्ये तादृशम् उत्तरे श्वेतवर्णपताकां पाण्डुरध्वजं च ऐशान्ये पताकां श्वेतां ध्वजं च ईशानपूर्वमध्ये पताकां ध्वजं च सर्ववर्णकां पश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्ये पताकां पंचवर्णं ध्वजं च मंडपमध्ये चित्ररत्नाकारध्वजं पताकां च स्थापयेत्॥ १ ऐशान्ये चण्डिकापीठं ग्रहपीठं तु पूर्वतः॥ आग्नेय्यां मातृकापीठं हस्तमुच्चं समंततः। नैर्ऋत्ये वास्तुपीठं तु सर्वयज्ञेष्वयं विधिः॥ कुंडात्पश्चिमतः कार्या स्वस्तिवाचनवेदिका। यथोक्तोच्छ्रायविस्तारवेदिकानामयं क्रमः॥

असर्पंतु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः॥ ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥ इति मंत्रेण गौरसर्षपान् सर्वतो मंडपांतः विकिरेत् ॥ "ॐ मूलेनास्त्राय फट्" इत्यस्त्रमंत्रेण तालत्रयं दिग्बंधनं कृत्वा पंचगव्येन मंडपं प्रोक्ष्य कुंडं प्रार्थयेत् तत्र मंत्रः। हे कुंड तव निर्माणं यथामति मया कृतम् ॥ कृपया भव संपूर्णं कुरु सिद्धिं नमोऽस्तुते ॥१ ॥ इति बद्धांजलिपूर्वकं संप्रार्थ्य ततः कृतांजलिः स्वस्तिन इति मंत्रं पठेत्। ततः कुंडं गंधादिना संपूज्य कुंडमेखलास्विष्टदेवतां संचिंत्य संभाव्य कुंकुमाक्षतसिंदूरैः संपज्य मंडपदेवताः पूजयेत्। मंडपेषु ॐ रत्नमंडपाय नमः ॥ १ ॥ दक्षिणशाखायाम् ॐ द्वारश्रियै नमः ॥ २ ॥ वामशाखायाम्। ॐ गं गणपतये नमः ॥ ३ ॥ मंडपोपरि ॐ तत्त्वमंडपाय नमः ॥ ४ ॥ देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः ॥ ५ ॥ मंडपान्तः ॐ ब्रह्मणे नमः ॥ ६ ॥ इति संपज्य दध्योदनमाषभक्त सहितदीपपात्राण्यादाय गंधादिपात्रं जलपात्रं च गृहीत्वा मंडपाद्बहिर्बलिदानं कुर्यात्। तत्र मंत्रः। हे रौद्रा रौद्रकर्माणो रौद्रस्थाननिवासिनः॥ मातरोऽप्युग्ररूपाश्च गणाधिपतयश्च ये ॥ १ ॥ भूचराः खेचराश्चैव तथा चैवांतरिक्षगाः॥ विघ्नभूताश्च ये चान्ये दिग्विदिक्षु समाश्रिताः॥ ते सर्वे प्रीतमनसः प्रतिगृह्णंत्विमं बलिम्॥२॥ इति मंत्रद्वयेन पूर्वादिचतुर्दिक्षु तत्र भूमौ कुशानास्तीर्य भक्तबलिं दद्यात् ॥ ततः प्राग्द्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ देवेभ्यो नमः गंधाद्युपचारसहितदीपदध्योदन एष माषभक्तबलिर्नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ प्राग्द्वारे वाम शाखायाम् ॐ आदित्येभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ २ ॥ ततः याम्यद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ वसुभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ ३ ॥ याम्यद्वारे वाम शाखायाम् ॐ मरुद्भ्यो नमः गंधाद्यु० ॥४॥ ततः पश्चिमद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ अश्विभ्यां देवाभ्यां नमः गंधाद्यु० ॥५॥ पश्चिमद्वारे वाम शाखायाम् ॐ सुपर्णेभ्यो नमः गंधाद्युपचा० ॥ ६ ॥ तत उत्तरद्वारे दक्षिणशाखायाम् ॐ पन्नगेभ्यो नमः गंधाद्यु० ॥ ७ ॥ उत्तरद्वारे वाम शाखायाम् ॐ ग्रहेभ्यो नमः गंधाद्यु०॥८॥ इति क्षेत्रबलिं दत्त्वा पूर्ववद्दिग्देवीनां बलिदानं ग्रहाणां लोकपालानां दिक्पालानां च यथाक्रमेण

१ मंडपस्य चतुर्दिक्षु दद्यादुत्तरशिं बहिः। बलिं गृह्णंत्विमे देवा आदित्या वसवस्तथा॥ मातरश्चाश्विनौ देवाः सुपर्णाः पन्नगा ग्रहाः। द्वौ द्वौ भागादि संपूज्य मम यज्ञसुखावहाः। याम्योत्तरविभागेषु चतुर्द्वारैः पृथक्पृथक् ॥

एवमेव विधिना बलिं दद्यात् ।तत आचम्य प्राणानायम्य वास्तुपीठसमीपे गत्वावास्तुमंडले वास्तुमूर्तिं प्रतिष्ठाप्य संपूज्य तत्र यथोक्तबलिदानं कृत्वानंतरं साचार्यब्रह्मऋत्विक् सपवित्रकरो यजमानः सपत्नीकः ब्रह्मादीनां प्रार्थनां कुर्य्यात्। तत्र मंत्रः। ॐ उत्तिष्ठंतु महाभागा अर्चिताः प्रार्थिता मया॥ऋद्ध्यर्थं कर्मणस्त्वस्य कुरुध्वं मंडपं शुभम् ॥ इति संप्रार्थ्य कुशाक्षतजलमादाय देशकालौ संकीर्त्य श्रीअमुकदेवताप्रीत्यर्थम मुकदेवतामहोत्सवसिद्ध्यर्थं षोडशस्तंभप्रतिष्ठां तोरणप्रतिष्ठां ध्वजपताकाप्रतिष्ठां च कृत्वा चतुर्दिक्षु द्वारपालसहितकलशसुप्रतिष्ठां कृत्वा प्रति ष्ठितदेवतानां पूजनं बलिदानं च करिष्ये।इति संकल्प्य मंडपप्रतिष्ठां समारभेत्॥तत्रादौ षोडशस्तंभप्रतिष्ठाप्रयोगः॥ ऐशान्यस्तंभसमीपे गत्वा तत्र ॐ भूर्भुवःस्वः प्रथमस्तंभे ब्रह्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति ब्रह्माणमावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् तद्यथा।ॐसावित्र्यै नमः।ॐ वास्तुपुरु षाय नमः।ॐ ब्राह्म्यैनमः।इति संपूज्य स्तंभशिरसिॐ नागमात्रे नमः।इति पूजयेत् ततो ब्रह्मणस्पते त्वमस्येति गृत्समद ऋषिः त्रिष्टुप् छंदः। ब्रह्मा देवता पूजने विनियोगः।इति जलं क्षिप्त्वा ॐब्रह्मणे नमः।इति संपूज्यॐ ब्रह्मणे वेदाधिपतये पद्महस्ताय हंसासनसमारूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।ब्रह्मा प्रीयतां ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु इति कुशानास्तीर्य बलिं दद्यात्॥१॥आग्नेयस्तंभसमीपे गत्वा तत्र ॐ भूर्भुवः स्वः द्वितीयस्तंभे विष्णो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपू जयेत् । तद्यथा । ॐलक्ष्म्यै नमः। ॐ आदित्यनंदायै नमः। ॐ वैष्णव्यै नमः।इति संपूज्य स्तंभशिरसिॐनागमात्रे नमः।इति पूजयेत्। तत इदं विष्णुरिति मेधातिथिर्ऋषिः।गायत्री छंदः।विष्णुर्देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ विष्णवे नमः इति विष्णुं संपूज्य ॐ विष्णवे यज्ञाधिपतये चक्रहस्ताय गरुडासनसमारूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्त बलिर्नमः । विष्णुः प्रीयताम् विष्णुः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात्॥२॥ ततो नैर्ऋत्यस्तंभसमीपे गत्वा तत्र ॐ भूर्भुवःस्वः तृतीयस्तंभे रुद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव । इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपूजयेत् । तद्यथा ।ॐगौर्यै नमः।ॐशोभनायै नमः। ॐमाहेश्वर्य्यै नमः ।इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐनागमात्रे नमः इति पूजयेत्।ततः परिणो रुद्रस्येति गृत्समद ऋषिः।त्रिष्टुप्छंदः।रुद्रो देवता पूजने विनि

योगः॥इति जलं क्षिप्त्वाॐरुद्राय नमः॥इति संपूज्य ॐरुद्राय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषस्कंधसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः रुद्रःप्रीयतां रुद्रःसुप्रीतो वरदो भवतु॥इति बलिं दद्यात्॥३॥ततो वायव्यस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्थस्तंभे इन्द्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव। इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। ॐ इन्द्राण्यै नमः। ॐ आनंदायै नमः ॐ विभूत्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः॥इति पूजयेत्। तत इन्द्रआसांनेतेति अप्रतिरथ ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः। इन्द्रो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा। ॐ इन्द्राय नमः। इति संपूज्य। ॐ इंद्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय ऐरावतसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः इन्द्रः प्रीयतामिंद्रः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ ४ ॥ पुनस्तद्बहिरीशानकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पंचमस्तंभे सूर्य इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव। इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सौर्यै नमः। ॐ भूत्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः। ॐ मंगलायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः चित्रं देवानामिति कुत्सांगिरस ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। सूर्यो देवता। पूजने विनियोगः॥ इति जलं क्षिप्त्वा ॐ भास्कराय नमः। इति संपूज्य। ॐ सूर्याय ग्रहाधिपतये पद्महस्ताय अश्वगृष्टिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः॥सूर्यः प्रीयताम्॥सूर्यः सुप्रीतो वरदो भवतु॥इति बलिं दद्यात्॥५॥ ततः ऐशान्यप्राच्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः षष्ठस्तंभे गणपते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सिद्ध्यै नमः। ॐ बुद्ध्यै नमः। ॐ विघ्नहारिण्यै नमः। ॐ जयायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। गणानां त्वेति गृत्समद ऋषिः। गायत्री छंदः। गणपतिर्देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐगणपतयेनमः॥इति संपूज्य ॐ गणपतये अंकुशहस्ताय चतुर्दशविद्याप्रदायकाय विघ्नहराय मूषकसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। गणपतिः प्रीयताम्। गणपतिः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ६ ॥ ततः पूर्वाग्नेयांतरा

लस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सप्तमस्तंभे धर्मराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः संपूजयेत् । ॐ धर्मराज्ये नमः । ॐ प्राक्संध्यायै नमः । ॐ अंजनायै नमः । ॐ क्रूरायै नमः । इति संपूज्य। स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पूजयेत् । ततः यमाय त्वेति प्रजापतिर्ऋषिः । गायत्री छंदः । यमो देवता । पूजने विनियोगः । इति जलं क्षिप्त्वा ॐ यमाय नमः । इति संपूज्य ॐ धर्मराजाय प्रेताधिपतये दंडहस्ताय महिषस्कंधसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः धर्मराजः प्रीयताम्।धर्मराजः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् ॥७॥ ततः आग्नेयकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अष्टमस्तंभे नागराज इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ मध्यमसंध्यायै नमः । ॐ पद्मिन्यै नमः। ॐ महापद्मिन्यै नमः ॐ अंगनायै नमः । इति संपूज्य । स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत् । ततः नमोऽस्तु सर्पेभ्य इति प्रजापतिर्ऋषिः । अनुष्टुप्छन्दः। नागराजो देवता । पूजने विनियोगः । इति जलं क्षिप्त्वा ॐ नागराजेभ्यो नमः इति संपूज्य ॐ नागाधिपतये नागकन्यासमन्विताय धरापृष्ठिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः नागराजः प्रीयतां नागराजः सुप्रीतो वरदो भवतु ॥ ८ ॥ ततः आग्नेययाम्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः नवमस्तंभे स्कंद इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव। इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ स्कंदप्रियायै नमः । ॐ पश्चिमसन्ध्यायै नमः । इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पूजयेत् । ततः यदक्रंद इति भार्गवऋषिः त्रिष्टुप्छन्दः।स्कंदो देवता। पूजने विनियोगः।इति जलं क्षिप्त्वा ॐ स्कंदाय नमः ।इति संपूज्यॐस्कंदाय सेनाधिपतये शक्तिहस्ताय मयूरसेनासमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एषचंदनाक्षतपुष्पदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।स्कन्दः प्रीयताम्।स्कंदः सुप्रीतो वरदोभवतु।इतिबलिं दद्यात्॥९॥ततो याम्यनैर्ऋत्यांतरालस्तम्भसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवःस्वः दशमस्तंभे वायो इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव । इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत् ॐ वायुप्रियायै वायव्यै नमः । ॐ कौमार्य्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः । इति पूजयेत् । ततः वायो येते इति गृत्समद ऋषिः। गायत्रीछन्दः । वायु

मं० म० देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वायवे नमः। इति संपूज्य ॐ वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय मृगपृष्ठसमाधिरूढाय पू०खं० १
॥ ४७ ॥ सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः। वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति स०दे०प्र०
बलिं दद्यात् ॥ १० ॥ ततो नैर्ऋत्यकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः एकादशस्तंभे सोम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तरं० ४
तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सोमप्रियायै सौम्यै नमः ॐ अमृतकलायै नमः। ॐ विजयायै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः वयःसोमेति बंधुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। सोमो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ सोमाय नमः इति संपूज्य ॐ सोमाय नक्षत्राधिपतये गदाहस्ताय मृगवाहनाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदन माषभक्तबलिर्नमः। सोमः प्रीयताम् सोमः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥११॥ ततो निर्ऋतिवरुणांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः द्वादशस्तंभे वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ वरुणप्रियायै वारुण्यै नमः ॐ बृहस्पत्यै नमः। इति संपूज्य स्तंभशिरसि। ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततः तत्वायामीति शुनःशेप ऋषिः। त्रिष्टुप्छन्दः। वरुणो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वरुणाय नमः। इति संपूज्य ॐ वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय मकरवाहनसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चन्दनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनमाषभक्तबलिर्नमः।वरुणः प्रीयताम् वरुणः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ १२ ॥ ततः पश्चिमवायव्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः त्रयोदशस्तंभे वसव इहागच्छत प्रतिष्ठिता भवत इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ सिद्ध्यमृतायै नमः। विततायै नमः। विभूत्यै नमः इति संपूज्य
स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततो निवेशन इत्यग्निर्ऋषिः। त्रिष्टुप्छंदः वसवो देवताः पूजने विनियोगः। ॥ ४७ ॥
इति जलं क्षिप्त्वा ॐ वसुभ्यो नमः। इति संपूज्य ॐ वसुभ्यः उत्कृष्टपराक्रमेभ्यः अष्टसिद्ध्यधिपतिभ्यः शरहस्तेभ्यः सांगेभ्यः साभरणेभ्यः सशक्तिभ्यः एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। वसवः प्रीयंताम् वसवः सुप्रीता वरदा भवंतु

इति बलिं दद्यात् ॥ १३ ॥ ततो वायुकोणस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः चतुर्दशस्तंभे बलदेव इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ तत्प्रियायै नमः। ॐ अदित्यै नमः ॐ लघिम्न्यै नमः। ॐ सिनीवाल्यै नमः इति. संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततः वण्महानिति जमदग्निऋषिः। बृहती छंदः। बलदेवो देवता। पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ बलदेवाय नमः। इति संपूज्य ॐ बलदेवाय रेवत्यधिपतये लांगलहस्ताय रत्नांकितरथयुक्ताश्वसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः। बलदेवः प्रीयतां बलदेवः सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दद्यात् ॥ १४ ॥ ततः वायव्योदीच्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पंचदशस्तंभे बृहस्पते इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ पौर्णमास्यै नमः। ॐ सावित्र्यै नमः इति संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः इति पूजयेत्। ततः बृहस्पत इति गृत्समद ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। बृहस्पतिर्देवता पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ बृहस्पतये नमः इति संपूज्य ॐ बृहस्पतये सर्वदेवेंद्राधिपतये पुस्तकस्रुवस्रुवहस्ताय हंसपृष्ठिसमधिरूढाय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूप दीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः बृहस्पतिः प्रीयतां बृहस्पतिः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् ॥ १५ ॥ अथोदीच्यै शान्यांतरालस्तंभसमीपे गत्वा ॐ भूर्भुवः स्वः षोडशस्तंभे विश्वकर्मन्निहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इत्यावाह्य तत्राधिदेवताः पूजयेत्। ॐ गायत्र्यै नमः ॐ वास्तव्यै नमः इति ॐ संपूज्य स्तंभशिरसि ॐ नागमात्रे नमः। इति पूजयेत्। ततः विश्वकर्मन्हाविषेति विश्वकर्मा भौवन ऋषिः। त्रिष्टुप् छंदः। विश्वकर्मा देवता पूजने विनियोगः। इति जलं क्षिप्त्वा ॐ विश्वकर्मणे नमः इति संपूज्य ॐ विश्वकर्मणे विश्वाधिपतये दंडहस्ताय सांगाय साभरणाय सशक्तिकाय एष चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपदध्योदनसहितमाषभक्तबलिर्नमः विश्वकर्मा प्रीयतां विश्वकर्मा सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दद्यात् ॥ १६ ॥ इति षोडशस्तंभप्रतिष्ठाप्रयोगः ॥ अथ तोरणध्वजापताकाप्रतिष्ठापूजनम् ॥ पूर्वद्वारे गत्वा "सुदृढं तोरणं पूर्वे न्यग्रोधं कांचनप्रभम्॥ रक्षार्थं चैव बध्नीयाद्देवपूजाख्यकर्मणि ॥" इति

न्यग्रोधपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पूर्वद्वारे सुदृढप्रीतये इमं न्यग्रोधतोरणं चंदनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः सुदृढः प्रीयतां सुदृढः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दत्त्वा तत्रैव दक्षिणवामशाखयोर्ध्वजापताके उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः। इति ध्वजापताके संस्थाप्य तत्र देशे " धनुःप्रभां पताकां च सिंदूरारुणभं ध्वजम्॥ स्थापयामि महेंद्राय शक्तियुक्ताय वज्रिणे" ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजापताकयोर्महेंद्र इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति महेंद्रमावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः महेंद्राय ऐरावतसहिताय इमं गंधाद्युपचारसहित क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। महेंद्रः प्रीयतां महेंद्रः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। पूर्वद्वारपार्श्वे ॐ कादंबरि गजारूढे वज्रहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदक्षिणांसे "दंडं कमंडलुं पश्चादक्षसूत्रमथाभयम्॥ बिभ्रतीं कनकच्छायां ब्राह्मीं बालां च कृष्णभाम्॥" इति ब्राह्मीं ध्यात्वा ह्रीं ऐं ब्राह्मि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारवामांसे ह्रीं ऐं महेश्वरि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा॥ इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारे दक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ गंगायै नमः। ॐ यमुनायै नमः। इति संपूज्य। पूर्वद्वारे शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं च त्वामहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे "आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो। इहागत्य बलिं गृह्ण यज्ञविघ्नं निवारय॥ इत्यावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः धातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। ततो त र से "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधात एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र पुनर्द्वारस्य दक्षिणभागे "वेदीमध्ये ललितकमले कर्णिकायांतरस्थः सप्ताश्वोऽर्कोऽरुणरुचिरवपुः सप्तरज्जुर्द्विबाहुः॥गोत्रेमेऽस्मि

न्बहुविधगुणः काश्यपाख्ये प्रसूतः कालिंगाख्याविषयजनितः प्राङ्मुखः पद्महस्तः ॥" इति सूर्यं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्य अधिदेवता प्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारस्य वामभागे "प्राच्यां भृगुर्भोजकटे प्रजातः स भार्गवः पूर्वमुखः सिताभः ॥ स पंचकोणे स रथाधिरूढो दंडाक्षमालावरदांकपत्रः ॥" इति शुक्रं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः शुक्र अधिप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । [illegible] द्वारतः दक्षिणभागे।"पानपात्रं च खड्गं च अक्षमालां कमंडलुम्॥त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति दिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। द्वारतः उत्तरभागे ॐ "ब्रह्माणीशक्तिसंयुक्तं हंसवाहनभूषितम्। श्वेतवर्णमहं वंदे असितांगं च भैरवम् ॥"इत्यसितांगभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः असितांगभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दत्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपुरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः। अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः इति संपूज्य प्रणमेत्। इति पूर्वद्वारे तोरणध्वजपताकादिप्रतिष्ठापूजनम् ॥ १ ॥ आग्नेयकोणे गत्वा प्राणानायम्य ॐ उं उल्के अजारूढे शक्तिहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा"पताकामग्नये रक्तां ध्वजं चैवाग्निसन्निभम्॥स्वाहायुक्ताय देवाय स्थापयामि हविर्भुजे॥"अग्निप्रीत्यर्थं रक्तध्वजपताकां च स्थापयामि । इति पताकां रक्तं ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् तत्रैव ॐ अग्नये नमः इत्यग्निं संपूज्य ॐ भूर्भुवः स्वः अग्नये पुंडरीकादिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । अग्निः प्रीयतां अग्निः सुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । प्राङ्मुख चतुरस्रपीठे"अनादिपुरुषो रक्तः सर्वदेवमयो हि यः । धूमकेत रणाध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमोनमः ॥" इति सोमं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः

प्राङ्मुखचतुरस्रपीठे यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र सोम अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "ॐ परश्वायुधधर्तारं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम् ॥" इति दिगंबरं ध्यात्वा कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः कुमारदिगंबरः प्रीयताम् । कुमारदिगंबरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । ततः " माहेशीशक्तिसंयुक्तं वृषवाहनभूषितम् ॥ शुद्धस्फटिकसंकाशं वंदेऽहं रुरुभैरवम्" इति रुरुभैरवं ध्यात्वा ॐ रुरुभैरवाय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इत्यग्निकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ २ ॥ ततः दक्षिणद्वारे गत्वा "औदुंबरं च विकटं याम्ये तोरणमुत्तमम् । रक्षार्थं चैव वक्ष्यामि देवपूजाख्यकर्मणि॥" इति औदुंबरपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः दक्षिणद्वारे विकटप्रीतये अयमौदुंबरतोरणचंदनाक्षतपुष्पधूपदीप घृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः।विकटःप्रीयतांविकटः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दत्त्वा तत्रैव दक्षिणवामशाखयोःध्वजपताके उच्छ्रू यामि स्थापयामि नमः।इति ध्वजपताकाः संस्थाप्य तत्र देशे"धूम्रवर्णपताकां च कृष्णवर्णध्वजं तथा॥यमाय स्थापयामीति निहंत्रे कर्मसाक्षिणे॥"ध्वजपताकयोर्यम इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति यममावाह्य ॐभूर्भुवः स्वः यमाय वामनदिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः।यमःप्रीयतांयमःसुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिंदत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा दक्षिणद्वारपार्श्वेॐकंकरालि महिषारूढे दंडहस्ते एह्येहि इमं गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणांसे "ॐ अंकुशं दंडखट्वांगौ पाशं च दधतीं करैः॥ध्येयां बंधूकसंकाशां कौमारींकामदायिनीम्॥" इति कौमारीं ध्यात्वा ॐह्रीं क्लीं कौमारि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।इति बलिं दद्यात्।तत्र द्वारवामांसेॐ ह्रीं श्रीं वैष्णवि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितामिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्र द्वारे दक्षिण वामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ गोदायै नमः ।ॐ कृष्णायै नमः । इति संपूज्य । दक्षिणद्वारे

शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे । इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा ।इति बलिं दद्यात् । तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे"आवाहयाम्यहं धात्रे निधीनां पतये प्रभो॥इहागत्य गृह्ण बलिं यज्ञविघ्न निवारय" इत्यावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः धातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत उत्तरांसे "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो॥स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥"इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधातर् एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे वेदीमध्ये त्रिकोणे त्र्यंगुलमंडले "याम्ये गदाशक्तिगदांश्च शूरो वरप्रदो याम्यमुखोऽतिरक्तः॥ कुजोऽस्त्यवंतीविषये त्रिकोणे तस्मिन्भरद्वाजकुले प्रसूतः॥"इति दक्षिणामुखं कुजं ध्यात्वा ॐभूर्भुवः स्वः अवंतीसमुद्भव भारद्वाजगोत्र दक्षिणमुख भौम अधि देवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् ततः द्वारतो दक्षिणभागे "धनुर्बाणधरं देवं खड्गपात्रधरं तथा ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम् ॥" इति दिगंबरम् ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । द्वारत उत्तर भागे "ॐ कौमारीशक्तिसंयुक्तं शिखिवाहनभूषितम् ॥गौरवर्णधरं देवं वंदे श्रीचंडभैरवम्॥"इति चण्डभैरवं ध्यात्वा ॐभूर्भुवःस्वःचंडभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा तत्रैव चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । भैरवसमीपे ॐचिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यैनमः । द्वारपार्श्वे ॐशंखनिधये नमः। द्वारपुरतःॐपद्मनिधये नमः।ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधः देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः।इति संपूज्य प्रणमेत्।इति दक्षिणद्वारप्रतिष्ठापूजनम्॥३ ॥ततोनैर्ऋतीं दिशमागत्य प्राणानायम्य ॐरक्ताक्षि प्रेतारूढे खड्गहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा "पताकां निर्ऋतीशाय कृष्णनीलमयं ध्वजम् ॥ स्थापयामि सदा रक्षोगणाधीशाय चैव हि ॥" निर्ऋतिप्रीत्यर्थं कृष्ण

नीलध्वजपताकाः स्थापयामि । इति कृष्णं ध्वजं नीलपताकां च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत्। तत्रैव ॐ निर्ऋतये नमः। इति निर्ऋतिं संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये कुमुददिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः निर्ऋतिः प्रीयतां निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा।द्वारदक्षिणतो वेदीमध्ये शूर्पाकारमंडले "पैठीनसो बर्बरदेशजातः शूर्पासनः सिंहगमः सुधूम्रः ॥ याम्याननो रक्षगणस्तु मह्यं वरप्रदः शूलसचर्मखड्गः ॥" इति राहुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यमुख राठिनापुरोद्भव पैठीनसगोत्र राहो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शूर्पाकारपीठे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "शंखचक्रधरं देवं पानपात्रं गदाधरम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति दिगंबरं ध्यात्वा कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः। कुमारदिगंबरःप्रीयतां कुमारदिगंबरःसुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "वैष्णवीशक्तिसंयुक्तं गरुडासनभूषितम् ॥ नीलवर्णधरं देवं वंदे श्रीक्रोधभैरवम् ॥" इति क्रोधभैरवं ध्यात्वा ॐ क्रोधभैरव अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति निर्ऋतिकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ४ ॥ ततः पश्चिमद्वारे गत्वा "अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसन्निभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ॥" इत्यश्वत्थतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमद्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्प धूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः। भीमः प्रीयतां भीमः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव दक्षिणवाम शाखयोः ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः।इति ध्वजपताकाः संस्थाप्य तत्र देशे"श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा॥वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे ॥ " ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजपातकयोर्वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति वरुणमावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः अयं गंधाद्युपचारक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः।वरुणःप्रीयतां वरुणःसुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् पश्चिमद्वारे वामांसे ॐ कौबेरि श्वेताश्वारूढे पाशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति

बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदक्षिणांसे "ॐ मुसलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः॥" इति वाराहीं ध्यात्वा ह्रीं हूँ वाराहि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदेशे दक्षिणवामपार्श्वयोःकलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ रेवायै नमः। ॐ ताप्त्यै नमः। इति संपूज्य पश्चिमद्वारे शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भोकलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितामिमंक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा इति बलिंदद्यात्। तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे "सामवेदस्तु पिंगाक्षो जाग्रतःशक्रदैवतः॥भारद्वाजस्तु विप्रेंद ऋत्विक्त्वं मे मखे भव॥" इति ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः शक्र एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा॥इतिबलिंदद्यात्॥ततःउत्तरांसे 'वरुणोधवलोविष्णुः पुरुषो निर्मलाननः॥पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥" इति वरुणं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वःवरुणएह्येह्यागच्छागच्छइमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्॥तत्रद्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे वेदीमध्ये चापाकारमंडले "चापासनो गृध्रमयः सुनीलःप्रत्यङ्मुखःकाश्यपजःप्रतीच्याम्॥समूलचापेषुवरप्रदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरिः ॥" इति शनैश्चरं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्रशनैश्चर अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितंकुरुकुरु स्वाहा॥इति बलिं दद्यात्॥तत्र द्वारतःदक्षिणभागे "खट्वांगं मुशलं चैव करवालं च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगंबरम्॥" इति दिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। उत्तरभागे "हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम् ॥ वाराहीशक्तिसंयुक्तं वंदे उन्मत्तभैरवम् ॥" इति उन्मत्तभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा । भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः। द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपुरतःॐ पद्मनिधये नमः। ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमः॥इति संपूज्य प्रणमेत्। इति पश्चिमद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥

॥ ५ ॥ ततः वायव्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य ॐ हूं हरितमृगवाहिनि अंकुशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा "पताकां वायवे श्वेतां ध्वजं पीतमयं तथा॥स्थापयाम्यनु च क्षुद्रप्राणादायं सदैव हि॥"वायुप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां पीतध्वजं च स्थापयामि॥इति पताकां श्वेतां पीतं ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् । तत्रैव "वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगसद्गतिम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥" इति वायुमावाह्य ॐ वायवे नमः इति वायुं संपूज्य । ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे अयं गंधाद्युपचारसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः । वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । वायुमुखध्वजाकारमंडले "ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोऽतर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः॥ याम्यैर्वृतो वायुदिगीश खड्गचर्मा सुराचामशतो ह्यनेकः ॥" इति केतुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ अयं गंधाद्युपचारसहितघृतक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः । केतुः प्रीयतां केतुः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् । तत्रैव ॐ कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एषमाषभक्तबलिर्नमः कुमारदिगंबरः प्रीयतां कुमारदिगंबरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । ततो कपालभैरव एह्येह्यागच्छगच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः कपालभैरवः प्रीयतां कपालभैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति वायुकोणे प्रतिष्ठापूजनम् ॥ ६ ॥ ततः उत्तरद्वारसमीपे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य "सुप्रभं तोरणं प्लक्षमुत्तरे च शशिप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि॥" इति प्लक्षपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवःस्वः उत्तरद्वारे सुप्रभतोरणाय सुप्रभप्रीतये अयं प्लक्षतोरणचंदनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः ।सुप्रभः प्रीयतां सुप्रभः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दत्त्वा दक्षिणवामशाखयोः ध्वजंपताकामुच्छ्रयामि स्थापयामि नमः इति ध्वजंपताकां च संस्थाप्य तत्र देशे "श्वेतवर्णपताकां च पद्माभध्वजं तथा ॥ सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्धये॥" एवं कुबेरप्रीत्यर्थं हरितध्वजं हरितपताकां च संस्थाप्य कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ इतिकुबेरमावाह्यॐभूर्भुवः स्वःकुबेरायसार्वभौमादिग्गजसहिताय

अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः। कुबेरः प्रीयतां कुबेरःसुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्, तद्यथा।उत्तरद्वारपार्श्वे ॐ यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणांसे "अक्षस्रजं बीजपरं कपालं पंकजं करैः ॥ वहंतीं हेमसंकाशां महालक्ष्मीं समो समाम् ॥" इति नारसिंहीं ध्यात्वा ॐ ह्रीं क्ष्रौं नारसिंहि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात्। तत्र वामांसे ॐ ह्रीं च्ये चामुंडे एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ वाण्यै नमः। ॐ वेण्यै नमःइति संपूज्य"कर्मनिष्ठो तपोयुक्तो ब्राह्मणो वेदपारगो॥सरस्वतीसूक्तपाठार्थं द्वारे भवतमृत्विजो॥ "अथर्ववेदऋत्विजो उत्तरद्वारे शांतिसूक्तजपार्थत्वेनाऽहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे " बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः॥वैशंपायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥" ॐ भूर्भुवःस्वः वैशंपायन एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत उत्तरांसे "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधातरेह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारस्य पुन र्दक्षिणांसे वेदीमध्ये चतुरस्रपीठे "सौम्यअतिदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेअंगिराः सौम्यमुखः सुपीतः॥ दंडाक्षमालांबुजपात्रहस्तः सिंध्वाख्यदेशो वरदः सुजीवः॥"इति बृहस्पतिं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सिंधुदेशोद्भव अंगिरसगोत्र बृहस्पते अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छा गच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥ इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारतः दक्षिणभागे "शूलायुधं चंडमत्तं शक्तिं चैव च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति शांतकुमारदिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवःस्वःशांतकुमारदिगं

चर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । द्वारत उत्तरभागे "चामुंडाशक्तिसंयुक्तं प्रेतवाहनभूषितम् ॥ रक्तवर्णधरं देवं वंदे भीषणभैरवम् ॥इति भैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमाषभक्तबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पजयेत् । तद्यथा भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः । इति संपज्य प्रणमेत् इत्युत्तरद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ७ ॥ अथैशान्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य कंकालि वृषभारूढे शूलहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् "ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा॥स्थापयामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥"ईशानप्रीत्यर्थं श्वेतपताकांध्वजं च स्थापयामि इति श्वेतपताकां ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् तत्र ईशानाय नमःइति संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वःईशानाय वृषारूढाय अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः।ईशानः प्रीयतां ईशानःसुप्रीतो वरदो भवतु ।इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा उदङ्मुख शरमंडले"उदङ्मुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रःशरमंडलस्थः।सखड्गचर्मोऽपिगदाधरो ज्ञः स्वीशानभागे वरदः सुपीतः॥"इति बुधं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः मागधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव " शूलं डमरुकं चैव शंखचक्रगदाधरम् ॥ खड्गपात्रं च खट्वांगपाशांकुशधरं तथा ॥" इति ईशानं ध्यात्वा ईशान एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् तत्रैव "दिगंबरं कुमारं च सिंह वाहनभूषितम्॥दंष्ट्राकरालवदनमष्टैश्वर्यसुखप्रदम्॥" इति दिगंबरकुमारं ध्यात्वा दिगंबरकुमार एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्।ततः "धारयंतं मदोन्मत्तं वडवानलभैरवम्॥चंडिकाशक्तिसंयुक्तं वंदे संहार भैरवम्॥" इति संहारभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः । भैरवः

प्रीयताम् भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति ईशानकोणप्रतिष्ठापूजनम्॥८॥तत ईशान पूर्वयोर्मध्यदेशे गत्वा ईशानपूर्वमध्ये संसर्पराज चक्रहस्त एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । "स्थापयाम्यंतरिक्षाय पताकां सार्ववर्णिकाम् ॥ कनकाकाररूपाय निराकाराय च ध्वजम् ॥ " ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च स्थापयामि । इति सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च पंचहस्तदंडे स्थापयेत् । तत्र देशे ॐ ब्रह्मन्निहागच्छागच्छ एष गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्न बलिर्नमः ब्रह्मा प्रीयताम्।ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु।इतिबलिंदद्यात्। इतीशानपूर्वमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥९॥ततःपश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्येगत्वा "भूमे त्वं सर्वलोकानामाधारः षड्रसप्रदे ॥ पंचवर्णपताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा ॥" भूमिप्रीत्यर्थं पंचवर्णपताकां ध्वजं च स्थापयामि इति पंचवर्णपताकां ध्वजं च पंचवर्णं पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् । तत्रैव विष्णुप्रिये गजहंसवाहने अक्षसूत्रकमंडलुहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । इति पश्चिमनैर्ऋत्यमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥१०॥ ततो मंडपमध्यदेशे गत्वा " आदित्या वसवो रुद्रा वषट्कारः प्रजापतिः ॥ ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः॥" आदित्यादि देवताप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि । इति ध्वजं चित्रपताकां च सर्वोच्चदंडे स्थापयेत् । आदित्यादिदेवताः इहागच्छत अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिर्नमः । आदित्यादिदेवताः प्रीयंताम् आदित्याद्या देवताः सुप्रीता वरदा भवंतु । इति बलिं दत्वा प्रार्थयेत् । "यज्ञभागभुजो देवाः सर्वकर्मफलप्रदाः ॥ यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो ममाद्य वै ॥" इति प्रार्थयेत् । इति डामरतंत्रादितंत्रे देवता महोत्सवे षोडशस्तंभप्रतिष्ठातोरणध्वजपताकाप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ११ ॥अथाग्निस्थापनप्रयोगः ॥ तत्रादौ कुंडेऽष्टसंस्काराः ॥ कुंडं सव्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुंडस्य पश्चिमभागे उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य मूलेन षडंगं कृत्वा कुंडे स्थंडिले वा अष्टौ संस्कारान् कुर्यात् तद्यथा । देशकालौ संकीर्त्य मया सह ब्राह्मणैः कृतानां कारितानां चामुकदेवताजपानां संपूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेनोक्तहविर्द्रव्यैर्होममहं करिष्ये । तदंगभूतमादावस्मिन्कुंडस्य विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये । इति संकल्प्य । तत आचार्यो मूलमंत्रेण कुंडं

वीक्ष्य १ तेनैव कुशत्रयेण संताड्य २ ॐ मूलेन अस्त्रायफडित्यस्त्र मंत्रेण गोमयोदकं संप्रोक्ष्य तेनैव संलिप्य ३ मूलेन हुं इति वर्म्मणा मुष्टिनासिंच्य ४ ॐ मूलेन हृदयाय नमः इति हृदयमंत्रेण स्रुवेण कुशमूलेन वा प्रागग्रा उत्तरोत्तरक्रमेण तिस्रो रेखाःकुंडे स्थंडिलपरिमाणाः प्रादेशमात्रा वा कृत्वा तदुपरिगा उदगग्राः प्राक् प्राक् क्रमेण तिस्रो रेखाः कुर्यात् । ततस्तासु प्रागग्रासु क्रमेण ॐ मुकुंदाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ पुरंदराय नमः। इति गंधादिभिः संपूज्य उदगग्रासु ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ वैवस्वताय नमः । ॐ इंदवे नमः इति पूजयेत् । एवं पंच मूलसंस्काराः ५ ततः माया (ह्रीं) इति वीजेन कुंडं गंधादिना संपूज्य इति षष्ठः ६ तत आवाहनादिसप्त मुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ७ अस्त्रेणावगुंठ्य इति कुंडेऽष्टसंस्कार ः । ततः कुंडे स्थंडिले वा तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्त साष्टपत्रचतुरस्रयंत्रं लिखित्वा तत्र त्रिकोणे ॐ ह्रीं ॐ इति मंत्रं लिखेत् । तत्र देशे ॐ मंडूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ॐ तत्तन्नाम्ना नवपीठशक्तिभ्यो नमः इति संपूज्य तदुपरि सुवर्णस्य कलशं निधाय॥ॐ ह्रीं वागीशीवागीश्वरयोगपीठात्मने नमः । इत्यासनं दत्त्वा मूलेन हुं इति वर्मणा अभ्युक्ष्य ॐ आग्नेययोगपीठाय नमः । इति पीठं संपूज्य "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तु स्मरेत्तद्योनिमण्डले ॥" इति वागीश्वरीं ध्यात्वा ॐ कुंडाय नमः इति कुंडं गंधादिभिः संपूजयेत् । इति कुंडं संस्कृत्याग्निं प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ सूर्यकांतमणेः सकाशात् वा अरणितः श्रोत्रियागारतो वा कांस्यपात्रेण पिहितमग्निं मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेणादाय कुंडबाह्ये आग्नेय्यां निधाय मूलेन हुं इति वर्मणा उद्घाट्य ज्वलितकुशेन मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादांशं परित्यजेत् । ततो मूलमंत्रेणाग्निं पुरतो धृत्वा तेनैव वीक्ष्य अस्त्रेणाल्पं प्रोक्ष्य तेनैव कुशत्रयेण संताड्य ॐ हुं इति वर्म्मणा संसिच्य ॐ रँ इति वह्निवीजेन चैतन्यं संयोज्य ॐ इति तारेणाभिमंत्र्य धेनुमुद्रया ॐ वं इति सुधावीजेन अमृतीकृत्य ॐ फट् इत्यस्त्रेण संरक्ष्य अवगुंठन्या मुद्रया ॐ हुंइति कवचेनावगुंठ्य ततो बाहुभ्यां वह्निपात्रं समुद्धृत्य ॐ इति प्रणवेन कुंडोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तां स्मरेत्तद्योनिमण्डले॥" इति ध्यात्वा जानुस्पृष्टधरातलो मूलमंत्रेण योनौ शिवरेतोधिया

आत्मसंमुखं वह्निं धृत्वा ॐ हूँ वह्निचैतन्याय नमः इति मंत्रेण कुण्डमध्ये स्थापयेत्। ततः ॐ वागीशीवागीश्वराभ्यां नमः । इत्याच मनं दत्त्वा ॐ चित्पिंगल हन२ दह २ पच २ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा। इति मंत्रेणाग्निं प्रज्वालयेत्। ततो ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य उत्थाय "ॐ अग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताशनम्॥ सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम्॥"इति प्रार्थयेत्। ततोऽग्नेऽमुकनामासिइतिनामकृत्वा वैश्वानरेति मंत्रस्य भृगुर्ऋषिः। गायत्री छन्दः। अग्निर्देवता। रँ बीजम्। स्वाहा शक्तिःहवने प्रार्थनायां च विनियोगः। ॐवैश्वनर जात वेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा"इति मंत्रेणाग्निं पाद्यादिभिः संपूज्य न्यासं कुर्य्यात। तद्यथा ॐ स्त्रूं हिरण्यायै नमः लिंगे१ॐ ष्रूं गगनायै नमः गुदे२ ॐ इयूं रक्तायैनमो मूर्ध्नि३ ॐ व्रूं कृष्णायै नमः वक्त्रे४ ॐ ल्यूं सुप्रभायै नमो नासिकायाम्५ ॐ स्यूं बहुरूपायै नमः नेत्रे ६ ॐ स्यूं अतिरिक्तायै नमः सर्वांगे ७ इत्यग्निजिह्वान्यासः॥ ॐ देवताभ्यो नमो लिंगे १ ॐ पितृभ्यो नमो गुदे २ ॐ गंधर्वेभ्यो नमो मूर्ध्नि ३ ॐ यक्षेभ्यो नमो वक्त्रे ४ ॐ नागेभ्यो नमो नासिकायाम् ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमःनेत्रे ६ ॐ राक्ष सेभ्यो नमः सर्वांगे ७इत्यग्निजिह्वादेवतान्यासः॥ ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा१ ॐस्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरु षाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुँ स्वाहा ४ ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ धनुर्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा ६ इति विन्यसेत्॥ॐ अग्नये जातवेदसे नमो मूर्ध्नि१ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमो वामांसे २ ॐअग्नये हव्यवाहनाय नमो वाम पार्श्वे ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमो वामकट्याम् ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमो लिंगे ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमो दक्षिण कट्याम् ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमो दक्षिणपार्श्वे ७ ॐ अग्नये देवमुखाय नमो दक्षांसे ८ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत्। अथ ध्यानम्॥ "इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयंतं जपाभम्॥ हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः॥१॥"इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य शुद्धोदकेन कुंडं स्थंडिलं वा परिषिच्य प्राचीवर्जदक्षिणे प्रागग्रैः पश्चिमे उदगग्रैः उत्तरे प्राग ग्रैश्च दर्भैरगर्भैर्मध्यस्थमेखलायां परिस्तीर्य्य त्रीन् परिधीन् क्रमान्निक्षिपेत्। ततस्तेषूपरि मेखलाक्रमेण ॐ ब्रह्मणे नमः १ ॐ

विष्णवे नमः २ ॐ शिवाय नमः ३ इति गंधादिभिः संपूज्य योन्यां ॐ गौर्यै नमः । इति गौरीं संपूजयेत् । ततः "ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति वह्निं मध्ये गंधादिभिः संपूज्य कुंडयोनिं वस्त्रेणाच्छाद्य कुंडं नवसूत्रेण संवेष्ट्य कुशकंडिकां कुर्य्यात् । इत्यग्निस्थापनम् ॥ अथ कुशकंडिकाप्रकारः ॥ स्ववामे कुशानास्तीर्य्य तत्र क्रमेण प्रणीतां १ प्रोक्षणीम् २ आज्यस्थालीं ३ स्रुवं ४ स्रुचम् ५ अन्यदप्युपयोगि यत् तन्निधाय पवित्रे कृत्वा मूल मंत्रेण शुद्धांभसा तानि प्रोक्ष्य उत्तानानि विधाय प्रणीतां जलेन पूरयेत् । तत्र "ॐ गंगे च यमुने०" इति मंत्रेण कुश मुद्रया तीर्थान्यावाह्य पवित्रे अक्षतांश्च तत्र निःक्षिप्य उत्पवनं चरेत् । तत उदीच्यां प्रणीतां निधाय प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिप्त्वा पवित्राभ्यां जलमानीय हवनीयं द्रव्यजातं प्रोक्षयेत् । ततो मूलमंत्रेण मूलगायत्र्या वा दक्षिणे पीठमासाद्य तत्र ॐ अणिमादिपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठशक्तीः संपूज्य ॐ ब्रह्मणे नमः १ इति ब्रह्माणं षोडशोपचारैः पूजयेत् । ततो हस्ताभ्यां स्रुक्स्रुवौ धृत्वाधोमुखौ वह्नौ त्रिवारं तापयित्वा वामहस्तेन तौ धृत्वा दक्षिणहस्तेन दर्भैर्यथाक्रमं तदग्रमूलमध्यानि शोधयित्वा प्रोक्षणीजलेन संप्रोक्ष्य पूर्ववत् पुनःप्रताप्य दर्भानग्नौ निक्षिप्य शक्तित्रयं न्यसेत् ॥ मूले ॐ ह्रां इच्छाशक्त्यै नमः १ मध्ये ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः २ अंते ॐ ह्रूं क्रियाशक्त्यै नमः ३ ततः ॐ स्रुवे नमः १ शक्त्यै नमः २ शंभवे नमः ३ इति विन्यस्य तौ सूत्र त्रयेण संवेष्ट्य कुंकुमपुष्पादिभिः संपूज्य आत्मदक्षिणभागे कुशोपरि स्थापयेत् । इति कुशकंडिका ॥ अथ घृतसंस्कारः । आज्यथाली मानीय ॐ फट् इति वारिणा प्रोक्ष्य तस्यामाज्यं निक्षिप्य मूलमंत्रेण गोमुद्रयाऽमृतीकृत्य षट् संस्कारांश्चरेत् । तद्यथा । कुंडोद्धृते वायु कोणे स्थितेंऽगारे ॐ नमः । इति मंत्रेणाज्यस्थालीं निधाय तापनं कृत्वा दर्भयुगलं संदीप्य ॐ नमः इत्याज्ये विनिक्षिपेत् । पुनर्दर्भ युग्मं प्रदीप्य ॐ हुँ इति वर्म्मणा आज्योपरि भ्रामयित्वा दर्भयुग्ममग्नौ विसर्जयेत् । ततः ॐ फडिति मंत्रेण घृते प्रज्वलितं दर्भत्रयं प्रदर्श्य तानग्नौ न्यस्य घृतस्थालीं गृहीत्वा तदंगारान् वह्नौ संयोज्य जलं संस्पृशेत् । ततः अंगुष्ठानामिकाभ्यां प्रादेशसंमितौ दर्भौ गृहीत्वा ॐ

फट्। इत्यस्त्रेण घृतमुत्पूय ॐ नमः। इति मंत्रेणात्मसंमुखं कृत्वा घृतसंप्लवनं कुर्य्यात्। इति घृतस्य षट् संस्काराः ॥ ततः प्रादेशमान मात्रं सग्रंथिदर्भयुग्मं घृतमध्ये निक्षिप्य आज्यस्य द्वौ भागौ कृत्वा कृष्णशुक्लौ पक्षौ स्मरेत्। ततो वामे इडां नाडीं दक्षिणे पिंगलां मध्ये सुषुम्णां ध्यात्वा होमं कुर्य्यात्। अथ होमप्रकारः। ॐ नमः। इति मंत्रेण स्रुवेण दक्षिणभागादाज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्दक्षिणे लोचने) ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये १ पुनः तद्वद्वामभागादाज्यमादाय (अग्नेर्वामलोचने) ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय २ पुनः तन्मध्याज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्भाललोचने) ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ३ इति जुहुयात्। ततः ॐ नम इति स्रुवेणाज्यं दक्षिणभागादादाय वह्निमुखे ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति हुत्वा व्याहृतिहोमं कुर्य्यात्। तद्यथा। ॐ भूः स्वाहा १ ॐ भुवः स्वाहा २ ॐ स्वः स्वाहा ३ इति व्याहृतिहोमं कृत्वा ततो वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मंत्रेण त्रिवारं जुहुयात्।ततः प्रणवेन घृताहुति भिरेकैकवारमग्नेर्गर्भाधानादिषोडशसंस्कारान् कुर्य्यात्।शुभे कर्मणि गर्भाधानादिविवाहांतान् क्रूरकर्मणि गर्भाधानादिमरणांतान् संस्कारान् कुर्य्यात्। तत्र क्रमः। ॐ अस्याग्नेर्गर्भाधानसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥१॥ ॐ अग्नेः पुंसवनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥२॥ॐ अग्नेःसीमंतोन्न यनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥३॥ ॐ अग्नेर्जातकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥४॥ ॐ अग्नेरसुकनामकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥५॥ ॐ अग्नेर्निष्क्रामणं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥६॥ ॐ अग्नेः कर्णवेधं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥७॥ ॐ अग्नेरन्नप्राशनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥८॥ ॐ अग्नेश्चौलसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥९॥ ॐ अग्नेरुपनयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१०॥ ॐ अग्नेर्वेदारंभं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ अग्नेर्महानाम्नि महाघृतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अग्नेरुपनिषद्व्रतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१३॥ ॐ अग्नेर्व्रतविसर्गं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ अग्नेः केशांतगोदानं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १५ ॐ अग्नेर्विवाहसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥ (क्रूरकर्मणि ॐ अग्नेर्मृतिसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥) एवं संस्कारान् संपाद्य पितरौ ॐपार्वतीपरमेश्वराभ्यां नमःइति मंत्रेण संपूज्य आत्मनि योजयित्वा मूलाग्रघृतसंप्लुताःपंच समिधो मनसा ध्यात्वा जुहुयात्।

नीलध्वजपताकाः स्थापयामि । इति कृष्णं ध्वजं नीलपताकां च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत्। तत्रैव ॐनिर्ऋतये नमः। इति निर्ऋतिं संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वः निर्ऋतये कुमुददिग्गजसहिताय अयं गंधाद्युपचारसहितः क्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः निर्ऋतिः प्रीयतां निर्ऋतिः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा।द्वारदक्षिणतो वेदीमध्ये शूर्पाकारमंडले "पैठीनसो बर्बरदेशजातः शूर्पासनः सिंहगमः सुधूम्रः ॥ याम्याननो रक्षगणस्तु मह्यं वरप्रदः शूलसचर्मखड्गः ॥" इति राहुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः याम्यमुख राठिनापुरोद्भव पैठीनसगोत्र राहो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित शूर्पाकारपीठे एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "शंखचक्रधरं देवं पानपात्रं गदाधरम् ॥ त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंवरम्॥"इति दिगंबरं ध्यात्वा कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष बलिर्नमः। कुमारदिगंबरःप्रीयतां कुमारदिगंबरःसुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव "वैष्णवीशक्तिसंयुक्तं गरुडासनभूषितम् ॥ नीलवर्णधरं देवं वंदे श्रीक्रोधभैरवम् ॥" इति क्रोधभैरवं ध्यात्वा ॐ क्रोधभैरव अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भैरवः प्रीयतां भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति निर्ऋतिकोणप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ४ ॥ ततः पश्चिमद्वारे गत्वा "अश्वत्थं पश्चिमे भीमे तोरणं रत्नसन्निभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि ॥" इत्यश्वत्थतोरणं बद्धा ॐ भूर्भुवः स्वः पश्चिमद्वारे भीमप्रीतये अयमश्वत्थतोरणचन्दनाक्षतपुष्प धूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः । भीमः प्रीयतां भीमः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । तत्रैव दक्षिणवाम शाखयोः ध्वजपताका उच्छ्रयामि स्थापयामि नमः।इति ध्वजपताकाः संस्थाप्य तत्र देशे"श्वेतवर्णपताकां च ध्वजं पीतमयं तथा॥वरुणाय जलेशाय स्थापयामि शुभाय मे ॥ " ॐ भूर्भुवः स्वः ध्वजपातकयोर्वरुण इहागच्छ प्रतिष्ठितो भव इति वरुणमावाह्य ॐ भूर्भुवः स्वः अयं गंधाद्युपचारक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः।वरुणःप्रीयतां वरुणःसुप्रीतो वरदो भवतु इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् पश्चिमद्वारे वामांसे ॐकौबेरि श्वेताश्वारूढे पाशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति

बलिं दद्यात्। [redacted] द्वारदक्षिणांसे "ॐ मुसलं करवालं च खेटकं दधती हलम् ॥ करैश्चतुर्भिर्वाराही ध्येया कालघनच्छविः॥" इति वाराहीं ध्यात्वा ह्रीं हूं वाराहि एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। तत्र द्वारदेशे दक्षिणवामपार्श्वयोःकलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ वायै नमः। ॐ ताप्यै नमः। इति संपूज्य पश्चिमद्वारे शांतिसूक्तजपार्थं सर्वविघ्ननिवारणार्थं त्वामहं वृणे। इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भोकलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितमिमंक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा इति बलिंदद्यात्। तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे"सामवेदस्तु पिंगाक्षो जाग्रतःशक्रदैवतः॥भारद्वाजस्तु विप्रेंद्र ऋत्विक्त्वं मे मखे भव॥"इति ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः शक्र एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरुस्वाहा॥इतिबलिंदद्यात्॥ततःउत्तरांसे "वरुणोधवलोविष्णुः पुरुषो निर्मलाननः।पाशहस्तो महाभीमस्तस्मै नित्यं नमोनमः॥"इति वरुणं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वःवरुणएह्येह्यागच्छागच्छइमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्॥तत्रद्वारस्य पुनर्दक्षिणभागे वेदीमध्ये चापाकारमंडले "चापासनो गृध्रमयः सुनीलःप्रत्यङ्मुखःकाश्यपजःप्रतीच्याम्॥समूलचापेषुवरप्रदश्च सौराष्ट्रदेशप्रभवश्च सौरिः॥"इति शनैश्चरं ध्यात्वाॐभूर्भुवःस्वः सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपगोत्रशनैश्चर अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितंकुरुकुरु स्वाहा॥इति बलिं दद्यात्॥तत्र द्वारतःदक्षिणभागे"खट्वांगं मुशलं चैव करवालं च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं भीमं कुमारं च दिगंबरम्॥" इति दिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्। उत्तरभागे"हेमवर्णधरं देवं तथा महिषवाहनम् ॥ वाराहीशक्तिसंयुक्तं वंदे उन्मत्तभैरवम् ॥" इति उन्मत्तभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः उन्मत्तभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ इमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दत्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत्। तद्यथा। भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः। ॐ मायाशक्त्यै नमः। द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः। द्वारपुरतःॐ पद्मनिधये नमः। ऊर्ध्वे ॐ श्रियै नमः। अधो देहल्याम् ॐ वास्तुपुरुषाय नमःइति संपूज्य प्रणमेत्। इति पश्चिमद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥

॥ ५ ॥ ततः वायव्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य ॐ हं हरितमृगवाहिनि अंकुशहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा "पताकां वायवे श्वेतां ध्वजं पीतमयं तथा॥स्थापयाम्यनु च क्षुद्रप्राणादायं सदैव हि॥"वायुप्रीत्यर्थं श्वेतपताकां पीतध्वजं च स्थापयामि।इति पताकां श्वेतां पीतं ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् । तत्रैव"वायुमाकाशगं चैव पवनं वेगसद्गतिम् ॥ आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेयं प्रतिगृह्यताम् ॥" इति वायुमावाह्य ॐ वायवे नमः इति वायुं संपूज्य । ॐ भूर्भुवःस्वः वायवे अयं गंधाद्युपचारसघृतक्षीरान्नसहितमाषभक्तबलिर्नमः । वायुः प्रीयतां वायुः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा । वायुमुखध्वजाकारमंडले "ध्वजासनो जैमिनिगोत्रजातोऽतर्वेद्यधीशोऽथ विचित्रवर्णः॥ याम्यैर्वृतो वायुदिगीश खड्गचर्मा सुराचामशतो ह्यनेकः ॥ " इति केतुं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः अंतर्वेदिसमुद्भव जैमिनिसगोत्र केतो अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छागच्छ अयं गंधाद्युपचारसहितघृतक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः । केतुः प्रीयतां केतुः सुप्रीतो वरदो भवतु। इति बलिं दद्यात् । तत्रैव ॐ कुमार दिगंबर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एषमाषभक्तबलिर्नमः कुमारदिगंबरः प्रीयतां कुमारदिगंबरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । ततो कपालभैरव एह्येह्यागच्छगच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः कपालभैरवः प्रीयतां कपालभैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दद्यात् । इति वायुकोणे प्रतिष्ठापूजनम् ॥ ६ ॥ ततः उत्तरद्वारसमीपे गत्वा आचम्य प्राणानायम्य " सुप्रभं तोरणं प्लक्षमुत्तरे च शशिप्रभम् ॥ रक्षार्थं चैव बध्नामि देवपूजाख्यकर्मणि॥" इति प्लक्षपत्रतोरणं बद्ध्वा ॐ भूर्भुवःस्वः उत्तरद्वारे सुप्रभतोरणाय सुप्रभप्रीतये अयं प्लक्षतोरणचंदनाक्षतपुष्पधूपदीपघृताक्तक्षीरान्नयुक्तमाषभक्तबलिर्नमः ।सुप्रभः प्रीयतां सुप्रभः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति बलिं दत्त्वा दक्षिणवामशाखयोः ध्वजंपताकामुच्छ्रयामि स्थापयामि नमः इति ध्वजंपताकां च संस्थाप्य तत्र देशे "श्वेतवर्णपताकां च पद्माभत्रध्वजं तथा ॥ सोमाय स्थापयाम्येव धनधान्यसमृद्धये॥" एवं कुबेरप्रीत्यर्थं हरितध्वजं हरितपताकां च संस्थाप्य कुबेर इहागच्छ इह तिष्ठ इतिकुबेरमावाह्यॐभूर्भुवः स्वःकुबेरायसार्वभौमादिग्गजसहिताय

अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमः। कुबेरः प्रीयतां कुबेरः सुप्रीतो वरदो भवतु । इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्, तद्यथा।उत्तरद्वारपार्श्वे ॐ यं यक्षिणि सिंहवाहिनि गदाहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणांसे "अक्षस्रजं बीजपरं कपालं पंकजं करैः॥ वहंतीं हेमसंकाशां महालक्ष्मीं समो समाम् ॥" इति नारसिंहीं ध्यात्वा ॐ ह्रीं क्ष्रौं नारसिंहि एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात्। तत्र वामांसे ॐ ह्रीं ख्ये चामुंडे एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारदक्षिणवामशाखयोः कलशद्वयं संस्थाप्य रत्नप्रक्षेपं कृत्वा द्वारस्थितकलशद्वये ॐ वाण्यै नमः । ॐ वेण्यै नमः।इति संपूज्य"कर्मनिष्ठौ तपोयुक्तौ ब्राह्मणो वेदपारगौ॥सरस्वतीसूक्तपाठार्थं द्वारे भवतमृत्विजौ॥ "अथर्ववेदऋत्विजौ उत्तरद्वारे शांतिसूक्तजपार्थत्वेनाऽहं वृणे । इति यज्ञसूत्रं बद्ध्वा भो कलश एह्येहि गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात्।तत्रैव पुनर्दक्षिणांसे " बृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो रुद्रदैवतः॥वैशंपायन विप्रेन्द्र ऋत्विक् त्वं मे मखे भव॥" ॐ भूर्भुवःस्वः वैशंपायन एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत उत्तरांसे "विकृतिः प्रकृतिर्यस्य विधाता विश्वकृत्प्रभो ॥ स मे भवतु सुप्रीतो यज्ञविघ्नं निवारय॥" इति ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः विधातरेह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारस्य पुन र्दक्षिणांसे वेदीमध्ये चतुरस्रपीठे "सौम्येऽतिदीर्घे चतुरस्रपीठे रथेऽगिराः सौम्यमुखः सुपीतः॥ दंडाक्षमालांबुजपात्रहस्तः सिंध्वाख्यदेशो वरदः सुजीवः॥"इति बृहस्पतिं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः सिंधुदेशोद्भव अंगिरसगोत्र बृहस्पते अधिदेवताप्रत्यधिदेवतासहित एह्येह्यागच्छा गच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा ॥इति बलिं दद्यात् । तत्र द्वारतः दक्षिणभागे "शूलायुधं चंडमत्तं शक्तिं चैव च पात्रकम्॥त्रिनेत्रं वरदं शांतं कुमारं च दिगंबरम्॥"इति शांतकुमारदिगंबरं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवःस्वःशांतकुमारदिगं

वर एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाक्षतपुष्पधूपदीपसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । द्वारत उत्तरभागे "चामुंडाशक्तिसंयुक्तं प्रेतवाहनभूषितम् ॥ रक्तवर्णधरं देवं वंदे भीषणभैरवम् ॥इति भैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः भीषणभैरव एह्येह्याग च्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमाषभक्तबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दत्त्वा चिच्छक्त्यादिदेवताः पूजयेत् । तद्यथा भैरवसमीपे ॐ चिच्छक्त्यै नमः । ॐ मायाशक्त्यै नमः । द्वारपार्श्वे ॐ शंखनिधये नमः । द्वारपरतः ॐ पद्मनिधये नमः । ऊर्ध्वे ॐ द्वारश्रियै नमः । अधो देहल्याम् ॥ ॐ वास्तुपुरुषाय नमः । इति संपूज्य प्रणमेत् इत्युत्तरद्वारप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ७ ॥ अथैशान्यकोणे गत्वा प्राणानायम्य कंकालि वृषभारूढे शूलहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात् "ईशानाय ध्वजं श्वेतं पताकां चैव वै तथा॥स्थापयामि महेशाय वृषारूढाय शूलिने॥"ईशानप्रीत्यर्थं श्वेतपताकांध्वजं च स्थापयामि इति श्वेतपताकां ध्वजं च पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् तत्र ईशानाय नमःइति संपूज्य ॐ भूर्भुवःस्वःईशानाय वृषारूढाय अयं गंधाद्यु पचारसहितक्षीरान्नमाषभक्तबलिर्नमःईशानः प्रीयतां ईशानःसुप्रीतो वरदो भवतु ।इति बलिं दत्त्वा तत्राधिदेवताः पूजयेत्।तद्यथा उदङ्मुख शरमंडले"उदङ्मुखो मागधजो हरिस्थश्चात्रेयगोत्रःशरमंडलस्थः।सखड्गचर्माऽपिगदाधरो ज्ञः स्वीशानभागे वरदः सुपीतः॥"इति बुधं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः मागधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुध इहागच्छागच्छ इमं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् । तत्रैव " शूलं डमरुकं चैव शंखचक्रगदाधरम् ॥ खड्गपात्रं च खट्वांगपाशांकुशधरं तथा ॥" इति ईशानं ध्यात्वा ईशान एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा इति बलिं दद्यात् तत्रैव "दिगंबरं कुमारं च सिंह वाहनभूषितम्॥दंष्ट्राकरालवदनमष्टैश्वर्यसुखप्रदम्॥" इति दिगंबरकुमारं ध्यात्वा दिगंबरकुमार एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्णगृह्ण ममेप्सितं कुरुकुरु स्वाहा। इति बलिं दद्यात्।ततः "धारयंतं मदोन्मत्तं वडवानलभैरवम्॥चंडिकाशक्तिसंयुक्तं वंदे संहार भैरवम्॥" इति संहारभैरवं ध्यात्वा ॐ भूर्भुवः स्वः संहारभैरव एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहित एष माषभक्तबलिर्नमः । भैरवः

प्रीयताम् भैरवः सुप्रीतो वरदो भवतु।इति ईशानकोणप्रतिष्ठापूजनम्॥८॥तत ईशान पूर्वयोर्मध्यदेशे गत्वा ईशानपूर्वमध्ये संसर्पराज चक्रहस्त एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितमिमं क्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । "स्थापयाम्यंतरिक्षाय पताकां सार्ववर्णिकाम् ॥ कनकाकाररूपाय निराकाराय च ध्वजम् ॥ " ब्रह्मणे सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च स्थापयामि । इति सार्ववर्णिकां पताकां कनकरूपं ध्वजं च पंचहस्तदंडे स्थापयेत् । तत्र देशे ॐ ब्रह्मन्निहागच्छागच्छ एष गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्न बलिर्नमः ब्रह्मा प्रीयताम्।ब्रह्मा सुप्रीतो वरदो भवतु।इतिबलिंदद्यात्। इतीशानपूर्वमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥९॥ततःपश्चिमनैर्ऋत्ययोर्मध्येगत्वा "भूमे त्वं सर्वलोकानामाधारः षड्रसप्रदे ॥ पंचवर्णपताकां च स्थापयामि ध्वजं तथा॥"भूमिप्रीत्यर्थं पंचवर्णपताकां ध्वजं च स्थापयामि इति पंचवर्णपताकां ध्वजं च पंचवर्णं पंचहस्तदंडे उच्छ्रयेत् । तत्रैव विष्णुप्रिये गजहंसवाहने अक्षसूत्रकमंडलुहस्ते एह्येह्यागच्छागच्छ गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिं गृह्ण गृह्ण ममेप्सितं कुरु कुरु स्वाहा । इति बलिं दद्यात् । इति पश्चिमनैर्ऋत्यमध्यदेशप्रतिष्ठापूजनम्॥१०॥ ततो मंडपमध्यदेशे गत्वा " आदित्या वसवो रुद्रा वषट्कारः प्रजापतिः ॥ ध्वजं चित्रपताकां च स्थापयामि हि भो सुराः॥" आदित्यादि देवताप्रीत्यर्थं ध्वजं पताकां स्थापयामि । इति ध्वजं चित्रपताकां च सर्वोच्चदंडे स्थापयेत् । आदित्यादिदेवताः इहागच्छत अयं गंधाद्युपचारसहितक्षीरान्नबलिर्नमः । आदित्यादिदेवताः प्रीयंताम् आदित्याद्या देवताः सुप्रीता वरदा भवंतु । इति बलिं दत्वा प्रार्थयेत् । "यज्ञभागभुजो देवाः सर्वकर्मफलप्रदाः ॥ यज्ञं पातुमिहागत्य नमस्तेभ्यो ममाद्य वै ॥" इति प्रार्थयेत् । इति डामरतंत्रादितंत्रे देवता महोत्सवे षोडशस्तंभप्रतिष्ठातोरणध्वजपताकाप्रतिष्ठापूजनम् ॥ ११ ॥अथाग्निस्थापनप्रयोगः ॥ तत्रादौ कुंडेऽष्टसंस्काराः ॥ कुंडं सव्यं प्रदक्षिणीकृत्य कुंडस्य पश्चिमभागे उपविश्य आचम्य मूलेन प्राणानायम्य मूलेन षडंगं कृत्वा कुंडे स्थंडिले वा अष्टौ संस्कारान् कुर्यात् तद्यथा । देशकालौ संकीर्त्य मया सह ब्राह्मणैः कृतानां कारितानां चामुकदेवताजपानां संपूर्णतासिद्ध्यर्थं जपदशांशेनोक्तहविर्द्रव्यैर्होममहं करिष्ये । तदंगभूतमादावस्मिन्कुंडे तस्य विध्युक्तमार्गेण परिसमूहनादिसंस्कारान्करिष्ये । इति संकल्प्य । तत आचार्यो मूलमंत्रेण कुंडं

वीक्ष्य १ तेनैव कुशत्रयेण संताड्य २ ॐ मूलेन अस्त्रायफडित्यस्त्र मंत्रेण गोमयोदकं संप्रोक्ष्य तेनैव संलिप्य ३ मूलेन हुं इति वर्म्मणा मुष्टिनासिंच्य४ ॐ मूलेन हृदयाय नमः इति हृदयमंत्रेण स्रुवेण कुशमूलेन वा प्रागग्रा उत्तरोत्तरक्रमेण तिस्रो रेखाः कुंडे स्थंडिलपरिमाणाः प्रादेशमात्रा वा कृत्वा तदुपरिगा उदगग्राः प्राक् प्राक् क्रमेण तिस्रो रेखाः कुर्यात् । ततस्तासु प्रागग्रासु क्रमेण ॐ मुकुंदाय नमः । ॐ ईशानाय नमः । ॐ पुरंदराय नमः । इति गंधादिभिः संपूज्य उदगग्रासु ॐ ब्रह्मणे नमः ॐ वैवस्वताय नमः । ॐ इंदवे नमः इति पूजयेत् । एवं पंच भूसंस्काराः ५ ततः माया (ह्रीं) इति बीजेन कुंडं गंधादिना संपूज्य इति षष्ठः ६ तत आवाहनादिसप्त मुद्राः प्रदर्शयेदिति सप्तमः ७ अस्त्रेणावगुंठ्य इति कुंडेऽष्टसंस्कारः । ततः कुंडे स्थंडिले वा तन्मध्ये त्रिकोणषट्कोणवृत्त साष्टपत्रचतुरस्रयंत्रं लिखित्वा तत्र त्रिकोणे ॐ ह्रीं ॐ इति मंत्रं लिखेत् । तत्र देशे ॐ मंडूकादिपरतत्त्वान्तपीठदेवताभ्यो नमः ॐ तत्तन्नाम्ना नवपीठशक्तिभ्यो नमः इति संपूज्य तदुपरि सुवर्णस्य कलशं निधाय॥ॐ ह्रीं वागीशीवागीश्वरयोगपीठात्मने नमः । इत्यासनं दत्त्वा मूलेन हुं इति वर्मणा अभ्युक्ष्य ॐ आग्नेययोगपीठाय नमः । इति पीठं संपूज्य "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तु स्मरेत्तद्योनिमण्डले ॥" इति वागीश्वरीं ध्यात्वा ॐ कुंडाय नमः इति कुंडं गंधादिभिः संपूजयेत् । इति कुंडं संस्कृत्याग्निं प्रतिष्ठापयेत् ॥ अथाग्निस्थापनम् ॥ सूर्यकांतमणेः सकाशात् वा अरणितः श्रोत्रियागारतो वा कांस्यपात्रेण पिहितमाग्निं मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेणादाय कुंडबाह्ये आग्नेय्यां निधाय मूलेन हुं इति वर्मणा उद्घाट्य ज्वलितकुशेन मूलेन फट् इत्यस्त्रमंत्रेण नैर्ऋत्ये क्रव्यादांशं परित्यजेत् । ततो मूलमंत्रेणाग्निं पुरतो धृत्वा तेनैव वीक्ष्य अस्त्रेणालयं प्रोक्ष्य तेनैव कुशत्रयेण संताड्य ॐ हुं इति वर्म्मणा संसिच्य ॐ रँ इति वह्निबीजेन चैतन्यं संयोज्य ॐ इति तारेणाभिमंत्र्य धेनुमुद्रया ॐ वं इति सुधाबीजेन अमृतीकृत्य ॐ फट् इत्यस्त्रेण संरक्ष्य अवगुंठन्या मुद्रया ॐ हुंइति कवचेनावगुंठ्य ततो बाहुभ्यां वह्निपात्रं समुद्धृत्य ॐ इति प्रणवेन कुंडोपरि त्रिर्भ्रामयित्वा "शय्यागतामृतुस्नातां नीलेन्दीवरधारिणीम् ॥ देवेन भुज्यमानां तां स्मरेत्तद्योनिमण्डले॥" इति ध्यात्वा जानुस्पृष्टधरातलो मूलमंत्रेण योनौ शिवरेतोधिया

आत्मसंमुखं वह्निं धृत्वा ॐ हूँ वह्निचैतन्याय नमः इति मंत्रेण कुण्डमध्ये स्थापयेत् । ततः ॐ वागीशीवागीश्वराभ्यां नमः । इत्याचमनं दत्त्वा ॐ चित्पिंगल हन२ दह २ पच २ सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा । इति मंत्रेणाग्निं प्रज्वालयेत् । ततो ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य उत्थाय "ॐ अग्निं प्रज्वलितं वंदे जातवेदं हुताशनम् ॥ सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥" इति प्रार्थयेत् । ततोऽग्नेऽमुकनामासिइतिनामकृत्वा वैश्वानरेति मंत्रस्य भृगुर्ऋषिः । गायत्री छन्दः । अग्निर्देवता । रँ बीजम् । स्वाहा शक्तिः हवने प्रार्थनायां च विनियोगः । ॐवैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति मंत्रेणाग्निं पाद्यादिभिः संपूज्य न्यासं कुर्यात् । तद्यथा ॐ स्रूं हिरण्यायै नमः लिंगे१ ॐ ष्रूं गगनायै नमः गुदे२ ॐ श्यूं रक्तायै नमो मूर्ध्नि३ ॐ ष्रूं कृष्णायै नमः वक्त्रे४ ॐ ल्यूं सुप्रभायै नमो नासिकायाम्५ ॐ र्यूं बहुरूपायै नमः नेत्रे ६ ॐ र्यूं अतिरिक्तायै नमः सर्वांगे ७ इत्यग्निजिह्वान्यासः ॥ ॐ देवताभ्यो नमो लिंगे १ ॐ पितृभ्यो नमो गुदे २ ॐ गंधर्वेभ्यो नमो मूर्ध्नि ३ ॐ यक्षेभ्यो नमो वक्त्रे ४ ॐ नागेभ्यो नमो नासिकायाम् ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः नेत्रे ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः सर्वांगे ७ इत्यग्निजिह्वादेवतान्यासः ॥ ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा१ ॐस्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुँ स्वाहा ४ ॐ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ धनुर्धराय अस्त्राय फट् स्वाहा ६ इति विन्यसेत् ॥ ॐ अग्नये जातवेदसे नमो मूर्ध्नि१ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमो वामांसे २ ॐअग्नये हव्यवाहनाय नमो वामपार्श्वे ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमो वामकट्याम् ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमो लिंगे ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमो दक्षिणकट्याम् ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमो दक्षिणपार्श्वे ७ ॐ अग्नये देवमुखाय नमो दक्षांसे ८ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम् ॥ " इष्टं शक्तिं स्वस्तिकाभीतिमुच्चैर्दीर्घैर्दोर्भिर्धारयंतं जपाभम् ॥ हेमाकल्पं पद्मसंस्थं त्रिनेत्रं ध्यायेद्वह्निं बद्धमौलिं जटाभिः ॥१॥" इति ध्यात्वा मानसोपचारैः संपूज्य शुद्धोदकेन कुंडं स्थंडिलं वा परिषिच्य प्राचीवर्जदक्षिणे प्रागग्रैः पश्चिमे उदगग्रैः उत्तरे प्रागग्रैश्च दर्भैरगर्भैर्मध्यस्थमेखलायां परिस्तीर्य्य त्रीन् परिधीन् क्रमान्निक्षिपेत् । ततस्तेषूपरि मेखलाक्रमेण ॐ ब्रह्मणे नमः १ ॐ

विष्णवे नमः २ ॐ शिवाय नमः ३ इति गंधादिभिः संपूज्य योन्यां ॐ गौर्यै नमः । इति गौरीं संपूजयेत् । ततः " ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति वह्निं मध्ये गंधादिभिः संपूज्य कुंडयोनिं वस्त्रेणाच्छाद्य कुंडं नवसूत्रेण संवेष्ट्य कुशकंडिकां कुर्य्यात् । इत्यग्निस्थापनम् ॥ अथ कुशकंडिकाप्रकारः ॥ स्ववामे कुशानास्तीर्य्य तत्र क्रमेण प्रणीतां १ प्रोक्षणीम् २ आज्यस्थालीं ३ स्रुवं ४ स्रुचम् ५ अन्यदप्युपयोगि यत् तन्निधाय पवित्रे कृत्वा मूलमंत्रेण शुद्धांभसा तानि प्रोक्ष्य उत्तानानि विधाय प्रणीतां जलेन पूरयेत् । तत्र " ॐ गंगे च यमुने०" इति मंत्रेण कुशमुद्रया तीर्थान्यावाह्य पवित्रे अक्षतांश्च तत्र निःक्षिप्य उत्पवनं चरेत् । तत उदीच्यां प्रणीतां निधाय प्रोक्षण्यां तज्जलं क्षिप्त्वा पवित्राभ्यां जलमानीय हवनीयं द्रव्यजातं प्रोक्षयेत् । ततो मूलमंत्रेण मूलगायत्र्या वा दक्षिणे पीठमासाद्य तत्र ॐ अणिमादिपीठदेवताभ्यो नमः । इति पीठशक्तीः संपूज्य ॐ ब्रह्मणे नमः १ इति ब्रह्माणं षोडशोपचारैः पजयेत् । ततो हस्ताभ्यां स्रुक्स्रुवौ धृत्वाधोमुखौ वह्नौ त्रिवारं तापयित्वा वामहस्तेन तौ धृत्वा दक्षिणहस्तेन दर्भैर्यथाक्रमं तदग्रमूलमध्यानि शोधयित्वा प्रोक्षणीजलेन संप्रोक्ष्य पूर्ववत् पुनः प्रताप्य दर्भानग्नौ निक्षिप्य शक्तित्रयं न्यसेत् ॥ मूले ॐ ह्रां इच्छाशक्त्यै नमः १ मध्ये ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः २ अंते ॐ ह्रूं क्रियाशक्त्यै नमः ३ ततः ॐ स्रुवे नमः १ शक्त्यै नमः २ शंभवे नमः ३ इति विन्यस्य तौ सूत्रत्रयेण संवेष्ट्य कुंकुमपुष्पादिभिः संपूज्य आत्मदक्षिणभागे कुशोपरि स्थापयेत् । इति कुशकंडिका ॥ अथ घृतसंस्कारः । आज्यथालीमानीय ॐ फट् इति वारिणा प्रोक्ष्य तस्यामाज्यं निक्षिप्य मूलमंत्रेण गोमुद्रयाऽमृतीकृत्य षट् संस्कारांश्चरेत् । तद्यथा । कुंडोद्धृते वायुकोणे स्थितेंऽगारे ॐ नमः । इति मंत्रेणाज्यस्थालीं निधाय तापनं कृत्वा दर्भयुगलं संदीप्य ॐ नमः इत्याज्ये त्रिनिक्षिपेत् । पुनर्दर्भयुग्मं प्रदीप्य ॐ हुं इति वर्म्मणा आज्योपरि भ्रामयित्वा दर्भयुग्ममग्नौ विसर्जयेत्। ततः ॐ फडिति मंत्रेण घृते प्रज्वलितं दर्भत्रयं प्रदर्श्य तानग्नौ न्यस्य घृतस्थालीं गृहीत्वा तदंगारान् वह्नौ संयोज्य जलं संस्पृशेत् । ततः अंगुष्ठानामिकाभ्यां प्रादेशसंमितौ दर्भौ गृहीत्वा ॐ

फट्। इत्यस्त्रेण घृतमुत्पूय ॐ नमः। इति मंत्रेणात्मसंमुखं कृत्वा घृतसंप्लवनं कुर्य्यात्। इति घृतस्य षट् संस्काराः ॥ ततः प्रादेशमान मात्रं सग्रंथिदर्भयुग्मं घृतमध्ये निक्षिप्य आज्यस्य द्वौ भागौ कृत्वा कृष्णशुक्लौ पक्षौ स्मरेत्। ततो वामे इडां नाडीं दक्षिणे पिंगलां मध्ये सुषुम्णां ध्यात्वा होमं कुर्य्यात्। अथ होमप्रकारः। ॐ नमः। इति मंत्रेण स्रुवेण दक्षिणभागादाज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्दक्षिणे लोचने) ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये १ पुनः तद्वद्वामभागादाज्यमादाय (अग्नेर्वामलोचने) ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय २ पुनः तन्मध्याज्यं गृहीत्वा (अग्नेर्भाललोचने) ॐ अग्नीषोमाभ्यां स्वाहा ३ इति जुहुयात्। ततः ॐ नम इति स्रुवेणाज्यं दक्षिणभागादादाय वह्निमुखे ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा इति हुत्वा व्याहृतिहोमं कुर्य्यात्। तद्यथा। ॐ भूः स्वाहा २ ॐ भुवः स्वाहा २ ॐ स्वः स्वाहा ३ इति व्याहृतिहोमं कृत्वा ततो वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा इति मंत्रेण त्रिवारं जुहुयात्। ततः प्रणवेन घृताहुतिभिरेकैकवारमग्नेर्गर्भाधानादिषोडशसंस्कारान् कुर्य्यात्। शुभे कर्मणि गर्भाधानादिविवाहांतान् क्रूरकर्मणि गर्भाधानादिमरणांतान् संस्कारान् कुर्य्यात्। तत्र क्रमः। ॐ अस्याग्नेर्गर्भाधानसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥१॥ ॐ अग्नेः पुंसवनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥२॥ ॐ अग्नेःसीमंतोन्नयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥३॥ ॐ अग्नेर्जातकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥४॥ ॐ अग्नेरमुकनामकर्मसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥५॥ ॐ अग्नेर्निष्क्रामणं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥६॥ ॐ अग्नेः कर्णवेधं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥७॥ ॐ अग्नेरन्नप्राशनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥८॥ ॐ अग्नेश्चौलसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥९॥ ॐ अग्नेरुपनयनं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥१०॥ ॐ अग्नेर्वेदारंभं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ ११ ॥ ॐ अग्नेर्महानाम्नि महाघृतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १२ ॥ ॐ अग्नेरुपनिषद्व्रतं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ अग्नेर्व्रतविसर्गं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १४ ॥ ॐ अग्नेः केशांतगोदानं संस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १५ ॥ ॐ अग्नेर्विवाहसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥ (क्रूरकर्माणि ॐ अग्नेर्मृतिसंस्कारं करोमि स्वाहा ॥ १६ ॥) एवं संस्कारान् संपाद्य वह्नेः पितरौ ॐपार्वतीपरमेश्वराभ्यां नमःइति मंत्रेण संपूज्य आत्मनि योजयित्वा मूलाग्रघृतसंप्लुताःपंच समिधो मनसा ध्यात्वा जुहुयात्। ततः

अग्नेः सप्तजिह्वादिभक्तिभ्यस्तत्तन्मंत्रेणैकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् । तत्र क्रमः ॐ रयूं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा इदं हिरण्यायै अग्निजिह्वायै न मम १ ॐ ष्ठ्रूं गगनायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं गगनायै अग्निजिह्वायै न मम २ ॐ श्र्यूं रक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं रक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ३ ॐ व्यूं कृष्णायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं कृष्णायै अग्निजिह्वायै न मम ४ ॐ ल्यूं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं सुप्रभायै अग्निजिह्वायै न मम ५ ॐ न्यूँ बहुरूपायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदं बहुरूपायै अग्निजिह्वायै न मम ६ ॐ यूं अतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै नमः स्वाहा । इदमतिरिक्तायै अग्निजिह्वायै न मम ७ इत्यग्निजिह्वाहोमः ॥ ॐ अमर्त्याय नमः । स्वाहा इदममर्त्याय न मम १ ॐपितृभ्यो नमः स्वाहा॥ इदं पितृभ्यो न मम २ ॐ गंधर्वेभ्यो नमःस्वाहा॥ इदं गंधर्वेभ्यो न मम ३ ॐ यक्षेभ्यो नमः स्वाहा । इदं यक्षेभ्यो न मम ४ ॐ नागेभ्यो नमः स्वाहा । इदं नागेभ्यो न मम ५ ॐ पिशाचेभ्यो नमः स्वाहा । इदं पिशाचेभ्यो नमः ६ ॐ राक्षसेभ्यो नमः स्वाहा इदं राक्षसेभ्यो न मम ॥७॥ इत्यग्निजिह्वादिदेवताहोमः॥ अथाग्न्यंगदेवताहोमः । ततः केसरेषु अग्न्यादिकोणमध्ये दिक्षु च । ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः स्वाहा १ ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा २ ॐ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट् स्वाहा ३ ॐ धूम्रव्यापिने कवचाय हुं स्वाहा ४ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् स्वाहा ५ ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् स्वाहा ६ इत्यग्न्यंगदेवताहोमः । ततः पूर्वादिदलेषु । ॐ अग्नये जातवेदसे नमः स्वाहा १ ॐ अग्नये सप्तजिह्वाय नमः स्वाहा २ ॐ अग्नये हव्यवाहनाय नमः स्वाहा ३ ॐ अग्नये अश्वोदरजाय नमः स्वाहा ४ ॐ अग्नये वैश्वानराय नमः स्वाहा ५ ॐ अग्नये कौमारतेजसे नमः स्वाहा ६ ॐ अग्नये विश्वमुखाय नमः स्वाहा ७ अग्न ये देवमुखाय नमः स्वाहा ८ इत्यग्न्यष्टमूर्त्तिहोमः॥ ॐ लं इन्द्राय सुराधिपतये वज्रहस्ताय नमः स्वाहा १ ॐ रं वह्नये तेजोधिपतये छागवाहनाय शक्तिहस्ताय नमः स्वाहा २ ॐ मं यमाय प्रेताधिपतये दंडहस्ताय नमः स्वाहा ३ ॐ क्षं नैर्ऋतये रक्षोधिपतये खड्गहस्ताय नमः स्वाहा । ४ ॐ वं वरुणाय जलाधिपतये पाशहस्ताय नमः स्वाहा ५ ॐ यं वायवे प्राणाधिपतये ध्वजहस्ताय नमः स्वाहा ६ ॐ सों सोमाय क्षेत्राधि

पतये गदाहस्ताय नमः स्वाहा ७ ॐ हं ईशानाय विद्याधिपतये त्रिशूलहस्ताय नमः स्वाहा ८ ॐ आं ब्रह्मणे त्रैलोक्याधिपतये पद्महस्ताय नमः स्वाहा ९ ॐ ह्रीं अनंताय नागाधिपतये चक्रहस्ताय नमः स्वाहा १० इति सायुधदिक्पालहोमः ॥ एवं सायुधदिक्पालहोमं कृत्वा ततः स्त्रुवेण चतुर्वारमाज्यमादाय स्रुचि निधाय स्त्रुवेण तां पिधाय उत्तिष्ठन् "ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा वौषट्" इत्यनेन जुहुयात् । ततो विघ्नेश्वरमंत्रेण दशाहुतीर्जुहुयात् । तत्र क्रमः । ॐ स्वाहा १ ॐ श्रीं स्वाहा २ ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा ३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा ५ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौं गं स्वाहा ६ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये स्वाहा ७ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद स्वाहा ८ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे स्वाहा ९ ॐ श्रींह्रींक्लींग्लौंगं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा १० एवं दशाहुतीर्हुत्वा पुनः समस्तमंत्रेश्चतुर्वारं जुहुयात् । एवं गणपति होमं कृत्वा देवतायाः पीठ पूजयेत् । ततो हुताशने इष्टदेवतामावाह्य आवाहनादिकां मुद्रां प्रदर्श्य वह्निरूपां तां देवतां संपूज्य ततो वह्निरूपां देवतां भावयन् देवस्य मुखे मूलमंत्रेण पंचविंशतिसंख्यया घृताहुतीर्हुत्वा वह्निदेवतयोरात्मना सहैक्यं विभाव्य मूलमंत्रेण नाडीसंधानार्थ मेकादशाहुतीराज्येन जुहुयात् । तत इष्टदेवताया आवरणदेवताभ्य एकैकां घृताहुतिं हुत्वा पुनर्मूलमंत्रेण दशधा घृतं जुहुयात् । इत्याज्यहोमं कृत्वा कल्पोक्तद्रव्येण जपदशांशं प्रयोगोक्तसंख्यं वा मूलमंत्रेण हुत्वा होमं समाप्य पूर्णाहुतिं दद्यात् । तत्र क्रमः । होमावशिष्टेनाज्येन स्रुचं पूरयित्वा तदग्रे पुष्पं फलं निधाय तां स्त्रुवेणाच्छाद्य उत्थाय तयोर्मूलं नाभौ कृत्वा मूलमंत्रं वौषडंतं पठित्वा ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धि देहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा "मां मदीयं च सकलं हरये ते समर्पये ।" ॐ तत्सदिति मंत्रेण पूर्णाहुतिं दद्यात् ॥ एवं पूर्णाहुतिं दत्त्वा संहारमुद्रया देवतां स्वात्मनि उद्वास्य पुनर्व्याहृतिभिर्हुत्वा अग्नेर्जिह्वादीनां पूर्ववत् एकैकाहुतिं दत्त्वा मेखलोपरि अद्भिः परिषिच्यात्मनि पावकं योजयित्वा भो भो वह्ने

महाशक्ते सर्वकर्मप्रसाधक ॥ कर्मांतरेऽपि संप्राप्ते सान्निध्यं कुरु सादरम् ॥१॥ इत्यग्निं संप्रार्थ्य विसृजेत् । इति होमं कृत्वा दक्षिणां च दत्त्वा वह्नौ पवित्रे निक्षिप्य प्रणीतांबु भुवि क्षिप्त्वा सकुशान्परिधीनग्नौ क्षिपेत् । इति होमविधानम् ॥ अथ तर्पणादिविधानम्॥ एवं होमं समाप्य होमदशांशतो दुग्धमिश्रितजलेन मूलमंत्रांते ॐ असुकदेवतां तर्पयामि इति तर्पणं कृत्वा तर्पणदशांशेन मूलमंत्रांते सिंचामीत्यभिषेकं कुर्यात् । ततो नानाविधैरन्नैर्द्विजसत्तमान्भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां दत्त्वा न्यूनसम्पूर्णतां वाचयेत् । इति पंचांग कृत्येन मंत्रः सिद्धो भवति।सिद्धे तु मंत्रे मंत्री प्रयोगोक्तकार्याणि साधयेत्।इति शारदातिलकमंत्रमहोदधिप्रोक्तं तांत्रिकहवनादिविधानम्॥ अथ कुमारीपूजाप्रयोगः ॥ (रुद्रयामले) एकवर्षा भवेत्संध्या द्विवर्षा च सरस्वती ॥ त्रिवर्षा च त्रिधा मूर्तिश्चतुर्वर्षा तु कालिका ॥ १ ॥ सुभगा पंचवर्षा तु षड्वर्षा च ह्युमा भवेत् । सप्तभिर्मालिनी प्रोक्ता ह्यष्टवर्षा च कुब्जिका ॥ २ ॥ नवभिः कालसंदर्भा दशभिश्चापरा

---

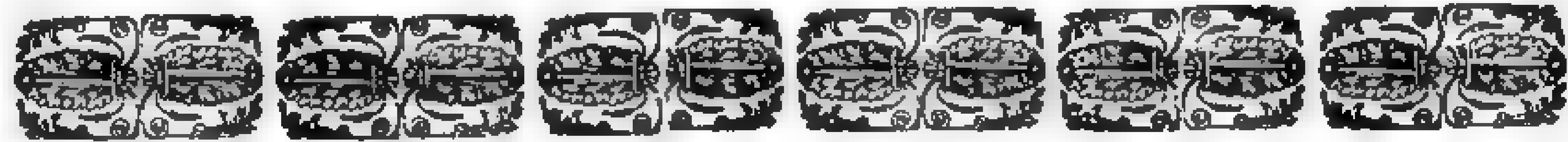
१ सुवर्णमयुते दद्याल्लक्षे दद्यात्सुवर्णकम् । दक्षिणा तु प्रदातव्या यथा होमे तथा जपे ॥ २ तत्रांतरेऽपि-तीर्थतोयेन दुग्धेन सर्पिषा मधुनापि वा । गंधोदकेन वा कुर्यात्सर्वत्र साधकोत्तमः ॥ ३ मूलांते नाम चोच्चार्य तर्पयामि ततः परम् । स्वाहांते तर्पयेन्मंत्री यथासंख्यं विधानतः ॥ तर्पणं च प्रकुर्वीत द्वितीयांतमथोच्चरन् ॥ ४ मूलविद्यां समुच्चार्य तदंते देवताभिधाम् । तदंते चाभिषिंचामि नमोंते चाभिषेचनम् । इत्युच्चार्य मूर्धि देशे चिंतयित्वा स्वमंत्रकम् । अभिषेकं त्रिसंख्याभिर्विधाय तदनन्तरम् ॥ तत्र संचिन्तयेद्देवीं सांगावरणदेवताम् । क्षिपेत्तोयं यथासंख्यं गणान् सिंचेत्सकृत्सकृत् ॥ ५ अभिषेकं समाप्यैवमभिषेकदशांशतः । ब्राह्मणान्देवताबुद्ध्या भोजयेत्साधकोत्तमः ॥ तंत्रांतरे-विभवे सति यो मोहान्न कुर्याद्विधिविस्तरम् । न तत्फलमवाप्नोति देवद्रोही स उच्यते ॥ ६ ब्राह्मणीं सर्वकार्येषु जयार्थे नृपवंशजाम् । लाभार्थे वैश्यवंशोत्थां सुतार्थे शूद्रवंशजाम् ॥ दारुणे चांत्यजातीनां पूजयेद्विधिना नरः । वर्जयेत्सर्वकार्येषु दासीगर्भसमुद्भवाम् ॥ (रुद्रयामले विशेषः) नटीकन्यां हीनकन्यां तथा कापालिकन्यकाम् । रजकस्यापि कन्यां च तथा नापितकन्यकाम् ॥ गोपालकन्यकां चैव ब्राह्मणस्यापि कन्यकाम् । शूद्रकन्यां वैश्यकन्यां तथा वैश्यस्य कन्यकाम् ॥ चाण्डालकन्यकां वापि यत्र कुत्राश्रमे स्थिताम् । सुन्दद्वर्गस्य कन्यां च समानीय प्रयत्नतः॥(योगिनीतंत्रे) यदि भाग्यवशाद्देवि वैश्यकुलसमुद्भवा ॥ कुमारी लभ्यते कांते सर्वस्वेनापि साधकः ॥ यत्नतः पूजयेत्तां तु स्वर्णगौप्यादिभिर्मुदा । तदा तस्य महासिद्धिर्जायते नात्र संशयः ॥ तस्मात्तां पूजयेद्बालां सर्वजातिसमुद्भवाम् । जातिभेदो न कर्तव्यः कुमारी पूजने शिवे ॥ जातिभेदान्महेशानि नरकान्न निवर्तते । विचिकित्सापरो मंत्री ध्रुवं स पातकी भवेत् ॥ एषा प्रशस्ता, कुमारी तु सर्वजातीयैव पूज्या ॥ ७ (कुब्जिकातंत्रे) पंचवर्षात्समारभ्य यावद्द्वादशवार्षिकी । कुमारी सा भवेद्देवि निजरूपप्रकाशिनी ॥ षड्वर्षाच्च समारभ्य यावच्च नववार्षिकी । तावच्चैव महेशानि साधकाभीष्टसिद्धये॥ अष्टवर्षात्समारभ्य यावत्त्रयोदशाब्दिकी । कुलजां तां विजानीयात्तत्र पूजां समाचरेत् ॥ दशवर्षात्समारभ्य यावत्षोडशवार्षिकी । युवतीं तां विजानीयाद्देवतां तां विचिन्तयेत् ॥ (विश्वसारतंत्रे) अष्टवर्षा तु सा कन्या भवेद्गौरी वरानने । नववर्षा रोहिणी सा दशवर्षा तु कन्यका ॥ अत ऊर्ध्वं महामाय। भवेत्सैव रजस्वला ॥

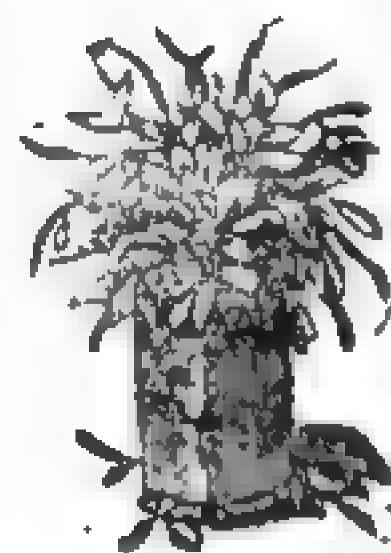
जिता ॥ एकादशा तु रुद्राणी द्वादशाब्दा तु भैरवी ॥३॥ त्रयोदशा महालक्ष्मीर्द्विसप्ता पीठनायिका॥ क्षेत्रज्ञा पंचदशभिः षोडशे चांबिका भवेत् ॥ ४ ॥ एवं क्रमेण संपूज्य यावत्पुष्पं न विद्यते ॥ प्रतिपदादिपर्णांतं वृद्धिभेदेन पूजयेत् ॥५॥ महापर्वसु सर्वेषु विशेषाच्च पवित्रके॥ महानवम्यां देवेशि कुमारीश्च प्रपूजयेत् ॥६॥अथ पूजाप्रयोगः ॥ पूजादिनात्पूर्वदिने गंधपुष्पाक्षतादिभिर्मूलेन 'भगवति कुमारि पूजार्थं त्वं मया निमंत्रितासि मां कृतार्थयेति निमंत्रितां प्रातराहूय प्रदक्षिणीकृत्योद्वर्तनाद्यैः स्नापयित्वा गंधतैलेन'शरीरं संस्कार्यकेशं परिष्कृत्य ललाटे सिंदूरं नयनयोः कज्जलं सर्वांगे चन्दनं वस्त्रालंकारैराभूष्य पूजागृहे चानीय पादौ प्रक्षाल्य अष्टदलपीठोपरि समावेश्य तांबूलेन मुखं संशोध्य देशकालौ स्मृत्वामुकसिद्धयर्थममुककर्मणि अमुकदेवताप्रीत्यर्थं कुमारीणां पूजनं करिष्ये । इति संकल्प्य न्यासं कुर्यात् । ॐ क्रां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्रीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूँ कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्रैं कुमारिके कवचाय हुँ ४ ॐ क्रौं कुमारिके नेत्रत्रयाय वौषट् ५ ॐ क्रः कुमारिके अस्त्राय फट् ६ इति हृदयादिषडंगन्यासः । एवमेव करन्यासं कुर्यात् । एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् । अथ ध्यानम्-बालरूपां च त्रैलोक्यसुंदरीं वरवर्णिनीम् ॥ नानालंकारनम्रांगीं भद्रविद्याप्रकाशिनीम् ॥ १ ॥ चारुहास्यां महानंदहृदयां शुभदां शुभाम् ॥ शंखकुंदेन्दुधवलां द्विभुजां वरदाभयाम् ॥ २ ॥ एवं ध्यात्वात्माशिरसि पुष्पं दत्वावाहयेत् ॥ मंत्राक्षरमयीं लक्ष्मीं मातॄणां रूपधारिणीम् ॥ नवदुर्गात्मिकां साक्षात्कन्यामावाहयाम्यहम् ॥३॥इत्यावाह्य ॐ ह्रीं कुलकुमारिकायै नमः इदं पाद्यमेवमिदमर्घ्यमाचमनीयमिदमनुलेपनमेतेऽक्षता एतानि पुष्पाणि एष धूप एष दीप इदं नैवेद्यमिदं तांबूलमिति पूजयित्वा षडंगानि पूजयेत् । ॐ क्रां कुमारिके हृदयाय नमः १ ॐ क्रीं कुमारिके शिरसे स्वाहा २ ॐ क्लूं कुमारिके शिखायै वषट् ३ ॐ क्रैं कुमारिके कवचाय हुँ ४ ॐ क्रौं कुमारिके नेत्रत्राय वौषट् ५ ॐ क्रः कुमारिके अस्त्राय फट् ६ इति गंधादिभिः संपूज्य ॐ ह्रीं हंसः कुल कुमारिके श्रीपादुकां पूजयामि । इति पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा नवनामभिः पूजयेत् । तद्यथा—ॐ ह्रीं कौमार्य्यै नमः १ ॐ ह्रीं त्रिपुरायै नमः

१ वाग्भवेन वपुःक्षोभं मायाबीजे गुणाष्टकम् । श्रियो बीजे श्रियो लाभो मायाबीजे रिपुक्षयः ॥ भैरवेण तु बीजेन खेचरत्वं सुरादिभिः ॥

२ ॐ ह्रीँ कल्याण्यै नमः ३ ॐ ह्रीँ रोहिण्यै नमः ४ ॐ ह्रीँ कामिन्यै नमः ५ ॐ ह्रीँ चंडिकायै नमः ६ ॐ ह्रीँ शांकर्यै नमः ७ ॐ ह्रीँ दुर्गायै नमः ८ ॐ ह्रीँ सुभद्रायै नमः ९ इति संपूज्य मूलेन पुष्पांजलित्रयं दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य प्रणमेत् । तत्र मंत्रः--ॐ जगत्पूज्ये जगद्वंद्ये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ॥ पूजां गहाण कौमारि जगन्मातर्नमोऽस्तु ते ॥ १ ॥ त्रिपुरां त्रिगुणां धात्रीं ज्ञानमार्गस्वरूपिणीम् । त्रैलोक्यवंदितां देवीं त्रिमूर्तिं पूजयाम्यहम् ॥ २ ॥ कालात्मिकां कालभीतां कारुण्यहृदयां शिवाम् । कारुण्यजननीं नित्यां कल्याणीं पूजयाम्यहम् ॥ ३ ॥ अणिमादिगुणोपेतामकारादिस्वरात्मिकाम् ॥ शक्तिभेदात्मिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पजयाम्यहम् ॥ ४ ॥ कलाधारां कलारूपां कालचण्डस्वरूपिणीम् ॥ कामदां करुणाधारां कामिनीं पूजयाम्यहम् ॥ ५ ॥ चण्डधारां चण्डमायां चण्डमुण्डविनाशिनीम् ॥ प्रणमामि च देवेशीं चण्डिकां पूजयाम्यहम् ॥ ६ ॥ सुखनंदकरीं शांतां सर्वदेवनमस्कृताम् ॥ सर्वभूतात्मिकां देवीं शांकरीं जयाम्यहम् ॥ ७ ॥ दुर्गमे दुस्तरे चैव दुःखत्रयविनाशिनीम् ॥ पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गां दुर्गे नमाम्यहम् ॥ ८ ॥ सुंदरीं स्वर्णवर्णाभां सुखसौभाग्यदायिनीम् ॥ सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां प्रणमाम्यहम् ॥ ९ ॥ इति संप्रार्थ्य साष्टांगं प्रणम्य दक्षिणां च दत्त्वा तत्रांगे स्वेष्टदेवतां ध्यात्वा तन्नामभिः पूजयेत्॥अस्य फलादेशः-पूजोपकरणानीह कुमार्यै यो ददाति हि॥संतुष्टा देवता तस्य पुत्रत्वे सोऽनुकल्प्यते ॥ १ ॥ (योगिनीतंत्रे) कुमारीपूजनफलं वक्तुं नार्हामि सुंदरि ॥ जिह्वाकोटिसहस्रैस्तु वक्त्रकोटिशतैरपि ॥ २ ॥ कुमारी पूज्यते यत्र स देशः क्षितिपावनः ॥ महापुण्यतमो भूयात् समंतात्क्रोशपंचकम् ॥३॥ (रुद्रयामले) महापूजादिकं कृत्वा वस्त्रालंकारभोजनैः॥पूजनान्मन्दभाग्योऽपि लभते जयमंगलम्॥४॥पूजया लभते पुत्रान् पूजया लभते श्रियम्॥पूजया धनमाप्नोति पूजया लभते महीम्॥५॥ पूजया लभते लक्ष्मीं सरस्वतीं महोजसम्॥महाविद्याःप्रसीदंति सर्वे देवा न संशयः॥६॥कालभैरवब्रह्मेंद्रब्राह्मणा ब्रह्मत्रेदिनः॥ रुद्रश्च देववर्गाश्च वैष्णवा ब्रह्मरूपिणः ॥ ७ ॥ अवताराश्च द्विभुजा वैष्णवा मनुशोभिनाः ॥ अन्ये दिक्पालदेवाश्च चराचरगुरुस्तथा ॥ ॥८॥नानाविद्याश्रिताः सर्वे दानवाः कूटशालिनः॥उपसर्गस्थिता ये ये ते ते तुष्टा न संशय.॥९॥कुमारी योगिनी साक्षात्कुमारी परदेवता॥

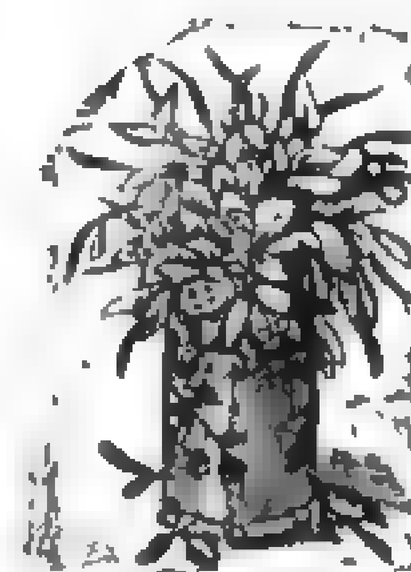
असुरा दुष्टनागाश्च ये ये दुष्टग्रहा अपि ॥१० ॥ भूतवेतालगंधर्वा डाकिनीयक्षराक्षसाः ॥ याश्चान्या देवताः सर्वा भूर्भुवः स्वश्च भैरवाः ॥ ॥११॥पृथिव्यादीनि सर्वाणि ब्रह्माण्डे सचराचरम्॥ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः॥१२॥संतुष्टाः सर्वतुष्टाश्च यस्तु कन्यां प्रपूजयेत ॥ अथाहं शुद्धरूपा हि अन्यलोके च का कथा ॥ कुमारीपूजनं कृत्वा त्रैलोक्यं वशमानयेत् ॥ १३ ॥ महाकांतिर्भवेत्क्षिप्रं सर्वं पुण्यफलप्रदम् ॥१४ ॥ (नीलतंत्रे) महाभयार्तिदुर्भिक्षाद्युत्पातानि कुलेश्वरि ॥ दुःस्वप्नमपमृत्युश्च ये चान्ये च समुद्भवाः ॥ १५ ॥ कुमारीपूजनादेव न ते च प्रभवंति हि ॥ नित्यं क्रमेण देवेशि पूजयेद्विधिपूर्वकम् ॥१६ ॥ घ्नंति विघ्नान्पूजिताश्च भयं शत्रून्महोत्कटान् ॥ ग्रहा रोगाः क्षयं यांति भूतवेतालपन्नगाः ॥ १७ तावज्जप्त्वा पूजयित्वा कन्यां सुंदरमोहिनीम् ॥ दिव्यभावस्थितं साक्षात्तंत्रमंत्रफलं लभेत् ॥ १८ ॥ महाविद्या महामंत्रं सिद्धिमंत्रं न संशयः ॥ विधियुक्तां कुमारीं तु भोजयेच्चैव भैरव ॥१९॥ पाद्यार्घ्यं च तथा धूपं कुंकुमं चंदनं शुभम् ॥ भक्तिभावेन संपूज्य कुमारीभ्यो निवेदयेत् ॥२०॥ इति श्रीमंत्रमहार्णवे पूर्वखण्डे सर्वदेवोपयोगिपद्धतिचतुर्थस्तरंगः॥ ४ ॥





॥ ऋद्धिसिद्धी-



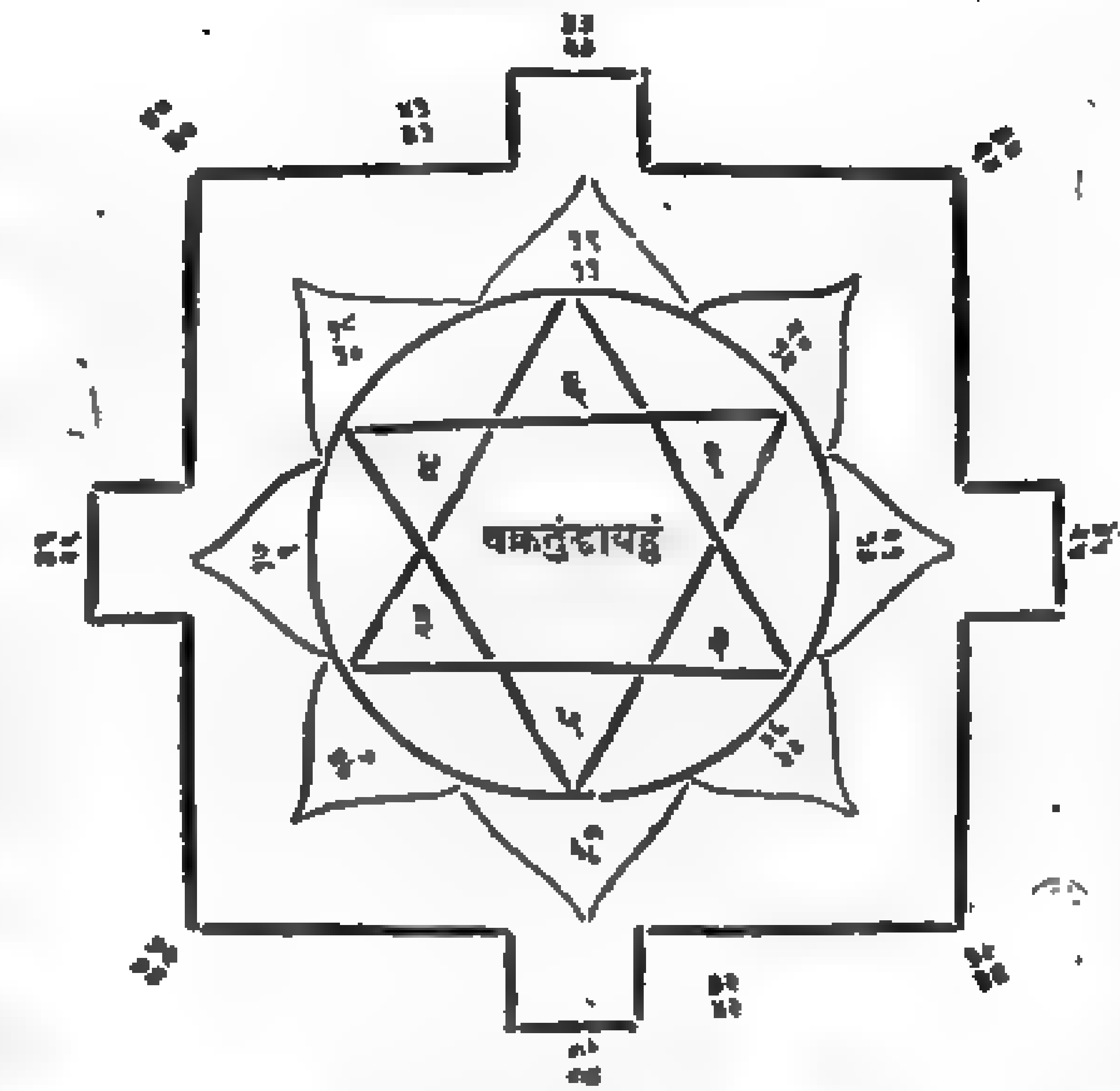


श्वराय नमः ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ गणेशतंत्रप्रारंभः ॥ तत्रादौ पटलप्रारंभः ॥ अथ षडक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रो यथा-मंत्रमहोदधौ) 'वक्रतुंडाय हुं' इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानम् । प्रातः कृतक्रियश्चन्द्रतारादिबलान्विते सुमुहूर्ते विविक्ते देशे जपस्थानं प्रकल्प्य गणपतिपूजनादिनांदीश्राद्धांतं विधाय जपस्थानमागत्य कूर्म्मशोधिते स्वासने प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा उपविश्य मूलेनाचम्य प्राणानायम्य भूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठामंतर्मातृकाबहिर्मातृकान्यासं च सर्वदेवोपयोगिपद्धतिमार्गेण कृत्वा पूर्ववत् गणेशकलामातृकान्यासं विधाय प्रयोगोक्तन्यासादिकं कुर्य्यात् तत्र क्रमः-ॐ अस्य श्रीगणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, विघ्नेशो देवता, वं बीजम्, यं शक्तिः, ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भार्गवर्षये नमः शिरसि ॥ १ ॥ ॐ अनुष्टुप्छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ वँ नमः अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥१॥ ॐ क्रँ नमः तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः मध्यमाभ्यां नमः ॥३॥ ॐ डाँ नमः अनामिकाभ्यां नमः ॥ ॥४॥ ॐ यँ नमः कनिष्ठिकाभ्यां नमः ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः ॐ वँ नमः हृदयाय नमः ॥ ॥ १ ॥ ॐ क्रँ नमः शिरसे स्वाहा ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः शिखायै वषट् ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः कवचाय हुँ ॥ ४ ॥ ॐ यँ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः अस्त्राय फट् ॥ ६ ॥ इति हृदयादिषडंगन्यासः ॥ ॐ वँ नमः भ्रूमध्ये ॥ १ ॥ ॐ क्रँ नमः कंठे ॥ २ ॥ ॐ तुँ नमः हृदये ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः नाभौ ॥ ४ ॥ ॐ यँ नमः लिंगे ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः पादयोः ॥ ६ ॥ इति वर्णन्यासः ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ ध्यानम्—उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ॥रक्तांबरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम्॥१॥ इति ध्यायेत्। ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमः । इति संपूज्य नव पीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नन्दायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७

ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् । ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः । इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादिपुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् ॥ तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परो देवः परामृतरसप्रियः ॥ अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं गणेशोपरि दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् ॥ इत्याज्ञां गृहीत्वा षट्कोणकेसरेषु षडंगानि पूजयेत् । तथा च ॥ आग्न्येय्यादिचतुर्दिक्षु मध्ये दिक्षु च ॐ वँ नमः हृदयाय नमः हृदये श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सर्वत्र ॥ १ ॥ ॐ कँ नमः शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० ॥ २ ॥ ॐ तँ नमः शिखायै वषट् शिखायां श्रीपा० ॥ ३ ॥ ॐ डाँ नमः कवचाय हुँ कवचे श्रीपा० ॥ ४ ॥ ॐ यँ नमः नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रये श्रीपा० ॥ ५ ॥ ॐ हुँ नमः अस्त्राय फट् अस्त्रे श्रीपा० ॥ ६ ॥ इति षडंगानि पूजयेत् । ततः पुष्पांजलिमादाय मूलमुच्चार्य्य ॥ "ॐ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राचीं तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राचीक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॐ विद्यायै नमः विद्याश्रीपा० १ ॥ ॐ विधात्र्यै नमः विधात्री श्रीपा० २ ॥ ॐ भोगदायै नमः भोगदाश्रीपा० ३ ॥ ॐ विघ्नघातिन्यै नमः विघ्नघातिनीश्रीपा० ४ ॥ ॐ निधिप्रदीपायै नमः निधिप्रदीपाश्रीपा० ५ ॥ ॐ पापघ्न्यै नमः पापघ्नी श्रीपा० ६ ॥ ॐ पुण्यायै नमः पुण्याश्रीपा० ७ ॥ ॐ शशिप्रभायै नमः शशिप्रभाश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य 'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ ततो दलाग्रेषु ॐ वक्रतुंडाय

नमः वक्रतुंडश्रीपा० १ ॥ ॐ एकदंष्ट्राय नमः एकदंष्ट्रश्रीपा० २ ॥ ॐ महोदराय नमः महोदरश्रीपा० ३ ॥ ॐ हस्तिमुखाय नमः हस्तिमुखश्रीपा० ४ ॥ ॐ लम्बोदराय नमः लम्बोदरश्रीपा० ५ ॥ ॐ विकटाय नमः विकटश्रीपा० ६॥ ॐ विघ्नराजाय नमः विघ्नराजश्रीपा० ७ ॥ ॐ धूम्रवर्णाय नमः धूम्रवर्णश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य॥ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इति पठित्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ ततो भूपुरे पूर्वादिक्रमेण-ॐ लं इंद्राय नमः १ ॥ ॐ रं अग्नये नमः २ ॥ ॐ मं यमाय नमः ३ ॥ क्षं निर्ऋतये नमः ४ ॥ ॐ वं वरुणाय नमः ५ ॥ ॐ यं वायवे नमः ६ ॥ ॐ कुं कुबेराय नमः ७ ॥ ॐ हं ईशानाय नमः ८ ॥ पूर्वेशानयोर्मध्ये ॐ आं ब्रह्मणे नमः ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः १० ॥ इति दशदिक्पालान् पूजयित्वा पुष्पांजलिं च दद्यात् । इति चतुर्थावरणम् ४ ॥ ततः इन्द्रादिसमीपे



ॐ धं वज्राय नमः १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः २ ॥ ॐ दं दंडाय नमः ३ ॥ ॐ खं खड्गाय नमः ४ ॥ ॐ पां पाशाय नमः ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ६ ॥ ॐ गं गदायै नमः ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः १० ॥ इति

वक्राद्यस्त्राणि पूजयेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्कारांतं संपूज्य जपं कुर्य्यात् ॥ अस्य पुरश्चरणं षड्लक्षजपः अष्टद्रव्यैर्दशांशतो होमः । तत्तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कारयेत् ॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् ॥ तथा च "ऋतुलक्षं जपेन्मंत्रमष्टद्रव्यैर्दशांशतः॥ जुहुयान्मंत्रसंसिद्धये वाडवान्भोजयेच्छुचीन्॥१॥ततः सिद्धे मनो काम्यान्प्रयोगान्साधयेन्निजान् ॥ ब्रह्मचर्यरतो मंत्री जपेद्द्विसहस्रकम् ॥ षण्मासमध्याद्दारिद्र्यं नाशयत्येव निश्चितम् ॥ चतुर्थ्यादिचतुर्थ्यंतं जपेद्दशसहस्रकम् ॥ ३ ॥ प्रत्यहं जुहुयादष्टोत्तरं शतमतंद्रितः ॥ पूर्वोक्तं फलमाप्नोति षण्मासाद्भक्तितत्परः ॥ ४ ॥ आज्याक्तान्नस्य होमेन भवेद्धनसमृद्धिमान् ॥ पृथुकैर्नारिकेलैर्वा मरिचैर्वा सहस्रकम् ॥ ५ ॥ प्रत्यहं जुह्वतो मासाज्जायते धनसंचयः ॥ जीरसिंधुमरीचाक्तैरष्टद्रव्यैः सहस्रकम् ॥ ६ ॥ जुहुयात्प्रत्यहं पक्षात्स्यात्कुबेर इवार्थवान् ॥ चतुःशतं चतुश्चत्वारिंशदाढ्यं ४४४ दिनं प्रति ॥ तर्पयेन्मूलमंत्रेण मंडलादिष्टमाप्नुयात् ॥ ७ ॥ इति वक्रतुंडषडक्षरमंत्रप्रयोगः ॥१॥ अथ मंत्रभेदः (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ मेघोल्काय स्वाहा ॥ इति षडक्षरो मंत्रः ॥ अस्य विधानं सर्वं पूर्ववज्ज्ञेयम् ॥ तथा च॥ "षडक्षरोऽयमादिष्टो भजनादिष्टदो मनुः॥पूर्ववत्सर्वमेतस्य समाराधनमीरितम् १ ॥" इति द्वितीयषडक्षरमंत्रप्रयोगः ॥ अथैकत्रिंशदक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ "रायस्पोषस्य ददिता निधिदो रत्नधातुमान् ॥ रक्षोहणोवलगहनोवक्रतुंडायहुं ॥" इत्येकत्रिंशदक्षरमंत्रः ॥ अस्य विधानम् ॥ अस्य श्रीवक्रतुंडगणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः ॥ अनुष्टुप् छंदः ॥ विघ्नेशो देवता ॥ यं बीजम् ॥ यं शक्तिः ॥ ममाभीष्टसिद्धये जपे विनियोगः ॥ ॐ भार्गवर्षये नमःशिरसि॥१॥ ॐ अनुष्टुप् छंदसे नमः मुखे ॥ २ ॥ ॐ विघ्नेशदेवतायै नमः हृदि ॥ ३ ॥ ॐ वं बीजाय नमः गुह्ये ॥ ४ ॥ ॐ यं शक्तये नमः पादयोः ॥ ५ ॥ ॐ विनियोगाय नमः सर्वांगे ॥ ६ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ रायस्पोषस्य अंगुष्ठाभ्यां नमः ॥ १ ॥ ॐ ददिता तर्जनीभ्यां नमः ॥ २ ॥ ॐ निधिदो रत्नधातुमान् मध्यमाभ्यां नमः ॥ ३ ॥ ॐ रक्षोहणो अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॥ ॐ बलगहनो कनिष्ठिकाभ्यां

१—इक्षवः सक्तवो रंभाफलानि चिपिटास्तिलाः ॥ मोदका नारिकेलानि लाजा द्रव्याष्टकं स्मृतम् ॥

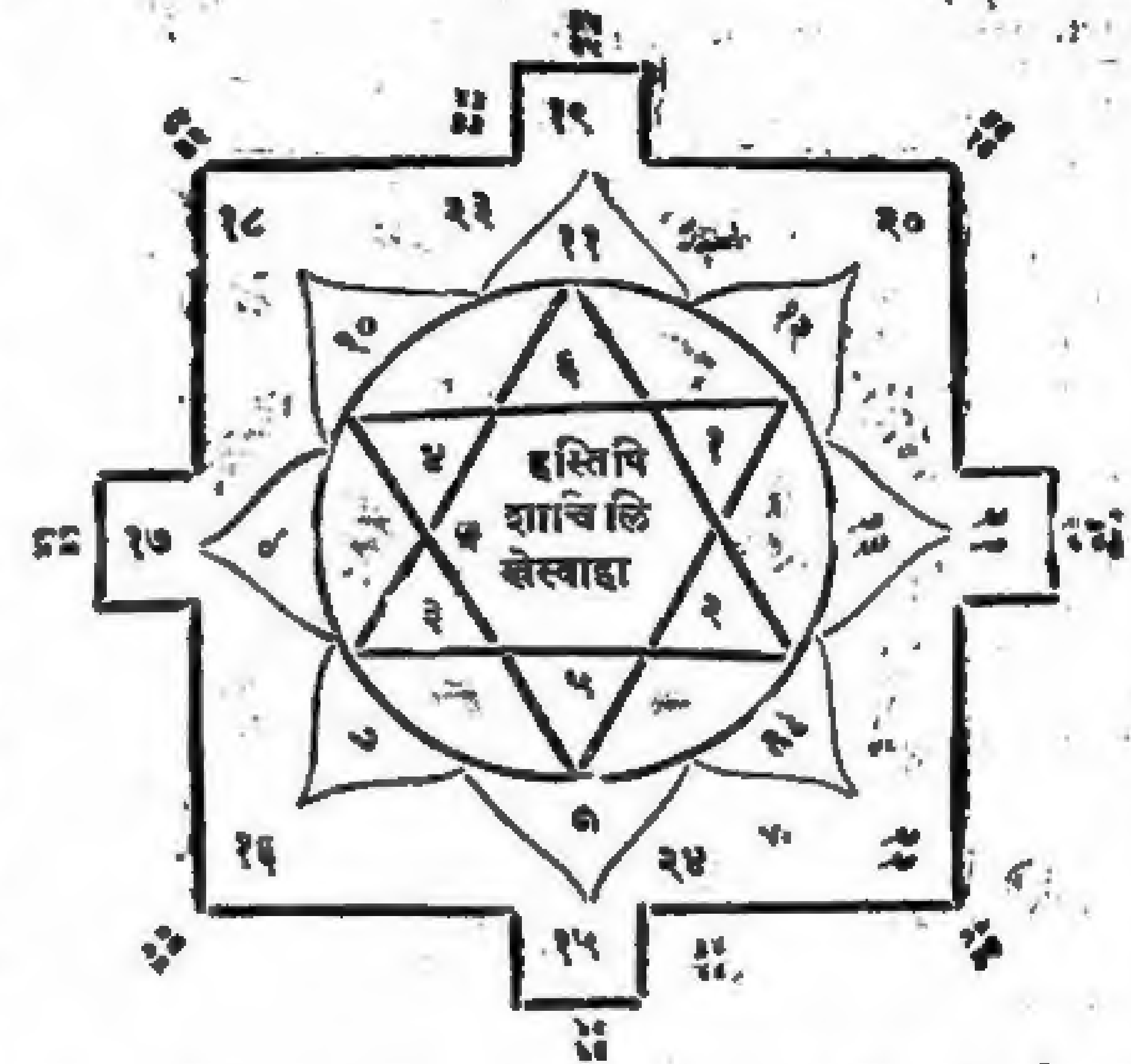
नमः ॥ ५ ॥ वक्रतुंडाय हुं करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॥ ६ ॥ इति करन्यासः । एवमेव हृदयादिषडंगन्यासं कुर्यात् ॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम्-उद्यद्दिनेश्वररुचिं निजहस्तपद्मैः पाशांकुशाभयवरान्दधतं गजास्यम् ॥ रक्तांबरं सकलदुःखहरं गणेशं ध्यायेत्प्रसन्नमखिलाभरणाभिरामम् ॥ १ ॥ इति ध्यायेत् । अन्यत् सर्वं षडक्षरवत् ॥ इत्येकत्रिंशदक्षरवक्रतुंडमंत्रप्रयोगः ॥ २ ॥ अथोच्छिष्टगणपतिनवार्णमंत्रप्रयोगः ॥ (मंत्रमहोदधौ) मंत्रो यथा ॥ हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा ॥ इति नवार्णमंत्रः । अस्य विधानम्-ॐअस्यश्र्युच्छिष्टगणेशनवार्णमंत्रस्य कंकोल ऋषिः । विराट्छंदः । उच्छिष्टगणपतिर्देवता । अखिलाप्तये जपे विनियोगः॥ॐ कंकोलर्षये नमः शिरसि १ ॥ ॐ विराट्छंदसे नमः मुखे २ ॥ ॐ उच्छिष्टगणपतिदेवतायै नमः हृदि ३ ॥ विनियोगाय नमः सर्वांगे ४ ॥ इति ऋष्यादिन्यासः ॥ ॐ हस्ति अंगुष्ठाभ्यां नमः १ ॥ ॐ पिशाचि तर्जनीभ्यां नमः २ ॥ ॐ लिखे मध्यमाभ्यां नमः ३ ॥ ॐ स्वाहा अनामिकाभ्यां नमः ॥ ४ ॐ हस्तिपिशाचिलिखे कनिष्ठिकाभ्यां नमः ५ ॥ ॐ हस्तिपिशाचि लिखे स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ६ ॥ इति करन्यासः ॥ ॐ हस्ति हृदयाय नमः १ ॥ ॐ पिशाचि शिरसे स्वाहा २ ॥ ॐ लिखे शिखायै वषट् ३ ॥ ॐ स्वाहा कवचाय हुं ४ ॥ ॐ हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा अस्त्राय फट् ५॥ इति हृदयादिपंचांगन्यासः॥ एवं न्यासं कृत्वा ध्यायेत् ॥ अथ ध्यानम् ॥ चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशौ मोदकपात्रदंतौ ॥ करैर्दधानं सरसीरुहस्थमुन्मत्तमुच्छिष्टगणेशमीडे ॥१ ॥ इति ध्यायेत् । ततः पीठादौ रचिते सर्वतोभद्रमंडले गणेशमंडले वा मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताः पद्धतिमार्गेण संस्थाप्य ॐ मं मंडूकादिपरतत्त्वांतपीठदेवताभ्यो नमःइति संपूज्य नवपीठशक्तीः पूजयेत् । तद्यथा । पूर्वादिक्रमेण ॐ तीव्रायै नमः १ ॐ चालिन्यै नमः २ ॐ नंदायै नमः ३ ॐ भोगदायै नमः ४ ॐ कामरूपिण्यै नमः ५ ॐ उग्रायै नमः ६ ॐ तेजोवत्यै नमः ७ ॐ सत्यायै नमः ८ मध्ये ॐ विघ्ननाशिन्यै नमः ९ इति पूजयेत् ॥ ततः स्वर्णादिनिर्मितं यंत्रं मूर्त्तिं वा ताम्रपात्रे निधाय घृतेनाभ्यज्य तदुपरि दुग्धधारां जलधारां च दत्त्वा स्वच्छवस्त्रेणाशोष्य॥ॐ ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः इति मंत्रेण पुष्पाद्यासनं दत्त्वा पीठमध्ये संस्थाप्य पद्धतिमार्गेण प्रतिष्ठां च कृत्वा मूलेन मूर्तिं प्रकल्प्य पाद्यादि

पुष्पांतैरुपचारैः संपूज्य देवाज्ञां गृहीत्वा आवरणपूजां कुर्यात् । तत्र क्रमः ॥ पुष्पांजलिमादाय "ॐ संविन्मयः परोदेवपरामृतरसप्रिय । अनुज्ञां देहि गणप परिवारार्चनाय मे ॥ १ ॥ इति पठित्वा पुष्पांजलिं गणेशोपरि दत्त्वा पूजितस्तर्पितोऽस्तु इति वदेत् । इत्याज्ञां गृहीत्वा पट्कोणे षडंगानि पूजयेत् ॥ तथा च ॥ अग्निकोणे * " ॐ हस्ति हृदयाय नमः १ ॥ हृदयश्रीपादुकां पूजयामि । तर्पयामि नमः । इति सर्वत्र पठेत् ॥ नैर्ऋत्ये ॐ गीं पिशाचि शिरसे स्वाहा शिरसि श्रीपा० २ ॥ वायव्ये ॥ ॐ गूं लिखे शिखायै वषट् शिखा श्रीपा० ३ ॥ ऐशान्ये० ॥ ॐ अ स्वाहा कवचाय हुं कवचं श्रीपादुकां पूजयामि त० ४ ॥ मध्ये ॐ गौं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रत्रये श्रीपा० ५॥ दिक्षु ॐ गः हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा । अस्त्राय फट् अस्त्रे श्रीपादुकां पू० त० नमः ६ ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा। "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥ ॥ १ ॥ इति पुष्पांजलिं दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति प्रथमावरणम् ॥ १ ॥ ततोऽष्टदले पूज्यपूजकयोरंतरालं प्राची तदनुसारेण अन्या दिशः प्रकल्प्य दक्षहस्ते तर्जन्यंगुष्ठाभ्यां गंधाक्षतपुष्पाणि गृहीत्वा प्राच्यादिक्रमेण अष्टसु दिक्षु ॥ प्राच्याम् । ॐ ब्राह्म्यै नमः ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः १ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरीश्रीपा० २ ॥ दाक्षिणे ॐ कौमार्यै नमः कौमारीश्रीपा० ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ वैष्णव्यै नमः वैष्णवीश्रीपा० ४ ॥ पश्चिमे ॐ वाराह्यै नमः । वाराहीश्रीपादुकां पू०त० ५ ॥ वायव्ये ॐ इन्द्राण्यै नमः । इन्द्राणीश्रीपा० ६ ॥ उत्तरे ॐ चामुंडायै नमः । चामुंडा श्रीपा० ७ ॥ ऐशान्ये ॐ महालक्ष्म्यै नमः । लक्ष्मीश्रीपा० ८ ॥ इत्यष्टौ शक्तीः पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति द्वितीयावरणम् ॥ २ ॥ ततः अष्टदलाद्बहिः चतुरस्राभ्यंतरे प्राच्याम् ॐ वक्रतुंडाय

* तन्त्रांतरे तु हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहेति नवार्णमंत्रः । ॐ हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा गं हस्तिपिशाचिलिखे स्वाहा नवार्णभेदेन दशाक्षरीमंत्रः ॥

नैंमः वक्रतुंडश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमस्करोमि १ ॥ आग्नेय्याम् ॐ एकदंष्ट्राय नैंमः । एकदंष्ट्रश्रीपा० २ ॥ दक्षिणे ॐ लम्बोदराय नैंमः । लम्बोदर श्रीपा० ३ ॥ नैर्ऋत्ये ॐ विकटाय नैंमः । विकट श्रीपा० ४॥ पश्चिमे ॐ धूम्रवर्णाय नैंमः ॐ धूम्रवर्ण श्रीपा० ५॥ वायव्ये ॐ विघ्नराजाय नैंमः विघ्नराजश्रीपा० ६ ॥ उत्तरे ॐ गजाननाय नैंमः गजाननश्रीपा०७॥ । ऐशान्ये ॐ विनायकाय नैंमः । विनायकश्रीपा० ८ ॥ प्राच्येशानयोर्मध्ये ॐ गणपतये नैंमः । गणपति श्रीपा० ९ ॥ पाश्चिमानिर्ऋतयोर्मध्ये ॐ हस्तिदंताय नैंमः । हस्तिदंतश्रीपा० १० ॥ इति पूजयेत् ॥ ततः पुष्पांजलिमादाय मूलं पठित्वा " अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥ १ ॥ " इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इति तृतीयावरणम् ॥ ३ ॥ भूपुराद्बहिः पूर्वादिक्रमेण पूर्वे ॐ लं इन्द्राय नैंमः । इन्द्रश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥ १ ॥ आग्नेय्याम् ॥ ॐ रं अग्नये नैंमः अग्निश्रीपा० ॥२॥दक्षिणे॥ॐ मं यमाय नैंमः । यमश्रीपा०॥३॥

उच्छिष्टगणपतिनवार्णयंत्रम् ।



नैर्ऋत्ये ॐ क्षं निर्ऋतये नैंमः । निर्ऋतिश्रीपा० ॥४॥ पश्चिमे ॐ वं वरुणाय नैंमः ॥ वरुणश्रीपा०॥५॥वायव्ये ॐ यं वायवे नैंमः । वायुश्रीपा० ॥ ६ ॥ उत्तरे ॐ कुं कुबेराय नमैंः । कुबेरश्रीपा० ॥७ ॥ ऐशान्ये ॐ हं ईशानाय नमैंः । ईशानश्रीपा० ॥ ८ ॥ इंद्रेशानयोर्मध्ये ॐ

ओँ ब्रह्मणे नमः ब्रह्मश्रीपा० ९ ॥ वरुणनैर्ऋतयोर्मध्ये ॐ ह्रीं अनंताय नमः अनंतश्रीपा० १० ॥ इति दशदिक्पालान् संपूज्य पुष्पांज लिमादाय मूलमुच्चार्य ॐ "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ॥ भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ॥१॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्त्वा विशेषार्घ्याद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् इति चतुर्थावरणम् ततः पूर्वादिक्रमेण तत्तत्समीपे ॐ वं वज्राय नमः ॥ १ ॥ ॐ शं शक्तये नमः ॥२॥ ॐ दं दंडाय नमः ॥३॥ ॐ खं खड्गाय नमः ॥ ४ ॥ ॐ पाँ पाशाय नमः ॥ ५ ॥ ॐ अं अंकुशाय नमः ॥६॥ ॐ गं गदायै नमः ॥ ७ ॥ ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः ॥ ८ ॥ ॐ पं पद्माय नमः ॥ ९ ॥ ॐ चं चक्राय नमः ॥ १० ॥ इत्यस्त्राणि पूजयेत्॥ ततः पुष्पांजलिं गृहीत्वा मूलमुच्चार्य्य "अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल॥भक्त्या समर्प्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम्॥१॥" इत्युक्त्वा पुष्पांजलिं च दत्वा विशेषार्घाद्बिंदुं निक्षिप्य पूजितास्तर्पिताः संतु इति वदेत् ॥ इत्यावरणपूजां कृत्वा धूपादिनमस्करांतं संपूज्य पिशितं वा फलं मोदकं वा गुडपायसं बलिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ ॐ गैंहँक्लौंग्लौं उच्छिष्टगणेशाय महाक्षाया यं बलिः ॥ इति मंत्रेण निवेदयेत् । ततः देवतानिवेदितमोदकं तांबूलं वा स्वयं भुक्त्वा उच्छिष्टमुखेन जपं कुर्य्यात्॥ अस्य पुरश्चरणमेकलक्षजपः । तद्दशांशतस्तिलहोमः । तद्दशांशेन तर्पणमार्जनब्राह्मणभोजनं च कुर्य्यात्॥ एवं कृते मंत्रः सिद्धो भवति । एवं सिद्धे मंत्रे मंत्री प्रयोगान् साधयेत् । तथा च–"लक्षमेकं जपेन्मंत्रं दशांशं जुहुयात्तिलैः॥ एवं सिद्धे मनौ मंत्री प्रयोगान्कर्तुमर्हति॥१॥ स्वांगुष्ठप्रतिमां कृत्वा कपिना[1] सितभानुना[2]॥गणेशप्रतिमां रम्यामुक्तलक्षणलक्षिताम्॥२॥प्रतिष्ठाप्य विधानेन मधुना स्नापयेच्च ताम् ॥ आरभ्य कृष्णभूतादि याव च्छुक्ला चतुर्दशी॥३॥सगुडं पायसं तस्मै निवेद्य प्रजपेन्मनुम् ॥सहस्रं प्रत्यहं तावज्जुहुयात्सघृतैस्तिलैः[3]॥४॥ गणेशोहमिति ध्यायन्नुच्छि ष्टेनावृतो रहः ॥ पक्षाद्राज्यमवाप्नोति नृपजोऽन्योऽपि वा नरः ॥ ५ ॥ कुलालमृत्स्नाप्रतिमा पूजितैवं सुराज्यदा ॥ वल्मीकमृत्कृता लाभ मेवमिष्टान्प्रयच्छति ॥ ६ ॥ गौडी सौभाग्यदा सैवं लावणी क्षोभयेदरीन् ॥ निंबजा नाशयेच्छत्रून्प्रतिमैवं समर्चिता ॥ ७ ॥ मध्वौ

१ रक्तचन्दनेन ॥ २ श्वेतार्केण वा ॥ ३ घृतमधुशर्करायुक्तैः ॥